

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनचिजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विगेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिवृद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना, गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होगियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

श्री गुरुदेवकीय शान मन्दिर, जोधपुर

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानसूत्र

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विषयमात्र २०१७ }
प्रथमावधि १०० }

भारतीय गणराज्य १९८०

{ विषयमात्र १९६०
{ मूल्य १०००

मुद्रक—श्री हरिदत्त पारीज भाषा प्रग जोधपुर ।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular

★

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur, (Punjab). Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad, Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay. General
Editor, Gujarat Puratattva Mandir
Granthavali, Bharatiya Vidya
Series, Singhji Jain Series
etc etc

★ ★

No. 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS IN THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt 2

★ ★ ★

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

VS 2017]

All Rights Reserved

[1960 A.D.

सञ्चालकीय वस्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमें अग्रेल सन १९५६ ई० में माच मन् १९५८ ई० तक संग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। माच सन् १९५६ तक संग्रहीत ४००० ग्रन्थोंकी सूची भाग १ के रूपमें प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही माच सन १९५८ तक संग्रहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची भाग १ के नामसे पथक प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोंका वर्गीकरण और विषयनिर्धारण ये दोनों ही कठिन एवं समय मापेक्ष्य कार्य हैं। हमारा प्रचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें संग्रहीत ग्रन्थोंका वर्गीकृत और मविवरण सूचीपत्र तयार कराकर विज्ञानोंके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोंकी सत्पा दिनों दिन बढ़ती रही और आगतुक्त विद्वानों एवं अनुसन्धित्सुओं का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमें रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि संग्रहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी नामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथामाध्य उपकरणाको जुटा कर विभागीय कमचारियों द्वारा थोड़े से थोड़े समयमें मोट तौर पर वर्गीकरण एवं विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमें प्रकाशित की जा रही हैं। आगे प्रवर्णनादि तयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी गचित्र ग्रन्थोंके सूचीपत्रका काम इस दिशाम् श्रीगणेश करनेके लिए हाथ म लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची प्रकाशन कार्यक्रममें एक तो संग्रहीत ग्रन्थोंकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेंगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनु रूप रखा गया है फिर भी इसमें आनश्यकानुसार कुछ परिवर्तन किये गये हैं। यथा भाषाभाषा रोष्ठर कम करके हिन्दी एवं राजस्थानी ग्रन्थोंके पथक विषय बना दिये गये हैं जिनसे सुविधानुसार इन दोनों भाषाभाषाके ग्रन्थोंकी जागरूगी मिले। विद्वान् उत्तममनोय के बोष्ठरमें रचनाकाल त्रिपिस्थान, लिखितार्ता, ग्रन्थदत्ता और विषय-स्वप्नीकरणका सतिप्त ससूचा किया गया है। इसमें अतिरिक्त परिशिष्ट १ में कुछ विशिष्ट ग्रन्थोंके आद्य त अग्न अत्रिक्ल रूपमें उद्धृत कर लिया गये हैं। साथ ही ग्रन्थोंके विषयमें यदि कोई विधि सुचना प्राप्त है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थोंके स्वरूप एवं दत्ताओं ममभनेके लिए सतिप्त रूपमें जागरूकी देनेका यथावक प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ में ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमजिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनों ही सूचियोंमें बहुतसे ग्रन्थ एव ग्रन्थकारोंके नाम अद्यावधि अन्यान्य सस्थाओंमें प्रकाशित ग्रन्थसूचियोंमें, विगणित. राज-स्थानी ग्रन्थ-सूचियोंमें नहीं पाये जाते हैं, जो अद्यतन अनुसन्धित्नु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एव उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमें तत्स्थानों पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-मग्रहोंको भी इसी विभागके आगत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमें प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ में प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमें भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एव व्यक्तिगत सग्रहोंकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेंगी।

इस सूचीमें समाविष्ट ग्रन्थोंके आक्रमिक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमें ही श्री गोपालनारायण बहुरा एव श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ में प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमें हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने में ५-६ मासका समय लगा। तदनन्तर पुन जाँच आदि करके प्रेम कापियाँ तैयार की गई और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमें विभाग के उप सचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकाकन, प्रेस काँपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि सकलन और प्रूफ-संगोथनादि कार्यमें सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एव पुरासाहित्यानुसन्धित्सु लाभान्वित होंगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, }
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय - तालिका



विषय	क्रियाँ	पृष्ठ मर्या
१ स्तुतिस्तोत्रादि	२६०	१-१४
२ वैदिक	११०	१५-२०
३ कर्मकाण्ड	१७६	२१-३०
४ तन्त्रमन्त्रादि	१३१	३१-३८
५ धर्मशास्त्र	११३	३९-४६
६ पुराण-कथा-माहात्म्यादि	१७१	४७-५७
७ वेदान्त	२२६	५८-६६
८ न्याय-दर्शन	५६	७०-७२
९ व्याकरण	१६६	७३-८१
१० कोष	५३	८२-८४
११ ज्योतिष	६२३	८५-१२१
१२ छन्द शास्त्र	२४	१२२-१२३
१३ संगीतशास्त्र	३	१२४
१४ कामशास्त्र	४	१२५
१५ काव्य-नाटक-चम्पू	२३३	१२६-१४०
१६ रसालङ्कारादि	४३	१४१-१४३
१७ सुभाषितादि	६४	१४४-१४८
१८ कथा-चरित्र-आख्यानादि	६१	१४९-१५३
१९ आयुर्वेद	१४२	१५४-१६१
२० राजस्थानीग्रन्थ	७६८	१६२-२०५
२१ हिन्दीग्रन्थ	५४८	२०६-२३६
२२ जैनस्तोत्र	१४६	२३७-२४५
२३ जैनागम	१८१	२४६-२५६
२४ जैनप्रकरण	१७१	२६०-२७१
२५ प्रकीर्णग्रन्थ	३५	२७२-२७४
परिशिष्ट १ [कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]		२७५-३२६
परिशिष्ट २ [ग्रन्थकारनामानुक्रमणिका]		३३०-३४६
परिशिष्ट ३ [इन्द्रगढ़ पोथीखानेसे प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची]		३४७-३६१



राजस्थान पुरातत्वा वेधण भंदिर्—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, १ स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तमानि नातय	निर्णय	पत्र सत्या	विषय उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चांगि स्तोत्र	विष्णुधर्मोत्तर ततोयकाण्डगत	१८२७	११	लि क—वल्गव नसिहदास
२	४५०३ (१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	पञ्चपुराणोक्त	१८४०	१-६	गह वधणोर मध्ये
३	७६६८	अपराधनिरस्त स्तोत्र	गङ्गाकाय (टी रामानन्दभिरु)	१७६७	२	लि क—रामनारायण
४	६६५२	अपराधमुदरस्तोत्र सटीक	रावेन्द्रलक्ष्म्य		७	
५	४४६७	अपामाज्ज स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (वाग्य पुनस्त्यसवाद)	१८०२	८	लि क—परमानन्द
६	४४७७	अष्टांगिनीति नाम	विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१८४०	१०	लि क—दवे सदाशिव
७	५४३८ (६)	अष्टांगिनीति नाम	भगवद्गुण	१८६०	६६-६७	
८	४२३४	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८६०	६	*
९	४२५४	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८६०	३	*
१०	४३७०	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८२०	११	लि क—गमाधर
११	४५१२	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८२०	२५	लि क—जोगी पन्नाल
१२	४०५२	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८६५	१६	सवाई जयपुरमध्ये
१३	४०५७	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८२३	१८	
१४	६७८५	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८०८	२	
१५	४५१३	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८०३	७	लि क—दवे सदाशिव
१६	६०७४	अष्टांगिनीति नाम	अष्टांगिनीति नाम	१८२८	१३	

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलयन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	"	"	१४	
१९	७५८२	"	"	१८	
२०	६३७९	इन्द्राक्षी स्तोत्र	१८वीं श.	५	
२१	४६०४	(१) एकश्लोकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तश्लोकी गीता	१८वीं श.	६६ से ६९	
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसहितोक्त	१२	
२३	५४४८	कार्तवीर्यार्जुन कवच	अमरतन्त्रोक्त	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	२	लि. क.—ब्रजवासी, भ्रूलवर
२५	५७६०	कालिकाखण्डगमला स्तोत्र	महाकालसहितान्तर्गत	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	"	३०	
२७	५१६२	काशीमङ्गल स्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	८	
२८	६२८० (२)	कृष्णकरुणामृत	लीलाशुक्ल	७-१६	लि. क. पुजारी हरदेवदास, गोविंदगढ़
२९	७६१६	कृष्णस्तवराज	१६वीं श.	१०	
३०	४२३६	कौस्तुभस्तोत्र	१८वीं श.	४	
३१	४२३१	गगलहरी	जगन्नाथ भट्ट	२७	
३२	५४२० (२)	गगलहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी. बलदेव	४८-६५	हिन्दी टीका सहित
३३	५५६६	गगलहरी बालबोधिनो टीकासहित	टी. दलपतिराम	३२	
३४	६०५८	गगलहरी टीका	टी. चतुर्भुज मिश्र	५८	लि. क.—सालग्राम

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डोपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र सख्या १०
५६	५२०५ (१२)	चतुःश्लोकी भागवत		"	४७-४८	
५७	४४५२ (५८)	चतुःषष्टियोगिनीस्तव		"	११६वा	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१६वीं श.	६	लि.क.—भरतदास वैष्णव, भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसंहितान्तर्गत	"	६	लि.क.—रामनारायण
६०	६६६७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि.क.—भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श.	७	
६२	४६६६	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१६वीं श.	४	वेदान्तपरक
६३	४२४६	तारा-श्रीरामसवाद	रामायणोक्त	१६वीं श.	५	
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१६वीं श.	११	लि.क.—चतुर्भुज व्यास, अम्बावती
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त	१७४२	४	लि.क.—केशवदास, गढबदनौर
६६	७६१२	दशवतारस्तोत्र		१६वीं श.	१	
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	४	
६८	४५४४	"	"	१७६४	१२	लि.क.—हनुमदुपाध्याय
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८६	१२	
७०	४२०७	दुर्गासिप्तशती		१६वीं श.	३५	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१	४४७६	"		१७७३	५६	लि.क.—रघुनाथजोशी, स. जयपुर
७२	५३२८	"		१८३१	५८	लि.क.—हनुमदुपाध्याय
७३	५४६३	"		१८८६	५८	भोजपत्र पर लिखित
७४	६६२७	"		१७वीं श.	८४	
७५	७१५७	"		१८वीं श.	१६१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्त्ता भादि नावध्य	विधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (पुराणग्रन्थान् भगोदगाध्यायात्)	रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त	१६वीं ग	५१	पत्र १ व ३२वां प्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सत्रभ मुद्रित लिंक-ध्यास भुक्तु-वदास, जोधनगर
७७	५१२०	देवीमहिम्नास्तोत्र	दुर्वास प्रोक्त	१६१७	२२	
७८	५३११	देवीमाहात्म्य	वदव्यास	१८५५	१८	
७९	५२६०	नवाष्टक कृष्णाष्टक	धर्मवगोस्वामी (विदुस?)	१८वीं ग	४	
८०	७७१७(१)	नवस्तोत्रस्तोत्र	गुरुराज	१८५०	२२८-२३०	
८१	५१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं ग	८	
८२	५४६८	,	,	१६वीं ग	४	
८३	५४३८(७)	,	,	१८६०	६७-७३	
८४	५२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श	३	
८५	६४३०	नारायणद्वयस्तोत्र		१६१७	१-४	प्रथम भाग सविन
८६	५२६७	मूर्तिहस्त		१८वीं श	४	
८७	५१७५	पञ्चमूर्ती क्रमशः कवच		१६वीं श	१३	
८८	७६५३	पद्मायुधस्तोत्र	ब्रह्मांडपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	५१७०	पद्ममुद्र्याञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८२८	"		१८वीं ग	८	आष्टापत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पद्मत्रिजगन्निस्तोत्र (२) रामावलीसकल्प		१६वीं ग	१६	प्रथम पत्र प्राप्त
९२	४१७८	योग्यसहरो	जगन्नाथ पट्टिराज	१६१०	१४	लिंक-मोदारास जोशी
९३	४१७९	योग्यसहरो	,	१६१०	१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४	४५१०	पोयूण लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१६१०	११	
६५	५२५६	"	"	१८वीं श.	२६	
६६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
६७	५२४८	बगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श.	७	
६८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१६वीं श.	८	
६९	४१३४	बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		"	३५	
१००	४१५४	भगवती आर्गला फोलकस्तोत्र		"	३	
१०१	४१६२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	"	६	ति.क.—रामशंकर, कुबेरलाल, स्थान—ग्राम मधवासना
१०२	६४२३	"	"	१८०७	६	
१०३	७६६४	भवान्यष्टक	शंकराचार्य	१७६४	१	लि.क.—राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र		१८वीं श.	२२	
१०५	४२५६	भवानीसहस्रनाम		१८६१	२०	लि.क.—गंगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	"		१८वीं श.	३०	
१०७	५७६०	भवानीसहस्रनाम पृथक् पृथक्		१८६८	६	लि.क.—हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१६वीं श.	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतीवत	१८वीं श.	२२	
११०	५२८५	"	"	१६वीं श.	६	
१११	६६६६	"	"	"	१२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्गीकृत आतव्य	तिथि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वनाथोद्भूत	१८वीं श	१२	(४८ कृतिया) ति क - राममेयक, चित्रकट मत्तमें नवग्रहस्तोत्र आदि हे
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वीं श	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र	श्रीवत्सल-विष्णुल-हरिराम-मधुनाथ	१८वीं श	३	
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	नारदीयपुराण	१८वीं श	५४	
१३७	६३७६	यमुनाकिशोर सहस्रनाम	ब्रह्मरहस्यगत	१८वीं श	१२	ति क - गुजारी हरदेवनाम
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	तंत्रोपत	१८११	२१	
१३९	६७४६ (५)	राधाकवच	नैमीषयममोहनतनोपत	१८०६	११७-११८	
१४०	५४५५ (२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	गौतमीयतंत्रोपत	"	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	मर्यादातनोपत	१८०६	१	ति क - गुजारी हरदेवनाम
१४२	६२८० (५)	राधास्तवराज	"	१८१८	२६	
१४३	५४५५	राधासहस्रनामस्तोत्र	"	१८वीं श	२५	
१४४	१५१८	"	"	"	२	
१४५	५२७७	राधिकाष्टकस्तोत्र	चतुर्विंशतिपुराणोक्त	१७६६	१	ति क - गुजारी हरदेवनाम
१४६	७७०२	राधिकास्तोत्र	नारदयोगत	१८०६	२	
१४७	६२८० (७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम	त्रिजगत्सामाचार्य	१८०६	८	
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	विद्यानिग कृति	१८०१	११	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि	नीलकण्ठ	१८०१	६	ति क - गुजारी हरदेवनाम
१५०	६३६६	राम महिम्न स्तोत्रम्	विद्यानिग कृति	१८०१	११	
१५१	६३३२	रामभाकवच	नीलकण्ठ	१८०१	३	
१५२	७६४७	रामरक्षाविजयराजपरिभा	विद्यानिग	१८०१	५	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र		"		

राष्ट्रपति पुरातनशास्त्र विभाग—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-२, १ स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	पृ.पा.नं.	ग्रन्थ नाम	वर्तमान शताब्दी	लिपि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
१५८	६६७६	(१) रामचन्द्रायण (२) विष्णुहृदयस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहिता	१६वीं श.	८	
१५९	६६८०	रामचन्द्रायण	ग्रह संहिता	१६वीं श.	४	
१६०	६६८१	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	३	
१६१	६६८२	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१८	
१६२	६६८३	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१७	
१६३	६६८४	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१-१६	
१६४	६६८५	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१६५	६६८६	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१६६	६६८७	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१६७	६६८८	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१६८	६६८९	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१६९	६६९०	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१७०	६६९१	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१७१	६६९२	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१७२	६६९३	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी
१७३	६६९४	रामचन्द्रायण	सप्तसुन्दरसंहिता	१६वीं श.	१०५-११६	लि. क.—जयलक्ष्मी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८६	लक्ष्मीस्तव	वैकटनाथ वेवास्ताचार्य	१६वीं श	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र		१६०१	४	
१७६	५५१६	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	अथर्वणरहस्योक्त	१६२६	१२	७वीं पत्र अम्रात
१७७	५३१६	लक्ष्मीसहस्रनाम	ब्रह्माण्डपुराणगत	१८२८	१०	
१७८	६४४० (२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१६१७	५-१७	
१७९	७७१३	ब्रजविहार	श्रीधर स्वामी	२०वीं श	२	
१८०	५३३६	वरदगुप्तपञ्चाशत	नारायण	२०वीं श	६	लि क-वैद्यकृष्ण, र का १६०१
१८१	५२३४ (२)	(१) विज्ञातिनामस्तोत्र (२) चतु श्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) विहारी त्तसई के २३ दोहे		१६११	१०-१४	
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श	३२	
१८३	७७२१ (१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र		१८४४	२०३-२०५	लि रु-स्थान देसा
१८४	७७५० (२)	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८६०	२१-२४	लिपि कर्तो-किदानी, लिपि स्थान-नारता
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सायं)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श	५३	टीका हिन्दवीमे
१८७	५२८२	"	महाभारतोक्त	१६वीं श	१३	
१८८	५४३८ (२)	"	"	१८६०	१६-४०	
१८९	५४६०	" (गीतापञ्जरत्न)	"	१८८२	३०१	चित्र मंगला ३

राजस्थान पुरातत्त्ववेधेण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १-स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	२०वीं श.	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	शकराचार्य	१९वीं श.	४	(=१वा अध्याय)
२५०	७७०६	हरिनाममालास्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	"	३	
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	शकराचार्य	"	६	
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र	शकराचार्य	"	३	
२५१	६८२६(२)	(१) हस्तामलक (२) यमुनाष्टक (३) हनुमानाष्टक	नन्ददास	१६०२	१-१४	
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	तुलसीदास	१९वीं श.	५	
२५५	६५८४	क्षमाबोधश्री	शकराचार्य	१८६५	७	लि.क-राममुख रामनारायण
२५६	६६७८	"	वेदाचार्य	१९वीं श.	३	
२५७	५१०६	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय (२) त्रिशतो (३) कल्याणीस्तोत्र (४) ललितास्तवराज	वीरभद्रेश्वरतन्त्रोक्त	१६२५	३१	लि.क-रामकुमार, कोटा
२५८	५१६१	त्रिपुराकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१९वीं श.	३	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१८४४	२०५-२७७	
२६०	४१६३	त्रैलोक्यविजयकवच		१९वीं श.	२४	

क्रमः	प्रमाणः	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नात्व	लिपि समय	पत्र संख्या	विगय उतराखतीय
१	४६६३	प्रपञ्च निरुक्त	माधव अभिनव नारायण-३ सरस्वती	१८६५	१२	लि क -सदासुत गुप्त, जयनगर
२	४६३७	प्रपञ्चसहिता आष्टावर्गार्क		१८०४	११	"
३	४६२८	प्रपञ्चसहिता		१८६२	१३४	लि क -महादेव भट्ट
४	४०६५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	५६	
५	४७०२	प्रपञ्चसहिता		१८६०	५	
६	४६४५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	३०	
७	४६४५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	४४	
८	४६४५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	२१	लि क -भट्ट मयाराम
९	४६४५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१६	लि क -सवाईराम
१०	४६४५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	२४	लि क -चोरेश्वर गुप्त
११	४०१०	प्रपञ्चसहिता	माधव	१८६०	७५	"
१२	४०११	प्रपञ्चसहिता		१८६०	८७	"
१३	४०१२	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१२४	"
१४	४०१३	प्रपञ्चसहिता		१८६०	७२	"
१५	४०१४	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१११	लि क -वड्या चित्तामणि
१६	४०१५	प्रपञ्चसहिता		१८६०	६६	"
१७	४०१६	प्रपञ्चसहिता		१८६०	६८	लि क -चोरेश्वर
१८	४०१७	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१३३	पत्र १६ ४६ ४७ घात्राल
१९	४०१८	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१२७	
२०	४०१९	प्रपञ्चसहिता		१८६०	१२७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१६वीं श	१११	१७वा पत्र अप्राप्त
२२	५०२१	चतुर्थ्याष्टक		१८५३	१२६	
२३	५०२२	पञ्चमाष्टक		१८५५	६७	
२४	५०२३	षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	सप्तमाष्टक		१८५६	६६	
२६	५०२५	अष्टमाष्टक		१८५८	११४	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२७	५५७०	तृतीयाष्टक		१८वीं श	६६	
२८	७६७३	प्रथमाष्टक		१७७५	७४	
२९	७६७४	द्वितीयाष्टक		१७७३	६६	
३०	७६७५	तृतीयाष्टक		१७७५	७२	
३१	७६७६	चतुर्थ्याष्टक		१७७५	१००	लि.क-वीरेश्वर शुक्ल
३२	७६७७	पञ्चमाष्टक		१७२०	८४	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३३	७६७८	षष्ठाष्टक		१७८०	७२	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३४	७६७९	सप्तमाष्टक		१७७४	८२	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३५	७६८०	द्वितीयाष्टक		१६६६	७६	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३६	७६८१	तृतीयाष्टक		१७६३	१६३	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३७	७६८२	"		१७०४	६१	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३८	७६८३	"		१७२६	७१	लि.क-जगन्नाथ, काशी
३९	७६८४	पञ्चमाष्टक		१७७४	७२	लि.क-जगन्नाथ, काशी
४०	७६८५	षष्ठाष्टक		"	११०	लि.क-जगन्नाथ, काशी
४१	७६८६	सप्तमाष्टक		१८५३		लि.क-जगन्नाथ, काशी

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान दिनांक	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
४२	४८६७	अश्वेद प्रतिपाद्य (प्रथमाध्याय)	रघुनाथ	१८वीं श	१६	लिंक - फकीरचंद
४३	४८६८	अश्वेद साहित्य		१७८३	६३	
४४	४८६९	"		१७३०	१५१	
४५	४८७०	अश्वेदानुप्रमणिका		१८५२	१२३	स्वर्णित देवनागरी
४६	४८७१	" (२४)		१७८६	४७	लिंक - रविचंद्र
४७	४८७२	परिभाषाभाष्य		१७८८	१०	
४८	४८७३	अश्वेदानुप्रमणिका विवृति		१८वीं श	१३	अपूर्ण
४९	४८७४	देवीपवित्र		१८वीं श	३	
५०	४८७५	व्यस्योपनिषत्		१८वीं श	१	
५१	४८७६ (२)	कौपीनिक काष्ठ		१५४३	१३३	
५२	४८७७	गोपालतापिपुष्यपवित्र निपाठ सटीक	पानिनीय	१८०१	१६	लिंक - प्रम्वालाल
५३	४८७८	वरुणपूज स्थापना		१७८०	५	लिंक - योतास्वर, का. राजाजीसुत
५४	४८७९	पद्मवैष्णव-उद		१८२४	३	
५५	४८८०	(वीरवितामनिनामा)		१७६६	२६	लिंक - हरिकृष्ण
५६	४८८१	नारायणोपनिषत्		१८वीं श	१३	
५७	४८८२	"		१८वीं श	४	
५८	४८८३	निपाठ		१८१२	२२	लिंक - गुंभाराम तुलाराम व्याससुत
५९	४८८४	निरास		१८वीं श	२६	
६०	४८८५	प्राज्ञा प्रथम भविष्य		१७२४	६३	पत्र ८ प २८ से ४२ तक प्रप्राप्त
६१	४८८६	"		१८वीं श	२३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपंचिका		१८वीं श	४६	
६३	७७०४	" "		"	२२	
६४	५०३५	" द्वितीयपंचिका		"	२८	
६५	५५६६	" "		"	६१	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६६	५०३६	" तृतीयपंचिका		"	३०	
६७	५४८३	" "		"	५५	
६८	५०३७	" चतुर्थपंचिका		"	२४	
६९	५०३८	" पञ्चमपंचिका		"	३०	
७०	५०३९	" षष्ठपंचिका		"	२३	
७१	५०४०	" सप्तमपंचिका		"	२०	
७२	५०४१	" अष्टमपंचिका		"	२०	
७३	६६४४	ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	
७४	४१६४	मण्डल (श्रावणीकर्मज्ञिभूत)		१६वीं श	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण	सायणाचार्य	१७६१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान		१७वीं श.	६	लि.क.—साधवाश्वम शकर
७७	५५७१	मन्त्रसंहिता शान्तिमूक्तानि		१८वीं श	१७१	पत्र २० से ६२ अप्राप्त
७८	५८२३	मन्त्रार्थदीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	आदिके दो पत्र नहीं है लि. क.—मित्रमणि
७९	७७१७	मन्यसूक्त		२०वीं श	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिमन्त्र		१६१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१६वीं श	३	

क्रमांक	क्रमांक	ग्रन्थनाम	वस्तु आदि नूतन्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विंगय उल्लेखनाय
८२	७६६३	भाष्यदिनो संहिता	यातवस्वय	१८५६	५	सि क - रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ सम्प्रान्त
८३	५७०१	मुष्टकशेखर		१९वीं ग	७	
८४	५५८०	नृत्ताय (कटाक्षकाव्यो)		१७८८	३८	
८५	५५७६	वृद्धांगभूतयनयासादि		१९वीं ग	८	
८६	७६६५	द्वन्द्व्याय		१८६६	१३	सि क - रायल वसुभजी सि क - बलभराम कुलभराम नागर विद्यमनगरा
८७	५७२८	यन-भाष्य		१९वीं ग	११	
८८	५५७६	याज्ञानयोगीगना		१९वीं ग	१५	
८९	५२०३	याज्ञानय संहिता		१७९७	१६०	
९०	५००७	, ,		१८४८	१५६	
९१	५२००	, ,		१८वीं ग	१५७	सि क - जयचंद धनंवरसुत सि क - राधाकृष्ण स्थाप भव्यावती
९२	५८०३	, ,		१७८२	१८२	
९३	५६३२	, गुणदि		१८७६	१७०	
९४	५७७८	, ,		१८५२	१५८	
९५	५६३३	, उक्तगुह	भा - १करावाय दिधानवांगरि	१८७६	१०७	सि क - रामकृष्ण
९६	५७७६	, ,		१८७३	६३	सि क - रामगुप्त
९७	५१६७	, ,		१८२८	१५३	
९८	६५६६	याज्ञानयोगी संहितानिषेधा		१८८६	६	सि क - हरिभाई सुपपुर
		वास्यभाष्य संहिता				
९९	७८३०	वर्षिक संहिता (वसतणह)		१५२५	१५५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२६	शिक्षाव्योतिषधन्दासि	श्रीशत्रुघ्न	१७२७	२४	लि. क.—अम्बिकेश्वर श्यामजी- शुक्लसुत, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	” (शाकरोशिक्षा)		१७६७	१५	लि. क.—पुरुषोत्तम
१०२	७५०६	वडङ्गमन्त्रा (मन्त्रार्थदीपिकाख्या- टीकोपेता)		१६वीं श	७५	प्रथम पत्र अग्रप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्याय		१७२४	१०३	लि. क.—करणोदत्त पालीवाल
१०४	४११६	संहिता	ब्राह्मणोक्त	१८६७	१८०	१८०
१०५	५५७७	” (द्वितीयाष्टक)		१७५६	१०४	१०४
१०६	५००१	संहितैकादशप्रकाश		१६वीं श	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४६५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७६८	६१	लि. क.—दीनानाथ
१०८	४६४१	हृदयकाण्ड	ब्राह्मणोक्त	१६८७	२११	लि. क.—सेदपाटज्ञातीय वासुदेव
१०९	७७७१	त्र्युचाभाष्य		१६१७	२	२
११०	७७७८	त्र्युचाभाष्य		१६३७	२	२

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तार आदि नातव्य	निर्गम समय	पत्र सरया	विगप उल्लखनीय
१	४४४६	प्रगिनट्योपपद्धति	वेव यात्रिक	१८६६	८४	काव्यापनसूत्रोक्त
२	४४४७	, प्रगिनट्योपपद्धति	, भविष्योत्तरे	१८६५	८२	लिक -उमाशकर शुक्ल
३	४४४८	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	११	लिक -मद्वराम आचार्य
४	४४४९	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	४३	लिक -कुलभजन तिवारी
५	४४५०	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	१३	श्रीवीर्य
६	४४५१	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	३	
७	४४५२	प्रगिनट्योपपद्धति	प्रगिनट्योपपद्धति	१८००	५	लिक -लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	४४५३	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	१४	
९	४४५४	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	२१	
१०	४४५५	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	२६	
११	४४५६	प्रगिनट्योपपद्धति	नारायण	१८००	१०७	
१२	४४५७	प्रगिनट्योपपद्धति	नारायण	१८००	६४	
१३	४४५८	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	१०७	
१४	४४५९	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	४२	लिक -द्वधाराम व्यास
१५	४४६०	प्रगिनट्योपपद्धति	देवयात्रिक	१८००	४२	लिक -प्रदुराम
१६	४४६१	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	६	
१७	४४६२	प्रगिनट्योपपद्धति	भविष्यपुराणोक्त	१८००	४	लिक -छेदालाल, पंडित
१८	४४६३	प्रगिनट्योपपद्धति	कर्कचाप	१८००	१६	लिक -मुलदेव गोल्बाल
१९	४४६४	प्रगिनट्योपपद्धति		१८००	१६	मुलदेवमध्ये

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४६२५	कर्मप्रदीप	गोभिलोक्त	१६वीं श.	३३	१५वा पत्र अप्राप्त
२०	४६८७	"		१५६६	३५	लि. क-कालुआ महल, महसाणा
२१	४६४६	कात्यायनश्रौतसूत्र	देव याज्ञिक	१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	"	१८६४	१५६	
२३	५४६४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	"	१८वीं श	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि		१८२२	६	
२५	४६६५	कुण्डकल्पद्रुम	माधव	१८१०	१८	र का-१७१२
२६	५७४६	"	"	१६वीं श.	१०	लि. क.-ऋषीश्वर शुक्ल
२७	४६६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	बलभद्रशुक्ल	१८वीं श.	१५	"
२८	४६७८	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	रामचन्द्र नैमिषवासी	१८१७	३१	"
२९	५६१८	कुण्डप्रदायक सटीक	महादेव राजगुरु	१६२६	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	विट्ठल दीक्षित	१६वीं श.	४२	
३१	४५२७	" विवृति	"	१८वीं श.	२५	लि क-शुद्धत शुक्ल जम्बूसर
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१६वीं श.	८६	
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	मू शकर भट्ट टी रघुवीर दीक्षित	१६वीं श. १८६४	११	लि क-अजवासी सिल्लु.
३४	४६६७	कुशकण्डिका	विश्वनाथ	१६वीं श	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	"	१८६०	१०६	
३६	४६५१	"	"	१८वीं श	७५	जीर्ण प्रति

क्रमांक	यगांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि ज्ञात य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४६६३	नियामदति	देवयातिक प्रजापतिमुत्त	१७८२	२६	लि क—नन्दिकेश्वर
३८	४७४१	प्रहजपदानविधि	देवलीन दन जीवान दसुत्त	१६वीं श	११	
३९	४७२९	प्रहगाति	बद्ध बगिष्ठ	१६१०	२१	लि क—राधाकिंगन मंडोता ग्राम
४०	४४८	प्रहगातिप्रकार (पदति)	योद्धराज	१, १वीं श	१२	
४१	४१८५	प्रहगातिप्रकार	हेरम्ब निम्ब	१६वीं श	८३	अप्य न स १६ तक अग्राल
४२	४१२५	प्रहगातिप्रकार	हेरम्ब निम्ब	१८६३	२८	
४३	४७६५ (१)	"	हेरम्ब निम्ब	१६वीं श	१८२	
४४	४०४४	"	हेरम्ब निम्ब	१६वीं श	१९	
४५	४६१४	गणपदति	नारायणभट्ट रामेश्वरमुत्त	१७५१	१३	लि क—धामदेव
४६	४७१९	गणपदति	"	१८वीं श	२२	
४७	४६३६	गणपदति	बसुदेव दोसित	१६वीं श	३१	
४८	४६६१	गणपदति	बसुदेव दोसित	१८वीं श	६३	
४९	४७६५ (२)	गणपदति	बसुदेव दोसित	१८वीं श	८२	
५०	४१३०	गोदानपदति	बसुदेव दोसित	१८वीं श	८८	
५१	४५६०	पतनपुत्रादान विधि	बसुदेव दोसित	१८६३	३	लि क—बजवासीसिल्लु, काशी
५२	४५३२	जन्मदिवसहृत्यम	बसुदेव दोसित	१८४०	४	लि क—भट्टराजा पतदत्त जयपुर
५३	४६३४	सपणविधि	बसुदेव दोसित	१८वीं श	५	
५४	४६८१	तिलाविधनुदानविधि	बसुदेव दोसित	१८६५	२	
५५	४६२७	सोयगानाविधि	बसुदेव दोसित	१८वीं श	६	
५६	४६८०	सोयगानाविधि	बसुदेव दोसित	१८६५	१४	लि क—सदासुख गुप्त
५७	४०४१	सुतादानविधि	भट्टोजिदोसितहृतनिरुपतोमुत्त	१८७९	२२	
					३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलादानविधि	गणपति रावल हरिश्चक्रस्तुत	१९६०	६	लि क-माणिकराम भट्ट
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वी श.	८	
६०	४११२	द्वादशालिगीमण्डलदेवतापूजनविधि		१९वी श.	७	रचना १७१६
६१	४९७५	दशकर्मपद्धति		१७१८	३६	लि क-भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर
६२	४१२०	दशरात्र	गणपति रावल हरिश्चक्रस्तुत	१९वी	१०३	
६३	६५७३	दशहराकृत्य		१८३४	४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१८३४	७	लि क-हरगोविन्द दाधीच, सवाई जयपुर
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		१८६३	७	
६६	४६३३	नवाक्षेष्टि	श्रीरत्नलायनगृहसूत्रपरिशिष्ट शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	१९वी श	४	
६७	४९४०	नागबलिप्रयोग		"	२१	
६८	५८६९	नरदाहकर्तव्यता		"	५	प्रयोगसारान्तर्गत
६९	४९३९	नारायणबलि		१७६०	१०	जीर्णप्रति, लि क-नन्दिकेश्वर
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज "	१९वी श	१६	
७१	५००२	"		१९वी श	१५	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८५२	४५	लि क-हरिप्रसाद शर्मा
७३	४१११	प्रतिष्ठासमय		१८वी श.	३७	
७४	४९५७	"		१८८६	३०	लि क.-सम्पतराम शुक्ल, जयपुर
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति	"	१८८८	९	राजादिजय प्रयाणविधि

क्रमांक	प्र-यादु	ग्रंथ नाम	वर्तमानि पातक्य	लिपि समय	पुन संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनल भट्ट	१८४१	१६०	यशोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक धारात्म
७७	४०६३	प्रयोगदीपिका	मयनावाय	१६वीं ग	६६	आनयलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रात्रे-वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि क-कागोनाय पुरातकमिदं नारायणभट्टसूत्रोद्धेवभट्टरथ ।
७९	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	,	१६वीं श	११२	पत्र १, ३६ ४० ७५, ६४ व ६५ वां क्रमात् ।
८०	६५६५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि क रामनारायण सामरथाग्राम धरपूज ।
८१	६५११	प्रायश्चित्तपद्मदानविधि		१६वीं ग	८	लि क-करणगुणकर जोशी
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३६	२	लि क-आशाराम ध्यास,
८३	४६७७	प्रासादवेगसामप्रतिष्ठा		१८१३	२०	मासपुरा
८४	४६४२	प्रतर्कति		१९वीं श	१६	लि क-श्रुपीश्वर ।
८५	४६८६	पद्म-पप्रयोग		१७६४	६	लि क-गोविंद शर्मा
८६	५३३१	पापपट्टनविधि		१६वीं श	८	
८७	४१७४	पार्ष्णिपूजा			६	
८८	६६८४	पार्ष्णिदेव-वर्चितामणपट्टति		१८७३	७	
८९	४११४	पार्ष्णिदेव-रत्नपूजापट्टति	चंद्रचूड	१६वीं श	११	
९०	४२१२	पावणश्राद्धविधि		,		

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६७५	पार्वणश्राद्धविधि	हलायधु	१६०३	६	जीर्ण, खण्डित रामानुजसप्रदायानुसार
६२	६७२७	पिण्डप्रमाण		१८०५	७	
६३	४२११	पितृकैकोद्दिष्टश्राद्ध प्रयोग		१६वीं श.	८	
६४	७८११ (४)	पुरुषसूक्त (षोडशोपचार)		१८वीं श.	८१-८६	
६५	६५०६	ब्राह्मणसर्वस्व		१८०४	१६६	
६६	६६३३	भगवदाराधनप्रकार		१६वीं श.	७	
६७	४६४१	भूतबलि		"	१५	
६८	४६६३	महालक्ष्मीव्रतोद्यापनविधि		"	१३	
६९	४२१०	मातृकैकोद्दिष्टप्रयोग		"	७	
१००	४६४६	मूर्तिप्रतिष्ठाविधि		१८१०	५	* लि. क-गिरिधारी
१०१	७६६७	यजमानपट्टति	गगाधर रामचन्द्रपाठकसुत	१७६४	१७	लि. क-इच्छाराम व्यास
१०२	४६६२	यजुर्गृह्यसूत्र	पारस्कर	१८५६	४८	लि. क-गोविंदराम, श्राम्बर
१०३	४६६६	"	"	१८वीं श.	४०	
१०४	४६६६	" (डोढकाण्ड)	"	१७६८	२४	
१०५	७६०१	यजुर्विधान		१६वीं श.	३५	अपूर्ण
१०६	६४०८	यज्ञोपवीतविधि		१८वीं श.	११	
१०७	४६४२	यात्राविधि		१६वीं श.	३	
१०८	५०६७	योगपट्टविधि		"	१	सत्यासी छत्रधारणविधि
१०९	४१२१	योगिनीपूजनविधि		"	१६	लि. क-श्रम्बाशकर सामग
११०	६६०२	राधाकृष्णवोडशोपचारपूजा		"	५	
१११	५८८८	रामोद्यापनपूजाविधि	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१६०८	११	

क्रमसं०	ग्रन्थसं०	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पत्र संख्या	निगम उद्घोषनीय
११२	७८११(१)	रात्रिसप्ताधिवान आदि	मालजी त्ययलाभट्टसत	१८वीं ग	११८	रचना १६६५, लि क—बासट्टण्य
११३	४६६२	रत्नपट्टति (रत्नवनजरी)		१७१४	५७	यासाख्यत्रय
११४	४६०७	रत्नाभियककम्	महानव पाठक	१६१३	१४	लि क—जानकीलास
११५	४६२०	रत्नाभियकपट्टति	कर्कावाय	१८१४	१८	लि क—सदासुल गुपल, दीकानेर
११६	६४२७	सप्तकारिका		१६४७	१०	लि क—सदासुल गुपल, दीकानेर
११७	४६७६	व्यासपूजापट्टति		१६७६	८८-६६	
११८	५७६५(३)	वटपिनविधि		१६वीं ग	२६	
११९	७६६६	वासुगति		"	२७	
१२०	४६२४	विद्यारत्नसमुच्चय		१८१८	६	लि क—रामचन्द्र
१२१	४५१७	विनायकगति	गणेश	१६४३	१७+१३=३०	लि क—सदासुल
१२२	७१४६	विवाहव्युत्थानम्		१७२५	६	लि क—सदासुल
१२३	४८८८	विवाहपट्टति		१६वीं ग	६६-११७	लि क—रत्नेश्वर व्यास, गयपुर
१२४	५७६५(४)	विवाहविधि (ग्रन्थदीप)		१८६१	१५	राजस्थानी में प्रय संहित
१२५	४५८२	वेदीनतसामादिकम्		१६४३	२३	
१२६	७१४७	वतरण्यादिवान		१६वीं ग	२२	
१२७	४१८६	वागयनाति		१८४५	=	
१२८	४६४१	श्राद्धप्रयोग	नारायणभट्ट	१६वीं ग	५	लि क—मुनीलास
१२९	४६६१		नारायणभट्ट	१८८५	=	प्रयोगरत्नाकरगत
१३०	५३२०			१६वीं ग	२५	
१३१	५४६५					

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५६५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१६वीं श	२५	लि क-शकरदत्त
१३३	४६१५	"		१७६७	७	
१३४	५५१५	" (सावत्सरिक)		१६वीं श	१६	
१३५	५७२६	"		१६१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था-सवाई जयपुर
१३७	७२६५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वीं श	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१६वीं श.	५१	२० वा पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणोविधि (ऋषिपूजन)		१६वीं श	६१	
१४०	४२२१	"	गणपति रावल	१८७२	२१	लि क-कैसोराम, नगर बोली
१४१	७६६१	श्रौताधानपद्धति	कमलाकर रामकृष्णसूत,	१६वीं श.	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	नारायणपौत्र	"	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाकर शुक्ल	१८वीं श	२०	
१४४	४८७२	शान्तिविधान (पत्नीसंस्कारतन)	गर्गोवत	१८४४	३	लि क-रेवादास
१४५	५१७०	शान्तिभाष्य	वशिष्ठोक्त	१८०६	६	लि. क-नेचलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	"	१८वीं श	६८	३७ वां पत्र अप्राप्त ।
१४७	४६५२	शुक्लसूत्र	कात्यायन	१६वीं श.	५	
१४८	४५६६	पटुपिण्डकर्म		"	७	
१४९	५००८	पटुपूजा		१८७०	११	लि. क-उमाशकर
१५०	७६१३	पोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि क-रणद्योउदास, गढ़- चन्दनोर ।

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वर्तमानादि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रोक्त ब्रह्मांडप्रयोग	दातलण्डोक्त	१६१७	५	लि क—भारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन		१६वीं श	१३	
१५३	५७१६	"	यजुर्वेदीय	१७८६	१०	
१५४	६६८१		,	१६वीं श	६	
१५५	६६६२	सपथ (यजुर्वेदीय)		१८२२	८	
१५६	५२५५	सपथा टीका		१६वीं श	११	
१५७	५६६५	सपथापद्धति (सामवेदीय)	भट्टोजिदीक्षित	१८६६	१५	लि क—मुरलीधर गरण
१५८	६६००	सपथाभाष्य	भट्टोजिदीक्षित	१६वीं श	५	
१५९	६५७२	सपथामंत्रव्याख्या		१६४२	६	लि क—मगनराज जोशी
१६०	७७७५	सपथा सटीक (यजुर्वेदीय)		१६०१	४	
१६१	७६६५	सपथामण्डित		१६०८	४	लि क—रघुनाथभक्त काशी
१६२	४५८१	सपथोक्तिरत्नविधि		१६वीं श	४०	लि क—वसुदेवराम मयुरा
१६३	६६४८	सप्ततोभद्रमण्डलपूजाविधि		,	४	
१६४	५७४०	सप्तदेवतास्थानपूजाविधि		,	११७-१३१	
१६५	५७६५ (५)	सिद्धिदिनामकप्रतपद्धति		,	४	
१६६	४५६४	सुप्रसन्नविधि		१८१२	४	लि क—सदाशिव भुक्ल
१६७	४६८५	हरतात्त्विकविधि		१७२८	७	लि क—म सुर
१६८	४६३८	हेमाद्रिप्रयोग		१८वीं श	१२	
१६९	४१८२	हेमाद्रिविधि (स्नान संस्कार)		१८४४	८	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (अप्यदान)	हंसवतीविधानोक्त	१६वीं श	६	
१७१	४५६८	अप्यदान				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विवरण उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्रयचरविधानम्		१६वीं श	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्रयम्बकमन्त्रविधि		१८६३	१६	लि क -बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसध्या (सामवेदीया)		१६२३	१३	
१७५	५७६१	" (यजुर्वेदीया)		१६२५	१२	
१७६	६४२४	"		१८२५	८	लि क -चैनराम मिश्र, भरतपुर

राजस्थान पुरातत्वावयण मंदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, ४-तम त्रयादि]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वृत्ता आदि नातय	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथकट	भङ्गीगसहिता त्रयत	१६वीं श	२६	एकादशपटसात, अमरनाथको यात्राको फल
२	५७८७	सट्टादगाभरमद्वयश्रपटति		१८वीं ग	१७	मोपालमन्तरक
३	५७८३	उपिष्टगणपतिचतुरङ्ग	रुद्रयादलप्रोक्त	१६वीं श	१५	त्रादि में गणपतिग्र है ।
४	५१५०	उडुनकप		१६२७	२४	लि क -रामनारायणमिथ
५	५७६३	उडारकोन	सकलागमसरोक्त	१६वीं श	२४	लि स्वा -व्याना
६	५८२०				२	
७	५४५२ (५७)	घोषयिस्व (चक्र)		१८वीं ग	११४-११६	
८	५७६७	वसवटो	सिद्धमागजन	१८७७	५०	लि क -कुपराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनावितास	पुण्यान-दम्पती-द	१६१६	३३	
१०	५७६६	कातवीयदीपकमदहस्य	उडुमस्तत्रोक्त	१६५१	५	लि क -गदाधर दवत, लि स्वा -वाराणसी
११	६६६२	कातवीयनियदोषविधि		१६०३	५	
१२	५२२८	कातागिनचरपटसोपनिषत्		१८५०	७	लि स्वा -पुष्कर
१३	६७५१	कानागिनदोषनिषत्	नादिदेशवरपुराणोक्त	१६०६	१०	लि क -रामदास
१४	५६१७	कुलाचनदीपिका	जगदानन्द महामहोपाध्याय	१६वीं ग	२४	
१५	५६२३	कुलाणवतत्र			७८	
१६	५७६२				८७	
१७	५३२६	कृष्णचरित	सम्मोहितनगत्	१७६२	१६	५
१८	५८८६	कीर्तिकाचितामणि	प्रतापचन्द्रदेव	१८०६	६८	लि क -आशाराम शानो

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६३५	कौलरहस्य (शतक)	तारणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र- शिष्य	१८८६	१०	लि. क.—रामसुख, जयपुर
२०	७६६०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि. क.—शिवनाथव्यास, जयनगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श.	३	
२२	६३४८	गायत्रीपट्टति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपञ्चंग	रामामतोक्त	१९०७	२०	लि. क.—रामदास कबीरपणी
२४	६२४७	गङ्गोत्तमानिर्णय	गुरुसैवक (श्रीकाल)	१८वीं श.	२२	* रचना—१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल	(गुप्तवतीरहस्यतन्त्रोक्त)	१९वीं श.	२	
२६	७८११ (२)	गौरीकल्प		१८वीं श.		
२७	५१६८	घटाकर्णकल्प		१९वीं श.	२०	आपबुद्धारण्यमायुष्यत, अपूर्ण
२८	५७०२	चण्डिकाचन्दोपिका	काशीनाथभट्ट जयरामसुत	१८६६	२३	लि. क.—सजवासो ज्योतिर्विन्
२९	५८१४	चण्डोप्रयोगविधि	चारणसौगर्भसंभव नागोजीभट्ट	१९००	२७	लि. स्था.—काशी
३०	५८८६	चण्डोपाठप्रयोगविधि		१९वीं श.	२३	लि. क.—दामोदरदास, सिडलपुर गामवासो
३१	७५०६	चण्डोस्तोत्रधारया	नागोजीभट्ट	१८११	६१	
३२	४८६७	तन्त्रीलावती	कर्णसिंह	१८वीं श.	१६	* नृत्योपटलात्
३३	७७११	तत्स्थद्वय (स्वोपज्ञटीकोपेत)	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य	"	१८	* लि. क.—वालमुकुन्द
३४	७६०८	तुम्बादिवीजमन्त्र	नागपुरवाग्मतव्य जयरामसुत	१९वीं श.	१	लि. क.—पेशवदास

राजस्थान पुरातत्त्व वेधण भट्टर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ४-तम अंश-आदि]

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नात्व	निर्गम समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
३५	५७२२	पुरोगोपस्थानविधि	कानोखण्डोल बुद्धिराज	१६१५	५	लि ३-यन्तर्याम ब्राह्मण लि स्था-राजपुर मेवाड
३६	५१२६	नवाण-यासविधि		१६वीं श	२	
३७	५६००	निरुपमात्रा (चोडगपात्रा)		,	६	
३८	५६२६	निरुपमात्रा		१८४७	१४	
३९	५७६५(२)	निरुपमात्रा		१६वीं श	१-२०	
४०	५५१६	निरुपमात्रा		१६वीं श	२०	
४१	७६४४	प्रत्यगिरासुपमत्र		१६१२	१६	लि क-अजयपुरी तिल्लू लि स्था-असवर
४२	४४५२(८६)	प्रभातगाथा तथा विक्रान्त बलु भायत्री		१८वीं श	१२८वीं	
४३	५१२३(५)	पंचवर्ण्यप्रविवान		"	२७-२८	क आदिके ११ पत्र कीटविविधः ।
४४	७७०८	पञ्चरात्रमन्त्रसूत्र		१८वीं श	४८	
४५	५७५७	पञ्चरात्रमन्त्रविधि		१६वीं श	६	
४६	५६२४	पुराणविधि	प्रतापशाहदेव	"	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६२५	,	"	,	२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६२६				११७	दशमकादशकावशतरङ्ग
४९	५६६१	पुराणचरणचक्रिका	देवेंद्राश्रम	"	११२	रचना स० १८३१
५०	५६३८	पुनारत्न	सत्यानन्द	१६२८	२१२	प्रथम मयूख
५१	५७६५(१)		"	१६वीं श	१-६	

क्रमांक	ग्रन्थानुक्रम	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२	५१२५	पूर्णभिक्षेक षडम्नाय मन्त्रादि		१८वीं श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोमे नृसिंहसुन्दरी महामन्त्र, दशमहाविद्या, दशावतार दश-श्लोक, शिवाबलि विधि नाभि-विद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्ण-हवनपद्धति लिखी हुई है।
५३	६८५८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)	मन्त्रचित्तमणिप्रोक्त	१९वीं श.	६	
५४	५००४	बटुकभैरवपद्धति	विश्वसारोद्धारतन्त्रोक्त	१९वीं श.	२३	
५५	४१३५	बटुकभैरवपूजापद्धति		१९वीं श.	२७	
५६	६७६०	बालास्तोत्रादि		१७२८	१६-२४	बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूजास्तोत्र, श्रीवातिकसंस्कृतपाश्वनाथस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र।
५७	७०५६	भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलतन्त्रागत	१८वीं श.	६६	पत्र ६ से १५ अप्राप्त
५८	५४२६	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतडाभरतन्त्रोक्त	१९वीं श.	७४	प्रथमपत्र खंडित।
५९	६४१६	भूतशुद्धि		"	११	
६०	७००३	"		"	७	लि क-भट्ट दयादत्तशर्मा
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृकान्यास		"	२०	
६२	५००५	भैरवपुरुषचरणविधि	शिवागमसारोक्त	"	६	लि क-रामचंद्र शुक्ल
६३	६४४६ (१)	भौमपूजाप्रकार		"	३६-४०	
६४	६७२३	मंगलवत्पूजाविधि	महोदधर	१९१७	६	लि क-विद्याधर
६५	४४४४	मन्त्रमहोदधि		१८०३	१४६	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तमानादि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनाम
६६	५७४८	मन्त्रमहोदधि	महोदधर	१८वीं न	८२	रचना सं० १६४५
६७	५७४४		"	१८वीं न	७४	नौकाटोकासहित
६८	६६४६		"	१८७६	२११	१ न क-गिवदत्त गवल सनाढ्य
६९	४८४८	मन्त्रसिद्धिलक्षण	मोतमतनोबत	१८वीं न	३	माधोपुर कागो
७०	५०४९	महामणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	रदयामनोबत	"	३२	
७१	६२६२	महोनिर्वाणतन (पूवकाण्ड)		१८४२	१४९	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं न	५५	४१वां पत्र अप्राम्त
७३	४२९६	महाविद्याद्वय-लोकविवरण		१४९१(?)	४	कति स्या-सिरोही लि स-१८९१
						प्रतीत होता है ।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणमिधि	नरसिंह	१८००	२७	
७५	५०००	नातकाभिषण्ड	दी रामतीथ	१८वीं न	६	
७६	५६११	मानसोदरनाम सटीक		१८१६	७७	लि क-भक्तिस्तुत
७७	६४१३	मायानोक्तव्य (होकारकल्प)		१८७५	३	लि स्या-विक्रमपुर
७८	५७८०	मातण्डमहात्म्य	भ गीगसहिता तगत	१८वीं न	१५	७ लि क-विम जयराज
७९	४११८	रामपट्टसि (बदोस्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	
८०	४२३९		"	१८वीं न	२६	
८१	४२४५		"	"	३	
८२	५८७८		लक्ष्मोनिवास नरसिंहाभर्मन्य	१७७१	१८	लि क-पुराणोत्पदास वल्लव
						लि स्या-गलता जयपुर

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामसूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	* पत्र १६०वा अप्राप्त
८४	६८०४	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	लि.क.-वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव
८५	४११७	राममन्त्रपटल		१६वीं श.	७	लि. क -अमरदास, खेतडी
८६	७७१६	राममन्त्रविधिपटल		"	१७	
८७	४१६६	राममन्त्रविधिपद्धतिपटल		"	१५	
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुदरोपूजादिविधान)		१६१०	१२२	
८९	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतन्त्रोक्त	१८२४	३१	लि. क -भवानीदत्त
९०	७०५४	तलितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श.	४२	अपूर्ण
९१	५१२६	वरदगणेशपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलान्तर्गत	१६वीं श.	२६	
९२	४४५२ (५६)	वश्ययन्त्रादि		१८वीं श.	११४वा	
९३	५२३६	वसुधारा (आर्यवसुधारा)	बौद्धकल्प	१६वीं श.	७	*
९४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	बौद्धकल्प	१८६६	६	*
९५	५८०६	श्यामापद्धति		१६वीं श.	८	अन्तर्मे भैरवतन्त्रोक्त जगन्मगल कवच भी है ।
९६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
९७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वीं श.	१०४	पत्र २० से २२की लिखावट
९८	६२२१	"	"	"	२२	अर्वाचीन प्रतीत होती है ।
९९	५५६२	"	"	"	६६	

राजस्थान पुरातनशास्त्र विभाग, भाग-२, ४-संस्कृत-ग्रन्थ

क्रमांक	ग्रन्थनाम	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि	विवरण	लिपि समय	पत्र संख्या	विभाग अलखनीय
१००	श्रीवराहविधि		परमेश्वरमिश्र गजद्विषयगोत्रज	परमेश्वरमिश्र गजद्विषयगोत्रज	१६वीं श	६	परमेश्वरमिश्रगोत्रज
१०१	श्रीविद्यापदस		जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी	जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी	१६वीं न	१५	मन्मथगोत्रज
१०२	श्रीविद्याचरणपदसि		दक्षिणामूर्तिमिश्रद्विषय	दक्षिणामूर्तिमिश्रद्विषय	,	४७	
१०३	श्रीविद्याचरणपदसि		मन्मथगोत्रज	मन्मथगोत्रज	,	३७	
१०४	श्रीविद्यामातामंत्र		सतिशम्भुमिश्रद्विषय	सतिशम्भुमिश्रद्विषय	"	१०	
१०५	श्रीविद्यारत्नमंत्रदीपिका		विद्यारत्न	विद्यारत्न	"	४४	
१०६	मन्मथगोत्रज		रामकृष्णवक्त्र नौलकठनीय	रामकृष्णवक्त्र नौलकठनीय	१८८८	५२	लि क -सदागिब शुक्ल
१०७	मन्मथगोत्रज		मन्मथगोत्रज	मन्मथगोत्रज	१६वीं न	११	भट्टविद्यानाथस्य पुस्तकम्
१०८	मन्मथगोत्रज		दक्षिणामूर्तिमिश्र	दक्षिणामूर्तिमिश्र	,	५२	(मधुन)
१०९	मन्मथगोत्रज		रामकृष्णवक्त्र नौलकठनीय	रामकृष्णवक्त्र नौलकठनीय	१८८८	१२२	
११०	मन्मथगोत्रज		मन्मथगोत्रज	मन्मथगोत्रज	१६११	६५	लि क -जीवनराम द्वाप
१११	मन्मथगोत्रज		दक्षिणामूर्तिमिश्र	दक्षिणामूर्तिमिश्र	१६वीं न	२५	पदलसंघट्टपदलसं
११२	मन्मथगोत्रज		"	"	१८४०	४२	लि क -गंगाधर
११३	मन्मथगोत्रज		दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	१६वीं न	६	
११४	मन्मथगोत्रज		"	"	,	१७	
११५	मन्मथगोत्रज		दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	१७वीं श	१२ १३	लि क -सदागिब शुक्ल
११६	मन्मथगोत्रज		"	"	१८८१	१२४	पदलसंघट्टपदलसं
११७	मन्मथगोत्रज		दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	दी० नौलकठ गोविंदसूरिसूनु	१६वीं न	५१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सत्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	"	२६	४२रचना सं० १७३१
११९	४२०५	सिंहसिद्धान्तसिंघु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	६०२	लि स्या जयपुर
१२०	७६६२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोयत	१७३४	३	लि. क गगापुरी लि स्या
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास्त- भट्ट गोस्वामी)	१६२७	२७२	माण्तोर् ग्राम हाटीतो प्रदेश
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि	रुद्रयामलोयत	१८वीं श.	४६	अपूर्ण
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोयत	२०वीं श.	६	प्रथमपत्र अप्राप्त
१२४	६१२१	"	रुद्रयामलोयत	१७५०	५६	लि क सुगराम
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमञ्जरी	भट्टगदाधर(नानानन्दापर नामवेद्य विमर्शशिष्य शिवशकरसुत श्रम्वगर्भसभूत)	१६१६	१	प्रतिके कोण खण्डित है
१२६	५८१२	"	"	१६वीं श.	२६४	
१२७	५६५६	त्रिपुरारहस्य	"	१६वीं श.	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरामारसमुच्चय	नागभट्ट	"	५१	लि. क. नानूराम यासुण
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शक्राचार्य	१६३४	८६	लि स्या. जयपुर
१३०	५८२६	ज्ञानार्णवतत्र		१६वीं श.	११६	८१वा पत्र अप्राप्त
१३१	६६५६	"		१६वीं श.	८६	

राजस्थान पुरातत्त्ववेद्य मंदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, ५ चमत्कार

क्रमांक	पृष्ठांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान भाग	लिखित समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१	४३७८	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	११	लि. क. देवदत्त बाधोच
२	४५३४	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९४०	२	लि. क. जयनारायण सीता
३	४६२७	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९६३	७३	रामजीका मंदिर
४	४७८६	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	६५	चौधरी देवदत्त रामजीकर
५	४६१६	मंत्रालय	हस्तलिखित	"	८८	पुस्तकालय
६	४६४३	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	६३	लि. क. रामनारायण मिश्र
७	६५६६	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९१५	४०	बाधोच
८	५२२६	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५ के
९	५३८२	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	८४	मंत्रालय। लि. क. किशोरदास
१०	६५१३	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९३८	७२	लि. क. सागरदासपुर
११	४५२६	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	५	७४वा पत्र मंत्रालय
१२	४२५८	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	२३	लि. क. शीवजी के. नयसत
१३	४५३०	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९७०	६	विश्वदत्तलोक व्याख्या
१४	४५३१	मंत्रालय	हस्तलिखित	१९वीं शताब्दी	१६	विश्वदत्तलोक व्याख्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचदशक सभाष्य	मू विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	५
१६	७७९१	" "	टी भट्टाचार्य	१९वीं श.	१०	
१७	४६०२	आशौचसंग्रह सटीक (त्रिशच्छ्लोकी भाष्य)		१९वीं श.	३७	
१८	४६०३	" "		"	६	शिवनदनजीलिखापित, जयपुर
१९	६२२८	" "		१८६९	१६	लि क. मोरेश्वर
२०	५२२०	उत्सवप्रदान	पुरुषोत्तम	१८वीं श.	३८	लि क. दयाराम, जयनगर
२१	४५५९	कालनिर्णयदीपिका	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य	१८१३	२०	लि क. गोविंदराम महाशकर
२२	४९७१	" "	"	१८११	३०	टोडा मध्ये
२३	६९९५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु बालकृष्णभट्टयौत्र	१८६१	१४१	लि क. अनिरुद्र प्रसन्नोरा, प्रति अपूर्ण ।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धत सटीक	मू रघुराम, टी महादेव	१७४०	१४७	५५७ ४७, ८१ मे ८४तक अप्राप्त लि क. हरिराम हलवद्रवासी रचना त. १७०६, १० स्थान भुजपुर । ५८या पर अप्राप्त ।
२५	६२४९	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु	१८वीं श.	६२	
२६	६३८०	गोदानविधि		"	१६	
२७	६५८७	चैत्रशुक्लप्रतिपद्विर्णय	जयसिंहकल्पद्रुमास्तगत	१९वीं श.	८	लि. क. गोपीनाथ ।
२८	६९२४	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर गुण्डरीक	१८वीं श.	७५५	

॥ तिथि ये ॥

॥ ३७ ॥

॥ सवत् १७३२ वैशाख प्रपद शुद्धि २८ शुक्लवाधने ॥ श्री रामायनम् ॥ श्री गीते वि
दायनम् ॥ श्री रामो जयति ॥ सुममस्तु ॥ अष्टमस्तु ॥ अष्टमस्तु ॥ अष्टमस्तु ॥ अष्टमस्तु ॥
पञ्चमे जोरपि स्थाने दोरकर्मलिमंथने ॥ जले च मरणे चेत लातव्यापेन निश्चिन्ता ॥ १ ॥ मन्वादे
न युगादी च ग्रहे च इत्यस्याः ॥ स्वर्गीयादे च धृतो नित्यं लातव्यापिनी तिष्ठि ॥ २ ॥ राहु ह मं
सक्तो विवाहाः ॥ पुराह दिषु ॥ स्नान दानादिकं कुर्यान्निश्चिन्ता ॥ अष्टमस्तु ॥ अष्टमस्तु ॥
दीपा सव कुतो गन्ताद् न दुर्गन्धि आवणी ॥ एकादशी अगस्त्यवर्क नै अस्तके मदा ॥ ४ ॥ अष्ट
मध्यगवाग्रे विवाहे यत्नमउप ॥ राहोदग्नि भोले दुस्तक न विधीयते ॥ ५ ॥ विवाहे नै
तवंधे च नृपे पकरे ले राथा ॥ दुर्गा होमं सुते जाते अभिर्वचनै न दूषति ॥ ६ ॥
॥ निबधो ॥ सध्या क्रान्ते त्वानि जाते स्नात्वा च म्रियथा विधौ तपस्व आसे देवी ततः ॥
ध्यासमाचरेत् ॥ यम ॥ आणया मंत्रं यं जाताः संगे वेद्विगुण चरता ॥ मध्याह्ने त्रिगुणं च
अमथ राक्षसे तु गुणं ॥ सायाह्ने पंचगुणं सध्याति क्रमल भवेत् ॥ रात्रि वधे ॥

३५

॥ राम ॥

३७

क्रमसं.	ग्रंथसं.	ग्रंथ नाम	कर्ता यादि ज्ञातव्य	निर्णय समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
२६	६६६३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१६वीं श	४४१	अष्टम अदित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु भास्कराचल	१६०२	२०	विविध बंधकार जातियोगा वर्णन
३१	७०४१	जीवित्यक्त कलायनियम	रामकृष्णभट्ट नारायणभूषण रामचर पौन	१७४०	२०	प्रथम पत्र अष्टांश
३२	४१२६	लिपिनियम (तिथि दीर्घादि)	अनंतदेव	१७५७	४८	अस्मृतिबौद्धसुभातगत
३३	४६१८ (१)	,	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श	२७	नि क बीरदेव सवत्र (त)
३४	४६०१	,	मयाराय भट्ट	१८३४	१२	नेपाले ८३४
३५	७५६५	,	निवासन व नट्ट	१७३२	३७	कतानि जीवतकालमें लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीर्घादि	अनंतदेव	१८वीं श	१४	अस्मृतिबौद्धसुभातगत
३७	४६२६	दानपद्धिका	अनंतदेव	१८६८	६८	लि क सदासुख गुवल
३८	७५६५	दानयम प्रकारण	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१६वीं श	३०१	आद्य १५ पत्र अष्टांश
३९	४६४७	, सण्ड	हेमाद्रि	१७६६	३३६	चतुर्वर्गविज्ञानमणित
४०	४६८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुष्पगतम	१६१६	७	नि क भगवतीवात
४१	४५४०	देवालयगृहदिव्याष्टदीर्घादि	अनंतदेव	१८वीं श	४२	५.लि क धामनमुवल
४२	५११३	धमप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट	१८७६	१७५	लि क वरधन रामप्रसाद सधकपुर
४३	४६०५	पालतण्डित (डाकड्यादिबत निर्णय)	सुनु धीनारायणभट्ट	१६वीं श	६	#

क्रमांक	अङ्कांक	ग्रन्थ नाम	तर्ता प्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६६५७	निर्णयसिद्धि	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	ति क हरिदास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन	१५३५	२३०	लि. क. पाठक वानरसुत
४६	४५८३	"	महीमहेन्द्र	१६७०	१८०	पाठक परमात्मा
४७	५१६४	नीतिसमूह	वल्लालदेव	१८वीं श.	५०	(अपूर्ण)
४८	५७०६	पायश्चित्तकदम्बनिर्णय	नीलकण्ठभट्ट शङ्करसूनु	१६०७	५३	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	गोपाल न्यायपचानन भट्टाचार्य	१६वीं श.	१०६	* पत्र ७, ६१, ६२, ७० से ७३
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	नीलकण्ठ	१५वीं श.	१५६	तथा श्रुत्य पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	"	विवृतिकार माधव	१८३३	५०८	६६वां पत्र अप्राप्त
५२	७७७९	"	"	१७७१	१८६	लि. क.—रामनारायण मिश्र
५३	४५६३	"	"	१७वीं श.	१६०	ज्ञाकभरीवासी
५४	४४४६	मदनपरिजात	भट्ट विवेकेश्वर कौशिक (?)	१७८६	३८४	अपूर्ण
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि		१६वीं श.	६	श्रुति क.—वीरेश्वर शुक्ल
५६	६००८	महादानपद्धति.	रूपनारायण	१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४६६०	महावत		१८वीं श.	१२	लि. क.—ऋषीश्वर
५८	६१२६ (१)	महावतकथा	गोविन्दपण्डित	१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महावतभाष्य	नीलकण्ठ	१७४१	३४	"
६०	४६८२	महाभाषित		१८६६	६	लि. क.—सदासुख

क्रमिक	प्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्तु श्रादि नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	भाष्यदीपकालनिर्णयकारिका	भाष्य	१८वीं श	१२	*
६२	४५१६	मानवधम्मपात्रसंहिता	भगुप्रोक्त	१८वीं श	१३१	
६३	४५३७	यमप्रणीतधम्मपात्र		१८वीं श	४	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६४	४३८३	यासकवचयस्मतिटीका (मिताकरा प्रथमाध्याय)	विज्ञान-वर श्रीपयनाभ भट्टोपाध्यायारज	१५७८	६२	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६५	४३८४	, द्वितीयाध्याय	,	,	१६३	
६६	४६४५	, तृतीयाध्याय	,	१८वीं श	४०	
६७	४३८५	, तृतीयाध्याय	,	१८वीं श	१४१	
६८	५१६३	, प्रथमाध्याय	,	१८११	१४३	आवितस्तसोयाध्यायात्
६९	६४५१	द्वितीयाध्याय	,	१७वीं श	७५	गुणनिवेदनेवरस्येवमुक्तम्
७०	६४५२	तृतीयाध्याय	"	,	१३२	"
७१	६४५३		,	,	१७६	१५०वां पत्र अप्राप्त
७२	६५४६		,	१८६६	८८	ति क-वकुण्ठनाय धम्महार खण्ड मात्र
७३	४६१६	मूल		१७८२	४७	ति क उडवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदानजतकान्तिदीधिति	ग्रन्त तलेव	१६वीं ग	६७	स्मृतिस्तुनात्गत प्रथम पत्र तथा प ६७ से आग पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४६३८	रजोवशनशान्ति		१८६५	७	ति क सदासुखशिवल जयपुर
७६	४३५०	रत्नसंग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	*

क्रम	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श.	३३	तृतीयाध्यायपर्यन्त
७८	४५४२	व्यासस्मृति	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८वीं श.	५	लि क गङ्गाराम । लि स्या
७९	६६१५	" " गृहस्थाह्निकम्		"	११	जयपुर । पत्र ५२ व ३८९से
८०	४९२६	व्रताकं		१८९२	५८३	३९४ तक अप्राप्त । प्रति मे दो
						तरहके पत्र हैं । ५१४ से ५७०
						तकके पत्र दूसरी प्रकारके व
						छोटे है तथा इनमें पत्र सं.
						१७० तक स्वतन्त्र सख्या भी
						लगी है ।
८१	५८२१	वार्पिककृत्य		१९वीं श.	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२०से
						२२३ तक अप्राप्त
८२	४५८४	विश्वदाशं	कविकांतसरस्वती आदित्याचार्य- मुनि	१६७५	२०	११वा पत्र अप्राप्त
८३	६७१९	विश्वेश्वरस्मृति	कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य	१८वीं श.	७	
८४	४५३६	वृद्धशांतातपधर्मशास्त्र		१८वीं श.	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा	श्रीनिवासाचार्य	१९वीं श.	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि		१८वीं श.	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय		१९०५	२०	रामार्चनचन्द्रिकादिके आधार
						पर संगृहीत
८८	४५३३	शङ्खस्मृति (शाखशास्त्र)	शङ्खप्रोक्त	१८४१	११	*

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८८	४४४७	गालावनसूत्रभाष्य	वरदत्तसूत ?	१६०६	१५४	*
८९	४६४८	शांतिमयूत	नीलकण्ठ	१७७८	१५८	कीर्तिविद्ध । डाक्टर नाथूरामस्य पुस्तकम् ।
९१	६०७५			१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० पृ. ८१ वा अन्तर्गत
९२	४६३१	गानिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णराम	१८८७	६१	लि. ॥ सदासुतगुरुवर्य, जयनगर
९३	४३८०			१८९०	१२३	
९४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि		१८९०	१५	जयसिंहकल्पद्रोमोक्त
९५	५१४२	गुह्यविषयक	शुद्धरत्नसमीपरात्मज हेल धरानेज	१७६८	१४	लि. क. रामभक्त सारस्वत
९६	४६३४	गौतमकथलाकर	भट्ट कमलाकर	१८६०	६५	लि. क. सदासुतगुरुवर्य, जयपुर
९७	५५७८	स्मृतनिष्कृतिपद्धति	दिव्यकर भट्ट	१७०६ शक	७१	पत्र ६ से १५, २३ २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७ वा पत्र अन्तर्गत
९८	४६६८	स्मृत्याहिक (स्मृतिमुच्यय)		१७५८	२४	लि. क. सत्तारामभट्ट उल्लसप
९९	४५३६	स्मृतिकौस्तुभ-सत्तारदीधिति	अनन्तदेव	१८९०	६७	नामक भाई भट्ट सन्तु
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	लि. क. ठा. सीताधर
१०१	४६३६	"		१७६७	२०	लि. स्या. कोटा
१०२	६०६३	सत्तारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८९०	१३५	लि. क. तिवाडी शिवजीराम
						दायमी, लि. स्या. भादेर
						पत्र ३४, ३५, ३६ अन्तर्गत
						लि. लट्ट, यदाधरसुत जयकृष्ण

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	संस्कारप्रयोगसंग्रह	सर्वतन्त्रविप्रोक्त श्रीशूलपाणि	१८वीं श	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	संस्कारपद्धतिसंग्रह		"	२५	
१०५	५२५३	संग्रहल्लोका		१६२३	२१	
१०६	४५३५	सर्वतन्त्रस्मृति		१८४०	८	
१०७	४६७६	सापिण्ड्यविवेक		१७१६	५	लि क श्रीरत्नाकर भट्टास्मज भट्टाशकर । लि स्था काशी
१०८	५५४६	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	५१वा पत्र अप्राप्त ।
१०९	४५८६	हेमाद्रिकालनिर्णय	भट्टोजीदीक्षित	१८वीं श	४५	लि क आशानन्द व्यास
११०	७७७०	त्रिशन्खलोकीभाष्य		१८८४	३१	लि क. नाथूराम भालूक
१११	५३४२	त्रिशन्खलोकीसटीक		१८५४	१८	
११२	४६३५	"		१८६६	१७	लि क सम्पतराम
११३	६६०३	ज्ञानभास्कर		१६वीं श	१३८	

राजस्थान पुरातत्वावेपण सदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, ६-पुराण कथा माहात्म्यादि]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्ता आदि नात-य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	ग्रंथततोपाख्या	पद्मपुराणोक्त	१८३१	२	लि क देवदूत दायीच पुरो हित चक्षुपुरे (वाकसू ?)
२	४४६१	ग्रंथस्य कथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८वीं न	=	
३	४८६४	(मध्यदलविधि)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८वीं श	=	
४	६६७३		,	१८३१	४	लि क रामचन्द्र
५	४२२०	ग्रंथस्वाध्यायपूजाकथा	,	१८१४	=	लि क केशोराम कायकुत्र
६	४३७६ (१४)	ग्रंथतनायकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं न	१८६ से २०२	ब्राह्मण नगर बोली
७	४१२२	ग्रंथतशतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१८वीं न	१०	
८	६६७०		"	१८३२	=	
९	६६५४	अथ देवमाहोत्सव	स्कन्दपुराणोक्त	१८०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय		१८४३	४६	लि स्वा—उदयपुर
११	४१६०	एकात्मिमाहोत्सव	वायुपुराणोक्त	१८१३	१०४	ग्रंथ राजस्थानीमें है
१२	४०४४	पुनर्वशीमाहोत्सवकथा साथ	विश्वपुराणसंकलित	१८१३	२८	लि क रामचन्द्र ग्राम काणगी मेवाड़देश
१३	४४५२	एकादशीकथासंग्रह	"	१८०८	६१	लि क यज्ञेश्वरदेव भाष्ट ४ यज्ञ अग्रप्राप्त
१४	६४०६	(अष्टम)	"	१८वीं श	१६	भाष्टपत्र से फाल्गुन कृ एका दशी कथापयत्त
१५	६७२६	ऋषिपञ्चमोक्तथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६१	ऋषिपञ्चमोक्तोद्योग	भविष्योत्तरपुराणगत	१८वीं न	७	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर--हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-पुराण-कथा-माहात्म्यादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलकादशीमाहात्म्य	अष्टाण्डपुराणोक्त	१६वीं श.	४	कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास
१८	६७०४	कामदेकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	की एकादशी होती है
१९	५४४४	कार्तिककृष्णकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	'रमा' एकादशी
२०	४०९७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि क घनश्याम लि. क. गोविन्दव्यास गुर्जरगौड अजयपुर
२१	४१०७	"	पद्मपुराणोक्त	१८५६	४५	लि क. नन्दभाट्ट विद्यार्थी
२२	४२०६	"	"	१८५१	५१	लि क गगविष्णु कान्यकुब्ज, चौली नगर
२३	४५५४	" (एकादशी कथा संग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वा पत्र गपात्त लि क. रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२४	६५४८	"	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१६वीं श.	३८	
२५	६५६७	"	"	"	५१	
२६	६६०७	"	अष्टनारदीयपुराणोक्त	१८७६	५७	
२७	६६०८	"	पद्मपुराणोक्त	१६वीं श.	२२	
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	"	१६वी श.	६	अध्यायनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	वेदव्यास	१८४८	२००	१६५वा पत्र अप्राप्ता लि क मोतीराम
३०	४४४३	कैदारखण्ड	स्कन्दपुराणोक्त	१७६६	६७	शैवप्रकरण
३१	४६०१	गङ्गा माहात्म्य	"	१६वीं श.	७	जागोदेवरस्यपुराकम्

क्रमांक	प्रमाण	प्रमाण नाम	प्रमाण माहिती प्राप्त	निर्माण मय	प्रमाण सख्या	विषय उल्लेखनीय
३१	४४६०	मणालयपुरीच्या	१८२०	१८०४	१	लि. क. न. व. रामध्यात
३२	४४६१	मणालयपुरीच्या	१८२१	१८०५	२	लि. क. न. नृसिंह भट्ट तक्षकेश्वरी
३३	४४६२	मणालयपुरीच्या	१८२२	१८०६	३	प्रतनन्तर
३४	४४६३	मणालयपुरीच्या	१८२३	१८०७	४	प्रतनन्तर
३५	४४६४	मणालयपुरीच्या	१८२४	१८०८	५	प्रतनन्तर
३६	४४६५	मणालयपुरीच्या	१८२५	१८०९	६	प्रतनन्तर
३७	४४६६	मणालयपुरीच्या	१८२६	१८१०	७	प्रतनन्तर
३८	४४६७	मणालयपुरीच्या	१८२७	१८११	८	प्रतनन्तर
३९	४४६८	मणालयपुरीच्या	१८२८	१८१२	९	प्रतनन्तर
४०	४४६९	मणालयपुरीच्या	१८२९	१८१३	१०	प्रतनन्तर
४१	४४७०	मणालयपुरीच्या	१८३०	१८१४	११	प्रतनन्तर
४२	४४७१	मणालयपुरीच्या	१८३१	१८१५	१२	प्रतनन्तर
४३	४४७२	मणालयपुरीच्या	१८३२	१८१६	१३	प्रतनन्तर
४४	४४७३	मणालयपुरीच्या	१८३३	१८१७	१४	प्रतनन्तर
४५	४४७४	मणालयपुरीच्या	१८३४	१८१८	१५	प्रतनन्तर
४६	४४७५	मणालयपुरीच्या	१८३५	१८१९	१६	प्रतनन्तर
४७	४४७६	मणालयपुरीच्या	१८३६	१८२०	१७	प्रतनन्तर
४८	४४७७	मणालयपुरीच्या	१८३७	१८२१	१८	प्रतनन्तर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८६	दानभागवत	कुवेरानन्दवर्णि	१६वीं श.	११२	लि. क. गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज
५१	४२१८	देवप्रबोधनीएकादशीव्रतकथा	विष्णु०	१८५३	१२	बौलीनगर (जयपुराज्यान्तर्गत)
५२	५२०५ (१५)	धरणीशेखसवाद	ब्रह्माण्ड०	१८वीं श.	६४-६६	गुडका-जिससे रामगीता, राम-
५३	६८३६	नासिकेतपुराण		१८६५	६२	स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता
५४	५६५२	नित्यविहारलीला	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	भी हैं माथुरा राजद्वारकादास कारायित टिप्पणी
५५	६७०६	निर्जलकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्त०	१८६१	४	
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा	पद्मपुराणोक्त	१६वीं श.	७	
५७	६६०१	"	"	१८७७	४	लि. क. रामलाल
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्द०	२०वीं श.	११	
५९	४५४८	पञ्चपर्वमाहात्म्य	गरुड० वराह० नारदीय०	१६२३	११	लि. क. घनदयाम ब्राह्मण पाराशर
६०	५५४२	पद्मपुराण (पातालखण्ड)		१८३८	४३	१४वाँ पत्र अप्राप्त
६१	६५६०	पुरुषोत्तमसमासमाहात्म्य	स्कन्द०	१८६६	४१	लि. क. रामनारायण मिश्र
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	४३	विष्णुसुहृलनाम
६३	७७७७	पुष्करणीपाख्यान	स्कन्द०	"	६	
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)	टी. विवेकेश्वर	१७६५	८३	'गौडज्ञातीयभट्टरामनन्दनाम्नेन वीरनन्दनेन लिखित व्यास क्षेत्रे' ३६वाँ ६२वाँ पत्र अप्राप्त

राजस्थान पुरातत्त्व विभाग मंत्रालय, भारत-२, ६-पुराण कथा माहुरग्यादि]

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान प्राप्ति	निधि समय	पत्र संख्या	विवरण उल्लेखनीय
६५	६५८६	पुराण माहुरग्यादि	पृथक्	१७६६	६६	लि. व. मोतीराम मय, रूप
६६	७०१७			१८३७	५६	नगरमध्ये तालदासजीपठनाथ
						सलेमाबाद
६७	७०३३			१८४०	२१	आद्यपत्र प्राप्त
६८	७०४६			१७६५	६६	आद्य २ पत्र प्राप्त
६९	७०५१	महाभारतपुराण (महाभारत)		१८६१	१०१	
७०	६६६०			१८६१	६६	
७१	६६६३				१७५	
७२	६६६६				७७	
७३	६६६९			१७६८	१३३	लि. क. जतीलालजी सवाई जय
७४	६६७२	महाभारतपुराण				पुरे महाराजाधिराज सवाई जय
						सिंहराज्ये
						चित्र सं. ६
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त)		१८४०	६७	अति क. धन्यामपल्लीवाल
		सवित्र				लिटि. मु. दर, प्राद्यत पत्रोपर चित्र
७६	५४६५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)		१८७१	११३	
७७	५२३०	(द्वितीयस्कन्ध)		१८४०	५२	
७८	५३१७(१)	सजिद सटीक	श्रीधर स्वामी	१८४०	१४०	
		(प्रथम द्वितीयस्कन्ध)				
७९	५३१७(२)	(तृतीयस्कन्ध)				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध) (पञ्चम ")	दी श्रीधरस्वामी	१६वीं श	१-१२१	लिपि सुन्दर प्राद्यत्तपत्रो पर चित्र
८१	४३१७(४)	" (षष्ठस्कन्ध) (सप्तमस्कन्ध)	"	"	१-६४ १-७८	" आद्यत्त पत्र सचित्र; लिपि सुन्दर एक जित्तमे
८२	४३१७(५)	" (अष्टमस्कन्ध) (नवमस्कन्ध)	"	"	१-७२ १-६२	"
८३	४३१७(६)	" (दशमस्कन्धपूर्वाङ्क) (दशम उत्तराङ्क)	"	"	१७७ १६१	"
८४	४३१७(७)	" सटीक	दी०श्रीधरस्वामी	१७६८	११	लि. स्या मालपुरा
८५	७०२१	"	"	१८वीं श.	६५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८६	७०३२	" (दशम पूर्वाङ्क) (दशम उत्तराङ्क)	"	१८२६	८८	प्रति कीटभुग्न
८७	७०२७	"	"	"	८६	"
८८	७०२८	" क्रमसन्दर्भटीका (प्रथमस्कन्ध)	"	१८वीं श.	२४	"तो सन्तोषयता सन्तो श्रीलरूप- सनातनी । वाक्षिणात्येन भट्टेन पुनरेतद्विचिच्यते "
८९	६४७७	"	"	"	१७	"
९०	६४७८	" क्रमसन्दर्भटीका (द्वितीयस्कन्ध) (चतुर्थस्कन्ध)	"	"	२१	"
९१	६४८६	" (सप्तम ") (अष्टम ")	"	"	६	"
९२	६४८०	" (नवम ") (दशम ")	"	"	६	"
९३	६४८१	"	"	"	६	"
९४	६४८२	"	"	"	१०६	"
९५	६४८३	"	"	१७६८	१०६	"

क्रमांक	प्रमाण	अय नाम	वर्ता आदि चालव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विगप उत्प्रेक्षणीय
२६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं ग	३६	०
२७	६४८५	भागवतप्रसन्न वसुटीका द्वादशस्कन्ध		"	८	चित्र सं १२
२८	७८२२	भागवतके सवित्र पत्र	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं ग	१४०-१४६	
२९	६६२५	भागवतके सवित्र पत्र		१८वीं ग	५६६	
१००	६६६४	भागवत सटीक		१८वीं ग	१५३	पञ्चमस्कन्धके चतुर्थ अध्याय तक
१०१	६७०६	" मूल				
१०२	६४७४	(प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७६७	११६	
१०३	६४७५	" द्वितीयस्कन्ध "		१७६८	६	
१०४	६४७२	" तृतीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं ग	५७	४८वीं पत्र अप्राप्त
१०५	६४४६	" सटीक		१८वीं ग	११८	
१०६	६४४०	" सतीतमस्कन्ध		१८०६	६७	लि क भूपरमहंसजत भानपुर मध्य
१०७	६४४१	" पञ्चमस्कन्ध		१७८६	८३	लि का खड्गालिखित दधवाडा प्राप्ते राजा श्री वेदला जगरसिंहजी राज्ये
१०८	६४४२	" षष्ठस्कन्ध		१८वीं ग	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६४४३	" सप्तमस्कन्ध	"	१८१०	६७	२१वीं पत्र अप्राप्त
११०	६४४४	" अष्टमस्कन्ध		१८वीं ग	५८	त्रि भा सोवन्दनदास जती सवाई जयपुर मध्ये

क्रम क्र.	गन्था क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१६वीं श.	५१	६ पत्रोंमें ११ चित्र
११२	७८३४	" दशमस्कन्ध के सचित्रपत्र		"	६	जीर्ण
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१६६८	४०	लि क देवजी रूपपुरनिवासी
११४	६४५०	" "		१६८५	२६२	३१वा अष्टाध्यायमान
११५	५१७६	" "		१६वीं श.	३	लि क दुर्गाभराय जगन्नाथभट्ट मुत्त
११६	५१८४	" "		१८वीं श.	३६२	अन्तर्मे श्रीकृष्णसहस्रनाम और अष्टकादि भी है
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी, वैष्णवतन्त्रिनीटीका	टिप्पणिकार विद्याभूषण	१६वीं श.	५०	
११८	६४६०	" दशमस्कन्ध धप्रकरणद्वयविवृति- प्रकाश	विठ्ठलदीक्षित	"	३६	
११९	६४७६	" दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	१८२	
१२०	६८१५	" भागवत दशमस्कन्धपूर्वखंड सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१६वीं श.	१११	लि क. लक्ष्मीनारायण
१२१	६८१६	" उत्तरखंड	"	१६४५	६८	मुन्देलखण्डे कोचसमीपे
१२२	६४४६	" दशमस्कन्ध (उत्तरखंड) सटीक	टी० परमानन्द	१७५८	१३०	
१२३	६४५६	" " (उत्तरखंड)		१६वीं श.	६८	
१२४	६५५७	" एकादशस्कन्धसटीक	टी० श्रीधरस्वामी	"	१५५	
१२५	६५५८	" द्वादश " "	"	१८वीं श.	४८	
१२६	६४६५	" दशमस्कन्धे जन्माद्यस्यार्थ- प्रकाश	"	१६वीं श.	११	"जन्माद्यस्य"—इस एकही श्लोकके अनेक प्रकारसे अर्थ किए गये हैं

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि तात्पर्य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविवरणकानिरास	पुरुषोत्तम (वल्सभाचार्यचरणानंदवर)	१६वीं श	४	लि क अजिता नगौड, आहण
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	,	१८	गुजरगौड, ग्राम खडारी
१२९	५५४१	भागवत माहोत्स्य	पद्म०	१८वीं ग	६	
१३०	५५५७	,	,	१६वीं ग	२८	पत्र १० से १३ तक अप्रान्त
१३१	६५६८	,	,	१८५५	१५	लि क कवर कालूराम जयपुर
१३२	७५१			१८५५	२५	मध्ये देरा पत्र अप्रान्त
१३३	६५८८	भागवतसप्तमं तत्त्वस दश (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	लि क लियमीराम जोसी नेवटा
१३४	६५८७	भागवतसप्तमं (द्वितीय)		१६वीं श	७८	नगरमध्य
१३५	६५८६	कृष्णसप्तमं (तृतीय)		,	८०	
१३६	५२०५ (११)	भागवतानुक्रमिका	भविष्योत्तर०	१८वीं ग	४२-४७	लि क अजवासी ज्योतिषिद
१३७	५७३७	भीमवतकथा	भविष्योत्तर०	१८६६	३	सारस्वतकुलोत्पन्न रोमा (रोमा)
१३८	६७३६	मत्स्यदेवमाहोत्स्य	,	१६वीं श	१७	
१३९	७५६३	मयूरामाहात्म्य	आदिपुराणपुराण०	१८६६	५०	प्राय ४ पत्र अप्रान्त
१४०	७३०७	(अपूर्ण)		१६वीं ग	४६	
१४१	६६११	महात्सवमीय तकथा	भविष्योत्तर०	१६१६	६	
१४२	४५४६	भागवतमाहात्म्य	पद्म०	१८६२	६८	वसिष्ठ दितोयसबाह

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	साधमाहात्म्य	पद्म०	१६वीं श. १८८६	३६	लि. क. राममुख रामनारायण
१४४	६५६६	"	"	"	४१	सवाईजयपुरमध्य
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	पत्र ३५, ३६ अप्रान्त लि. क. लालबिहारी
१४६	६५६७	"	"	१६वीं श. १८८७	५४	लि. क. गिरिधारी
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८७	१	लि. क. शंकरप्रधान खण्डेला
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	अगस्त्यसहितोक्त	१८८६	६	लि. क. रामनारायण
१४९	६६६७	"	स्कन्द०	१८६२	४	लि. क. रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	भागवतोक्त	१८८६	८	लि. क. राममुख रामनारायण
१५१	६७७८	रासक्रीडा	"	१६१६	२	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	वेदव्यास	१८वीं श. १८१४	३४	लि. क. ऊषाराम
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	"	१६वीं श. २०वीं श.	३७	
१५४	६४६६	"	वराहपुराण	१६वीं श. १७६६	१८६	
१५५	६७४०	लोहार्गलमाहात्म्य	भविष्योत्तर०	२०वीं श.	३	
१५६	६६६८	वटत्रिात्रिका	वेदव्यास	१७६६	६	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ खण्ड)	स्कन्द०	१६वीं श. १६१५	१८१	लि. क. रामनारायणमिश्र
१५८	६५६४	वैशाखमाहात्म्य	पद्म०	१८४२	४६	लि. क. जैराम सवाई जयपुर-
१५९	६६४७	"	"	"	६३	मध्य सवाई प्रतापसिंह राज्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञात-य	त्रिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनाम
१६०	५४८५	निवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम साचरीद में लिखित
१६१	५४८८	निवरात्रिकथा	स्क वपुराणोक्त	१८वीं ग	४	लि क सभूकच व
१६२	६६०६		स्क वपुराणा तगत	१६वीं ग	२	लि क कवर कालूराम
१६३	५४५५	निवरात्रिकथया	सिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्य
१६४	६६१४	सत्यातिमाहात्म्य		१८६०	१	लि क कवर कालूराम
१६५	६६४६	सकटचतुर्थीकथा	स्क वपुराणोक्त	१६३७	४	लि क लोको मोडराम पाटोयो बूवी मध्ये
१६६	६७१२	सकटचतुर्थीकथया	नारदीयपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	स्क वपुराणोक्त	१६३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्याने	श्री-यास	१६वीं ग	६५	
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणा तगत	१८६५	४	लि क वज्रवासी सिंहलु काश्याम
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणा तगत	१६वीं ग	३	प्रथम पत्र काश्याम
१७१	४६३८	हरिवंशपुराणरसकुल्याख्याख्या	हिंगहरिवंशगोस्वामी	१८३५	५२६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त]

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि (गीतागूढार्थ- वीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	६	लि. क. मयाराम लि. स्था. मालपुरा
२	४५६४	अन्तःकरणबोधसधिवृत्तिकविवृति	वत्सभ	१८वीं श.	१६	
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	"	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशान्तिपर्वोक्त	१६वीं श.	६	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शंकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	"	"	"	१०	
७	६७१०	"	"	२०वीं श.	६	
८	७७५७ (४)	"	"	१८५०	१७०-१८६	
९	५३५१	अभयप्रदानसार	वरदाचार्य वैकटनाथाचार्यशिष्य	१८६१	१५	
१०	६६४२	अर्जुनगीता		१८६६	१२	लि. क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपवाम	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि क गोकुल चैरागी शाहगज
१३	५२९४ (२)	अष्टावक्रटीका (अवयूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८६०	३२	लि. क. हरिदेव
१४	६५६६	अष्टावक्रटीका (वाक्यमुधाख्या)	"	१६वीं	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	"	४३	
१६	४६०६	अष्टावक्रसूक्तसटीक (निपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि क रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७ (७)	आत्मनिरूपण	शंकराचार्य	१८५०	२२०-२२२	
१८	४५६१	आत्मबोध	"	१७६६	७	
१९	४६११	"	"	१८वीं श.	६	लि. क. दयावत्त

क्रमांक	प्र. यांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७५५७ (६)	ग्रामयोप	गकराचाय	१८५०	२१०-२१६	लि. क. रामकृष्ण
२१	६६७६	ग्रामयोपप्रकरण	,	१६वीं ग	१७	
२२	६६७७	ग्रामयोपपद्याख्या (विद्वज्जनान-ववा दितो यातयोपिनो)	सकराचायभारावणतोप	१७७४	२३	
२३	४१४१	ग्रामयोपसटीक	गकराचाय	१८वीं श	१७	
२४	४६१२	ग्रामयोपसटीक (प्रकाशिकारत्या)	टीका योगि-राचाय	१६वीं श	१६	
२५	४६१२	ग्रामयोपसटीक	गकराचाय	१६वीं श	१२	रचनाकास स १६३५
२६	६३५४	ग्रामा गामविवेक		१८वीं श	६	
२७	६१५४ (३)	उप-वतनीसमिनिवियति- उत्तरगोता	कपसनातन	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उपदेगजप्रवकट्याख्या	प्रसन्नमेधपवगत	१६वीं ग	१४	
२९	५६१६	वर्णन-वसटीक (मयकौमुदीनाम्नो)	गकराचाय टीका-भूपर कृष्णदास टीका-अबोधान-द सरस्वती	, १८०६	६३	
३१	४५७७	कुम्भकपटुति	रघुरास निविरामसुत	१६वीं ग	२१	लि. क. व्यास हस्तास जूनिया वासो, गव. २१, २२ अग्रप्ल
३२	७०६६	कृष्णसाम	जीवतोस्वामी	१८२०	२४३	
३३	१६८५	गभगोता	,	१८वीं श	१५६	
३४	४५६७	गोतामारोपनसत	अद्वैतातत्त्वसार	"	६	
३५	७६१०	गोरक्ष-तत्र		१६वीं ग	४	
३६	६७८२	गोवि-वर्णनानुवादसटीक	कृष्णदास	, १६४६	१२	लि. क. केगवदास
३७	५४०४				३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिंह	१८वीं श	६४	रचनाकाल १६६५
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	"	३०	प्रति जीर्ण व कीटविह्व है
४०	६०६९	चित्रदीपसटीक	"	१९वीं श	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत		१९०१	४१	
४२	५२०५ (८)	जलभेद	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४०-४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका	कल्याणराम	१७२८	८	
४४	४३८१	तत्त्वभागवत		१८वीं श	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्त्वमुक्तावली	पूर्णनन्द श्रीगौड़	१८४६	६	
४६	५५९९	तत्त्वयाथार्थदीपनम्	गणेशदीक्षित	१९वीं श.	२३	
४७	७१६१	तत्त्वसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८वीं श	१८	
४८	७७५७ (५)	तत्त्वसार	ब्रह्मचैन्यमुनि	१८५०	१८६-२०६	
४९	५३८५ (१)	"	"	१६वीं श		
५०	६०५९	तत्त्वत्रयचूल्हिका	वरदार्प	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्त्वानुसंधान	महादेव सरस्वती मुनि	१७६५	१५	लि. क. सयाराम
५२	६०७०	"	"	१९०१	३६	
५३	६१७३	"	"	१८वीं श.	४६	
५४	६४९२	"	"	१८८६	२०	
५५	६७०५	द्वादशमहावाक्यविवरण		१८७५	३८	लि. क. हरीराम दवे, भावनगर
५६	७७५७ (२)	द्वादशमहावाक्यसिद्धांत		१८५०	५६-१४०	
५७	६८०६	दशरत्नोकीटीका (तत्त्वसारप्रकाशिनो)	नन्ददास	१८२१	८	लि. क. हरचन्द्र, जयपुर
५८	६०६१	नाटकद्वीपव्याख्या	रामकृष्ण विद्यान्	१९वीं श	५	

अमाङ्क	दयाङ्क	ग्र य म	वर्ता आदि नातव्य	त्रिपि समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
५६	७११७	नारदगीता	वस्तुभावाय	१६वीं का	२	
५७	५२०५(१०)	निरोधतक्षण	डो० हरिराय	१७७६	५२वा	प्रथम ३ पत्र समाप्त
५८	७५७५	निरोधतक्षणाटीका	विद्वलदाशित	१८वीं ग	२७	
५९	५२०५(४)	ग्र य	जटभरत (माधवानन्दगिय)	१६वीं का	३६-३७	
६०	५६५२	प्रभावतो	मयुर्वततरवतो	"	=	
६१	५७२५	प्रधानमध	जीवोत्सवो	१८२१	१८	लि क मोतीरामजीशी, जयनगर
६२	५७७२	प्रोत्तिस्वभ (पक्ष)	रसिकोत्त	१८वीं का	७१	
६३	५४६६	प्रमपतनाख्यस-दभयदीक		१६वीं का	८०	
६४	६७१६	पञ्चपाटीव्याख्या	डो० रामकृष्ण	१८वीं का	१२	
६५	७०३१	पञ्चदशीटीका	"	१८६०	४१	
६६	७७८७	पञ्चदशीसिद्धि	डो० विश्वेश्वर	१८वीं ग	१२५	लि क हरिदेव
६७	५२६४(१)	पञ्चीकरणप्रकरण (प्रवयुक्तानुभूति)	डो० ब्रान-दीगिर	१८६०	१५	
६८	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	डो० ब्रान-दीगिर	१६१६	१६	
६९	६१३५	पञ्चावली	योगेश्वर	१८८८	४२	
७०	५३८५(२)	परमात्मप्रकाश	जीवोत्सवो	१६वीं ग	४२	
७१	७०६८	परमात्मस-दभ	विद्याधितास	१८२०	२७	लि क हरिराम व्यास
७२	६१३४	परिभाषावर्ति		१७२४	१३	आख २ पत्र समाप्त
७३	४२१४	पाण्डवगीता		१६वीं ग	१७	
७४	४२४०	"		१८वीं ग	१७	
७५	४२५६	"		१६वीं ग	८	लि क जयकृष्ण
७६	५११२	"		१६वीं ग	११	

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्गीता		१८८६	५४	लि. स्था. डेराबसी
११६	७६०२	"		१८५७	३५	लि. क. गोडजी शोभजी
११७	७८०५	"		१८वीं श.	११७	
११८	७७८५	" (पचोली टीका)		१६४१	४४	एकादश अध्यायपर्यन्त
११९	५७०७	भगवद्गीतासभाष्य	शकराचार्य	१८वीं श.	११७	
१२०	४५५१	"	"	"	११	अपूर्ण
१२१	४३७२	भगवद्गीतासटीक	श्रीधर	१८७५	११३	
१२२	६६४०	"	"	१८७३	१०६	लि. क. रामचन्द्र
१२३	६६५८	" (अर्थसंगृहीत)	श्रीधर		११२	प्रथम पत्र अप्रप्ति
१२४	६६६२	" सुबोधिनीटीका	गोपालभट्ट		११२	
१ ५	६५०५	भगवद्भक्तिविलासटीका		१८वीं श.	६७१	लि. क. गोविन्दराम, जयनगर
१२६	६५२०	महावाक्यार्थविवरण		१८६७	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२७	६०६६	मीमांसा परिभाषा	कृष्णयाजी	१६१७	१७	लि. श्यामदास, मथुरा
१२८	६२८० (१)	मूलसूत्र	ब्रह्मसहितान्तर्गत	१६०६	१-६	लि. पुजारी हरदेवदास
१२९	६२६५	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवासदास	१८वीं श.	२१	
१३०	५२६३	"	"	१८२३	५५	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिष		१६वीं श.	२८	
१३२	५५५१	युगलचरितामृतकथा	वकीधर	१६वीं श.	५८	पत्र २५, ४५, ४६वा अप्रप्ति
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्चेतभिक्षु	१७१६	२३	
१३४	७७५७ (३)	योगवासिष्ठसार		१८५०	१४०-१७०	
१३५	४५५२	" (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विवेकेश्वर	१७८८	२७	लि. क. नारायणदास वेंणव स्थान वृन्दावती

क्रमांक	पृ.पा.सू.	ग्रन्थ नाम	वक्ता आदि गतव्य	निर्णय समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगवास्य	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगवास्यप्रकरण	हेमवद्रावाय	१९वीं श	१०	
१३८	५६०१	योगवास्य (सति)	,	१६वीं श	२८	
१३९	७३२८	योगवास्य (चतुर्थ प्रकरणपञ्चम)	,	१७वीं ग	२६	
१४०	४३५३	योगवास्यप्रकरण काग	,	१५३६	२४	
१४१	४३६	,	,	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगवास्यप्रकरण (चतुर्थ)	भवेदेयमहोपाध्याय	१६७७	१४	सि स्या इत्युप
१४३	५४६५	योगसूत्र (अभिनवभाष्य)	पतञ्जलि	१६१६	३६	
१४४	५५६८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि	१६२३	४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	बाणस्पति	१६१६	०	सि क सायु नीराम, नयनार
१४६	५५६६	योगसूत्रवृत्ति	धारेखर	१६वीं ग	३५	
१४७	४४२६	योगसूत्रभाष्य (योगतार)	याज्ञवल्क्य	१८वीं ग	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं ग	१५	
१४९	६६५५	"	महोपर	१८३६	६	सि पुरोधा देवकुण्ड
१५०	६२२४	रामगीतावृत्ति	"	१६००	१७	सि रामचरण
१५१	६५०३	वयसूची	गणरावाय	१८१८	१७	सि नुभराम
१५२	७७५७ (१२)			१८५०	२३३-२४४	सि भट्ट भास्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८० (३)			१६०६	१६-२०	सि पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वयसूचीसंदर्भानो	धोनिवासदास	१८५१	३	सि घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यसुधाप्रकरण		१६वीं ग	२७	
१५६	४५८०	सटीक	गणरावाय	१८३६	१४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसंग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१६वीं श.	५७	
१५८	५३६३	वातमाला	कविराज भिक्षु	१८वीं श.	३१	
१५९	५२१४	विद्वच्चिन्तप्रसादिनीपदपदीका	श्रीविद्वल	१६०८	१७	लि माखनलाल
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	"	१६००	४६	लि शालिग्राम
१६१	६०७९	"	श्रीचिरजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि जोशी जीवणराम
१६२	४१०६	विद्वन्मोक्षतरंगिणी	"	१६वीं श.	४०	
१६३	५५६७	"	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६४	५६५३	विरोधिपरिहार	श्रीरामानुजदास	१८वीं श.	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६५	५८८६	विवेकत्रयरत्न	शंकराचार्य	१६वीं श.	६	
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	अनन्तराम	१६२१	३२	लि तल्लिताम्रनाथ पारीक
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	रामानुजाचार्य	१६वीं श.	२५	
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	शंकराचार्य	"	४	
१६९	७७०७	वेदान्ततत्त्वज्ञानोत्तररत्नमाला	धर्मराजाध्वगिन्द्र	"	४७	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि. रामनारायण
१७१	६४६३	वेदान्ततत्त्वबली	शंकराचार्य	१८५०	२३२-२३३	
१७२	७७५७ (११)	वेदान्तपदपदी	सदानन्द	१६वीं श.	१४	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	"	१८वीं श.	१७	
१७४	४११६	"	कुण्डानन्द	१६वीं श.	११	पृ. २, ३ अप्राप्त
१७५	४५७५	"	सदानन्द	"	१६	
१७६	४५६६	"	"	१८४१	११	लि दुर्गादत्त
१७७	४६२३	"	"			

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिखित समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१७८	५७०१	यथा-तत्पार	सर्वान्ध	१६वीं ग	१३	लि अचकुर नरहरवत्साल
१७९	६२४१	,	,	१८३६	२३	लि स्वप्नराममिश्र वल्लभगढ़
१८०	६२८३	,	,	१८वीं ग	१३	
१८१	६५१८	,	"	१७९७	२४	लि पण्डा निबन्ध
१८२	७६१७	,		१६वीं ग	१४	
१८३	४६२१	"	गकराचाय	१८वीं ग	१४	
१८४	४६४०		,	१६वीं ग	२५	लि स्वप्नराम
१८५	४९७८	(सुबो-ज्योतीकायुक्त)	नरसिंहसरस्वती	१७२६		स्थान उपपत्तिसंग्रह
१८६	६१७२	यथा-तत्पारदीका (सुबो-ज्योती)	,	१७४०	५१	लि रामसुख रामनारायण
१८७	०५७६	यथा-तत्पारदीका	,	१८८६	२६	
१८८	६१२६	यथा-तत्पारदीका (सटीक)	यत्नमाली	१८वीं ग	१२३	
१८९	४१७६	यथा-तत्पार		१६वीं ग	१६	
१९०	४५६३	यथा-तत्पारसंग्रह	यत्नमाली	,	४३	
१९१	६१६५	यत्नमाली		१८६०	१६	
१९२	५७७३	यत्नमाली (रामायणांतगत)	यत्नमाली	१८वीं ग	१२६	
१९३	४५५०	यत्नमाली	यत्नमाली	१८३६	३१	लि -यास रामरत्न
१९४	७६००	यत्नमाली	यत्नमाली	१८४८	१३	
१९५	४६६४	यत्नमाली (प्रथमप्रकरण)	यत्नमाली	१८४८	१४२	
१९६	४६६४	यत्नमाली (द्वितीय प्रकरण)	यत्नमाली	१८४८	१२८	
१९७	४६६४	यत्नमाली (तृतीय प्रकरण)	यत्नमाली	१८४८	१३२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८	५६६७	शारीरकमीमांसाभाष्य (चतु. अध्याय)	शंकराचार्य	१८७४	५३	
१६९	६२२३	"	"	१७३१	२१८	लि. गिरधारीरामशर्मा गौड
२००	६२३८	"	"	१८५१	२३७	ति रामनारायण
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरभोगत	१६वीं श.	१०	ति बतूराम, बीरपुर
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शंकराचार्य	"	३	
२०३	६३६७	स्वरोदय	तन्त्रोक्त	१६१३	६	
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारदपाचरात्रतन्त्रोक्त	१६वीं श.	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणयाज्ञिक	शंकराचार्य	"	११	इस ग्रन्थ में १५६ श्लोक छव हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध		"	२१	
२०७	५२०५ (६)	संन्यासनिर्णयः	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३८-३९	
२०८	७५७७	संन्यासनिर्णयविवरण	पुरुषोत्तम	१६१३	२४	
२०९	७५८३	संन्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१६वीं श.	२३	
२१०	५२०५ (७)	सर्वसिद्धान्तबालबोध	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३६५	
२११	६२६६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१६३६	४६	
२१२	५६२६	समाधितन्त्र (बालाबोधिनीटीका)	पर्वतधर्मार्थकुन्नुवाचार्यशिष्य	१७४६	७०	
२१३	४४६८	सांख्यवृत्ति	कपिलोदित	१८वीं श.	१५	
२१४	६७६६	सामवेद रहस्योपनिषत्		१८०३	पत्र १-३ अप्राप्त	
२१५	६५६१	सिद्धातवर्षण	विद्याभूषण टी० नन्दिभूष	१६वीं श.	२१	ति साधुरामदास स्या मारोठ
२१६	४५४७	सिद्धातबिन्दु	मधुसूतसरस्वती	१७६५	१२	
२१७	७३७०	"	"	१७६६	५५	
२१८	५२०५ (२)	सिद्धातसुषुप्ताश्रितो	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३२-३३	

क्रमांक	संख्यांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान भाषा	निधि संख्या	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
२१२	७०७१	सेवाप्रकाशकृत्याख्या	गोस्वामी श्रीमज्जाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५ लि. क. इस्तेमाल नागिराम पत्र ७ से २६ तक समाप्त
२२०	५२०५ (६)	सेवाप्रकाश	बल्लभाचार्य	१८५०	४१-४२	
२२१	५५५७	हठमोपनिषद्	स्वामीनाथ योगीन्द्र	१८५०	२२	
२२२	५८७३		,	१८६४	२६	
२२३	६०७६		,	१८६७	२७	
२२४	६७५६		,	१७६५	१७१	लि. मुलाराम
२२५	७७५७ (१)		,	१८५०	१-५६	लि. काशीरामनाथीभास्करभट्ट पत्र ३० वा समाप्त
२२६	५८३३	हठरामवर्त	भट्ट श्रीनिवास	१८०४	३१	लि. जलवासी रोमापुरे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; द-न्याय-दर्शन]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६४०	अनुमाननगिदीधिति	रघुनाथ	१६०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिवरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४६	३४	
३	६१५२	आत्मपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि. जयेश्वर
४	४४६६	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वीं श.	१३	
५	५६२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५८५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१६वीं श.	३४१	अपूर्ण
७	५६८६	"	"	"	२३२	
८	६६३६	जागदीशोन्यायन्याय्या	श्रीगणेश्वर	१६०६	११६	लि. मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वविन्तामणि शब्दखण्ड	अमृतचन्द	१७वीं श.	१४५	
१०	६१८१	तत्त्वदीपिका	विश्वेश्वराश्रम	१८वीं श.	१०२	
११	४४६६	तर्कचिन्त्रिका	भवदेव	१८१४	२१	लि. शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	केशवमिश्र	१६वीं श.	६	
१३	६०२१	तर्कभाषा	गौरीकान्तभट्टाचार्य	१८११	२६	पत्र १६वा प्रप्राप्त
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका (भावार्थदीपिका)	अन्नभट्ट	१८वीं श.	६२	
१५	४४६५	तर्कसंग्रह	"	१८०५	६	लि. चैतनराम, गोजगढ
१६	४५००	"	"	१८३६	११	
१७	५३२५	"	"	१८वीं श.	३	
१८	६०३७	"	"	१८वीं श.	७	
१९	६३६५	"	"	१६००	८	पत्र ६ठा प्रप्राप्त
२०	६८६७	"	"	१६००	२३	लि. प. पन्नालात, लश्कर
२१	६६६४	"	"	७३२	६	लि. श्रीगोविन्दभट्ट

क्र.सं.	सं.सं.	प्र.सं. नाम	वर्तमान प्राप्ति प्राप्त	निर्माण समय	पत्र नम्बरा	निर्माण उल्लेखनीय
२२	७७१२	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६२	६	लि. वनवासो तिल्लु
२३	६१७१	सुरभेष्टतपोविना	सुरभेष्टतपोविना	१८६४	२४	लि. गोरवासो वल्लव
२४	६८२२	सुरभेष्टतपोविना	सुरभेष्टतपोविना	१८६१	२३	
२५	४४३६	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	१३	लि. रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	३८	
२७	६६६६	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	३१	
२८	४३३५	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	६२	
२९	४६०४	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	६७	
३०	७२४५	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	पत्र पत्र संप्रान्त लि. सामु
३१	७३४७	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	सुरभेष्टतपोविना
३२	७३८६	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३३	७४१४	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३४	६५१६	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३५	४६२६	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३६	४६२३	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३७	४४३३	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३८	४३७२	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
३९	६६५१	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना
४०	६७१८	सुरभेष्ट	सुरभेष्ट	१८६५	११	लि. सुरभेष्टतपोविना

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पचानन भट्टाचार्य	१८६२	६	लि व्रजवासी सिल्लुः
४२	५६३६	रत्नाकरावतारिकापत्रिका	देवसूरि	१७००	२५	लि तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण सूत्रार्थ	हरिभद्रसूरि	१७वीं श.	१३१	
४४	७२५५	षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्र	१७वीं श.	२६	
४६	४३५०	षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान-सिरोही
४७	७४८६	स्याह्लादमजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६६	
४८	७३४८	"	"	१५वीं श.	५३	
४९	४४१६	सन्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वीं श.	२०	लि नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	१७वीं श.	७	
५१	५६८८	"	"	"	६	
५२	५६००	सप्तपदार्थीटीका	शोषानन्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थीवृत्ति	बलभद्र	१७वीं श.	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाद	जयराम भट्टाचार्य	१६वीं श.	११	प्रथम पत्र अप्राप्त
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसंग्रहटीका)	विश्वनाथ पचाननभट्टाचार्य	१८वीं श.	५६	
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	"	१८वीं श.	१२०	
५७	६६५५	"	"	१८८४	७३	
५८	५६६४	"	प्रकाशानन्द	१८१०	५७	
५९	६६३८	"	विश्वनाथ	१८६४	६५	

राष्ट्रस्यान पुरातनवायेण मरिचर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ६-व्याकरण]

क्रमांक	पृ. नं.	ग्रन्थ नाम	वर्तमान भाषा	निर्गम समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१	६१०२	मनिकारिका		२०वीं न	३	
२	६११७			१६वीं न	३	
३	६११२			१६वीं न	३	
४	५८८१	मनुष्यकृतमार्गचरित्रकथा	हेमचन्द्र	१६वीं न	१	लि न-वराम शास्त्राण सवाईजयनगर
५	६६१६	मध्ययत्नाख्या		१६वीं न	५	
६	६६६३	मध्ययत्नाख्या		१६वीं न	४	
७	६७००	मध्ययत्नाख्या	पतञ्जलि	१६वीं न	७	लि मगाधिल्लु
८	५०३२	मट्टाव्यायी व्याकरण	पाणिनि	१७६६	११२	लि महुता नामेश्वर भोवीज्य
९	४३७३	मास्यतपादोक्त	रघुपेय	१८८३	३५	नि रामलाल
१०	४३७७	मास्यतपादोक्त	भट्टाचार्य निरोमणि	१६वीं न	७	
११	७४३१	उणादिसूत्रविवरण	हेमचन्द्र	१६वीं न	४०	
१२	४२१६	उणादिसूत्रविवरण	उज्ज्वलदत्त	१७वीं न	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रविवरण	महेश्वर कवि	१७६२	१२	लि रामसुन्दर
१४	४३६६	उणादिसूत्रविवरण	महेश्वर कवि	१८४७	१७	लि विमनराम तेरायथी
१५	४३८५ (४)	कात-महास्या (श्रीमतिहृदयि)		१६वीं न	१७७-१८६	
१६	४६५८	कात-महास्या	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१७वीं न	६	लि मालिग्राम
१७	४८७१	कारकगणनामधेय		१७वीं न	४	लि ज्ञानचन्दोत्त
१८	६१६८		मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१७१६	३	लि दीपचन्द्र
१९	७४५६		वरदत्त	१८४७	३	
२०	६१६१	कारकगणनामधेय	परमपति राठोड	१८वीं न	१३	
२१	६०३१	कारकगणनामधेय		१८वीं न	६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास	रामचन्द्राश्रम वर्द्धमान सूरि	१६२०	५४	लि बलदेव १ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल स० ११६७
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श	४	
२४	५४६२	कुदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)		१८६६	२४	
२५	४३६४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक		१७वीं श	६६	
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)	हर्षकीर्ति सूरि	१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठ		१७५६	२	
२८	७३११	धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ- त्रिवरण)		१७वीं श	८५	
२९	६१००	धातुपाठ	रामचन्द्र	१८६०	२१	पत्र ६३, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२ अप्राप्त
३०	६२७०	धातुरूपावली		१६वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)		१७वीं श.	६३	
३२	७४६२	"	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु रामचन्द्र रामचन्द्र	१७०१	१६०	प्रथम पत्र अप्राप्त पत्र ४२, ४६, ६१, ७३, ८१ से ८६ तक, ९३ वा अप्राप्त पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३३	५१४५	" सटीक (द्विरुपतप्रक्रियान्त)		१८वीं श	३२१	
३४	५४८६	" सुवन्तप्रकरण		१७वीं श.	५९	
३५	५४८८	" तद्धितप्रक्रिया		"	११४	
३६	५४८७	" कुदन्तप्रक्रिया	वैजलभूपति "	"	८८	लि. श्री नृसिंह गुसाई
३७	५००६	प्रबोधचन्द्रिका		१६०६	४२	
३८	५२५१	"		१६२०	४५	

क्रमांक	ग्रंथ संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विंगप उल्लेखनीय
३६	६५७०	प्रक्षोभचंद्रिका	वज्रसंभूति	१६वीं श	१६	
३७	५१५३	प्रदिवसोरमा (पूर्वाव्यति)	भट्टजो दीक्षित	,	४४६	
३८	५१५४	(तिरुत्तार)	,	,	१५३	अपूर्ण
३९	५१५७	परिभाषासूत्र (सिद्धांतकोशभाष्य)		,	३	
४०	५४७१	परिभाषासूत्राणि		१६१६	८	सि गोपीनाथ
४१	६६६४	परिभाषासूत्राणि	भोग भट्ट	१८००	१०३	
४२	५१५५	परिभाषासूत्राणि	भोग भट्ट	१७वीं श	२१	
४३	५६२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठ	भोग भट्ट	१८वीं श	२७	अपूर्ण
४४	५१७६	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठ	भोग भट्ट	१८५५	१८६	
४५	६१६६	भाष्यप्रक्षोभपाठ्यायन (प्रथमखण्ड)	भोग भट्ट	,	११२	
४६	६१७०	(द्वितीयखण्ड)	भोग भट्ट	१६३०	६	
४७	६०५१	भोगभट्टपाठ्यायन	भोग भट्ट	१८२६	३४	राजगढ़े लिखित
४८	५६६६	भोगभट्टपाठ्यायन	भोग भट्ट	१८वीं श	६८	
४९	५१५०	भोगभट्टपाठ्यायन (पूर्वभाग)	भोग भट्ट	१८१२	६३	
५०	५१५१	(उत्तरभाग)	भोग भट्ट	१८वीं श	११३	
५१	६४२६	(विशालासाम्नीटीकासहित)	भोग भट्ट	१८वीं श	११३	
५२	६४२६	भोगभट्टपाठ्यायन	भोग भट्ट	१८३४	८६	पत्र ६६, ६७वीं अक्षर
५३	६४२६	(विशालासाम्नीटीकासहित)	भोग भट्ट	१८३४	६८	सि जती चतुर्सागर जनगर
५४	६४२६	भोगभट्टपाठ्यायन	भोग भट्ट	१८वीं श	१६८	

क्रमाङ्क	गत्याङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	वरदराज	१६१२	५७	लि नन्दलाल
५९	६६७०	लघुशब्देन्द्रशेखर	नागेश	१८वी श.	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६१०	७६	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६०४	६८	
६२	७६८६	"	"	१८७४	६०	लि उमाशंकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वी श.	८	
६४	७२०५	लिङ्गानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि श्रीभा रत्न
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१६वी श	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रदीप	भूपतिमिश्र	१७वी श	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विदाघबोध		१८६०	१४	चैतन्यरसमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतिग्रहणप्रकरण		१६वी श	२	
६९	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कुष्णमिश्र	१८वी श	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	"	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तित्तिनिर्णय)		"	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	नू. महेश्वर टी ज्ञानविसल	"	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरपोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५६२८	शब्दशोभा	नीलकण्ठ शुक्ल	१७२१	२६	रचनाकाल १६८८ सामाने- मध्ये लिखित
७५	५२१७	शब्दसंचय	तेनचिज्जैनमुनिना सकरितः	१७वी श.	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दायसंग्रह		१८६१	३	लि राजवासी सिल्ल-
७७	६५०८	पट्टकारकव्याख्यान	भैयानन्द	१८५२	११	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि सुमय	पत्र संख्या	विषय उत्सवनीय
७८	७४४ (१८)	सारस्वत (पञ्चसंध्यत)	अनुभूति स्वरूपावाय	१८८६	३०३-३१०	लि श्रुतिचतुर्भुज उदपुरमंत्रित
७९	५१४४	सारस्वतमूलनगर	"	१९वीं १	=	लि किशोरदास हमीरगढ़मय
८०	६७८०	"	"	१९२५	=	
८१	७६६४	"	"	१८५६	११	
८२	४४७०	" (अन)	"	१९वीं १	=	
८३	४३६५	सारस्वत ग्रंथभाषाति (तद्विस्तारिता)	भाषा	१८४२	६६	लि मयराज सरपंचव
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावलि)	अनुभूति स्वरूपावाय	१९वीं १	४६	लि रघुनाथ
८५	६६४२	(तृतीयावलि)	"	१९६८	१२	
८६	७६४६	ग्रंथभाषा प्रभाषाटीका	"	१९वीं १	४	अपूर्ण
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	"	१७६१	५६	लि रघुनाथ मुदामापुर
८८	४४४१	(पञ्चसंध्यत)	"	१९वीं १	२३	प्रथम पत्र अभाषा
८९	५०४५	(विस्तारित संध्यत)	"	"	१२	अपूर्ण
९०	६११६	"	"	"	७३	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (साय)	अनुभूति स्वरूपावाय	१८वीं १	६	
९२	६८२३	"	महीदास	१९वीं	१४	
९३	६५०४	सारस्वत (शास्त्रांतर्ग्रन्थ)	अनुभूति स्वरूपावाय	१८५७	५६	लि महोत्तमा रामलाल नवदा
९४	६६६५	"	अनुभूति स्वरूपावाय	१८८८	५८	निवासी
९५	६८६३	" तद्विस्तारिता	"	१७४२	४४	
९६	७४६६	" तद्विस्तारिता	"	१९वीं १	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	६८८६	सारस्वत (कुटप्रक्रिया)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७४७	४६	लि मुनि तेजपाल तिलीवदगामे
६८	७५८८	" (कुदन्तप्रक्रिया)	"	१८५७	५५	लि. महात्मा रामलाल नैवटा
६९	७५६८	" "	"	१८१६	२७	
१००	७६३६	" "	"	१९वीं श.	११२	लि देवचन्द्र
१०१	६००४	सारस्वतमाधवीवृत्ति. (सिद्धान्तरत्नावली)	माधव भट्ट	१८२५		
१०२	४१६५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य टी पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	६२	
१०३	४६५६	" पूर्वाङ्क	"	१७वीं श.	५१	प१ स० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि भैरवकस
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	"	२०८	व्याप्त केफडो में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श.	१८४	पत्र ६३, ६४, ६५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	"	"	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वां अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	"	१७वीं श.	१८७	
११०	७२३६	"	"	"	१२८	
१११	७५११	सारस्वतवीविका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	६५	
११२	४१६६	सारस्वत (प्रसादटीकोपेत)	यारदेवभट्ट	१८वीं श.	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त)	गोपाल	"	११८	

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता या प्रतिपादक	त्रिपुरा मूल्य	ग्रन्थ संख्या	विशेष उल्लेखनाय
११४	६०४७	सारस्वत (शुचि) भाषाटीकासह (हृव तपोव्यास)	भृगुभूतिस्वरूपाचार्य	१६वीं ग	५२	
११५	६०४८				६०	
११६	५१४६	सारस्वतधनुषाढ	हृषीकेशिधर	१८०६	४७	
११७	५६५१			१५६३	६२	सि र्वा श्रीमन्माल
११८	५६८७			१७४५	४१	सि मंगलपुर
११९	६०२३	सारस्वतकृष्णमाला	वसन्त शर	१८६०	६	सि छानतमणि
						सायनगजसद्वे लोहमन्थवो
१२०	६७६३	सारस्वतीगान्ध्या	भृगुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं ग	५३	
१२१	६६६८	सारस्वतीगान्ध्या (हृवत्)	भृगुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	सि रामदास
१२२	६७५८	सतीपावलि	नरेन्द्रपुरी	१६०७	६३	सि
१२३	४२०१	सारसिद्धा तर्कामरी	शरदराग	१८६६	२१	
१२४	४२०२			१८वीं ग	४६	
१२५	७२०८	सिद्धदेविका-दान-गोसम	देवचन्द्राचार्य	१५वीं ग	२५	
१२६	४३६८	, (कुपवदव्याख्या)			=	
१२७	५६१७	सिद्धदेविका-दान-गोसमसंयुक्त (अष्टशो-प्याय)		१९५५	३४	सि व सुगतिप्रामांनि
१२८	५६२०	सिद्धदेविका-दान-गोसमव्याय चतुष्कावचरि				
१२९	५६१६	सिद्धदेविका-दान-गोसमजटपादावचरि		१९वीं ग	२०	
१३०	५६२१	सिद्धदेविका-दान-गोसमयाजुषाढ			२७	
१३१	५६७६	सिद्धदेविका-दान-गोसमसंयुक्त		१८वीं ग	=	
					११३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५६१४	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श	१८	तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादादारभ्य चतुर्थ्यापर्यन्तम्
१३३	५६१८	" "	"	१६वीं श	१५	
१३४	५६१५	" " पञ्चमाध्याय	"	"	२६	
१३५	५६१६	" " षष्ठसप्तमाध्यायो	"	"	२५	
१३६	५८६८	सिद्धहेमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श	३६	तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादादारभ्य चतुर्थ्यापर्यन्तम्
१३७	५८६७	" "	"	"	४७	तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादादारभ्य चतुर्थ्यापर्यन्तम्
१३८	७१६०	" "	"	"	२५	तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त
१३९	७१६४	सिद्धहेमशब्दानुशासनसूत्रपाठ	"	१५३३	१०	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१४०	७१६८	" "	"	१६वीं श	५	ति प धर्ममार्गाणि देवुलिप्राप्त
१४१	५४६६	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	" "	"	१८वीं श	३५	द्विरुक्तप्रतिपान्त
१४३	४३७५	" "	"	"	१२३	तिङन्तप्रकरण
१४४	५५३६	" "	"	"	७३	कृदन्तपर्यन्त
१४५	४३२१	" "	"	१८५४	३०८	कृत्परिचया
१४६	६७६०	" "	"	१६वीं श	४१	
१४७	६८०८	"	"	१६वीं श	२०६	
१४८	४२७६	" तत्वबोधिनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्रसरस्वती	"	१२६	तिङन्तगण्ट
१४९	६४६२	" "	"	१८३०	८७	कृदन्तमात्र
१५०	७१२४	" व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१६वीं श	३-६४	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान नाम	वर्तमान नाम	निर्माण समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१५१	५३७४	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	भट्टोज नाग	भट्टोज नाग	१६वीं श	३१२	समासाद्यविधिययत
१५२	५३७५	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	भट्टोज नाग	भट्टोज नाग	१६वीं श	१२६	सद्विज्ञानविद्या द्विकृतप्रक्रिया
१५३	६८६५	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	६५	लि क प मरसिंह
१५४	६८६६	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	१४५	लि क लक्ष्मीचन्द्र बलवत्
१५५	७०६२	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	५६	लि लक्ष्मीचन्द्र
१५६	७०६३	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	२५	लि लक्ष्मीचन्द्र
१५७	७०६४	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	११२	लि लक्ष्मीचन्द्र
१५८	७०६५	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	१४०	लि लक्ष्मीचन्द्र
१५९	७०६६	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	६५	लि लक्ष्मीचन्द्र
१६०	७०६७	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	३०३	भूषण
१६१	७०६८	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	१४२	भूषण
१६२	७०६९	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	६	भूषण
१६३	७०७०	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	४३	भूषण
१६४	७०७१	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	१००	सद्यत १६६१ मे १०६ पुरमे
१६५	७०७२	सिद्धा तर्कामुद्रा समुद्राद्ये-कुण्डलसहित (विषया)	रामचन्द्राक्षय	रामचन्द्राक्षय	१७वीं श	४४	श्री सुरसिंहके रायमे रचित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १०-कोषग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मय्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकायं ध्वनिमञ्जरी		१६वीं श	१३	
२	४४८४	"	काश्मीरक महाक्षणक	१७१४	२१	
३	६३२५	"	"	१८२५	१३	
४	६३३३	"	"	१६वीं श	१६	
५	६२२६	"	"	१८४७	१७	लि क कन्होराम मिश्र
६	७००२	"	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि क. नाथूराम प्रवाडी पल्लवीवाल
७	६५६६	"	हेमचन्द्र	१८८१	६	लि क रामनारायण
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	
९	४३२२	"	"	१५३८	८१	ग्राह्य पत्र नहीं । तृतीयमे पठकाण्ड तक
१०	४३२३	" टीका	डॉ. वल्लभगणि	१७वीं श	२१४	सारोद्धार टीका
११	४४८१	"	हेमचन्द्र	१८वीं श.	३१	तृतीय काण्डान्त
१२	६११८	" सटीक	"	१६२७	१४८	स्योपज्ञ टीका
१३	७२१०	"	"	१६०२	२०७	श्री पत्तनमे लिखित
१४	५७३४	" (कोपसग्रह)	"	१८५२	५६	ति. यशोविजय
१५	७१६५	" (मञ्जुसटिप्पण)	"	१८वीं श.	४७	
१६	७२३७	" (बीजकसह)	"	१७८०	७०	ति. क रामकण्ठ ज्योतिनि विष्णुदुर्ग (कृष्णगड ?)
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	"	१६वीं श	१६६	स्योपज्ञ टीका
१८	७४५६	" (व्युत्पत्तिरत्नाकर- नाम्नीवृत्ति)	डॉ. देवसागर रविचन्द्रशिव्य	१६वीं श	४०७	

क्रमांक	पृष्ठांक	ग्रंथ नाव	वर्ती प्रादि नातव्य	निगि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१९	४३२४	अमरकोश (अमरवर्षिकाणीका)	डो परमानंद विठ्ठलपुरी	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (अमरकोश)	वडिपुत्र			
२१	४४७४	अमरकोश (अमरकोश)	अमरकोश	१८२९	३८	
२२	४४७५	अमरकोश (अमरकोश)	"	१९वीं न	६३	
२३	४४७६	अमरकोश (अमरकोश)	"	१८६३	२६	
२४	४४७७	अमरकोश (अमरकोश)	डो शीरवाणी	१९५६	८१	मधुपुरीमध्ये केवळराज्ये कालि शीतडे
२५	४४७८	अमरकोश (अमरकोश)	अमरकोश	१९वीं न	१६७	१५२ वा पत्र अमरकोश
२६	४४७९	अमरकोश (अमरकोश)	"	१८वीं न	३९	
२७	४४८०	अमरकोश (अमरकोश)	डो शीरवाणी	१९वीं न	२७७	
२८	४४८१	अमरकोश (अमरकोश)	"	१८६५	११४	सि अमरकोश मोरवाणी
२९	४४८२	अमरकोश (अमरकोश)	डो शीरवाणी	१९वीं न	४८	अमरकोश
३०	४४८३	अमरकोश (अमरकोश)	"	"	१४२	द्वितीयकाण्ड
३१	४४८४	अमरकोश (अमरकोश)	"	"	१०८	"तुल्यपत्तने पाठगालावा
३२	४४८५	अमरकोश (अमरकोश)	अमरकोश	१८६८		विताकरयत्रे मुद्रितस १७७३
३३	४४८६	अमरकोश (अमरकोश)	"	१९वीं न	४४	आक" ऐसा अतने लिखा है
३४	४४८७	अमरकोश (अमरकोश)	डो वडिपुत्र	१९वीं न	४२१	सि अ शीरवाणी कवीश्वर
३५	४४८८	अमरकोश (अमरकोश)	"	१९वीं न	६९	४२वी व ६५ वा पत्र अमरकोश जीण प्रति

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिपण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिंह	१८वीं श.	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८६१	" (अव्ययवर्ग, सविवरण)	"	१७४२(?)	३३	अपूर्ण
३७	७००४	"	"	१६वीं श.	७६से१०६	
३८	७००५	" (द्वितीयकाण्ड)	"	१८६४	११६	
३९	७१३०	"	"	१८६३	११२	
४०	७७६६ (३)	अमरकोश	अमरसिंह	१८५६	६७	चित्र सं २
४१	७४६१	अमरकोशोद्धाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श.	१५१	
४२	५६६८ (१)	एकाक्षरनामकोश	क्षपणक	१६वीं श.	१-३	
४३	५४१४ (१)	एकाक्षरीकोष		१६वीं श.	१-४५	
४४	५६४८	धनञ्जयनाममाला	धनजय	१६१५	१७	
४५	५३८५ (३)	"	"	१६वीं श.	१६६-१७७	
४६	६११४	शारदीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श.	२३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४७	६७५४	"	"	१८६६	२८	लि. क. मोतीगर गाव लाभूडामध्ये
४८	७३७०	"	"	१८६४	१६	लि. क. ज्ञानसागर उदयपुरमध्ये
४९	५६५०	शिलोच्चननाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि. क. कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५६१०	शेषनाममाला	"	१६वीं श.	६	स्वोपज्ञ
५१	५६३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	"	१७वीं श.	८०	
५२	६१७६	हैमलिङ्गानुशासन	"	१८वीं श.	६	
५३	६६८३	हैमीनाममाला	"	१७६३	६०	लि. मोहनमणि बाटोलीग्रामे

क्रमांक	ग्रन्थनाम	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	विधि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	५८२७	उडुदायप्रदीप (लघुवाराशरी)	टी.-तत्त्वमीमति कुण्डानन्दसुत	१६२१	५५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपवशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तगंत	१६८०	१०	लि. क नरहरि
२१	७१०२	उपवशाफलम्	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८वीं श.	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति		१८६३	१३	
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरि (अश्वरसवात)		१८४४	४	ति. क केशवदास
२४	७६१५	कर्मविपाक (सूर्यचमगत)	अत्मनारदसवाद	१८०६	५१	गढ बदनोरभाष्ये
२५	६२३५	कर्मविपाक	"	१८३२	४१	लि. क. विवशङ्करस्यास
२६	४६६०	करणकुतूहल सप्तबक	"	१८५०	२१	हरिदुर्गमध्ये
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	ति. क चतुरविजयगणि
२८	४८८४	"	"	१७०२	२२	पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त
२९	५७०५	" (मूल)	"	१६वीं श.	१६	लि. क. श्रीधरज्ञातीय
३०	६४३५	"	"	१८४४	१०	विश्वेश्वरसमज केवत
३१	६८२४	करणसारिणी (अस्तुत्य)	"	१८वीं श.	१६	श्रीपाटननगरे हरजीसुत
३२	५७११	कल्पवलीहोरा	विद्वल	१८६४	५	सुरजीलिलितम्
३३	४८५६	किरणवली	सूर्यसिद्धान्तगत	१६वीं श.	३६	लि. क. अजयसुंदर खेरवामध्ये
						प्रथमपत्रअप्राप्त
						लि. क व्रजवासी
						सित्तु , तलिताघट्टे काश्याम्
						प्रथम ४ पत्र खडित

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाव	वर्ती भादि भाष्य	निवि समय	पत्र संख्या	निगम उल्लेखीय
१४	६०६४	ब्रह्मसंहिता (ब्रह्मसंहिता)	अथर्वसंहिता	१८७६	७६	लि क जगन्नाथ ध्यास पत्र ६६ ६७ छत्रास्त
१५	६१ २	ब्रह्मसंहिता		१८४४	१६	लि क चतुर्विजयमणि पोहिकरणमध्ये
१६	५२४६	ब्रह्मसंहिता		१६४०	५	
१७	५२४६	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२१	
१८	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	५	
१९	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२७	
२०	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२८	रचनाकाल १५४०
२१	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२५	लि क उद्योगविजय
२२	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२२	लि क स्वामीवालसधर्म व्याख्यानसमय
२३	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	४	
२४	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२	
२५	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	६	लि क गणि भाग्य सौभाग्य रचनाकाल १५३४ नाके
२६	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२	रचनाकाल स० १६७६
२७	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	२०	रचनाकाल सवत १६३५
२८	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	३	
२९	५३४८	ब्रह्मसंहिता		१६४०	५	० रचनाकाल सवत १८२० स्थान ब्रह्मसंहिता

क्रमांक	गयाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१६वीं श	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार	विवनाथ	१८वीं श	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	गणेशदेवज्ञ टी. विश्वनाथ	"	५०	
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	विवनाथ	१८४२	४१	लि. क. ऋषि भाणजी
५५	७६६३	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण	"	१६३०	१४१	
५६	५२१६	ग्रहलाघवविवरण	विश्वनाथ देवज्ञ	१६२४	६२	पत्र १७वा अप्रान्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्योदाहृति	"	१८००	३८	लि. क. कल्हा कैसोराय श्री रूपनगरमे लिखित
५८	४८६२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श	३	
५९	७६७१	ग्रहान्तर्विचारतन्त्र	दुर्गाशङ्कर पाठक	१६वीं श.	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नन्दिदेववर	१७६४	५२	
६१	४२६२	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श	४	१ लि. क. जोयकीतिगणि ति स्था -तलवाडा
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपडित (नौसिंह देवज्ञसुत)	१६वीं श	३७	
६३	४७७१(१)	गणितलीलावती आदि	भास्कराचार्य	१८०५	५४१-४५	१
६४	७१११	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	६	
६५	६७६४	"	"	१६०६	८	
६६	७६१८	गणितनोरमा	गर्गऋषि	१६वीं श	१०	लि. क. गोपीनाथ
६७	६६०४	गणितनोरमा टीका	"	"	१४	" भगवानदास विष्णुपुरमध्य
६८	७०७८	गुरुवार	"	१८८०	३७	

क्रमांक	पन्नांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता याज्ञिक	तिथि समय	ग्रन्थ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	२६१६	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	रामायण	१६०६	१८६	र का भज भुजयुक्तमिति गणे (१२२२)
७०	२७७५	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	रामायण	१६०७	१२	
७१	२७११	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६०७	४	
७२	२६५६	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	गोतम मुनि टीका-संशोषण	१६०४	६	
७३	२६०८	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	गोतम मुनि टीका-संशोषण	१६०७	१६	
७४	२७५५	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६०७	१४	
७५	२६७०	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६०६	३	लिक श्रीपति भट्ट गिराज वाटजास्ये ग्रामे रचना
७६	२६२३	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६०७	३	
७७	२६६३	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६२१	४३	
७८	२६७२	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६००	७	
७९	२६३३(८)	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६५०	४०-५०	गोस्वामी भोलादासजीकी पौषोम् तिलो कृष्णस्य मध्ये
८०	२५६४	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६३०	८	लिक रामाष्टक्ये रामायण
८१	२६६८	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६०१	२८	लिक सायलपुर वासव्य श्रीदीव्यभोलाय व्यास श्रीपतिभट्टजी
८२	२७७१	गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु (गुणपञ्चकान् पञ्चमस्तु)	श्रीपति भट्ट	१६४०	१६	प्रादुर्भाव संप्र लिक चित्र मिश्र

क्रमांक	ग्रन्थान्त	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२६	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लि. क. कचर विजयलालराम
८४	४६६४	" सस्तवक	राजबिभट्ट	१८२४	१२	" प्रमोद विजय
८५	४६७२	" सायं		१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण		१६०६	११	लि. क. महात्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासीवोयनामानि	कालिदास	१६वीं श.	१	
८८	५६२४	ज्योतिर्विवाभरण	" दीका-भावमुनि	१६०३	१००	रचनाकाल स० २४ (?)
८९	६६०४	ज्योतिर्विवाभरणटीका	ज्ञेयनाग	१६वीं श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिश्शास्त्रभाष्य	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८७५	३२	
९१	६८३३ (७)	ज्योतिष के स्फुट श्लोक		१६वीं श.	३७-३६	रचनाकाल स० १७८३
९२	४६६६	ज्योतिस्त्वन्नाकं		१८३६	५१	लि. क. नन्दराम
९३	५२६६	ज्योतिर्विनिबन्ध	अमरसिंहसुनुनन्दन	१८वीं श.	४५-७५	अपूर्ण
९४	४८६६	ज्योतिषमकरन्द		"	६	
९५	७०६७	ज्योतिषमाला		१८वीं श.	२	लि. क. यति भवानीराम
९६	४२८६	ज्योतिषरत्नमाला	श्री श्रीपति	१७वीं श.	१६	ग्रामभररा मध्ये
९७	४४०५	"	"	१६४६	३३	*
९८	४७६८	"	टीका-वैजापडित	१७५७	१०७	* प्रथम पत्र अक्षप्त
९९	६८७७	"	श्रीपतिभट्ट	१७५५	१७	लि. क. राजसोम
१००	७०४६	"	"	१७४६	५७	" व्यास चतुर्भुज
१०१	७०६६	ज्योतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र)		१८वीं श.	३	विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	बर्तों आदि भातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्योतिषरत्नमाता यदपञ्चानिका		१९२०	८२	योगिनोपुरमध्य लिखित
१०३	६२७८	ज्योतिषरत्नमाता भुवजरीपक आदि	धीपति	१९वीं न	४४	लि. क. मन्भीरखन्द जिल्लाचीपुर
१०४	७८२५	ज्योतिषरत्नमाता व्याख्या	"	१८७१	६४	
१०५	६६७२	ज्योतिषरत्नमाता		१९वीं म	१५५	धर्मपुण
१०६	५८१३	ज्योतिषरत्नग्रन्थ गूढका		१९वीं न	६८	
१०७	५८६१	ज्योतिषरत्नसार		१८वीं न	२०	
१०८	५४०७	ज्योतिषरत्नसारग्रन्थ (सस्तवक)	प्रसात	१७८६	२५	* लि. क. प० श्री खुसासगर
१०९	५४१०	(साथ)		१८वीं न	२६	मुण्डविजय स्थान-नरयणानगर
११०	६५३७	(सस्तवक)		१८१७	३३	* लि. क. नवनिधविजय
१११	५६३१	ज्योतिषरत्नसार	समुद्रानन्द भातवीप मुक्त			महिमापुरमध्य
११२	५८६५	जगद्भूषण	हरिवत् भट्ट	१७वीं न	४	रचनाकाल न० १७०४
११३	५७१०	जगद्भूषणसारिणी		१८२६	६५	आसखत्र नपातया य य रचना
११४	५७२७			१९वीं न	६०	महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित
११५	५७८७			१८वीं न	५५	जगद्भूषण ।
११६	५८८२			१७३७	५३	रचनाकाल-स० १६६५
						रचनाकाल स० १७६८
						लि. क. माणिक्यविजय ज्ञान-विजयनिधय च देलाप्राममध्य

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२ (३७)	जन्मग्रहफल	जयगणि	१८वीं श.	४०-४१ वा	लि. क. प्रोतसोभाग
११८	६३६६	जन्मपत्रीप्रकार	गोपाल ?	१६वीं श.	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६६५	जन्मपत्रीपद्धति		१८२०	८	लि. क. चतुरविजय
१२०	५२१५	"		१८वीं श.	८	*
१२१	५६७७	"	लब्धिचक्र	१७५१	१०	आद्य के ४ पत्र लुप्त
१२२	६४२६	" (स्त्रीजातक) (अन्तर्वशाध्याय)				स्त्रीजातक ६ पत्र अन्तर्वशाध्याय
१२३	७०३६	जन्मपत्रीपद्धति		१८वीं श.	६८	४ पत्र अपूर्ण
१२४	७०८२	"	हर्षकोतिसूर	"		कीदृविद्ध प्रति है। इसमें सभी
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१६वीं श.	४५	विषय सगृहीत हैं।
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालवट्टाचक्रादि	श्रीपति	१८वीं श.	३२	अपूर्ण
१२७	४४४०	जातककर्मपद्धति		१४८७	१६	लि. क. विश्वनाथ
१२८	४६७४	"	"	१६००	७	" लीलाधर देराओ
१२९	४७०४	"	"	१८३७	१५	पुरुषोत्तमसुत
१३०	४८६६	"	"	१६६१	६	
१३१	५५१३	"	"	१८वीं श.	४४	अपूर्ण
१३२	६४३०	" (सत्याख्या)	"	१७४१	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१३३	५८२५	' (प्रौढमतोरमाटीकासहित)	केशववंश टी. दिवाकर नृसिंहगणकसूत	१६वीं श.	१४१	लि. स्था. बीकानेर आद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	निर्माण समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकपद्धति (जातकपद्धति)	महादेवद्वय	१७५२	२४	ति क कल्याणहंसगि प्रवरगाबाव
१३५	५६२१	जातकदोषिका	हृदयविजय	१८८६	७	ति क नरेन्द्रविजय
१३६	५६२६	'	"	१८४६	६	राजस्थानी भाषासहित
१३७	५८४२	' (संक्षेपक)	"	१८५२	१८	ति क श्रीकमलोगिव्य
१३८	५८५२	जातकदोषिकाभिधानपद्धति (संक्षेपक)	"	१८६२	११	रचनाकाल स० १७६४ रचनास्थान नराकरपत्तन
१३९	५७०५	जातकपद्धति	केनय	१८१४	५	ति क ऋषि भयजी स्थान पोचुमदपुर
१४०	५६६३	' (उदाहरण)	विष्णुनाथ	१८६६	६	ति क शिवसात
१४१	७१६२	जातकपद्धति (अभिनीयमनुसार)	भवनस्थानी	१८३६	३७	प्रमाण रचनाकाल स० १८००
१४२	५५३३ (२)	जातकपद्धति	विष्णुभारापण	१८५०	२१३	प्रमाण
१४३	५६१३	जातकपद्धति	"	१८५०	३ स १६४	प्रमाण
१४४	५०४७	जातकपद्धति	विष्णुभारापण	१८५०	११	राजस्थानी भाषासहित
१४५	६३६१	जातकपद्धति (वर्णमालाविधानमनुसार)	विष्णुभारापण	१८५०	१७	धोऊणगढ में स्थित
१४६	६३६३	जातकपद्धति	विष्णुभारापण	१८५०	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७६४	जातकपद्धति	विष्णुभारापण	१८५०	६०	ति कल्याणपुरीमध्ये
१४८	५३०६	जातकपद्धति	विष्णुभारापण	१८५०	३७	ति क रामचन्द्रभ

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४६	६८३३ (३)	जातकालङ्कार	गणेशदेव	१८८१	७-२५	लि. क. श्रमृतरामजी
१५०	६८३३ (५)	जातकत्रिशती	हिरुलाज	१९वीं श.	३३-३५	
१५१	५५३३	जैमिनीयसूत्रव्याख्या	नीलकण्ठ	१९२४	४२	लि. क. पुरुषोत्तममिश्र
१५२	६२६०	"	"	१९११	२७	लि. क. गुसाई वालमुकुन्द
१५३	७५१०	जैमिनीसूत्रवृत्ति	वृ० बालकृष्णानन्दसरस्वती	१८२१	५६	लि. क. रामनारायण ब्राह्मण
१५४	६३६५	जोत्तिकरा छुटकसिद्धिक	श्रीपतिपण्डित	१९वीं श.	६	राजस्थानी भाषासहित
१५५	५२६०	तत्त्वप्रदीपजतक	"	१८७१	६	लि. क. बालमुकुन्द
१५६	५३४०	"	"	१९१७		लि. क. रघुनाथ द्योसावासी
१५७	५५२२	"	"	१९१४	६	स्था. भरथपुर
१५८	६६०५	"	"	१८५३	७	लि. क. रामगोपाल दाधीच
१५९	५८८४	ताजिककल्पलता	जयराम	१८२६	३५	मनोहरपुर
१६०	६२३७	ताजिकतन्त्रसार	समरसिंह	१७१० शाके	१०	लि. क. व्यास मन्त्राल
१६१	४७३८	ताजिकनीलकण्ठी	नीलकण्ठ	१८३७	३४	लि. क. मनसाराज शर्मा
१६२	५१२८	"	"	१८३५	२६	लि. क. चिन्मलाल ब्राह्मण,
१६३	७६५७	ताजिकपद्मकोश	"	१८३५		सवाई जयपुर
१६४	५२६५	ताजिकफलतन्त्र	नीलकण्ठ	१९वीं श.	६	लि. क. ज्ञानसुन्दर ऊर्जपुर
१६५	६१०१	ताजिकभूषण	गणेशगणक दुदिराजात्मज	१७६८	५-५८	रचनाकाल स० १६४४
				१८६५		लि. क. आशानन्द
				१८६५		लि. क. किशोरीलाल
				१८६५		लि. क. विहारी सडोरानगर

क्रमांक	प्रमाण	स्थल नाम	वर्ग यादि नातय	चिपि समय	पत्र संख्या	विगण उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभवन	भवनवाणक बुढिराजा-मन्त्र	१८२१	३१	लि मतसाराम उपाध्याय
१६७	७०५३			१७४३	४२	लि चतुर्भुज ध्यास कुण्ठागढमध्ये
१६८	७१२७			१८६१	४३	लि माधवाराम सिवाजी पत्र ६ से १३ अप्रान्त
१६९	५४५३	ताजिकभूषणदीक्षा मालदीपिकाख्या	मुञ्जावित्य	१६४०	४२	
१७०	४७७०	ताजिकसार निगरत	मोरभट्ट	१८७१	६४	भाषायासहित प्रपूण
१७१	४८४६	ताजिकसार		१८०५	१९	लि क मुनि गणजी मुनिजी भनजीशिव्य
१७२	६०५५			१७३९	२६	
१७३	६८७८			१७६५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवति	सामतहवरलसिख्य	१८४०	२३	
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धातसार	समरसिद्ध	१८६४	२५	लि कतैहवच भारोठ स्था सीकर
१७६	४६६०	ताजिकालकार	सूयकथि	१८४१	१०	लि उदयराम बाह्यण
१७७	७०६५	ताजिकालकार		१८४६		लि क शिवशङ्कर
१७८	५३५०	ताजिकोबाहरण	नीतकठ	१६४०	२३	प्रपूण
१७९	५१२७	ताजिकालिकभूषणकविरण		१६००	१२	लि प्रतराम
१८०	७५७९	ताराविनास	शामभवनलनाथ	१६४०	२	लि रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१६४०	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६१	तिथिविचामणि	मणनवचन	१८४०	१८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिमञ्जरी	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	१८वीं श	२२	राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है।
१८४	७५६६	द्वादशभावफल		१८२३	३६	
१८५	४७७२	द्वादशभावदलोक		१६वीं श.	१४	लि. क. सीताराम चावसेणमध्ये
१८६	४७१३	दशाफल		"	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (बृद्धपाराशरीय)		१६२६	४५	लि. क. बाछूराम व्यास
१८८	७३८०	दोषपूच्छा	नर्मदाप्रसादसुत नरपतिकवि	१८वीं श.	१	जाट का कूवा जयपुर
१८९	५७५१	ध्रुवभ्रमयन्त्र		१६१४	६	राजस्थानी अर्थ सहित
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या		१८वीं श.	१७७	लि. क. वजवासी, जयपुर
		(जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित)				प्रथम पत्र अप्राप्त
१९१	५८३०	नरपतिजयचर्या	"	१८६६	१२६	* ७३वां पत्र अप्राप्त
१९२	५६४०	"	"	१७५८	६०	लि. परमानन्द मिश्र चित्रयन्त्रयुक्त
१९३	६०६१	" (भूतलपर्यन्त)	"	१६वीं श.	४३	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९४	६६१०	"	"	१८वीं श	६१	अपूर्ण
१९५	७१३२	"	"	१८वीं श	३६-८०	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९६	७८३६	"	"	१८४६	१२४	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका	"	१६वीं श.	६७	
१९८	४७७१ (३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतान्तर्गत शिवलालपाठक	१८०५	४६-५२	
१९९	४८५१	नवरोजप्रकाश		१६वीं श	३	*

राजस्थान पुरातत्त्व-विभाग—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, ११-ज्योतिष]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पृष्ठ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नट्यजातक	(हस्तलिखित-तमल)	१८वीं श	७६	४
२०१	७८८८	नट्योदितविधि		"	२	
२०२	४७७१ (४)	महाभूमिपट्ट, पहिलेपट्ट		१८०५	५३-५४	
२०३	७६५२	न ३ समुच्चय		१६वीं श	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८६६	१८	लिंक अमृतविजय
२०५	६८२१	"	"	१७५६	११	लिंक रत्ना तिलकधोरनिध्या
						अन्तर्गमन्य
२०६	४७४७	"	"	१८वीं श	१४	४
२०७	७०१०	द्वितीय प्रकरण	"	१८०६	२७	लिंक स्या कोरडानगर
२०८	४३५२	नारचन्द्र-ग्रन्थ-कोटार सटिपण	टी श्रीसागरचन्द्रसूरि	१६५१	३०	
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिपण (प्रथम प्रकरण)	टी सागरचन्द्रसूरि	१८वीं श	२६	राजस्थानी भाषासहित
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७६६	१६	अनुग
२११	५३३६	निरुपचक्षानिधि	मिथ यतोपर	१६वीं श	६६	
			कसारिमिथ्यात्मज			
२१२	६२५२	प्रश्नकोशदी (माजिकभक्तानुसार)	"	१७५१	२०	
२१३	६७०३	प्रश्नकोश	"	१६२५	४८	
२१४	४८६८	प्रश्नकोश	"	१८वीं श	२२	
२१५	५०६३	प्रश्नकोश	"	१६वीं श	२३	
२१६	४६८३	प्रश्नकोश	"	१६५३	७	लिंक बुद्धिसागरमणि
						बच्छेदसमये
२१७	५८११	प्रश्नकोश	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१६वीं श	१६	

क्रमांक	गथा क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५२६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१९	५२६०	प्रश्नप्रकरण	नीलकण्ठ	१९वीं श.	५	
२२०	५७६८	" (ज्योतिषकौमुदीगत)	"	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	"	काशीनाथ	१९वीं श.	४४	आद्य पत्र खंडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	"	"	११	
२२३	५२६७	"	"	१८वीं श.	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	गंगे	"	२	
२२५	५२६१	"	"	१९वीं श.	४	
२२६	५७२४	" सटीक	"	१८वीं श.	५	लि. क. विद्यार्थी लोकमणि, काठियासू
२२७	७५०१	प्रश्नमाणिक्यमाला	परमानंद शर्मा	१९वीं श.	१७८	अपूर्ण
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	"	१६६	* अपूर्ण
२२९	५६३५	प्रश्नरत्न (सटिप्पण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानिवासी	"	४६	रचनाकाल १८२४
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (कैरलीय)	नहराम मिश्र	१८३७	८	टीका रचना १८२७
२३१	५२३६	नव द्या		१९वीं श.	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१६	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध	१६१५	४७	लि. क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६६	"	"	१८वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातृय	लिपि समय	पत्र संख्या	विगण उल्लेखनीय
२३४	६४३२	ग्रन्थव्याख	नारायणदास सिद्ध बह्मदाससुत	१६वीं ग	२६	सूत्रण यह ग्रन्थ ७० आर्षा छंदोंमें आबद्ध है ।
२३५	७०५०			१८वीं ग	२७	
२३६	५५३४			१६वीं ग	३४	
२३७	४६००			१७६७	२३	
२३८	४७३६	(प्रश्नोत्तर)	भट्टोत्पल	१७६४	४	बाल वी पत्र आश्रित
२३९	६५११	ग्रन्थगान (आवराण)	उत्पल भट्ट	१८५३	६	
२४०	४७४०	ग्रन्थगान (आवराण)		१७१०	७	
२४१	५५०५	टीका वित्तमणिनाम्नी	रामनि	१६२४	१५	
२४२	४६६५	ग्रन्थगान		१६वीं श	८	लिक पुरवोत्तम मिथ लिक वज्रवासी सिल्लु राजस्थानी भाषा सहित
२४३	४८८३	ग्रन्थगान		१८८१	८	
२४४	५२६६	ग्रन्थगान	भट्टोत्पल	१६वीं श	१७	
२४५	५५३२	ग्रन्थगान	जीवा गुजर यात्रिक नरहरिसुत	१६०६	१७	
२४६	७७१५	ग्रन्थगान (सटीक)	मोक्तिदत्त विसुत	१८६२	३	लिक गोपाल
२४७	६४६५	ग्रन्थगान	सालमणि (जगन्नाथसुत)	१८२७	१३	
२४८	४६७०	ग्रन्थगान	भट्टोत्पल	१६२७	८१	
२४९	५७४३	ग्रन्थगान (भागसिद्धि)		१६वीं श	४	
२५०	५४६४(२)	ग्रन्थगान	सूत्रधार मण्डन	१८७०	४	
२५१	५७३१	ग्रन्थगान		१८२८	२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०६६	पञ्चतत्त्वविचार	खट्वेत्त	१६वीं श.	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	टी कल्याणकर	१६२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसट्टिपण	महोदय	१६०८	२	लि.क. ब्रजवासी, मथुरा
२५५	४४५२ (३६)	पञ्चपक्षीप्रश्न		१८वीं श.	४२-४३	* लि.क. पं. प्रीतिसोभाग्य
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	स्था बणहेडा ग्राम
२५७	६५२४	"		१६२४	११	लि.क. नागेश्वर
२५८	७६७२	पञ्चदशलोकौताजिक टीका	बालकृष्ण	१८६३	५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५९	६५२४	पञ्चदश (पञ्चस्वर)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श.	६	लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः
२६०	५७५३	पञ्चदशनिर्णय (पञ्चस्वर)	प्रजापतिदास	"	५	वाराणस्या ललिताघट्टे
२६१	५६४०	पञ्चदशरविबृत्ति (पञ्चस्वर)	" अप्यय दीक्षित	१६७६ शकै	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श.	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत	शतानन्द गगाधर	१८६२	१२	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु
२६४	५७६६	(भास्वरयुदाहरण टीका)				मण्डीमध्ये
२६५	६७५६	पञ्चाङ्गसिद्धि	बाबादंवन, रामपुत्र, शिवानुज	१६०७	५	सुनजागेश्वरप्रोत्यं रचित
२६६	७७१६	पञ्चाङ्गभिधपत्र		१६वीं श.	७	लि.क. ब्रजवासी काश्याम्
२६७	४७४८	(लग्नसाधनविधि)	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	६	राजस्थानी सहित
		पञ्चाङ्गप्रश्न	दिवाकर	१८६२	६	
		पञ्चतिप्रकाश			६	लि.क. जोशी प्राशाराम

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्ता आदि नात्व	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पट्टतिथिकांग	दिवाकर	१६वीं श	८	*
२६९	४८६६	पट्टतिथिकांगोत्तरण (गणितसंबधितामण)	गोवर्द्धन कच्छोत्तक द्विजराजमुल	१८७२	४९	रचनाकाल १९०१ लिक धीरा लखनगर
२७०	४९६५	पद्यकोण		१६वीं श	१०	
२७१	७६६६		ईश्वरप्रोक्त	१६०५	९	
२७२	६३०६	पद्यताजिक	निवप्रोक्त	१६वीं श	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयपत्र		१६०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयश्वरोदय		१६वीं श	१२	
२७५	७०६१	पद्मीभागवतान योगसंग्रह		१८वीं श	८४	अपूर्णा/राजस्थानीग्रंथसहित/पत्र १ १४ व १६वा अग्रान्त
२७६	६२८४	पारागरीहोरा	भगविया	१६वीं श	३१	अथम पत्र अग्रान्त
२७७	४७३६	वाग्भट्टकली		१७६१	१०	लिक क भा नागरेण द्वारा
२७८	४७५२			१६वीं श	६	लिखित हरिवत्सजी पठनाथ
२७९	६२५७			१६वीं श	१६	लिक अमरख-४
२८०	६४३१			१६वीं श	६	गुरुदयाल सोदायादवासी
२८१	६६२०	पतामहीसारिणी	भयभूदन दत्त श्रीपतिनिग्य	१६२७	११	*
२८२	४६७८	फलकपलता (वार्यिक)		१६वीं श	३	लिक क पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तन
२८३	६४२८	ब्रह्मसुख्यगणितत्रय	करणकुपुहलगत	१७७४	५	लिक क हैमसागरशिष्य
२८४	४७३५			१८८४	३५	गुमानसागर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	ब्रह्मसुतोदाहरण (कुलभाष्य)	शाकल्यसहितागत	१६वीं श.	५२	आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	टी पद्मनाभ नर्मदात्मज	"	४५	लि.स्था मयुरा। लि.क. जटमलगौड
२८७	६१७८	" सटीक	श्रीलान्दिहस्तद्विज	१७००	७८	श्रीपतिपादपद्ममधुप
२८८	४८६५	बानवोणिनी	श्रीलान्दिहस्तद्विज	१६वीं श.	७	श्रीलान्दिहस्तद्विज
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जादित्य	१७६९	१७	* लि क खरतरगच्छीय बालचन्द्र
२९०	४२५८	बालबोध	"	१८४७	३४	स्थान पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९१	४७२८	"	"	१६वीं श.	१२	लि क गमाविष्णु कामकुब्ज
२९२	४८७६	"	"	१८७६	४८	स्थान नगर बोली
२९३	७०३४	"	"	१६वीं श.	२१	वकपुरमध्ये लिखितम्
२९४	७११२	"	हरिकर्ण	१८वीं श.	२	अपूर्ण
२९५	५६२६	जीजगणितबालबोधिनीटीका	भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र	१८६४	६६	* लि क. ब्रजवासी सिल्लु काशी
२९६	६२१२	बीजवासनाभाष्य	ब्रजनारायणसूनु	१७७६	१५४	रचनाकाल शके १७१४
२९७	५७७७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	मू गणेश देवज्ञ टी. विष्णुदेवज्ञ दिवाकरसुत	१६वीं श.	२१	* आद्य १६ पत्र अप्राप्त
२९८	४१८६	बृहज्जातक	बराहमिहिर	१६वीं श.	६६	* पत्र ४३, ४४, ४५ अप्राप्त
२९९	४६५८	"	"	१८६५	५८	लि क जोती जीवणराम
३००	४६६७	"	"	१८०१	२१	" सारङ्ग नरपति

क्रमांक	पृ.यांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातव्य	निर्गम समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६६७	यहूजातक	बराहमिहि	१८३७	४६	लिंक महाराजा प्रतापसिंह राज्ये
३०२	४८८६	,	,	१७२३	४०	आद्यतपत्र खंडित
३०३	४६७४	,	,	१८६६	७२	लिंक सदासुख
३०४	६१०१		"	१८३५	१६	लिंक स्वामीबालचन्द्र
३०५	६२०६		,	१८६३	१८६	स्थान—नरवर
३०६	७०५५		"	१८४१	४५	
३०७	७०१३	(उपमहाराध्याय)	,	१७८५	१६	लिंक स्थान—छिण्णाढ
३०८	५३२६	यहूजातकटीका	भट्टनरपत	१६वीं श	६६	१२ ३४ ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३६	यहूजातकविवरण	महोदर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	यहूजातक (मटिपण)	बराहमिहि	१६२२	३४	
३११	५८२८		"	१६वीं श	४६	अतिल पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	बहस्तहित	,	१६वीं श	१७४	
३१३	५५३६	यहूजातक बारादेदर	नारचन्द्र	१८वीं श	१०	
३१४	५५४०		,	१७वीं श	१८	
३१५	५६६८	यहूजातिकाण्ड	निवपावती सबाद	१६वीं श	६	
३१६	४६८१	अभयसारिणी	माधव	१६वीं श	१३८	लिंक शिवदास वाराणसी
३१७	५६४८	त्राशिवरति	साधव	१६वीं श	१८	
३१८	४७६४	माध्याय्य	तानिकभूषणगत	१८६०	५	
३१९	४७१८	,	रत्नसारा तपत	१६वीं श	१६	लिंक ऋषि भागजी
३२०	४८५३	भावेगण्ड		१६वीं श	१३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भावेशफलाध्याय	जातककामधेनुगत	१६०२	१५	लि क वजवासीसिल्लु रोमापुरे
३२२	६८६६	भास्वती	शतानन्द	१६०२	४	" ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६६३	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरि	१७०२	६४	" मुनि दामाख्य
३२४	५७०	"	"	१६वी श.	१०	रचनाकाल—शाके पचरसाधने
३२५	४७५०	" सतस्रक	"	१८वी श.	५३	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	" सटीक	" टी. सिंहलिलक	१६वी श.	१२३वा	* टीका रचनाकाल-१३२६ स्थान—बीजापुर
३२७	४४५२(८१)	भंरवीचक्र	कृपाराम	१८वी श.	६	इस चक्रमे विज्ञानुसार भंरवीके
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	नीलकण्ठ	२०वी श.	५	बोतने पर शुभाशुभ फलका
३२९	७५१६	मकरन्दभावविवृति	विवाकर नृसिंहसुत	१६२२	६	निर्णय किया गया है
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	श्रीपतिभट्ट	१८६४	१२	लि.क. आनंदसिंह
३३१	७५१५	"	विवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१६३६	२१	लि.क. वजवासी सिल्लु मणि- कर्णिकतीरे
३३२	७५१६	"	चूडामणिचक्रवर्ती	१६३६	१२	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	विश्वनाथ	१८६०	१६	
३३४	५७६४	मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धांतसमानुसार)	"	१६वीं श.	२७	पत्र १ व ८वां अप्राप्त
३३५	५८२२	मकरन्दोदाहरण	"	१६६७	५७	
३३६	५८१०	मकरन्दोदाहृति	"	१६३६	१	
३३७	६८५६	मकरन्दकान्तिपत्रक (खरडा)	"	१६वीं श.		

क्रमांक	पृ.सं.	ग्रन्थ नाम	वर्ग आदि नातय	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र	नारदभोक्त	१८६८	२०	लि. क. मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	(मयूरचित्रपुस्तक)		१८६७	१६	लि. क. गोरपाणिपुत्र
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	बराहसिंह	१८वीं श.	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि		१६वीं श.	२६	
३४२	४८४६	महादेवगणपति	धनराजगणि भवनराजगणौनगिण्य	१८वीं श.	७	
३४३	७१३६	महादेवोपनिषद्पिका		१६वीं श.	३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१६वीं श.	६१	
३४५	४७४१			१८६६	१२६	आद्य तपः सचित्र शोभन
३४६	४७८६			१८६६	१५२	रचनाकाल अनुमानत १२३८ शक लि. क. यस्तरगच्छीय गोभा चन्द्रजीसिन्धु चन्द्रभाषण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसामरीपद्धति	नाना थोटत	१६वीं श.	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मानसभाव्याय	साजिकक-नस्तोक्त	१७६८	८	लि. क. आचार्य किशोरदास
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श.	१५	श्रीबुध्दर मोढासावासी
३५०	६४३६	भातेग-मासभाव्यत	साजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि. क. ली. धनुषदर कल्याण सुंदरगिण्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मुद्राफल		१६वीं श.	१	राजस्थानी भाषाय सहित
३५२	७८२८	मुद्रितज्ञान	गणपतिवदन (रावल हरिगकर सूत्रिण)	१८वीं श.	२	२४ वा पत्र अप्राप्त
३५३	४६७३	महोत्सवपतिसार		१८७३	५१	रचनाकाल १७५०

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्तचिन्तामणि	रामदेवज्ञ	१८००	४०	रचनाकाल-१५२२ शके लि. क. रूपनारायण गोड
३५५	७०११	"	"	१७६२	२६	रचनाकाल-१५२२ शके लि. क. प० गुणमूर्ति
३५६	४११०	" (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	"	१८६६	१५६	लि. क. राममुख, जयपुर
३५७	६२५८	"	"	१८३२	८२	पत्र ११ से १६, ७५, ७६, ८१वाँ अप्राप्त
३५८	४६४८	" सटीक	"	१६०३	२१५	लि. क. व्यास बालकृष्ण नरवर- मध्ये
३५९	५६८६	" (पौषधारा सहित)	"	१६वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	"	"	"	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	"	"	"	११	संक्रांतिप्रकरण मात्र
३६२	५६८९	मुहूर्तचिन्तामणि सटीक (पौषधारा टीकोपेत)	"	"	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६९०	"	"	"	३६	संस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६९१	"	"	"	६३	राज्याभियेकप्रकरण मात्र
३६५	५६९२	"	"	१६२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६९३	"	"	१६२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६९४	"	"	१६२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि. क. 'भण्डाराम प्रहोरा (मधुपुरी)

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उद्देश्य
३६८	६२६३	महोत्तमसिंहसहित सटबाय	रामदेवस्य टी चतुर्दशिकाया	१८३०	१०२	रचनाकाल १७५७ पत्र १ से ८ तक सम्पन्न लिखित जीवनविवरण
३६९	४७११	सत्तवक	रामदेवस्य	१८२७	५०	
३७०	४६६६	महोत्तमस्य दीपिकाटीकोपेत	देवदेवस्य टी गणेशवस्य	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	महोत्तमस्य	स्वोत्तमसिंहसहित जगदामसुत	१८२२		मोहराग्रामवास्तव्यव्याप्त लिखित
३७२	४८७६	महोत्तमस्य	गणेशस्य पौत्र	१६६२	१०	लिखित परमानन्द
३७३	४७७०	महोत्तमस्य	महोत्तमस्य टी गणेशवस्य	१६०५		लिखित ग्रन्थ पण्डित
३७४	४६४८	महोत्तमस्य	यदुनन्द			रचनाकाल १७०६ (?) , १७२६
३७५	४६४९	महोत्तमस्य	, टी मनसाराम	१८५६	२१	लिखित ग्रन्थाराम महोत्तमस्य
३७६	४७१२	महोत्तमस्य	रामदेवस्य जगदामस्य	१६००	२०	लिखित श्रीदीपिकाटीय देवाधी
३७७	४८८७	महोत्तमस्य (मूल)	चतुर्दशिकाया	१८३७	२६	पुरयोत्तमसुत लीलाधर
३७८	४८८८	महोत्तमस्य	नारायण	१८६०	२३	रचनाकाल १४६३ शक लिखित विजयसाल
३७९	४८८९	महोत्तमस्य	, ,			मोहराग्रामवास्तव्य
३८०	४८९०	महोत्तमस्य	, ,	१८५५	२७	संक्रातिप्रकरणान्त
३८१	४८९१	महोत्तमस्य	, ,	१८०३	३५	लिखित मोती
३८२	४८९२	महोत्तमस्य	, ,	१८६२	२७	लिखित देवाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्तमार्तण्ड सटीक	नारायण	१७८६	८२	लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल स० १६२६
३८२	४७०६	मुहूर्तमार्तण्ड टीका	"	१६वीं श.	७८	किचिदपूर्ण
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२६
३८४	६१३०	"	"	१८३७	५६	" १४६३ शके
३८५	५५२५	मुहूर्तमार्तण्ड	"	१६वीं श.	४७	अपूर्ण
३८६	७३७१	(वल्लभाख्या टीका सहित) मुहूर्तसंशुतावली (सट्कार्य)	हरिभट्ट	१८४६	१०	लक्ष्मणपठनार्थ करहेडा मध्ये
३८७	६३६४	" (सट्पिण)		१६वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)		१६६७	६	लि.क. ऋषि नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्तप्रवीण)		१७०२	११	लि.क. मेवपाटजातीय जोशी
३९०	७६५१	"	रघुवीर	१८४७	८	सुरजीकेन लिखितम् घोडेलावग्राम मध्ये
३९१	५७१४	(प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित) मुहूर्तसर्वस्व		१८वीं श.	१६	लि.क. रत्नसागर समेणमध्ये
३९२	७१०४	मूलजातकविधान		"	२	रचनाकाल १५५७ शके
३९३	६३६२	मेघमाला		१६वीं श.	१६	
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	दासोवर	१६१८	६१	
३९५	५३१७	" सटीक	जगदेव्यज्ञ (?) टी. रामदेव्यज्ञ	१८४५	१६	लि.क. मनसारास
३९६	५६१६	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकाख्या)	"	१८६५	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. राजवासी मिश्र, ललिताघट्टे काश्या

पन्नाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्ता आदि नाव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विग्नप जगन्धनीय
३६७	६१०८	मन्त्रविद्यामणि सटीक	चक्रधर रामनाथल	१८५४	२६	लि क साहा नक्षत्रोच्च
३६८	६८८५	सटीक	दो रामदेवत मधुसूदनायल			
३६९	४१३२	ग्रन्थराज	महेन्द्रसूरि	१६०३	३६	
४००	४६८२	सटीक	, दो मतवेन्द्रसूरि	१८४७	१६	
४०१	६२५४	ग्रन्थराज टीका	"	१६३६	५०	
४०२	७०१२	मदनलालक (जलकाभरण)	दुर्गिराज	१६०१	४७	लि क सर्वेश्वर
४०३	४४०६	मातयोगाणव	निर्योदित	१६१६	१०५	वदयवनजातक
४०४	६५१०	मुद्रकोणव		१८२५	२३	लि क प लिखमोराम
४०५	७६६२	मुद्रजयोलव	धीवद्र		७	स्वात नवय मध्य (निर्वाह)
४०६	६७७५	योगविद्यामणि (संक्षेपावली)	मंगाराम	१६४०	१६	लि क मोतोमल
४०७	६८६१		हयकोटिसूरि वा मंगसिंह	१८६६	१७	लि क रङ्गविमल कालप्रामे
४०८	५७४६	योगगतक	रतनराज गणिगिष्य	१७२४	७३	
४०९	४८६३	योगाणव	बसभद्र	१६४०	१२	
४१०	५७३६		वैकटग			
४११	५७६६	योगावली		१६२१	१२	लि क राजवासी सिल्लु
४१२	६०४०	योगिनीद्विगाकरण	राजभट्ट	१६२०	२०	प्रति को लिपि दो प्रकार की है
४१३	४८६५	योगिनीद्विगाकरणकल		१८११	१२	लि क भरवदास
४१४	४६५४	योगिनीद्विगाकरण	रघुयामस्तोस्त	१८४०	७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	जिनि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०९	१९	लि. क. हरवल्लभ पारोक
४१६	५६०९	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	जोसी भूधरजीमुत, ढाण्वा
४१७	५८३१	रत्नमाला (विचरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१९वीं श.	२१४	लि. क. भागीरथ ब्राह्मण
४१८	७५७२	रत्नमाला (रत्नलेखप्रकाशसम्मत)		१८वीं श.	२०	रचनाकाल ११८५ शके
४१९	७५७५	" (विन्दुरत्नसाधय)		१९वीं श.	११	४६, ४७, ६१, २०८वा पत्र अप्राप्त
४२०	४७५९	रत्नलेखनामणि सज्ञातत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पंडित	१८वीं श.	१०	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिवत्त
४२१	४७६०	" (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	"	"	१०	
४२२	५१६५	रत्नलेखन	परमसुख उपाध्याय	"	३७	
४२३	५३०४	रत्नलेखनम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	"	"	१९वीं श.	३५	रचनाकाल-१८६७
४२५	५७६७	रत्नलेखिन्दु	"	"	११	पति के कोण खडित है
४२६	४४५३	रत्नशास्त्र	राम	१७८०	१२	भुजङ्गमध्य लिखित
४२७	५३२१	"	रामरुद्र	१७१५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७६	"	रामदेवज्ञ	१९वीं श.	४९	लि. क. लाला अमृतसाम
४२९	६८३३ (२)	"	"	१८४८	६-७	
४३०	७५७४	"	"	१९वीं श.	१७	
४३१	६८३३ (११)	"	श्रीपति	१८५२	५५-६९	
४३२	४७६९	रत्नसार	रुद्रधर त्रिपाठी	१८४२	१६	
४३३	४६५१	रत्नलेखप्रकाश		१९वीं श.	३४	

क्रमांक	प्र.पा.अंक	ग्रंथ नाम	वर्तनी आदि नाव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमले-तुषकाण	रमले-विषादी	१८२८	२८	लिविस्थान नरायणा कृतवशो जुहू मङ्गराजधिराज की राम बाता की भासा से रचित । सर्वाङ्गवर्तिसिद्धय प्रथम पत्र गोभन प्रथम पत्र भद्रास्त
४३५	४६०७	राजवत्सल बाहुनाथ	मण्डन सूत्रधार	१८०६	४४	
४३६	७५१३	रामविनोद	राममन्द	१७३५	१३	
४३७	४५६४	रेमणित	जगन्नाथ सन्नाद	१८२०	२६४	नागोर नव्ये तिलितम सि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी सि क धर्म रामगोपाल केकडी " प उदयसुन्दर श्रीयोगानन्द द्वितीय पत्र भद्रास्त
४३८	७०६३	सतवद्रिका	कागीनाथ	१८वीं श	२४	
४३९	४५६८	, (जगन्मयीसोदाहरण)	श्री गिरधारी सिन्धु मयिल	१८वीं ग	१८	
४४०	७६०५	सतवद्र	केनव	"	१	नागोर नव्ये तिलितम सि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी सि क धर्म रामगोपाल केकडी " प उदयसुन्दर श्रीयोगानन्द द्वितीय पत्र भद्रास्त
४४१	४६८२	सतवद्राजविधि		"	८	
४४२	६४२६	,		१८६८	६	
४४३	४७३०	सतवद्राहण	वराहसिंहिर	१८वीं ग	४	नागोर नव्ये तिलितम सि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी सि क धर्म रामगोपाल केकडी " प उदयसुन्दर श्रीयोगानन्द द्वितीय पत्र भद्रास्त
४४४	६४६४	संयुक्तमण्डनारिणी		१८वीं श	१०	
४४५	४५२३	संयुक्तसूक्त		१८१६	१७	
४४६	६३८२	,	"	१८१२	७	नागोर नव्ये तिलितम सि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी सि क धर्म रामगोपाल केकडी " प उदयसुन्दर श्रीयोगानन्द द्वितीय पत्र भद्रास्त
४४७	६८२२	"	,	१७वीं ग	६	
४४८	६६०७	"	,	१८४४	१	
४४९	७०६८	, (घटियाप्यायन)	,	१८वीं ग	३	नागोर नव्ये तिलितम सि क धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी सि क धर्म रामगोपाल केकडी " प उदयसुन्दर श्रीयोगानन्द द्वितीय पत्र भद्रास्त

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पग मरगा	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	*
४५१	४६८४	" सवृत्तिक	" "टी-मत्तिसागर उपाध्याय	१८८५	३०
४५२	४७४६	" सटीक (त्रिपाठ)	वराहमिहिर, टी उत्पलभट्ट	१७२३	१६
४५३	४७५४	" "	" "	१८४२	१८
४५४	७१०१	" सटिप्पण	" "	१८८०	२
४५५	५६८५	लघुपाराक्षरी (योगाध्यायमान)	पाराक्षर ऋषि	१८३२	२
४५६	७६४३	लघुपाराक्षरी (उद्वायप्रदीपोद्योत)	भैरवदत्त व हरिरामशंभुन	१६८०	२६
४५७	५७४६	लघुपाराक्षरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त)	पाराक्षर ऋषि	१८६४	६
४५८	४७५८	लघुमातण्ड, मुहूर्तदीपक	नारायण देवश कोशिक	१६८०	१४
४५९	५६१३	लघुभेन समास विवरण	चन्द्रशेखर	१४८८	३२
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८
४६१	५६३४	" सटीक (त्रिपाठ)	" "	१६०५	३४
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८८०	३
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६८०	४२
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	" "टीका-रामकृष्ण	१६८०	६३
४६५	४७६७	वर्मगणितपद्धति (विवाकरीपद्धति)	विवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५
४६६	६३११	वर्गतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०
					ति. क. सन्तोषदास वर्णन
					पग १, २, ३, अप्राप्त
					ति. क. व्रजवासी सित्तु मणि- कणिका तीरे श्रमत्तपातालेवातये
					ति. स्या. चिन्मण्ड दुर्गे
					ति. क. देवीचन्द्र गाम सत्तुजी काश्याम्
					ति. व्रजवासी सित्तु काश्याम्
					ति. मन्तरूप व्यास

प्रमाण	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्राणि नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्णन-य	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लिंक रतनविजय
४६८	४७०६	सटीक	" दी विद्वत्ताय	१७४२	३१	२७ २८ २९ वा पत्र प्राप्त
४६९	७१४२	वर्णसारणी (वर्णकलपट्टसिंहाय)	वसन्तराज भट्ट	१८०२	१६	लिंक विरञ्जी सोमर
४७०	४३५५	वसन्तराज नाकुन	,	१७७१	३७	लिंक विद्याविज्ञान पाठक
४७१	६२०८		,	१८२३	६३	लिंक श्री बेनात नगर
४७२	६७८८			१८१२	१५७	
४७३	७८२८			१८४२	८२	लिंक गङ्गाधराम
४७४	५५६३	यसिष्ठसंहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१८१८	१३३	
४७५	६४२१	बालवर्णकल	विद्वत्कर्मायिकाशत	१७६६	८	लिंक देवचन्द्र मण्डोवरमण्डे
४७६	५१३२	बालवर्णकल	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१८०६	७२	
४७७	४८७७	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८५८	१०	
४७८	४६५६	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८२४	१३	लिंक श्या जयपुर,
४७९	५६३३	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८६३	३	रत्नवाकाल सं० १७४२
४८०	४७१२	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८५६	६	लिंक राजवासी सिरह
४८१	५५३७	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	१२	राजस्थानी भाषाय सहित
४८२	६३५२	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	१२	कानिनाथकृत शोधोपनिषद्
४८३	७६५०	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	१६	लिंक इन्द्रमुदर
४८४	७६५८	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	१७	राजस्थानी भाषाय सहित
४८५	७६५८	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	२०	लिंक नवनिधिजय
४८६	७६५८	विश्वोत्तरोवर्णकल	यमोदर	१८१२	२०	राजस्थानी भाषाय सहित

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र नख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयादि	केशव गणेश देवस केशवार्क, भाष्य-शिवशंकर	१८वीं श.	२	ति क कल्याण प्रति की लिपि दो प्रकार की है लि क सुमतिसागर ति क छत्रीताराम श्रंगलपुरमध्ये
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन		१६वीं श.	२८	
४८७	६०६६	"		१७१२	२०	
४८८	६३३६	विवाहवृन्दावन टीका		१८६०	६२	
४८९	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य	उपेन्द्र	१८२१	५७	लि क सुमतिसागर ति क छत्रीताराम श्रंगलपुरमध्ये
४९०	६८३४	वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)		१८७८	३८	
४९१	४६५७	शकुन्तलीपञ्चूडामणि		१७६६	१२	
४९२	६३३०	शकुन्तसार		१६वीं श.	२	
४९३	५४५२	शकुनावली	रङ्गनाथ	१६१०	८	लि क व्यास पुरातोत्तम, स्थान-मथुरा
४९४	७६३७	शरपट्टति		१७५३	५	
४९५	५२२२	शिवार्तिरहित मुहूर्त	रघुयामलोपत	१८वीं श.	४	प्रथम पत्र अत्राप्त लि.क. रामचन्द्र शास्त्रण
४९६	४६५३	शिवालिखित "	शिवोपत काशीनाथ	"	६	
४९७	६४३६	शिवालिखित मुहूर्तमातिका		"	६	
४९८	४१५५	श्रीप्रबोध		१६वीं श.	४०	
४९९	४७५६	"	"	१७६७	२६	लि क देवीदयाल कायस्थ, काशी
५००	५०५०	"	"	१८६६	३१	
५०१	५७३८	"	"	१८८५	४६	
५०२	६३६७	"	"	१८५१	३४	
५०३	७१५२	श्रीप्रबोध भडुली के दोहे	" भडुली	१८६१	६३	लि क यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये " धीरविजय, कुष्माण्ड, प्रथम पत्र अत्राप्त
५०४	७६२५	श्रीप्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	

क्रमांक	प्र.या.क्र.	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	गुरुजातक	शुक्रमूलोक्त	१८४२	३	सिंह मण्डलसुत दुर्गादेव
५०६	४४०६	नववासना	कमलाकर	१७८६	४४	रामकृष्ण कायस्थ
५०७	४१०६	वटपञ्चांगिका	भट्टोरस	१८१८	६	, हरिकृष्ण ब्राह्मण बहापुर ग्रामस्थ
५०८	४६५०	वटपञ्चांगिका सटीक	पृथुपणा दो उत्तरन भट्ट	१९वीं श	२१	लिक जीवन्तविजय, जालीमध्य
५०९	४६८७	(सवासावबोध)	पृथुपणा	१८वीं न	१४	, ज्योतिर्विच्छेदभूरा
५१०	४६९२	सटीक	,	१८१९	२२	राजस्थानी भाषाय साहित्य
५११	४८४१		"	१८२२	१०	लिक कृष्णचन्द्र विजयरा
५१२	४७१३	वटपञ्चांगिकाधर्म	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	लिक कृष्णचन्द्र विजयरा
५१३	६५९४		"	१८८४	१७	, रामनारायण ब्राह्मण
५१४	६८१९		"	१६४५	१९	, ऊदा
५१५	७५७८	वटपञ्चांगिकाटीका	मनोराम	१७६९	११	, पुरवात्तमसुत लीलाधर देशधी
५१६	४६७३	" सतिबक	भट्टोरस	१९०१	९	, वामनसौभाग्यगणि
५१७	४८००	, (होराध्याप्यात)	पृथुपणा	१९वीं न	४	
५१८	७६२७	" सवासावबोध		१८१९	९	
५१९	६८३३ (१०)	वटिसवतसरफलम	न्यामत	१८४२	४०-४५	
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	यवज्जातका तमल	१७९७	१०	लिक वज्रवात्सो सिल्लु, काठया
५२१	४७९१	"	,	१८९५	११	रावल जीवा सुत श्रवारा
५२२	४७६३	स्त्रीजातकगण्डति		१८५८	१२	
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)		१९वीं न	१	
५२४	४५५५	स्वप्नाध्याय	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८वीं श	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि. क. वैजनाथ
५२६	५६१४	"		१६१६	७	लि. क. रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाङ्क तावर्तश्रवण	अङ्कृतसागरगत	१६वीं श.	११	
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	रत्नाकाल १८२२
५२९	५३१८	"	"	१८६५	४	स्थान-काम्यकवन
५३०	५३२२	"	"	१७१५	७	लि. क. हरदेवलाल
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोवत	२०वीं श.	४०	लि. क. नरहरिदास
५३२	४६७६	स्वरोदय शास्त्र	"	१६वीं श.	२१	
५३३	४८६८	"	"	१८३३	१०	लि. क. बलतराम तिवारी, देवगढ़
५३४	४८६०	"	"	२०वीं श.	२४	
५३५	५५१७	" विश्वम्भरी	जीवनाथ	१६१६	३६	
५३६	५४३३ (१)	सकेतकोसुदी	उभामहेश्वरसवादगत (प्रश्नोत्तरी)		१-५४	
५३७	५८०२	"	हरिनाथ	१६१६	१८	
५३८	४६६६	सजातन्त्र	"	१६वीं श.	२१	
५३९	५८०४	"	नीलकण्ठ	"	२५	
५४०	६६६०	"	"	१८६६	२०	
५४१	५१८५	"	"	१६वीं श.	५४	
५४२	५५३०	"	"	१६१०	५४	
५४३	६०४६	सजातन्त्रोदाहरणम्	"	१६वीं श.	८६	
५४४	५४७३	सजातिविकविवृति (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द देवज्ञ	१८२२	१०१	लि. क. काशीनाथ
				१८६२	३८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	"	"	१८४०	४१	लि.क. वजवासी,
५६५	७५०३	"	"	१९१३	३०	आद्य पत्र त्रुटित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली संग्रह		१९वीं श.	गुटका	
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)	समुद्र	१६६४	६	लि क ऋषि मति कीर्ति,
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	स्थान-नावसमा ग्राम (१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि.क. वैरागी राजपाल स्थान-पालहणपुर
५६९	५६६८(२)	सामुद्रिक		१९वीं श.	३-१६	
५७०	५३७३(३)	" सटीक		१८०६	७४-६७	
५७१	४६५६	" सायं	नृपति भूपति	१७०८	१३	लि.क. मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श.	३३	" जयकुण्ठ
५७३	४७३४	सारसंग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	" गुमानसागर, र.का. १७१८ स्थान-भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वीं श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१९वीं श.	१४-३६	
५७६	५६२२	सिद्धान्तस्य	त्रिविक्रमाचार्य	१८६५	७	लि क. वजवासी सिल्लुः
५७७	५०४३	सिद्धान्तस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९वीं श.	६२	

प्रमाण	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वृत्ता आदि पातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धांतरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१८२२	५५	कुम्भेश्वर क्षेत्र लिखितम्
५७९	५८०१	सिद्धांतरिरोमणि	, भास्कराचार्य	१७वीं ग	७६	
५८०	५२६१		, भास्कराचार्य	१८२८	३३	
५८१	५२६२			१६वीं श	३०	
५८२	५३३७		श्री रंगनाथ	१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धांतरिरोमणि मरीचि		१७वीं श	१८३	रत्ननाकाल-गाके १५४३
५८४	५६२६	सिद्धांतरिरोमणि वातिक (पुर्वदि)	भास्कराचार्य	१६वीं श	८१	
५८५	५६३०	, (उत्तरादि)	, भास्कराचार्य	"	५०	
५८६	५७८७	सिद्धांतरिरोमणि शसमाभाष्य		१८८२	१७६	
५८७	५७३३	सिद्धांतसुंदर	ज्ञानराज	१८४३	३१	
५८८	५५४६	सुरंगमचक्रम्	सिद्धंत गवल	१६वीं ग	७	लि. क. हरिमुख ब्राह्मण प्रथम आठ पत्र अभाव लि. क. रामनारायण आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५८९	५७५०	सुरसौक्यस्तक		१६०३	२	
५९०	५४५२ (८७)	सूक्तिकान्तम्		१८वीं ग	१२६-१२७	
५९१	५२५६	सूयचक्रपट्टनसारिणी		१६वीं ग	५	
५९२	५६५३	सूयप्रदाविसाधनसिद्धांत	दुर्गाशंकर	१८६३	६०५	
५९३	५४५२ (८)	सूयसूयचक्रादि	अज्ञात	१८वीं ग	१२४	लि. क. सजवासी सिल्लु ० लि. क. शालच व , देवसुंदर
५९४	६३७४	सूयसिद्धांत	मयसुर	१६२६	४७	
५९५	६८६२			१८वीं ग	१०	
५९६	५५२८			१६वीं ग	३४	
५९७	५८७६			१८५५	१०	

आतचन्द्र म्यामी भवामिप

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६८	४६५२	सूर्यसिद्धान्त टीका	नृसिंह देवज्ञ	१८वीं श.	६१	लि. क. रामजीवन
५६९	५५६२	सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या	विश्वनाथ देवज्ञ	१६१२	१५०	" हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४६	
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१६वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसजीवन		१६२३	१७	
६०३	५७८६	"		१६वीं श.	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	" लि. क. हरिप्रसाद
६०५	६८३३ (४)	हायनसुन्दर	नृसिंह	१६वीं श.	२६-३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजवीपिका		१६वीं श.	१०	
६०७	५७१८	"	"	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकीवत)	उसामहेश्वर सवाद	१६३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणकर	१८२४	२४	रचनाकाल-१७१०
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१६वीं श.	४६८	लि. क. चतुरविजयगणि, पालीनगरे
६११	४६११	त्रिपताकीचक्रादि	जतकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	"
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनदिचिन्तामणि	शिवोक्त	१६वीं श.	८	१. लि. क. धीरसुन्दर गणि
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	२. आद्य दो पत्र अप्राप्त
६१४	४३५४	" (अष्टयकाण्ड)	"	१७१५	२६	लि. क. प. विजयसोमगणि
६१५	७०३७	"	"	१७७५	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श)		१६वीं श.	१६	लि. क. सुलविजय, शाकम्भरीनगरे

क्रमांक	वस्तु/कु	वस्तु नाम	कर्ता आदि नातव्य	चिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रस्नारणिकार	महर्षि ऋषिनामविषय सोमनाथ (रीवा निवासी)	१६वीं श	२	लि क वास्तुमुकुट
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१६०६	३४	लि क गोवर्धननाथ, जयपुर
६१९	४४६४	ज्ञानमंजरी (प्रश्नविषयक)		१८७८	२६	रीवाभिधाने गणटे धनुष्यसमा
६२०	४६२१	ज्ञानमंजरी		१९०४	१७	कुल । तन्नाथसन् सोमनाथ करीमि ज्ञानमंजरीम ॥
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (जपूण)	श्री सोमलिलकसूरि, शिवपुरि गुणरत्नसूरि	१७वीं	३३	२५ २६, २१ वर्ष अप्राप्त
६२२	४०८८	क्षेत्रसमासावृत्ति		१७५३	१३	लि क दुर्गादास मति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावृत्ति		१६वीं	३२	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १२-छन्दःशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्दःकोस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास	१६०६	२७	लि. क. बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्दःपीयूष	भा. विद्याभूषण	१६०६	४४	लि. स्या. वृन्दावने आनन्दघट्टे
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	जगन्नाथ मिश्र	१६वीं श	३०	
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	गङ्गादास	१८वीं	१२	भूलि. क. कालिग वम्मणभट्टात्मज
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	धुरन्धरमल्लारि			चराहृग्रामस्थ
६	४४६४	"	केदार भट्ट	१८२१	६	लि. स्या. कर्णपुरग्राम
७	६६५६	"	"	१६वीं श	१५	लि. क. लक्ष्मण, पृथ्वर
८	४३३६	" (सटीक)	"	१६२०	१०	लि. क. गुणाकर विद्यार्थी
९	४४३३	"	"	१५८२	३८	प्रति जीण, दोमक खाई हुई
१०	४०३२	" सदाशिवबोध	टी भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चे. गु. १
११	५१४१	" सटीक त्रिपाठ	टी मेरुसुन्दर	१८वीं	११	स १७३१
१२	५५५८	" सटीक	टी श्रीकण्ठ	"	२०	टी. गुर्जर भाषा में
१३	६४४७	" (सेतु टीका सहित)	टी भास्कर शर्मा दायानिभट्टमुत	१६वीं श	१५	अपूर्णा, नुदक
१४	७४८२	" सटीक पञ्चपाठ	टी सोमचन्द्र	१६०३	३२	अक्षवर्तितुल्यभूतवर्षे टी रचना
१५	७५१३	" वृत्ति	वृ. समयसुन्दर	१७वीं	२०	लि. क. फन्हैयाराम
१६	४३५६	" सटिप्पण	वृ. समयसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण	टी. क्षेमहंस	१७वीं	१३	पत्र जीर्ण एवं कीटवित्त
१८	४४६२	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	६	
				१७६२	२	लि. क. मुरलीधर श्रीदुम्बर, काश्याम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्तार आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	५४६३	भुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	टोका का रचनाकाल—भूतक वाण-भुमिनाका-दे १५६० साले (१६६५ वि०) समय-ताराजस्य राज्ये
२०	५१८०	,	"	, १६११	७	
२१	६६७१	,	,	१६वीं	४	
२२	६०२६	,	टी माधव यवस मोवि-दसुत	,	१५	
२३	५२१८	म (कालिदासभट्टाकासहित)	नोल-भट्टाकास गामयवशोवभव	,	१५	
२४	५६६३	सुवसतिलक	क्षेम	२०वीं	२३	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १३-संगीतशास्त्र]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसंगीतरत्नाकर (द्वितीय- रागाध्यायः) रागमाला	भाव भट्ट जनार्दनसूनु व्रजनाथदीक्षित पञ्चनदीय (गोकुलस्थ)	१८वीं	२५६	जीर्ण प्रति *
२	४१६६			१८६४	१०	*
३	५०६४	"		१९वीं	२	

राजस्थान पुरातत्वावेपण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२, १४-कामशास्त्र]

क्रमांक	प्रपाठ	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नामव्य	निधि समय	पृथ संख्या	विक्षप उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषाय सहित	कोक कवि दोक्षर कुम्भकोक पण्डित ,	१६वीं	१५	
२	५७२०	यटवसायक		१८वीं	३२	
३	४४२६	रत्निरहस्य		१६वीं	२८	
४	४७७५			१६८३	४२	

राजस्थान पुरातत्वावेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग--२; १५-काठ्य-नाटक-चम्पू]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अङ्गुतरामायण	चाल्मोकिमुनि	१८६०	४३	लि क हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्सरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	डो. श्रीराम वर्मा हिस्मतवर्मणः पुत्र	१६२७	१७	लि क व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्सरामायण सटीक त्रिपाठ	"	१८वीं श	१७६	
४	५५८६	अध्यात्सरामायण (अयोध्याकाण्ड)		१६०४	३५	
५	५५८७	" (वाल्मीकाण्ड)		"	२४	
६	५५८८	" (सुन्दरकाण्ड)		"	१७	
७	५५८९	" (किष्किन्धाकाण्ड)		"	२८	
८	५५९०	" (अरण्यकाण्ड)		"	२६	
९	५५९१	" (युद्धकाण्ड)		"	५२	
१०	४३३१	अनर्घराघव	मुरारि	१७वीं श.	२०	डो. लोभालकुतोद्भव
११	६६६८	" , टीका	मू. मुरारि, डो. महोपाध्याय रुचिपति	१८वीं श	४१से१८६	वैजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि- नारायण-पद-समलकृत महाराजा- धिराज श्रीमङ्गरवासिदेव- प्रोत्साहित लि.क दवे विश्वेश्वर गोलवाल जयपुरमध्ये पञ्चमोक्तपर्यन्त
१२	६४०२	अन्यापवेशातक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	
१३	७५१७	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	"	२१	
१४	४३२५	अमरशतक सटिपण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरक)	१८६१	३६	लिपित पंडितदेवदत्तेन नाहटा जसरूपपठनायम्
१५	५६६५	अमरशतकम्	अमरक	१८२७	६	

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रन्थ नाम	कता प्रादि नूतन्य	निर्गम समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	समस्तगतक (भावचित्तमणि) व्याख्यासहित	समस्तक दो चतुर्भुज मिय	१८६०	६२	लि क नगसागर
१७	५१६८	उदयसदेग	श्रीरूप गोस्वामी	१८६०	८	लण्डन । ६ से ८ तक पत्र
१८	५३३०	शत्रुसहार	कालिदास	१७६८	८	कीटविद्ध
१९	७४६६	कर्णामत सटीक	सू लीसागुल, टी चतयदास	१८६०	१८	लि क मुनि श्रीरायव
२०	५१६७	काष्ठध्वरी (प्रथम)	बाण भट्ट	१८६०	१८५	लि रवा हिसार
२१	६१७४	उत्तराड	बाण भट्ट तनय (पुलि व)	१८६५	८२	१२वां पत्र अग्रपत्र
२२	६६२६	,	,	१८८०	८२	प्रति सुन्दर है
२३	६६७४	गुणसङ्ग	बाण भट्ट	१८८	१५६	लि क सातविहारी भायुर
२४	५२०४	किराताजु नीयम	भारवि	१८९१	११८	प्रथम पत्र अग्रपत्र लि ५ वलणव
२५	५१२५	सटीक	सू भारवि, टी मल्लिनाथ	१८२५	१३४	हृदिवास अयपुरमध्ये
२६	६००१	" "	टी सनात	१७६०	५३	
२७	६३१३	" "	भारवि	"	१३	लि क बूडामणि सत्ताववागरे
२८	६७६१	साधवूरि		१८६०	५४	प्रसिद्ध अष्टमसमयपत्र प्रथम
२९	६६८२	सू		१७७१	६०	पत्र अग्रपत्र
३०	५३६५	कुमारविहारनाटक	रामचन्द्र	१७६०	५	पञ्चदशसमयपत्र

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि ज्ञानव्य	विधि मस्य	पत्र म-सं	विशेष उल्लेखीय
३१	४३६७	कुमारसम्भव सटीक	सू कानिनाथ, डी नन्दिनाथ	१६६४ १७५६	५०	नि क उरयनिधान मुनि नि ह्या. योगपुर, फारि के २ प्र संज्ञान, मन्त्रम संग्रहपत्र
३२	७५८६	"	"	१८३१	६६	नि क सागरदत्त, नि ह्या कुमा मर १०वां पत्र यक्षान्त
३३	४१६७(१)	" मूल	कालिदास	१८४०	५४	मणन मंग पद्येन, नि क. पुनोत्तम साचाय
३४	६००५	"	"	१७वीं स	३८	मन्त्रमन्त्रपद्येन, ३५वां पत्र संज्ञान
३५	६८७०	" सप्तसिंह	"	१८वीं स.	७०	मन्त्रमन्त्रपद्येन
३६	५५१०	" सटीक	सू कानिनाथ, डी नन्दिनाथ	१७१२	१११	नि क सतीश्वर नामक साचाय
३७	४१६३	" प्रष्टम मंग	कानिनाथ	१६१८	५	नि क सान सापेश्वर
३८	४६८५	" प्रष्टमसंग्रहपत्र	"	१८६१	६६	नि ह्या. योगपुर
३९	७००१	" सटीक	सू कानिनाथ, डी. नन्दिनाथ	१८वीं स	१३३	मन्त्रमं के ३५३ दोशस्वयेन
४०	५१०७	"	सू कानिनाथ, डी. परमहंस वसिनाथनाथार्य मरुवपीपीय	१७वीं स.	३२	प्रष्टम पत्र साचाय, प्रष्टम मंग के मन्त्र दोश के रत्नस्तमं के
४१	७७६४	कुरुपुत्रावधिसौमिका	हनुमन्तरि	१६वीं स.	६	२०६ दोशक तक दोश है
४२	५२७१	मण्डप्रशस्ति	"	१७५८	२८	नि ह्या. धर्मोत्तर सन्ध्यामयीसाचाय
४३	४३३८	"	"	१८वीं स	३०	

क्रमांक	प्र.पा.क.	ग्रंथ नाम	वर्ता आदि शातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विगण उल्लेखनीय
४४	५६६८	खण्डप्रगति	हनुमत्कवि	१६वीं न	६	जोग श्री प्राचीन प्रति
४५	५७७६	खण्डप्रगतिवलि	वसिष्ठाकर गुणविनय	१८वीं न	२०	
४६	५०६०	गीतायोगिन्द	जयदेव	१८वीं न	३४	
४७	५२०५ (१६)		"	१८वीं न	६६से६६	
४८	६०६०	" (सटीक त्रिपाठ)	डो खत यदास	१८वीं न	४६	
४९	६७३४		जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	" सटीक	मू, डो खत यदास	१८७७	५१	बालबोधितो टीका नि मयुरामध्ये
५१	६७८६		जयदेव	१८वीं न	६५	१२ ११ १२ १३, १४ ६१ ६०
५२	६८१७		,		७२	६३ वीं पत्र मंत्रात
५३	७६२८		,	१८वीं श	१०	अपुन प्रयस पत्र शोभन
५४	७७५१	साय, पदसंग्रह		१६८३	१७७	गुटके के अंतमें सरदास हरदास परमानन्दास कुल्लुजीवनी लच्छीराम आदिके पद व परम राम काविक दोहे तथा सुवर्ती बीजमन्त्रादि लिख हुए हैं।
५५	७७५५	,	,	१८वीं न	५७	
५६	५१५७	सटीक	जयदेव डो गेय कमलाकर	१८३०	६२	साहित्यरत्नभाष्या टीका लि क हरिचंद मयेन (मयरी) रूप नगरमध्य
५७	६६८०	गोवर्धनसप्तशती सटीक	मू गोवर्धन डो अन तपडित	१८१२	३०५	टीका नाम व्यङ्ग्य पायसदायन है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	निर्णय समय	पत्र संख्या	निर्णय उल्लेखनीय
५८	४४८६	घटलपंर	कालिदास	१८०५	२	लिंक भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६६	"	"	१८वीं श.	४	
६०	६३०६	" सटीक	सू. " टी. प्रजात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श.	३	
६२	६६२८	जयशमहाकाव्य	सीताराम पर्यणीकर	१८४१	१३३	नयपुर के इतिहास में सम्बद्ध काव्य
६३	७७६३	दुर्जनमुखचोटीका	रामाश्रम	१८वीं श.	४	
६४	४४०१	द्रौपदीवस्त्रदानप्रबन्ध	गोयद्वेन	१८१४	८	
६५	५६०२	धर्मसाम्प्रभियुद्ध	हरिश्चन्द्र (गार्हपत्य काव्यसंग्रह)	१८२३	३६	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थोद्गमपर्वन्त
६७	४०६२	नलोदयटीका	सू. " टी. मनोरथ रुयि	१८वीं श.	३८	विद्युधनविद्या टीका
६८	७४५८	"	सू. " टी. कविमोहन मेराय	१८३५	३२	साहित्यरीतिकान्धनी
६९	६१६३	" सटीक त्रिपाठ	सू. " कैलाश नृसिंहाश्रम- कृत टीका सहित	१८५५	४८	विद्युता नयतरासेन लिखीकृतम् निर्णय भरतपुरसंग्रह तृतीयोद्गम के अन्त में रती केला तिला है
७०	५६४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के इकोको के अन्तर्गतपरिचरप
७१	५१६२	नंयधीपचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श.	२२०	अन्त पत्र अष्टाष्ट
७२	७०४२	"	श्रीहर्ष	"	६६मे १६०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक में नयमसर्गान्त

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्तमानादि नातव्य	निर्गम समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
७३	६२६१	नवयोग्यचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टो विहारण्य योगी	१८वीं ग	१६	सि क जोशी रघुनाथ जयपुर
७४	४३८८	नसिहवम्पू	केगव भट्ट	१६वीं ग	१५	सवाईभाधोसिंहजी राज्य
७५	५१५८	प्रसन्नराजव	जयदेव	१८१५	७३	सि क चतुर्नूज मिश्र
७६	५३६४	'	"	१८५०	३८	
७७	७२६८	परिनिन्दण्य (स्वविराक्तो चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं ग	१२०	
७८	७२१६	गण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	सि क राय श्री कुगभाणजी
७९	५६४२	प्रसन्नसत्त्वकवचिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६६	१३	विजयराज्य रामपुरामध्ये
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (सतीसगण्यत्त)		१६वीं ग	८	त्रिपट्टिवालकापुरयचरित्र
८१	५१६०	भूमिनीविलास	जगन्नाथ पण्डितराज	१८११	३६	तगत । सि क प० विद्याकीर्ति
८२	५२४०	भावगतक	नागराज टाकवीय	१८वीं ग	६	पुण्यतिलकशिष्य
८३	६६५३	"	'	१६वीं ग	१५	प्रति सुन्दर प्रति
८४	७१३५	समुक्तोत्तिवली	गोवर्द्धन	१६वीं ग	३७	प्रथम पत्ररहित
८५	७०२२	महाभारत	श्रीवेदव्यास	१८३७	१७१७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८६	६८१०	आदिपर्व	'	१६वीं ग	२१५	सि क हरिदत्तनागर सावरमध्य
८७	७४६५	'	'	१७वीं ग	३५६	अज्ञेय खण्डववनदाहृषयत्त
८८	७८०२	'	'	१७७३	३७१	सि क होरान द श्रीदीच्यजालीय

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६६४	१४२	लि क गोवर्धन
८७	६०६७	" "	"	१८१०	६६	लि क मनोहरदास
८८	६१८५	" "	"	१८वीं श	१६	
८९	६६११	महाभारत सभापर्व	"	१६४५	१५१	लि क हरिदास व्यास गागात्मज
९०	७४६४	" "	"	१६वीं श	६२	माडलमध्ये
९१	६१८६	" सौशलपर्व सटीक	टी नीलकण्ठ	१८वीं श.	१	
९२	५४७५	" ऐपिक, आश्रमवासिक, सौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	"	ऐपिक ६ आश्रम ३५ सौशल १२	
९३	७४५८	" सौशलपर्व	"	१६वीं श.	१३	
९४	६१८८	" आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकण्ठ	१८वीं श	१	
९५	६१८९	" सौस्तिकपर्व सटीक	"	"	१	
९६	६४७०	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	१५	
१००	७१२०	" "	"	१८२६	३२	रायचन्द्र साह्यण को शक्तिरिह- सुत भोपतिरिह द्वारा प्रदत्त प्रति- ग्रन्थ मे लिखित 'जयश्री चतुर्भुज- रायजी', स्थान-सावर
१०१	६१८७	" श्रावणपर्व पर्व सटीक	मू. " टी नीलकण्ठ	१८वीं श.	३६	
१०२	५४६८	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	३४७	
१०३	६१६०	" विराटपर्व सटीक	टी नीलकण्ठ	"	६	
१०४	६१६१	" उद्योगपर्व "	"	"	३५	
१०५	७४५३	" " मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमांक	पद्यांक	ग्रन्थ नाम	वर्तमान नाट्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महोभारत कणपव	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लिक विद्याधर गुजरगौड पञ्चोत्तरी लिखायित भोपालसिंह नवतावत, देरा पत्र अग्रप्राप्त
१०७	६१६२	कणपव सटीक	दो नीलकण्ठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	भोजपव	श्रीवेदव्यास	१७५३	११६	
१०९	५४७७		,	१८वीं	३१६	
११०	७४६३		,	१९वीं	१५४	२४वीं पत्र अग्रप्राप्त पत्र ५६ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक सं० १७५८ में लिखित शेष १५वीं गती के हैं
१११	५५०१	श्रीकणपव	१८वीं	१५१		
११२	५४६२	विशोकपव	१८२६	१२		
११३	६१६५	सादशमयिकपव सटीक	१८वीं	१२		
११४	६१६३	गातिपव राजपम सटीक	,	१६		
११५	६१६४	" सापवपम	"	६		
११६	६८६७	" राजपम	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लिक साधु निरंजनी उत्तमराम लिख्या सावर
११७	७१२१	स्त्रीपव	,	१८२६	३५	
११८	६१६६	मोक्षपव सटीक	दो नीलकण्ठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	होरपव	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०६	
१२०	६७००	महाराजपम सटीक त्रिपाठ	श्रीवेदव्यास	१८वीं	१०६	त्रुटित
१२१	६५८८	महाराजपमनंतगत (सोतारामादिग्रन्थमनवपन)	१८वीं	५		

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मर्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्सहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी रासतीला वर्णनपरक
१२३	६२३६	"	"	१८वीं	१४	"
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	"	१७	श्रीह्वारकापते प्रसादाय-रचितमिदमनाटकम्
१२५	४३६१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू. विशालदत्त, टी. दुर्धियजवा	१६वीं	८०	
१२६	६६०६	मूलरामायण	चाल्मोकि	१७६७	१३	
१२७	५०६७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्या जोधपुर, व्यास माधव-
१२८	५१६३	"	"	१६वीं	२ से १७	मुक्त परमानन्द पठनायम् प्रथम पत्र रहित, लि. क. हरिकृष्ण
१२९	५७०६	"	"	१८६४	२१	
१३०	६१२३	"	"	१८वीं	११	लि. क. मूनि धिनीतसागर भाय-सागरनित्य मूर्तमध्योलिखित
१३१	६२४८	"	"	"	१८	
१३२	६१३७	" टीका	"	"	२२	लि. क. मूनिश्रीरविजय सद्य-प्रिययामगिनिधय
१३३	७२३५	" वृत्ति		१६८३	४१	
१३४	४३८६	" सटीक		१८०१	२७	लि. क. चतुरनिजय गणि
१३५	४३६०	"	टी घनेश्वर	१७६३	२६	लि. स्या श्री कर्णपुर
१३६	५१५६	"	टी पूर्णनिन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	लि. क. श्री दयति

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रंथ नाम	वर्त्ता आदि आतव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	रिगप उत्पत्तनीय
१३७	५६२५	मयवृत्त सटीक	मू कातिवास टी अतात	१७वीं	३०	लि क मनि नालचद पाटलिपुत्र
१३८	६०५३	"	"	१६वीं	२४	वत्तने
१३९	६१६६	"	"	१७५२	३६	लि क फतेविजय गणि रगविजय
१४०	६८६६	"	"	१७८६	३१	शिष्य विताडास्थाने लिखितम
१४१	५६४१	सावर्चुरि विषाठ	"	१७८६	२४	विनिट प्रति
१४२	६००३	"	अवचूरिकर्ता की लक्ष्मीनिवास	१६वीं	६	लि क अमरहसगणि कल्याण
१४३	७२६६	सावर्चुरि	"	१८०७	२२	हसगणिशिष्य विनिट प्रति
१४४	५१८१	" सटिपण	"	१७वीं	१६	लि क रायव शर्मा
१४५	६६६३	मोहिमुंगर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि क अवावासी अलवरमध्ये
१४६	५७५६	रघुनाथवरिलमासा	महामुंगल भट्ट	१६१२	५	लि क पुरयोत्तम आचार्य
१४७	४१६८	रघुना	कालिदास	१८४६	१४२	स्या जयनगर
१४८	५१२४	"	"	१८३६	११६	लि क साता मयाराम कृपाराम
१४९	६२११	"	"	१८४५	१२२	मुत । लि स्या हिडिम्बानगर
१५०	६५६१	"	"	१८६८	८७	यति मुलान दपठनाथ
						आरम्भ के कुछ पत्रों में
						टिप्पणियाँ हैं ।
						लि क मनीराम पण्डित
						कर्मोत्तरगरे

क्रम-सं.	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातग	तिथि समय	पग संख्या	निक्षेप उल्लेखनीय
१५१	६७८६	रघुयश	श्री कालिदास	१८वी	८३	ह्रस्वशासंगपर्यन्त
१५२	६८४७	"	"	"	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६६	"	"	१६३३	७४	पग १ से ६ अप्राप्त ।
१५४	७०५२	"	"		११६	ति. क. गोपात व्यास, श्री रङ्ग- स्वात्मज नरसिंहवास, मान्धातु- पुरमध्ये, श्रीमदकबर पात- साहिराज्ये
१५५		" (सटीक (मुगसान्वयबोधिका टीका) रघुयश सटीक	डॉ. सुमतिविजय	१६०१	१६६ से ३४७	सर्ग १२वें से १६ तक
१५६	५४६६	"	डॉ. मलिनाराय	१८वी	२२१	ति. क. विरधीचं वीकानेरमध्ये
१५७	६७६२	"	"	१७वी	१४२	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५८	६८१४	"	डॉ. रामयसुन्दर	१६वीं	६१	चतुर्विंशसर्ग के ७२वें वीकपर्यन्त
१५९	७३०२	"	डॉ. धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	नवम सर्ग पर्यन्त
१६०	५४६१	" सटिपण पाठान्तरसहित		१८वी	३८ से १८२	८१वा पग अप्राप्त
१६१	६६७६	" सटिपण		१५४७	१०६	ति. क. वाचक तिहुणकीति
१६२	४३२६	" साकचूरि गचपाठ				चारचद्व शिष्य श्री मरुस्थरादेशे
१६३	७०८३	राधाकुण्ड पेमसम्पुट काव्य	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण-	१६२६	११४	शुद्धवन्ती श्रीश्रीनगरे सातल-
१६४	७५८५	राधामाधवीला	विश्व नयनन्यशर्मामृत	१८वीं	१७	विजयराज्ये मंगेश्वर बणवीर
					६	द्वृता श्रीचैतगच्छे
						ति. क. वीरहस आद्यपग च्युदित

क्रमांक	पंचाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि आगत्य	त्रिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामचरण भाष्य	सूयकवि	१६वीं ग	२	लिंक घनस्यास व्यास पाराशर
१६६	५६५७	, सटीक		१६२३	२६	सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामचरणकाव्य सटीक निपाठ		१६१६	१८	अध्ययटीपिकानाम्नी स्वोपस टीका
१६८	५६०६	, सटीक		१६वीं ग	६	लिपिकार ने भूल से सम्भवत
१६९	५६०७	, ,		१७वीं श	७	टीका का नाम अनूपबोपिका
						लिख दिया है
१७०	६२७३	रामदास ओखन (सुखान्तसहिता-संगत)		२०वीं श	२४	
१७१	४४००	रामहनुमदाष्टक		१७वीं ग	८	लिंक हयवृहत्समिति
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र		१८३२	१४६	लिंक जोशी रघुनाथ
		(प्रपञ्चामताभिधान काव्य)				सवाईजयपुरमध्ये
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७६६	८३३	
१७४	५४७१	, वात्सकाष्ट		१८वीं ग	६०	
१७५	५५१४	, ,		, ,	१५	
		(सूरसामायण भाग)				
१७६	४२५०	, ,		" ,	२०	प्राद्यपत्र सचित्र
१७७	५६६७	, ,		" ,	१२३	प्राद्यपत्र शोभन
१७८	६२६१	, ,		१८६०	७४	
१७९	७०२५	, ,		१८वीं ग	६३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विवरण उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१६ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	" "	"	"	१५५	"
१८२	५६६६	रामायण अयोध्याकाण्ड	"	१८वीं	२२५	"
१८३	७०२६	" "	वाल्मीकिमुनि	१८०८	११५	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८४	६४६६	" "	"	१६वीं	३३०	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८५	५४४७	" "	"	१८वीं	२३१	दोनों काण्ड एक ही जिल्द में हैं
१८६	६१४४	" अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड	मू. वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१६वीं	३४+२६	
१८७	५६७०	" आरण्यकाण्ड	वाल्मीकि	१८वीं	१२३	तिलकव्याख्या सहित
१८८	६१४३	" "	"	१६वीं	१७८	"
१८९	६५०१	" "	"	"	११७	"
१९०	५०४२	" किष्किन्धाकाण्ड	"	१७६२	७६	पत्र ६, ६६या अप्रान्त, पत्र २६ से ८० तक प्रायः युद्धित, प्रति जीर्णोद्धार, लि. स्यात् तू गानगर आद्यन्तपत्र शोभन
१९१	५६६८	" "	"	१८वीं	१२७	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भी गे हुए हैं
१९२	६०१८	" "	"	१८६६	१२२	तिलकव्याख्या सहित
१९३	६२६०	" "	"	१६वीं	१२१	
१९४	६५०२	" "	"	"	१५२	
१९५	६२०४	" सुन्दरकाण्ड	"	"	१००	भीकाजीलक्ष्मणस्वयं पुस्तकम्
१९६	६०१७	" "	"	१७६६	१३७	पत्र स० ११६ तक पत्र प्राचीन
१९७	६१८४	" "	"	१८वीं	१२८	हैं और १८वीं श. के प्रतीत होते हैं, स० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१६८	५६७१	रामायण युटकाण्ड	शाल्योकि मुनि	१८वीं श.	२८८	
१६९	६०१६	रामायण युटकाण्ड		,	२८९	
२००	७८०७	"		,	१६६	
२०१	५६७२	, उत्तरकाण्ड		१८६७	१६६	अमरतसेर लिखितम
२०२	६०२०		भोमनिवेशमुनि	१६वीं श.	१८६	लि क लक्ष्मण
२०३	५५२१	रामायणसार		१६वीं श.	१२	विद्वज्जनविनोविनो टीका
२०४	५३६६	राक्षसाध्य सटीक त्रिपाठ		१८वीं श.	६	प्रति सुवर है
२०५	५६६२		टी सरदेव भट्ट गोपीनाथभुत		२	अपूर्ण
२०६	६०६	वासववत्सा	सुबोध	१७५३	६६	गोकुलचं. गोस्वामिना लिपिकृतम
२०७	५३०२	विदग्धभाव		१७५८	१००	लि क हृदयराज काव्य
२०८	५२३०	विप्रमुखपौटासस्तक		६वीं श.	२६	प्रथम पत्र संपादित
२०९	६०६२	विदग्धभावसप्तचम्पू	वैकुण्ठबायाजी काञ्चीनगर- बास्तव्य	१६१८	६०	
२१०	५३३७	वेणीसहार	नारायण भट्ट	१७वीं श.	५४	
२११	६७१७	नतलोकी रामायण	अग्निवेशमुनि	२०वीं श.	११	लि क गोपीनाथ
२१२	५६१२	भानुजय माहात्म्य	धनवर	१५११	१८५	आनापल्ली में लिखित
२१३	७२५३			१६७१	२२५	
२१४	७०५०	निगुप्तवध	माधकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पात्र अप्राप्त
२१५	६००६	निगुप्तवध टीका	टी धन्तम (आमदेवायनि)	१८वीं श.	२४३	प्रति सु दर है
२१६	७०८७	मटिण्ण	माध कवि (?)	१५५२	१२८	विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३२७	रसदीधिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र का. स. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२६४	रसमञ्जरी	भानुवत्त मिश्र	१६०४	२४	लिखित रामचरणेन
२१	६३१४	"	"	१८५३	३२	
२२	६४०४	"	"	१७०५	५	लि. क. मेघराज ऋषि
२३	६६३१	"	"	१६वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्याख्यायकौमुदी	मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित त्र्यम्बकपण्डितात्मज	१६०६ (?)	४६	काशिराज श्रीचन्द्रभानु- कुतूहलार्थं निमित्त
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी. शेषाचलामणि	१६२१	२४	पत्र १-२ अप्राप्त
२६	७७८२	" रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१६वीं	७२	
२७	६६६७	" सटिप्पण	भानु कवि	"	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत	१८३८	४२	लि. स्था. ठुणगढ
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज	१६०२	१७४	व्यास मोतीराम पठनार्थम् लि. क. साधु प्रभुदास चारुल पत्र कान्हजी उमेदसिंहजी पाटण्वासी वाचनार्थ जोधपुरे लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१६वीं	३६	
३१	६००२	वाग्भटालकार टीका	मू. वाग्भट	१७वीं	१६	
३२	६८७२	वाग्भटालकार (पञ्चपाठ)	"	"	२०	
३३	७१६१	पदभजिका व्याख्या वाग्भटालकारसायचूरि	"	१६वीं	८	

क्रमांक	पृ.पा.कू.	ग्रंथ नाम	वर्तमान नाम	विषय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३४	४३०६	रागभट्टासकारवसि	धमवास	१६वीं	१५	२,६७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदग्धपुष्पमण्डन		१६४७	२८	सूर्याष्टमहोत्रियुते विक्रमे
३६	६६४६	"	"	१८१२	२४	सिंहक राधाकृष्ण गुरजी
३७	७६८७	"	"	१८४२	३६	निबन्धनामसुत
३८	७६६२	सद्विषय		१६८२	१५	सिंहक गङ्गादास होरानन्द
३९	६४१८	" साधुचरित	अध्वर्युचरितं अज्ञात	१८३६	४५	सूर्याष्टमहोत्रियुते विक्रमे
४०	६३१०	यतिवार्तिक	अध्वर्युचरितं	१७वीं	१६	(पाली—सारथाड)
४१	६६६६	"	"	१८वीं	१७	सिंहक निबन्धनामसुत
४२	५८०३	अध्वर्युचरित (विदग्धपुष्पमण्डन टीका)	नरहरिभट्ट होरानन्दानन्दन	१६वीं	८	
४३	५३११	साधुचरितकार (अध्वर्युचरित)	धीयमसुधी पद्यनामसुत पुस्तकान्नामसुत होरानन्द गोत्रज	१६वीं	१६	वाराणसी में रचित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १७-मुभाषितादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारचर्याख्य)	क्षेमेन्द्र	१६३६	६	रसाङ्गशङ्केतुहायने लिखित गोपरामेण शुक्रकुण्ठेग्नभूतिथौ
२	७२७२	एकपण्डितयुतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कपूर्वप्रकरणसायचूरि	मू. हरिकवीश्वर टी. जिनसागर सूरि	१६वीं	२५	
४	५६४७	"	सोमचन्द्र रत्नखेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि. क. सधमाणिषयगणि लि. स्था. चम्पकनेर महानगर अणहिलपुरमध्ये लिखित लि. क. सोमचन्द्रगणि लि. स्था. पत्तननगर (पाटण गुजरात)
५	५६५६	"	हरिमूनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	
६	७३६५	वृद्धास्तकतक (राज. भाषार्थ सह)	तेजसिध गणि	१७६६	१६	
७	७३६७	" मूल	" लूकागन्धीय	१८वीं	१८	
८	७५४८	"	" "	"	६	लि. क. फाहजी मुनि लि. क. गगाधर
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भर्तृहरि, टी धनसार	१८२२	२५	
१०	४४५२ (३४)	" सस्तबक	भर्तृहरि	१८०७	१-१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि. क. विनोदसागर लि. स्था. श्रीकृष्णगढमध्ये प्रथम पत्र अप्राप्त
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	वेद्येन्द्रसूरि	१६वीं	१३८	
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरपण्डितशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	"	२३	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	विश्वभक्तप्रभुपति	१६७६	४५	मुद्रित
१६	५१५६	भक्त हरिगतक (वराह शुभार)	भक्त हरि	१६७६	२२	भूषण
१७	५४८२	रत्नकोश	संग्रहालय	१७४६	६	
१८	५६०७ (२)	संग्रहालय	संग्रहालय	१८३७	२३-३४	
१९	५५७१		"	१८०५	४	लि. क. सामन्त श्रद्धा
२०	६७५०	संग्रहालय	"	१६७६	१६	रत्ना राजपुर
२१	६७७५	संग्रहालय	भक्त हरि	"	६	लि. क. बालकदास कबीरपदी
२२	५५६१	" सटीक	भू भक्त हरि, दो खलवार	१८६०	५१	
२३	५५५२ (३६)	" सूत्र	भू भक्त हरि, दो खलवार	१८०७	२५ से ३६	लि. क. प्रोत्तसोभाय गणि
२४	५४३७	गतकत्रय	भक्त हरि	१८७०	६२	रत्ना बण्डा ग्राम
२५	६१२७	"	भू भक्त हरि, दो खलवार	१८७०	६३	
				मोतिदासक		
				१-२०		
				भू. ग. २०-३६		
				व. ग. ३६-६३		
२६	७०८०	शृंगारगतक	भक्त हरि	१७५६	२०	लि. क. किशोरदास सुरतोबास
२७	५५५२ (३५)	"	"	१८०७	१३ से २५	शिष्य
२८	६६६४	सम्भारजन सुभाषित	"	१८१४	१७	लि. क. प्रोत्तसोभाय गणि
२९	५५७२	सम्भारगतक	सम्भारगतक	१७५१	१४	रत्ना बण्डा ग्राम
						१३वां पत्र अप्राप्त
						लि. क. रामनारायण
						लि. क. श्रद्धा धनजी
						रत्ना राजपुर नगर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निर्णय समय	पृष्ठ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	संस्कृतमञ्जरी	अनन्तपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७८	"	"	"	४	
३२	५५२१	"	"	१८१७	६	नि.क. रामगोपाल, स्या. बूढी
३३	६५७७	"	"	१८वीं	३	
३४	५६७७	"	"	"	३	
३५	६२५३	"	"	"	१६	
३६	६४०५	संस्कृतमिगि (ज्ञानक्रिया सञ्चाद पत्र)	सोमप्रभ	१७८८	३	ति.क. प. गुप्तानन्द
३७	४५७४	सिद्धप्रकर	"	१७वीं	५	
३८	६३८७	"	"	१६६४	५	ति.क. चोखुन्दरगि
३९	७३१६	"	"	१५वीं	५	
४०	४४०४	संज्ञानावबोध	मू. सोमप्रभ, टी. पाठकप्र	१८५२	६१	ति.क. शम्भुगोभाग्य
४१	४४५६	"	राजगीत			नि.स्या. श्रीवत्सनामर
४२	६२७६	"	मू. गोमप्रभ, टी. हर्षसोति	१८वीं	१७	
४३	७३२६	"	"	१८७२	४३	ति.क. नृगि नमराय
४४	७३२६	"	मू. गोमप्रभ, टी. पाठक राजगीत	१८३०	५०	गोमप्रभ मन्त्रे
४५	७२६२	"	सोमप्रभ	१७५६	२२	ति.क. राजगोभाग्य
४६	४३६७	"	"	१७६२	१६	श्रीधिनारायणदे
४७	४४१७	"	"	१७वीं	१२	ति.क. लक्ष्मीनर नायनगरे
४८	४५७०	"	मू. गोमप्रभ, टी. गोरनाथराजगि	१८४७	१६	१३वीं पद पद्यान
						नि.क. नृगि भाग्योत्तर
						ति.क. चोगाजी, चोगा रेसमपे

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्त्ता आदि भातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४६	मिर्झपुरकरसूक्तिसुभाषितावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि क प्रमाणविजय स्या पोहकरण
४९	७४४४(१६)			१८८६	३१०-३२४	
५०	५३५२	, सूक्तिरत्नकोश		१९०१	६	
५१	४८११	सुभाषित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२(१०१)	सुभाषितरत्नोका		१८५०	१३६५	
५३	४५६६	,		१८५०	८	प्रतिलिपि योग्य जीण खरडा
५४	७१५३	,		१८५०	२५०	लि क सुनिवास निधय राणपुर एक हजार से अधिक सुभाषितों का संग्रह महत्वपूर्ण विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५५	४३४६	सुभाषितसंग्रह		१८५०	२	
५६	७१०३	,		१८५०	२७	लि क विमलहय भीमजी पटनायक
५७	४३४८	सुभाषितसंग्रहावली		१९८२	६१	लि क सावल पण्डित
५८	६३२२	सुभाषितावली		१९३६	२२	
६०	७७४१(६)	सुभाषितावली		१८१०	४३-७७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६ (६)	चन्दनयन्त्रिविधानकथा	बुद्धिविजय	१८वीं	१०७-११०	लि. क. रामविजय गणि
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा		१८५३	२३	लि. स्या. श्रीराधनपुरनगर (गुर्जरप्रांत)
१७	७२६२	"	राजवल्लभ पाठक	१८वीं	१३	लि. क. ऋषिचन्द्रभाण, बीवासर-
१८	६६२०	" सटिपण	" महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	मध्ये, रत्तनाकाल १७२२
१९	४३६८	" चरित्रस्तम्भक	मू. राजवल्लभ, स्तम्भकार भगवत्विजय	१८५३	१५४	
२०	७१४५	दीपमानिकाव्याख्यान				
२१	५३७६ (१०)	दुग्धरसकथा		१९वीं	६	
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१८वीं	११०-१११	
२३	७३६६	धर्मवत्तकथा		१५३४	७	विशिष्ट प्रति
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१६१२	१८	मत्तानाग्रामे तिलित
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमित्रिकथा		१७००	१४	लि. क. जयविजय गणि
२६	६४०७	धर्मवत्तकथा	माणिक्यसुन्दरसूरि मेखतुग सूर्यत्रिशण्य	१६७४	६	स्या. भाहरजा ग्राम
२७	६८२०	धर्मसंवाव (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१६३३	१०	
२८	५३७६ (८)	निशालकथा		१७८६	१७	आद्य पत्रद्वय अत्राप्त
				१८वीं	१०५-१०७	लि. क. ऊधोवात, हिंडोलीमध्ये

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान प्राप्ति	निर्माण समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	६१५३	वाल्मीकिमहाकाव्य	भावदेव	१६वीं	६	नि क दण्डादिपि
३०	७२१३	पद्मनाभचरित्र	भावदेवसूरि	१७५६	१३६	समाप्तिनगरमध्य
३१	५६३३	वाल्मीकिचरित्र		१५०४	१४७	प्राचीन प्रति
३२	६३१८	मणिमनोराह्याना (वाल्मीकि रामायण भासकण्ठागत)		१६३०	२२	
३३	४५६०	मयूरामाहास्य सप्तह (गोपालोत्तराष्ट्रविजय)		१६०८	३३	
३४	६१५६	मलिनार्थचरित्र	सकलकोषि	१८१३	५२	लिखायित श्रीनयसज्जी
३५	७७७६	माधवनाटकका		१६१५	२६	खण्डेसवाल विलासा
३६	५६६४	सुनिर्णयचरित्र		१६वीं	२२	नि क नानुराम जोशी
३७	४३३३	पुष्कराजचरित्र		१६६३	७	जोधपुरमध्य
३८	५३७६ (७)	रत्नमयविधानकथा	सकलकोषि	१८वीं भा	६५, ६५	नि क भावप्रमोद जिनरत्नसूरि
३९	४४०३	रत्नमयकथा		१६६३	१००-१०५	मिथ
४०	५३७६ (४)	रोहिणीकथा गोतमावत		१७वीं	२६	
४१	४४६०	वरतराजकथा		१८वीं	८०-८७	
४२	४४५८	वरसप्तगुणमंजरीकथा	कनककुमार	१६४०	११	नि क पकवधनपिप्लु लाल
				१८वीं	३	वधन लि स्या पाडलाग्राम
						लि स्या मेडता नगर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७६६	वैतालपञ्चविंशिका	सकलकीर्ति	१८वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	अज्ञितप्रभ सूरि	"	२५	पत्र ११, २१ और २३वा अप्राम्त
४५	४३३४	ज्ञातिनाथचरित्र	"	१६५१	६५	
४६	५६८०	"	"	१६५४	६२	प्रथम पत्र अप्राम्त
४७	७२७६	"	"	१६३३	१५३	
४८	७३२२	"	भावचक्र (?)	१८वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२६	भोटोपतीवासी दुम्बडजातीय शाहूदेवसहेन श्रीगुरुणामपदेन मन्त्री चापकृत लिखित कल्प- मेरु, प्रथमपत्र अप्राम्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	"	"	१६वीं	१७	
५१	४३३६	" सायचूरि	"	"	१६	लि. क. शिवचन्द्रगणि, माणिस्य- चन्द्रमूरिनिधय
५२	७३८३	सम्यक्स्वकीर्मुवी	"	१७०५	३२	प्राचीन प्रति
५३	७३५४	"	"	१४६६	३१	
५४	७३४२	"	"	१६वीं	३७	
५५	७४३०	"	"	१५वीं	४६	
५६	७०८६	"	"	१८वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सामरचन्द्रकथादि	"	१७वीं	१-१२	इस प्रति में तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सामर- चन्द्रकथा पृ. ३ से ६ तक (२) मङ्गलकथा पृ. ६ से पृ. १२ तक (३) सुवर्षन- श्रंष्टिकथा

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिद्धासनश्रीप्रतिष्ठा	बल्लभसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र समाप्त जोण प्रति
५९	५३४४	सोभाग्यपञ्चोक्त्या	कनककुमार विजयसेनसूरिनिध	१८वीं	५	रचनाकाल स० १६५५ भूतेपुरसे इवत्सरे
६०	७२६३	हरिवंश-प्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	यत्र १२, २०, २१, २३, २४
६१	६७८७	हितोपदेश	विष्णु नर्मा	१८वीं		प्रौर २७ से ३५ तक समाप्त

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-आयुर्वेद]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लि.क. चतुर्भुज स्यान-नेनवा
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	"	१८५६	२६	
३	५८४२	अनुपातमञ्जरी,	पीताम्बर	१६०७	११	
४	५८५४	"	"	१६२८	४	लि.क. लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	" सस्तक	"	१६वीं	६	लि.क. तीमचन्द
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिन्याय	"	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसिन्हाद, इससे गर्भ- रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	"	१८३६	३८	
९	५८५१	"	"	१६२६	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०	५४६०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)	"	१६वीं	५४	
११	५६१०	ऋतुचर्या	त्रिमल्ल	१८६५	५	लि.क. सिल्लु वज्रवासी
१२	६५१४	कल्पस्थान	वाग्भट	१७३५	१६	
१३	५७५२	कालज्ञान	शिवश्रीभट	१६४३	१६	लि.क. रामधितास नायलावास्तव्य
१४	६८६०	"	"	१६०४	३६	लि.क. लक्ष्मीचन्द्र
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तक)	"	१८४३	४६	लि.क. आसुराण चतुर्भुज
१६	४१५०	" मूत्रपरीक्षा आदि	श्रुतेक	१८५१	१६२	लि.क. परसराम
१७	५८५२	कूटमुद्रगर (सटीक)	माधवपण्डित	१६२५	५	लि.क. भवतावर
१८	६८७६	गणपाठचिकित्साकलिका	"	१६वीं	२	
१९	७५०४	गोपालविनोद	गोपातदास	"	७२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि	तोतिम्बरज	१६३४	६	लि.क. लक्ष्मीनारायण

क्रमांक	पृ.पा.सं.	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि पाठ्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८६४	चिह्नितसाम्राज्य	वर्गसेन	१८११	३६०	प्रथम पत्र अग्रपत्र
२२	७४६८	वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुण्ड	१७४३	५४	
२३	४७८०	श्वरप्रतीकार (श्वरप्रदमहिमा)		१८०५	३	
२४	४७८२	द्व्यगुणगतलोक	त्रिमल	१८०५	६	
२५	७६६१			१८५१	१६	लिक यण्णव नारायणदास
२६	६६६३	पानुरत्नमालाव्याख्या		१८५१	१५	, रामनारायण, कुण्ठागढ़
२७	५२४५	मामाजु नवदाक	मामाजु न	१८५१	६४	पत्र ८, २० ३५, ६१ अग्रपत्र
२८	७७२२ (११)	नामीपरीक्षा		"	११५-११६	
२९	५४७८	निघण्ट	मदनपाल भूषति	१८०६	१२५	
३०	५८४६	निघण्ट (पंचतरीय)	त्रिमल	१८५१	३३	
३१	६८१२			१८७०	५१	लिक भागीरथराम
३२	६८८२		मदनपाल	१७२५	११६	लिक रामचंद्र
३३	७०३६			१८५१	४७	पत्र ४ ५ ६ अग्रपत्र
३४	५६५८	पर्यायनिघण्ट	वाचक दीपचंद्र	१८५१	१०	लिक लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पर्यायनिघण्ट	,	१८२७	२	लिक भक्तानंद
३६	७००८	पर्यायनिघण्ट	,	१८३७	२०	
३७	६६८७	पर्यायपर्यायविचार		१८५१	२५	
३८	५६०४	पर्यायपर्यायनिघण्ट		१८१५	४६	
३९	५८४४	"	केसरेव	१८५१	१६	लिक लक्ष्मीनारायण
४०	४०६६	पर्यायपर्यायविचारक		१८८७	१६६	
४१	६८७१			१८५१	१०३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कृति आदि ज्ञातव्य	लिपि नाम	पृ. मन्था	विशेष उन्नेयनीय
४२	५८४०	यातप्रह्विकिरसा	रायण	१६वीं	२१	लि. क. लक्ष्मीनारायण
४३	५८६४	"	"	१६२८	२१	
४४	४२००	याततन्त्र	कल्प	१८वीं	३८	
४५	५८४१	"	"	१६वीं	२३	
४६	५८६३	"	"	१६२८	१२	लि. क. लक्ष्मीनारायण
४७	६६५७	"	"	१८६४	६०	लि. क. गोरसल बासुण भातरावाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१६वीं	२३४	
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यभाग)	भावतिह	१८७२	१७९	लि. क. भागीरथ
५०	६८०६	"	"	१६वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	"	२०वीं	५७४	
५२	७०२३	मवनपालनिघण्टु	मवनपाल	१८८२	६८	लि. क. प. मतिमरि, निरमसुन्नगर
५३	५८३७	मवनयिनोव (निघण्टु)	मवननृपति	१६०५	११५	
५४	६८०३	मवनयिनोवनिघण्टु	मवनपाल	१६वीं	२-८१	प्रथम पृ. अप्राप्त
५५	६१२०	मयूकोश	पृथ महामहोपाध्याय जयणारवोक्षित	१८५६	५१-६५	
५६	५८३८	माधवनिदान	माधव कवि	१८६०	११०	
५७	६७४३	"	"	१५६२	६८	
५८	७०२४	"	"	१७५३	३६	लि. क. मोहन नरि, जोकारि
५९	५२८६	"	"	१७३६	१२२-१८४	
६०	६८१३	"	"	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	" सटीक	" दो घातस्पति	१८७३	२३७	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमानादि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	मायवनिदान सटीक	टो वाचस्पति	१६११	२२६	लि. क. भगवान विप्र
६३	६८६८			१८७४	२१६	लि. क. रामबुल मिश्र
६४	४०६८	योगचिन्तामण्योद्योगसारसङ्ग्रह	हयकोति सूरि	१६६६	४७	लि. क. जगजीवन
६५	४७६६ (३)	योगचिन्तामणि	हयकोति	१७७५	१-१६८	
६६	५८४३			१६२०	५०	लि. क. लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१			१८वीं	४३	उवा पत्र अत्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हयकोति	१८३१	१३७	
६९	४२६०			१८६६	४६	प्रथम तीन पत्र अत्राप्त
७०	६८१७	योगचिन्तामणि	हयकोति	१६वीं	६	लि. क. भक्तसार नर्मा
७१	५८४६	योगसार		१६२३	४-२४	
७२	४७७६	योगनतक		१७१२	१६	
७३	६६०३			१८४६	६	लि. क. चतुर्भुज गोपाल
७४	५८७५	सकासायुध	वृद्धनाथ	१८४२	२७	
७५	६३१२	योगसार (योगमार्गिका)		१८वीं	५	आद्य पत्र अत्राप्त
७६	६८१८	रत्नसागर		१६वीं	१-६२	लि. क. चौधरी खडकृष्ण
७७	६८३२	"	अनन्तदेवधूरि	१८८१	३१८	प्रथम पत्र अत्राप्त, १५५ व
७८	७५६७	रत्नचिन्तामणि		१८०३		१५६वां पत्र भी अत्राप्त
७९						लि. क. अक्षयजनसागर नामपुर
८०	५६४३	रत्नमञ्जरी	शास्त्रिनाथ	१६वीं	४२	
८०	६०८७	रत्नमञ्जरी तन्त्र			५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि नातव्य	तिथि समय	पग सत्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसस्ताकर तन्त्र	नित्यनाथ	१६वीं	३७	लि. क. लक्ष्मीनारायण
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१६४२	१६	
८३	५५७६	रामनिदान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय		"	१-६६	
८५	४१६१	व्याधिनिग्रह सस्तबक	विश्राम	१८५३	४६	
८६	५८६१	विश्ववत्सलभ	मिश्र चरुपाणि	१६२५	११	लि. क. लक्ष्मीनारायण
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमहेश्वर	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विषरोगपथ्याप्यविचार		१६वीं	३६	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	राजमार्तण्ड	१६३४	१५	लि. क. निचदास
९०	४७७६	चैद्यजीवन	तोलिम्बरारज	१८१६	१०	
९१	४८४४	"	"	१७००	१६	
९२	५२६४	"	"	१८७६	२७	
९३	५८३५	"	"	१८६३	१५	लि. क. लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	"	"	१८४८	५३	लि. क. उज्जरीराम
९५	५५५६	"	"	१६वीं	१२	
९६	६०८१	" सटीक	"	१६०५	४१	पग १ मे ३ तरु चप्राप्त
९७	६२८८	चैद्यजीवन टीका	डॉ. हस्तिना गोस्वामी	१६२२	५०	लि. क. मिश्र कल्याण शम्भर
९८	६३२६	चैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ		१८८६	५७	३२७ पग नहीं है
९९	४७७८	" सस्तबक	तोलिम्बरारज	१७३४	२७	लि. स्या बगडी
१००	५८८१	" "	"	१६वीं	१७	
१०१	६६००	" "	"	१८६८	२६	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पान्थ	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वधरत्न	प्रियावद भट्ट	१८वीं	४४	सिंह क राजसिंहप्रमाण
१०३	७८२६	यष्टवत्सभ (सट्बाय)	हस्तिसिंह	१७६८	२१	विश्वोरा नगरे
१०४	५३०८	वधयिनी	नगर भट्ट	१८वीं	६६	आद्य बो पत्र अग्रान्त
१०५	५८३६	,		१८वीं	४७	सिंह क लक्ष्मीनारायण
१०६	५८४८	,		१८०४	८०	, , गोपालमहात्म्य
१०७	६६०५			१८१२	७४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहप्रमाण
१०८	७८१३			१८४७	२४	
१०९	७८१४			१८वीं	३८-११५	
११०	५८५८	वधामृत	मोरेश्वर	१८४६	७	सिंह क भवतावर
१११	५८५६	गतलोकी (सट्पण)	विमल भट्ट	१८१२	१०	रत्नप्राल (१६०३)
११२	५८५५		बोपदेव	१८२३	७	सिंह क लक्ष्मीनारायण
११३	६८०१	"		१८वीं	३८	सिंह क भवतावर
११४	६६३२			१८वीं	७	
११५	६०८०	"	विमल टी कृष्णदत्त	१८०३	६१	पत्र १ से ४ व ६, १० २१, २२ ३१ ३३, ३४ अग्रान्त
११६	६५८६	गतलोकी टीका		१८वीं	१०	
११७	४३०३	गान्धर्वसंहिता	गान्धर्व	१८वीं	१३१	
११८	५५६३	"	"	१८०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अग्रान्त
११९	५८४७			१८११	१०१	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	आङ्गुधरसहिता	आङ्गुधर	१६७८	४७	राजलदेसरे लिखितं
१२१	६७६५	"	"	१८६४	१२७	लि. क. रूपचन्द्र
१२२	६८६०	"	"	१७वीं	६६	
१२३	५८२४	"	"	१९१०	४७१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६०८४	" सटीक (प्रथमखंड)	" दो काशीराम	१६वीं	७५	
१२५	६०८५	" " (द्वितीय)	" "	"	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७६५	" (पष्ठाध्यायपर्यन्ता)	दो आढमल्ल	"	५७	
१२७	७०३८	" (अपूर्ण)		"	१२०	
१२८	५४१४ (२)	शारीरनिबन्धसग्रह		"	१-७१	
१२९	४७८३	शोधनिदानचिकित्सा		१८वीं	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा		१९वीं	११	
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण		"	१२	लि. क. फतेचंद, जयपुर
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	बोपदेव	१८वीं	२८	आद्य पत्र शोभन
१३३	४१३७	" (सटीक)	"	१९वीं	८२	लि. क. सेठ आदित्यराम
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखंड)		१८४५	८२	पत्र २१ से २३ व ३० वा अप्राप्त
१३५	६०८३	" (तृतीयखंड)		१९वीं	५५	
१३६	६८०१	हितोपदेश	शिव पण्डित	"	४४	
१३७	५६३२	क्षेमकुतूहल	क्षेम शर्मा	१८७०	६२	
१३८	७४६२	"	"	१९वीं	६६	
१३९	६६३८	त्रिकालिका	दास पण्डित	१८वीं	३६	लि. क. देवीदत्त

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि भूतव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विनय उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिातरे	शाङ्गधर	१६वो श	१३	विाा मलसारास
१४१	६६६१	(सटिण्ण)	"	१७७०	५०	पत्र ६ १३ १३ १६, २८ से
१४२	६०८६	त्रिातरेको सटीक	"	१६वो न	११०	३१, ६६ ७६, ८३ ८५ व ८६वा प्रमाण

राजस्थान पुरातत्त्वाम्बेक्षण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अकपाटी		१८३७	१३-२६	“पाटियो के नीचे नीति विपयक “हूहा” है
२	४६०७(१)	अकपाटी		”	१८-२२	
३	४६१६(५)	अकपाटी		१८७५	१०८वाँ	
४	४४५२(५२)	अगफुरकणविचार	होररतन	१८वीं	४३	चित्र सं० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियो से मिलते हैं
५	५८६३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१८वीं		
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१८६८	२४	* सं० १६८७ में रचित । लिपि- कर्ता ऋषि नोलचन्द, पोहो ग्राम, ऊदावत राज्य
७	४८१८	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	अन्तिम पत्र नुदित
८	४१६४(१)	अञ्जनासतीरास		१६२६	१३	
९	४०४०	अञ्जनारास		१८४६	१७	
१०	५०६३	अञ्जनामतीनो रास		१८वीं	२१	
११	४०३६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	भुवनकीर्ति	१६वीं	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया अञ्जनासुन्दरी हनुमत चरित्र चित्र सं० ४०
१२	४३१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवनकीर्ति	१८६१	३४	लि क. आर्या हीरा
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८वीं	१४	वीकानेर में लिखित
१४	७२१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८५०	२५	पोरवदर में लिखित । बाई साकर पठनाय
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८६५		जयपुर में लिखित
१६	५२०२(१)	अकवरनामा		१८८५	४-८७	

प्रमाण	प्रमाण	पत्र नाम	वर्ता प्राप्ति नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	लिपि उत्पत्तिस्रोत
१७	४६२०	प्रमथरनाथो	भाव कविपण (?) गणगोत्रीय प्रमथवास मत्स्यपुर	१६वीं	१४	प्रभुण प्रथम = पत्र प्राप्त । वासी में लिखित क बाई सिरेकथरीलिपित साबर मध्ये श्रीगारियाधामध्ये लिखित
१८	४६२७ (१०)	प्रमथरनाथो कथा		१६वीं	४६-७७	
१९	४६३२	प्रमथरनाथो		१६वीं	८५	
२०	७७६३(१)	प्रमथरनाथो	राजसिध	१७वीं	१-३२	
२१	७७६४	प्रमथरनाथो		१८वीं	१६	
२२	४७१८(१६)	प्रमथरनाथो कथा	प्रमथरनाथो लेखो	१६वीं	१२१-१२४	गोत हृदयप्रद प्रभुण जय विनितिसहित
२३	४७१८(१८)	प्रमथरनाथो		१६वीं	२१२-२१८	
२४	४७१९	प्रमथरनाथो		१६वीं	६	
२५	४७२०	प्रमथरनाथो		१६वीं	८	
२६	४७२०(३६)	प्रमथरनाथो		१६वीं	१-१०	
२७	४७२२(१६)	प्रमथरनाथो		१६वीं	१८वीं	
२८	७७२१	प्रमथरनाथो	देवगुप्त व प्रमथरनाथो	१७वीं	२८	१६०६ (?) में रचित । सावरण मध्ये प्रमथ कथरा न्नी-मण निष्पत्ति
२९	४७२१	प्रमथरनाथो		१६वीं	१६	सं १६०७ व ६ रचित काल
३०	४७२७	प्रमथरनाथो	विजयपुर	१८वीं	२०	

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निर्णय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वी	२२८	पत्र २, ३, ४, ५ अत्रागत
३२	६८३१	अमृतसागर	"	"	४६७	"
३३	५८३६	अमृतसागर	"	"	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	"	१८७६	२७८	
३५	७१३७	अयवतीसुकुमाता चौपाई		१६वी	५	रचनाकाल १७४१
३६	४०४८ (२)	प्रयवतीसुकुमल स्वाध्याय	ज्ञानिहर्ष	१८६२	१६-२०	लि क धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३७	७७४४ (२)	अर्जुनीता	रघुनदास	१७५८	३-८	
३८	४४६१	अर्जुनवाचलश्लोक	विनीतविमल	१८वी	२	
३९	४०३४	परहृन्मकमुनिचरित	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१६वी	६	
४०	७७२४	अक्षतरचरित	नरहरिदास बारहूठ	१७८६	२६७	"
४१	७७२६	अक्षतरचरित	"	१६१८	६४६	
४२	७७३३	अक्षतरचरित	"	१ १४	४४५	बदतोर में हरिदास कवीरपयी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकुमाता चौपाई	जिनहर्ष	१६वी	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अक्षवपरीक्षा		१६४३	३६	लि क पंजीसिंह, पहला लक्ष्या सो
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजागस	उदयरत्न	१८२६	६१	महम रामगोपालजी का
४६	५४१८ (१६)	अष्टमोकथा		१६वी	१४०-१४३	
४७	४६१४ (२४)	अष्टाणीवरतनोरास (ऊर्जाई)	शुभचन्द्र	१८७१	२३१-२३२	
४८	४८२३ (१)	आणवश्रावकसधि	श्रीसार	१८७१	१-६	
४९	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	गर्ममन्दिर	१८वी	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	कृता आदि नातव्य	निर्गम समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
५०	५४१८(४)	आत्मसंवेधरास	यनारसी	१८वीं	८८-६१	
५१	५६१४(२०)	आदित्यकथा	सूरजो गह	१८वीं	२२२-२२६	
५२	५३७६(२)	आदित्यचारकथा			३१-४२	
५३	५७६(१३)	आदित्यचारकथा छोटी			१६७-१६६	
५४	५४२०	आनन्दचरित	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	माल दूहावट । भक्तिमय प्रशस्त
५५	७०६४	आनन्दचरित	मुनि श्रीसार	१८वीं	२२	लिक साधो रत्न
५६	५०४२	आनन्दसिद्धि (अनयोसिद्धि)				बाबडीनगर मध्ये
५७	५४१८(३२)	आनन्दके दोहे			१५	लिक प्रार्थन दयमा
५८	५६११(२)	आनन्दगुहना वितावली			१७१-१७३	४१ दोहे
५९	५०३५	आनन्दगुहना वितावली	समुद्र मुनि	१८वीं	४१-४२	लिक भागवत
६०	५८२३(२)	आनन्दगुहना वितावली	मान कवि		३	
६१	६०४५	आनन्दगुहना वितावली	मान कवि	१८वीं	६-११	
६२	५४५२(६)	आनन्दगुहना वितावली	मान कवि	१८वीं	६	मुल्लिखित प्रति
६३	७३४४	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	१८वीं	१३ वीं	
६४	५०५१	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	१८वीं	६	
६५	५०५१	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	१८वीं	२	दाउ गीतबट
६६	५४१८(७)	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि		६७-१०७	
६७	५४१२	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	१८वीं	५	रत्नमाला १६३८
६८	५४७३	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	स १६२८	६	
६९	५४७३	आनन्दगुहना वितावली	अनेक कवि	१८वीं	६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पग मल्ल्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	४०४३	इलाकुमार चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रत्ननाकात १७१६ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चौपाई	"	१८वी	७	
७१	४६१४(२८)	उणतीसी भावना		स १८७७	२४६-२४७	
७२	५६७४	उत्तमकुमार चौपाई	तत्त्वहस	१७६५	३१	जोधपुर से लिखित
७३	५०६८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	६८-११४	स्वयं कवि द्वारा लिखित । रत्ननाकाल १७२६
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिवत्ता चौपाई	चौथमल	१८७६	२५	बील मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभक्ति फुलक		१८वीं	२	
७८	४६१५(६)	एकलिंग बाबाळारी वात		१८८७	१३६-१३६	
७९	४४५२(५५)	एकलिंग वाराहरी वात		१११-११२	१११-११२	अपूर्ण
८०	७२६१	एकलिंगति स्थान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	स १७६६	१०	ति क. सुमति हस
८१	७७४६	एकावलीकथा भाषा (गद्य)		१६१३	५१	२६ कथाओं का संग्रह
८२	४२६३(२)	एकावलीकथा मग्नह		१८७६	१८	२० कथाओं का संग्रह
८३	४०५५	एकावली तावरी वात			३	
८४	७४४४(२०)	कका राजभाष्य	श्रावक चोगो		३२४-३२६	
८५	५२११	कद्यबाहोकी वशावली		१८८४	११४	
८६	४०४६	कनकावली चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि जानकारी	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२ (२२)	कपटकुतूहल		१८वीं	६	
८८	४०४७	कपोतकपोतपोरी आरता		१८५४	१२	
८९	६६३७(२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११-	१०६-१८७	लि. क. रामबास टीकोदासविद्य
९०	६७३६	कमलप्रभा चोपाई	गुणसागर	१८१६	१०	निराणा प्राम लि. क. श्रुति भरथ
९१	४०४८(१)	कमलप्रभा चोपाई	जयराम	१८६२	२२	रचनाकाल १७४१ व गु. न
९२	४०४९	कमलप्रभा रास	सु. वरसुखिन्द्र (?)	१८वीं	५	सन्निवार आर्या हीरा श्रीमानजीनी निधायणी द्वारा लिखित
९३	५९७६	कमलप्रभा पंचक बालाचबोध	मतिवन्ध	१८वीं	११२	
९४	४९१४(३३)	कमलप्रभा कांड	गुणवीरि	१८७७	२५१-२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित	विजयचन्द्र	१६७६	४	चोपाईद्वारा द्वारा पत्र प्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पना	ओमार	१८७८	६	रचनाकाल स. १६८६
९७	४४५२(२६)	कवित्त बावनी	उदयराज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२(२५)	कवित्त	उदयराज	१८वीं	१३१ भा	
९९	४४५२(४५)	कवित्त सवया	गग व द	१८वीं	६१ वा	
१००	४४५२(५४)	कवित्त	अनेक कवि	१८वीं	१०६-११०	५० कवित्त
१०१	४४५२(१०३)	कवित्त द्वारा आदि	केसरसिंघ आदि		१३६-१४१	
१०२	४९१५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२ - ४१	जगदम्बा आदि के छंद हैं

[illegible]

क्रम-सं.	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ नाम	वर्तनी आदि पातव्य	निर्दिष्ट समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
१२०	७१७२ (१)	कथाटाराजीकी कथा		१६३६	२७	
१२१	७४१८ (३०)	लिखटारासा		१६वीं	१६८-१७०	
१२२	४०६०	लोचो भवतदासजी पाल		१८वीं	६	लिख चतुराविजय मणि
१२३	४४८८	सदासिद्धि		१८४८	६	पोद्दार मध्ये
१२४	४६८६	सदासिद्धि	महिमोदय	१८४८	६	लिख सानविजय
१२५	४४५२ (१३)	खजडता भाताजीरो नोताजी		१८०८	१६ वा	रखनाकाल स १७३१
१२६	४४५२ (८४)	खतरवासाजीरो छ द	मान कथेतर	१८वीं	१२५ वा	
१२७	४२७६	पट्टणविचार टीका	कवि देव	१८वीं	३	
१२८	६४३७ (२)	गजसिंहकुवर कथा		,	२४-४८	प्रपूण
१२९	४०५६	गजसिंहकुमार चरित्र			१८	मुद्रित
१३०	६४४१	गजसिंहमाल रास		१८८७	८	लिख मरुपखद
१३१	४६१४ (१४)	गजसिंहजीनती		१८७१	२०८ वा	
१३२	४४५२ (६६)	गणजी छ द भवतम्बनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	ग. भस्वत्तिस्तन	श्रीसार	"	३	
१३४	४६१५ (५)	गीत		१८८७	१३४-१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविंद सटीक	दो चत यदाल	१८वीं	४७	प्रसन्न का पत्र प्रसार
१३६	४६१५ (१५)	गीतकविता		१८८७	३६५-३६७	
१३७	७५५६	गीतसङ्ग्रह		१८वीं	४	
१३८	४४५२ (६०)	गीत सवैया आदि		१८वीं	१२८वीं	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४६०४ (३)	गीतामहात्म्य	जगमाल मालावत	१८५६	६५वर्ष	
१४०	५४५८ (४)	गीतोलोकी वारता	ऋषि दीप	१८२१	१-२७	लि. क. आर्या नाथी
१४१	४०२२	गुणकरडगुणावली चौपाई	"	१६वी	२२	रचनाका. स. १७५७
१४२	४०५३	गुणकरडगुणावली चौपाई	दीप (?)	१८७४	२७	"
१४३	४८२०	गुणकरडगुणावली रास		१८३६	२०	लि. क. प. नवनिधिविजय,
१४४	६०२७	गुणकरडगुणावली	दीप ऋषि	१८३३	१५	संथाना नगरे
१४५	६५४२	गुणकरडगुणावली चौपाई			३६	राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४६	४०१३	गुणहरिरस	गजकुशल	१७६६	७	पत्र २ से ६ और अन्त्य अप्राप्त
१४७	५०६४	गुणावली रास		१६वी	२६	रचनाकाल स. १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपाई	शान्तिहृदय	१८७४	२१	रचनाका. स. १५१३ आश्विन
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा	ज्ञानविमल	१७वी	२	कृ. ३, वडलू ग्रामे लिखितम्
१५०	७१८०	गुरुपरपरा ठाळ		१६वी	१२	मुद्रित
१५१	५४५८ (३)	गीतमरासा		१८३८	४	
१५२	७५६७	गीतमपूच्छा चौपाई	जिनसूरि	१७५६	१३	लि. क. मुनि गङ्गजी
१५३	६१२८	गीतमपूच्छा बालाबबोध	समयगुप्तर	१८८३	६८	
१५४	५४३६ (७)	गीतमलधुस्तवन	उदयवन्त	१६०६	३८-४०	
१५५	५०६६ (२)	गीतमर्यामीरास			३-८	
१५६	५४३६ (३)	गीतमर्यामीरास			१७-२६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ कादि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२ (५)	मोरलखण्डा	मोरलखी	१८वीं	१० वीं	१४ कृतियों का संग्रह
१५८	४४५१	मोरावातलक्या कादि गटका	हेमरतन	, " १७८७	६० ५७-६५	सावदीमें रचित
१५९	७७२२ (६)	मोरावातल कोर्दे	जटमल	१८वीं	६-१५	लिक जयसोभाग्य
१६०	४६२४ (२)	मोरावातलरी बात		१८८५-२१२		सिरिमारी मध्य
१६१	७४४४ (११)	मोतमरासो		१८वीं	१२३ का	जलूकके सम्बन्धमें गकुल विचार
१६२	४४५२ (७६)	मुमुक्षुक		१८वीं	११-१२	अ तमें नाहरवान राजसिंघो
१६३	४६२४ (१०)	घोडारा बपाण		१७८३		सरो छद है
१६४	४४५२ (६३)	घोडारा बणाव		८वीं	१३० वीं	
१६५	४७२६	घटीज्ञान		१६वीं	१	
१६६	५१२३ (२)	चक्रकवली		१८वीं	२-११	
१६७	६६१२	धर्मासिमाधन		१८१८	२३६	२ का १ १७८२
१६८	७१५४	धनुमकुटव प्रकरणरी कथा		१८७७	३१	जीण प्रति
१६९	५३६ (२१)	धनुर्बिगतिमानसूची		१८८७	२४३-२४८	
१७०	४६१५ (१०)	धनकवररी बात		१८८७	३४८-३६०	रचनाकाल स १७४०
१७१	५३६१ (२)	धनकवररी बात तथा रघुन बवित		१८वीं	५८-६७	
१७२	७७५३ (११)	धनकवररी बात	कलश कवि	१८२७	४७-६०	
१७३	५४५८ (१)	धनकवररी वारता	सकलजीति	१८३८	४	चित्र स १
१७४	४६१६ (३)	धनकवररी वार्ता	हस कवि	१८७५	४७-५४	लिक प मनरङ्गसागर लिक प हुकमसोभाग्य

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ साहित्य	लिपि समय	पृष्ठ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चन्द्रकुवर्को यात	कवि राय	१८१६	१८	
१७६	४६११ (३)	चन्द्रकुवर्को यात		१८३० से १८३७	१-६	
१७७	७३७६	चन्दनवालाभगवतरी मोत	भक्ति नाम	१८३१	१	
१७८	६०५८	चन्दनमन्थानिहिकी चौपड़	गुरुदेव मुनि निम्न (?)	१८६५	१०	११८ लुपित उल्लेख मन्थान मोरगावाट, ललित मुन्नादे भावे राजस्थान म. १७६७ भा. ५६
१७९	४६२१	चन्दनमन्थानिहिकी चौपड़	पत्नीकर्म	१७८६	११	
१८०	४६५२ (४८)	चन्दनमन्थानिहिकी यात	भट्टीय	१८०६	१-१-१०७	
१८१	६३३६	चन्दनमन्थानिहिकी चौपड़	भट्टीय	१८३६	=	
१८२	७०७६	चन्दनमन्थानिहिकी चौपड़		१८५१	५	
१८३	५०८८ (२)	चन्दनमन्थानिहिकी यात (मन्थान)		१८३६	८६-३६	३६१० पृष्ठ मन्थान, मोरगावाट- राजस्थान
१८४	५४१८ (२६)	चन्द्रमन्थान		१८५१	१५०-१५७	
१८५	४६१८ (३५)	चन्द्रमन्थानिहिकी यात		१८७७	८५८-८५७	
१८६	४६१८ (१)	चन्द्रमन्थानिहिकी कथा		१८६६	८-७०	चन्द्रमन्थान राय मन्थान
१८७	७०७२	चन्द्रमन्थानिहिकी	मोहनदास	१८५१	१-५	मन्थान, राजस्थान मन्थान
१८८	६८५०	चन्द्रमन्थानिहिकी	मिथानि	१८०६	६१	मन्थान राय १७७५, मिथानि मन्थान
१८९	४०५६	चन्द्रमन्थान राय	मोहनदास	१८१०	८६	मन्थान राय १८१०-१८११

क्रमांक	प्रमाणक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६३४६ (२)	चदराजानो रास	भोहिननिजय	१६०६	७०-३५४	लिंक डेकचद पाण्ड
१६१	७२४६	चदराजानो रास		१६४७	६८	रचनाकाल स १७८३
१६२	७४२०	चदराजानो रास		१६४६	१२३	लिंक पथोराज
१६३	७४०७	चदराजानो रास	मतिकुशल	१७७८	१८	
१६४	४०६०	चदराजानो रास		१६०५	१६	रचनाकाल स १७२८
१६५	४७६५	चदराजानो रास		१६४०	२६	
१६६	४७८६	चदराजानो रास		१६४०	२४	
१६७	४०६६	चदराजानो रास	श्रुति कामचद	१६४०	२	
१६८	४३७६ (१८)	चदराजानो रास	मसयकोति	१६४०	२११-२१३	
१६९	४७४६	चदराजानो रास		१६४०	११	
२००	४६१४ (५७)	चदराजानो रास		१६११	२४	लिंक डेकचद
२०१	६३६३	चदराजानो रास		१६११	३	
२०२	५१०५	चदराजानो रास		१६४०	११	
२०३	७२३१	चदराजानो रास		१६४०	२७	श्रम पत्र मश्राप्त
२०४	६२६२	चदराजानो रास		१६४०	६	रचनाकाल स १७४८
२०५	४४५३ (३)	चदराजानो रास		१६४०	२	
२०६	४८०६	चदराजानो रास		१६४०	५	सोसरा पत्र मश्राप्त
२०७	४८२२	चदराजानो रास		१६४०	३५	
२०८	४४५२ (१००)	चदराजानो रास		१६४०	१३४-१३५	
२०९	४७६७	चदराजानो रास		१६४०	३५	
२१०	४२८७ (१४)	चदराजानो रास		१६४०	११५-११६	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग नल्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०-२६८	
२१२	४४५२(६१)	चोबोलीराणीरी कथा	जिनहरे	"	११८वीं	
२१३	७४४४(१३)	चोबोलियो (वानशील तग सवाद)	समयसुंदर	१८८५	२४५-२५३	
२१४	४०६१	चोयमातालीरी कथा		१८वीं	३	बोलाडामें लिखित
२१५	६०६७	चोवीसचौक	अमृत कवि	१८५३	७	लि. क. भानुकीति, जयनगरे
२१६	६६१८	चोवीस तीर्थकरोकी पूजाविधि		१६वीं	६६	
२१७	७४२५	चौराठमार्गणाविचार		"	१३	
२१८	५०६१	द्योतीस अध्ययनगान	सागरचंद	१६४२	१५	लि. क. प. हण, मुन्तासमये
२१९	४४५२(७८)	द्यौकचक्र		१८वीं	१२३वीं	रौकसे सवगमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८(३)	द्योतरदासजीका संवया	द्योतरदासजी	"	४४७-४५५	३५ छंद
२२१	४८४७	ज्योतिषवर्त्तरी		१८६३	३०	लि. क. कृषि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कृपाराम	१६०७	४७	लि. क. रामकुमार
२२३	४४५२(६४)	जगदेवपमाररा कवित	कफाळी भाटण (?)	१८वीं	११६वीं	
२२४	७१७२(२)	जगदेवपमाररी जात		१६३६	१-३५	
२२५	७७५२३(१४)	जगदेवगुमाररी वात		१८३७	७१-८८	संपूर्ण
२२६	४६१६(१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	सत मे ५ स्तद गातिहें है ।
२२७	४४५२(७१)	जग भरयरा कहुआ ज्लोक आदि		१८वीं	१२१ गी	सवाई कूरम नरेन (जयपुर) की पराजय मोर मारवाके बल्लत- मिहरो निपयरा वंजन, वृषगिह तुमारा रण भी है ।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीमणित		१६वीं	२६	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
२२८	४५२४	जम्बूद्वीपवर्णन (बहुतुल्य)	आणंद जेठवाल पदमचंद मुनि	१८वीं	२५	प्रथम पत्र आग्राप्त
२२९	६४३४	जम्बूद्वीपवर्णन		१७५८	६	
२३१	७४२७	जम्बूद्वीपवर्णन		१८८०	५८	
२३२	६२६८	जम्बूद्वीपवर्णन		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूद्वीपवर्णन		१८वीं	४३	
२३४	४१५७	जम्बूद्वीपवर्णन		१८वीं	३३	लि क परताबाई स्थान-भजमेर
२३५	७०४६	जम्बूद्वीपवर्णन		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूद्वीपवर्णन		१७६६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूद्वीपवर्णन		१८६१	११३	
२३८	५३७६ (३)	जम्बूद्वीपवर्णन		१८५६	४२-८०	
२३९	६७३५	जम्बूद्वीपवर्णन	पदमचंद	१८वीं	४	विहारो विप्रण लिखित लि क न्यायि माणकचंद
२४०	६७८१	जम्बूद्वीपवर्णन		१८५६	३३	
२४१	४०६३	जम्बूद्वीपवर्णन		१८५६	३३	
२४२	७३५२	जम्बूद्वीपवर्णन		१८६६	२०	
२४३	६८८४	जम्बूद्वीपवर्णन		१७३३	८	
२४४	५४१८ (१३)	जम्बूद्वीपवर्णन		१८वीं	११४-११६	लि क प प्रीतसोभाग्य गणि लि क न्यायि टेकचंद सरियारोग्राम
२४५	४४५२ (३२)	जम्बूद्वीपवर्णन		१८०७	३५ से ४०	
२४६	४०६२	जम्बूद्वीपवर्णन		१८६०	२०	
२४७	७७६६ (५)	जम्बूद्वीपवर्णन		१८५६	२-४२	
२४८	५८६५	जम्बूद्वीपवर्णन		१८वीं	३२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कृतों आदि जातव्य	निधि मस्य	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४६	४०६४	जामवतीचोपई	सूरसागर	१८४७	७	वीकानेरमें लिखित
२४७	४८१७	जिगरस	वेणीराम	१८४१	१७	
२४१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति	सोमगुप्तर सूरिसिन्धु	१८८०	१६४१	रत्ना स १६४१
२४२	५०७३	जीवदयासञ्ज्ञाय		"	१	
२४३	७४४४ (३)	जीवविचार		१२१-१२६	१२१-१२६	
२४४	४६१४ (२६)	जीवसिन्धुमण गत	प्रभुचन्द	१८७७	२४२-२४४	" म १८४८
२४५	४६०५ (७-६)	जुवाती रा दूहा आदि		१८७७	३१-३६	ग्रंथ महिमा पतेनियों भी है।
२४६	५४५१	जैनचोलमण्ड		१८७७	५३	
२४७	४६१४ (५४)	जोगीराम	जिनराम	१८७७	३००-३०२	०
२४८	५४१८ (२०)	जोगीरामा	"	१८७७	१४३-१४५	
२४९	५४१८ (२५)	जोगीरामा	भगोतीराम	१८७७	१४२-१४४	
२५०	४२८७ (४)	जोगीरामो	जिणदाम	१८७७	१४-१८	लि स रामग
२५१	५४१८ (३१)	टण्णामा गीत		१८७७	१७०-१७१	०
२५२	६८४१	डाता, पट्ट आदि		"	६६	
२५३	४०६७	डातमार	चोगमन	"	१६	रत्नासत म. १८७६
२५४	६७३७	डातमार		१८६७	११६	लि स मुनि गुनातनर
२५५	६१२२	"	केनाराज	१८७७	१०१	रत्नी रानोमें पर
२५६	७२२४	"	गणपामर	"	७७	रत्नासत म १६७६ हरिग-
२५७	७३७५	"	"	१७६८	७६	गाता
२५८	४०३३	डातमारप्रबन्ध	"	१७४०	१०४	गाता १५१

क्रमांक	प्रथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि नात-य	चिप्पि समय	पत्र मख्या	विंगप उत्पलवनीय
२६६	४०६६	दालतगणप्रवच	गुणसागर	१७४६	८६	वि का ऋषि जीधारीजी
७०	४०८४(१)	दोयमाल सवित्र अणुण उदित		१८३६	१४	स्थान-मंदपाट श्रीसाहवा नगर वित्र स ३६ सोकानेर में लिखित पत्र स ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अंग है
२७१	७७२०(१)	दोलामारचौपई	कुशलनाभ	१७४६	१-२३	रचनाकाल स १६७३
२७२	६४३८	दोलामारवनीचौपई	वाचक कुशावलाभ	१८वीं	२४	स्थान-जसलमेर, समरसा पठनाय
२७३	४८६६	दोलामारवनीरा ब्रह्मा सवित्र			६१-११४	रचनाकाल स १५३०, वित्र स ३३
२७४	७७४७	दोलामारुनी वास	कुशलनाभ		४६	रचनाकाल स १६१७, भवरजी अक्षयसिंहजी पठनाय जसलमेर में लिखित ।
२७५	६७२०	दोलामारुना ब्रह्मा		१६वीं	४७	
२७६	४६२४(१३)	दोलामारुनी चौपई	कुशलनाभ	१७७०	१-३४	
२७७	७७४८	सकप्रवच	सकप्रवस	१६वीं	४७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८४०	२६	
२७९	४८७५	सुरकाकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७६६	३	लि क देवेन्द्र सोभाग्य
२८०	७५३५	तेजसिंहजीरा सवया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अग्रस्त
२८१	४६१४(५०)	तेरहमठिया		१८७७	२७६वीं	
२८२	७६०४	तडलेपालियणहम	पाताचंद्र	१८३३	४१	लि का ऋषि मोतीचंद डूंगरसो

क्रमां. नं.	संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२-३	७२६५	यावज्वाचौपई सविचरण	समयसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६६१
२-४	४६०४ (२)	थावरवेवतारी चात	उदयरत्न	१८६१	३५-६५	लि. क. फल्याणसौभाग्य
२-५	४०६८	यूतभद्रनवरसो	"	१८४६	५	रचनाकाल स. १७५६
२-६	४८३२	यूतभद्रनवरसो	"	१८५२	८	लि. क. राजविजय
२-७	६२५५	यूतभद्रनवरसो	"	१८वीं	२	
२-८	७४४४ (१४)	यूतभद्रनवरसो		१८८५	२५३-२६०	
२-९	७४२१	वणुक सस्तयक		१९वीं	६	
२-१०	६५३१	हौपदीरास	कनककौति	१८वीं	४१	जैसलमेर में रचित
२-११	६३५६	ब्रौपदीरास चौपई	"	१८१५	४०	जयपुर में लिखित
२-१२	६४१६	द्वावशाभावफल		१९वीं	४	
२-१३	७४४४ (५)	वण्डरुप्रकरण सट्टार्य		१८८५	१३६-१४३	लि. क. नेमविजय
२-१४	६४४६ (५)	वज्रताल को फक्को	वसुलाल	१९वीं	५-११	
२-१५	४६१४ (४६)	वर्गन बत्तीसी	दीप ऋषि	१८७७	२७७-२७८	स १८५४ में रचित
२-१६	६५४४	दशार्णभद्र चौढाळियो		१९वीं	३	लि. स्थान-ग्रहपुर
२-१७	६३६६	दशावती		"	६	लि. क. उवाध्याय पद्मउदय गण
२-१८	६६४८	वाडूजीका शब्द	वाडूजी	१८००	७८	प्राद्यन्त पत्र शोभन
२-१९	६६२६	वाडूजीको चाणी आदि गुटका	वाडूजी आदि	१७८७	२६८	गुटके में विविध कृतियों का संग्रह है
३-००	६६४६	वाडूजीकी साली	"	१८वीं	६६	लि. क. लक्ष्मणदास
३-०१	६६५०	वाडूजीकी साली	"	१८६६	६७	विभिन्न सन्तों के ४४४० पदों का संग्रह
३-०२	४३०८	वाडूवाणी आदि	"	१८वीं	४१०	

क्रमांक	ग्रन्थ	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि तात्व्य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३	६६३७(१)	दादूयाणो आदि	दादूजी आदि	१८११- १८१६ १८वीं	१०६	लि क रायदास, निराणा ग्रामे
३०४	६६३४(१)	दादूग-द		१८वीं	६५	दादू कबीर चूर मोरा आदि के पदों का संग्रह
३०५	४१४६	दादाळारी वात		१८१७	२३	
३०६	५४३६(६)	दासगोल तपभावन	दाशान भद्रराज		४४वा ४६-५६	
३०७	५४३६(११)	दासगोल तपभावन	दुष्टिकुलगुण्य	१८वीं	४५	
३०८	६८४५	दासगोल तपभावनसवाद	समयसुन्दर बाचक (?)	१८६२	५	सागतपर मन्नादि
३०९	५६६७	दातादिकसवाद	समयसुन्दर	१८६२	१२४-१३४	
३१०	५४१८(१७)	दाताधिकार	समयसुन्दर	१८वीं	१२-१८	
३११	७७२०(२४)	दिलोपातसाहोरो विशरो	लिनसुन्दर	१८वीं	२६	
३१२	४१७	दियालोक्त्य दासावबोध	कवि ज्ञान	१८वीं	२६	
३१३	४४४२(२८)	दूहा		१८वीं	२६	पुस्तक शुभार और स्त्री शुभार के १६ १६ दूहा
३१४	७७२१(१३)	दूरो श्रीमहराज जसवर्तसिंहबोरो	म जसवर्तसिंह	१८३१	२००वा	हृदिरस की प्रगसा में रचित
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१८वीं	६	
३१६	४४५२(७६)	देवीचक्र		१८वीं	१२३वां	
३१७	७३७३	देवना शतक		१७वीं	१६	
३१८	४८५५	दीपवैवली		१८वीं	१	लि क मानसिंह
३१९	४८१४(५)	दोहागतक		१८वीं	१६२-१६५	
३२०	४६१५(१३)	धमाळ	रूपचंद	१८७१	३८४-३८६	
				१८८७		

क्र.सं.	पं.सं.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि भण्ड	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२(५१)	गमाल यगन्त	तालचंद	१८वी	१०७ चौ	लि.स्था जंसासेर
३२२	७३६६	गमगुनि चोपाई		१७६०	१६	
३२३	५४१८(१५)	धर्मवत्सीनी		१६वीं	११६-१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मयायनी	लालचंद	१८३७	६०-६६	अपूर्ण
३२५	४०६६	धर्मगुनि पापगुनि चोपाई		१८२५	२५	र.का. सं० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		"	६	
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोलाळियो	गुणसागर	१८८८	३	६८वा पत्र अप्राप्त
३२९	६६५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८५	६५-६६	
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८३६	८७-६१	रचनाकाल स १६७३
३३१	४०७०	नलदमयस्तीचोपाई	समयसुन्दर	१८३६	२५	
३३२	६६१३	नयकारभयवर्शन		१८वी	१३५	
३३३	७६६७	नयकारवात्सीनी सज्जाग	लक्ष्मिविजय	"	१	
३३४	६४१२	नयपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४५१	नसीहतनामा और देवीदासके कवित्त		१८वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचोपाई	साईदास	१८२४	६	
३३८	६३६०	नागदमण छंद		१८वी	४	
३३९	४६२४(३)	नागदमणकथा		१७८७	१५-१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमतर		१८वी	२३ चौ	सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र
३४१	५०६६	नागिला भवेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	लि.क प. ईश्वर, अहमदाबादे

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्तमान नाम	वर्तमान नाम	लिखित समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियावा सोरठा	नाथियावा	नाथिया (?)	१६वीं	११	१४० शोरठे
३४३	६६५७ (३)	नामदेवजीका सेवक	नामदेव	नामदेव	१८११-१८१६	१८७-२०१	लि क रामदास निरोणा शोमे
३४४	४८३१	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	१२	लि क कामरस भावसिंह
३४५	४४२२ (४०)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	१०७वीं	
३४६	६७४६ (१)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	८८	
३४७	६११०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	४१	
३४८	४८६३	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	४४	लि स्या लालदास प्रतापसिंह राज्ये
३४९	४४१८ (३३)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	१७३-१७४	
३५०	४४२२ (३४)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८३१	२४वीं	
३५१	४०७७ (२)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८०२	१४	र का ॥ १६७० सूरतवदर
३५२	४८१४ (३४)	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५३	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५४	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५५	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५६	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५७	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५८	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३५९	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	
३६०	४३३०	नामदेवजीका	नामदेव	नामदेव	१८७७	२४	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचित्तामणिचौपई	धर्ममन्दिर गणि	१८५८	७७	लिखित बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	मगनीराम	१९वीं	५७	र का स १८८६
३६३	४६१५ (१४)	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	जिनहर्ष	१९वीं	३८६-३९५	आद्य २ पत्र मसौप्लुत
३६४	५१०१	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	क्षमाकल्याण	"	५	लि क. हरकचद पाडे
३६५	५३२६	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	मोहनविजय	१९०६	१२	लि क. हरकचद पाडे
३६६	६३४६ (१)	प्राकृतप्रबन्धसंग्रह	जसराज आदि	१८६८	७०	लि क वस्तावर, बीकानेरमध्ये
३६७	६८५४	प्रास्ताविक बूहा	वृन्ध आदि	१८वीं	११६	
३६८	५३६५	प्रास्ताविक बूहा	"	"	३	
३६९	४८०६	प्रास्ताविक दोहरा	"	१९वीं	६	
३७०	४८०६	प्रास्ताविक दोहरा	उदरराज आदि	१८३६	३	लिखित राजपुरमध्ये
३७१	४८१५	प्रास्ताविक दोहरा	समयसुन्दर	१९वीं	३	पत्नी का पति के प्रति आदि
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र	"	१८वीं	८	
३७३	४४५२ (६६)	प्रास्ताविक श्लोकबूहा आदि	मुनि हर्षकीर्ति	१८वीं	१३२-१३४	ग्रन्थि भीकमजीपठनाय
३७४	४७६३	प्रियमेलकचौपई	"	"	७	
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	"	१७वीं	६	लि क लक्ष्मिकीर्ति गणि
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	मुनि हर्षकीर्ति	१९वीं	८	राजपुरमध्ये
३७७	५४१८ (२८)	पंचगविकी वेली	मेघराज लब्धिविजयशिल्य	"	१६५-१६७	र का. स १६२३
३७८	४८५०	पञ्चागातयनविधि भाषा	ठाकुरसी	"	२	र का १७२३
३७९	४६१४ (५८)	पचोद्विचकी वेली		१८७७	३१३-३५	र. स. १५८५
३८०	५२६५	पचोद्विचकीचौपई		१८७२	५	उज्जैनमध्ये लिखित
३८१	५३४१ (१)	पञ्चावीरसदे वात		१९वीं	२ से ५७	लि क बोरा बीरानन्द

प्रमाण	यथादृ	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि भातव्य	निधि समय	पत्र सख्या	विगण उल्लेखनीय
३८२	४६१५/४	पद्माधोरमदेरा वात	नैरासिह	१८८७	७६-१३४	७८वीं पत्र खडित
३८३	७१६६/१	पद्माधोरमदेकी वात	हेमरत्न	१८७७	४१	गुटका
३८४	४८०७	वर्दिनीचोपई	हेमरत्न	१८८७	३१	
३८५	४८१०	वर्दिनीचोपई	सकलसौमि	१८७१	२०७वीं	
३८६	४६१४/१०	पद		१८७७	२४८-२४९	स्मृति
३८७	४६१४/३१	पद	मुनि वात	१८८७	२२	
३८८	४०७२	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	११८-११९	
३८९	७७२१/५	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	५४-६६	
३९०	४६१६/६	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	१०३-१०७	लि. क. प. प्रीतिनीभाय गणि
३९१	४४५२/४६	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	३१	
३९२	४०७६	पद्मलोचनमायसीचोपई	ज्ञानचंद	१८८७	२२	
३९३	७४१२	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	२६	लि. क. प. प्रीतिनीभाय गणि
३९४	४८२७	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	२६	
३९५	४४१८/२६	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	१६७-१६८	
३९६	४०७३	पद्मलोचनमायसीचोपई		१८८७	३६	लि. क. प्रीतिनीभाय गणि
३९७	४०७४	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	५६	र. क. १७६७
३९८	७७२३	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	३७७	लि. क. जीताराम फतेरपुर मन्थ
३९९	४६१४/४५	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	३०२-३११	म. १६७० की प्रति से प्रति-
						निधि की गई
४००	६४३३	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	१६६६	लि. क. रत्ना साधवी
४०१	७६७०	पद्मलोचनमायसीचोपई	गोपालदास	१८८७	१६६६	जीतपुर में लिखित

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता प्रादि ज्ञातव्य	तिथि समय	पृथ संख्या	ग्रन्थोप उल्लेखनीय
४०२	५१२३(३)	पाशाकेयती श्रवजवी	चन्द (?)	१८वी	१२-१६	चिन्म सा. ७ पृ सं ५४५७ के साथ संयुक्त ।
४०३	६२८२	पाशाकेयती श्रवजव		१६वी	१६	शान्तानगरे, मालवेसे स्तिमित
४०४	७०२३	पिङ्गारो समीयो		१८वी	८	
४०५	४४५५	पिङ्गवशास्य टीका	मुनि हर्ष	१८७१	२३	
४०६	७१४३	पुण्डरीककुंडरी कनी डाल	हर्षचन्द्र गणि	१६वीं	५	
४०७	५११६	पुण्यसारचरित्र		१८७५	३	र का सं. १६६२
४०८	७१३०	पुण्यसारचरिपाई	पुण्यकीर्ति	१८वी	५	सांगानेर में रचित
४०९	६४३७(१)	पुरनयकुण्डरकथा	मासवेय	"	४८	जीर्ण बौर नुदित प्रति
४१०	४८२६	पुरनवरकुण्डरचौपाई	रतनविमल	१६वीं	२१	
४११	४६७६	पुणिमाविचार		"	४	
४१२	५३३२	पुर्वेशचैत्यप्रवाची		"	३	जीर्ण बौर नुदित प्रति
४१३	४६०३	पृथ्वीराजरासो	चन्द कवि	"	१२६	
४१४	७१२८	पृथ्वीराजरासो	"	१७४७ से	६६	"
४१५	७१५०	पृथ्वीराजरासो	"	१७४२	१६२	जीर्ण मुद्रका
४१६	७१६४	पृथ्वीराजरासो (पपायतीको समो)	"	१८वी	७६	ति क. चिरञ्जी मुकुसताल
४१७	७१६८	पृथ्वीराजरासो प्रावि	"	१६४१		केकड़ी निवासी
४१८	७१६६	पृथ्वीराजरासो प्रादि	"	२०वी	११८	कई रचनाओं का संग्रह
४१९	७१६६(२)	पृथ्वीराजरासो (महोबाको समो)	"	"	"	
४२०	४६१४(१६)	मोस्तीनोरास	ज्ञानभूषण	१६७७	"	
				१८७१	२१८-२२२	

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
४२१	४०७१	पोम्तोरा रातो	यलतो	१८८२	४	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२२	७७२२ (१२)	फुटकर मोयस		१८८०	११६-१२५	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२३	४६२४ (१८)	फुटकर कवित्तो		१८८०	२७-२६	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२४	४६२४ (७)	फुटकर ज्योतिष		१८८३	१४-१५	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२५	४२७२	फुलकुवर फूलकुवरी रात		१८८२	१४	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२६	४०८१	फाफुवर फूलकुवरी रात		१८८०	७२	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२७	४५००	फूलजो फूलमोरी रात		१८८२	२६	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२८	४६१४ (३७)	शसुजिगदासजी बीनलो	महेश जिनवास	१८७७	२५८-२५६	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४२९	७७४३ (३)	महानिरुपण	राजसिध	१८८४	४६-४३	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३०	४८६७	मामोराम मोहित होराको वात	बाकि तेज	१८८०	६५	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३१	७७५३ (७)	मामणवाडरी स्तवन	कमानकनग शिष्य (?)	१८८०	२६-४१	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३२	४६१४ (६२)	माई जसन न नोनवनी विगत		१८७१	३२१ वा	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३३	७१३६	माईस परीक्षाजी चौवाई	शुद्धि रामचन्द्र	१८८२	४	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३४	४३२०	बातसग्रह		१८८२	५२२	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३५	७८१७	बादगारी होत		१८८०	८-५०	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३६	४६१४ (२७)	बारह अनप्रसा	च शीति	१८७७	२४४-२४६	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३७	४७२१	बारह मुलमरी विवार		१८८०	१	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध
४३८	४७३७	बारह भवनरुख		१८८०	५	मदिरता वायणाठ आदि रोमो की औपध

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निधि नाम, पग नम्बरा	विशेष उल्लेखनीय
४३९	७४४४ (१५)	वारहृभाषना	जयसोम शिष्य	१८८५	जैनमन्दिर में रचित
४४०	७७५४ (१, २, ३)	वारहृमासीशग्रह		१८२२	भग्नतराताका चारहू माना नका न १८६०
४४१	४२८७ (१५)	वारहृमासी	रामचन्द्र	१८००	११६-१२७
४४२	७६२१	वालचन्द्रयत्तीसी	वालचन्द्र	२०००	७
४४३	४१४२	दुद्धिनेणचौपाई	तिलक सूरि	१८५०	६६
४४४	७५४२	दोलविवरण	आचार्य नेशपत्री (?)	१७००	६२
४४५	७७५३ (१०)	भमरागीत	महेश्वर	१८३७	४५-४६
४४६	५८८५	भवतमार	शालिग्राम	१८५०	२२
४४७	७७२१ (१)	भन्नीपुराण	हरवाम	१८२५	१-२५
४४८	७७४४ (४)	भजनसग्रह	चैना	१७५८	१८-२२
४४९	५१२३ (७)	भनुली	भनु कनि	१८५०	ति. क. चोकुपरी
४५०	४४५२ (१७)	भन्नीवृहपचौसी	"	"	१६५०
४५१	६७२८	भन्नीपुराण	भनु कनि	१८८१	१०
४५२	५१२२	भन्नीरा वृह	"	१८२८	३
४५३	४४५२ (६८)	भन्नीवाग्य	"	१८५०	१३२५०
४५४	५८००	भन्नीवाग्य	"	१८१३	१४
४५५	७६३०	भरतापिकार	"	१७६३	५३
४५६	४८३०	भवानीधन्य	"	१८५०	२

१५ वृह

ति. क. प्रयागी, प्रसार

ति. क. नोकमती, राजानमय

क्रमांक	प्र.यांक	ग्रंथ नाम	वर्त आदि जात य	निधि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२७	४७६६ (२)	भाया सोलावती (पद्यावध)	सालवध	१७७५	१ से १५	म रार्यासह, बीकानेर के आमारय कोठारी नेणती पुत्र जतसी की प्रायना से उनके पुत्र द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुवनद्वारविचार		१६वीं	२०	
४५९	७७२२ (१०)	भरव आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७-११४	
४६०	६७०२	भोगसपुराण (उमामहेश्वरसंवाद)		१७७२	३०	लि क टीकूबरस
४६१	४८२५	मण्डीवरचौपई	गान्धिय	१८४८	२३	लि क क्षमा मोभाग्य
४६२	४७९८	मदनवार्ता	सुग्यासचद जातधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५५ (१)	मदनगत (अपूर्ण)			२	
४६४	४३१५	मयुमासतीकथा	धनुभूजद्वार कायस्थ	१८८८	८१	लि क मुलसीराम कनौजिया, सवाई जनगर
४६५	४९११ (१)	मयमासतीकथा		१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मयुमासतीकथा (सवित्र)		१६वीं	२-८७	चित्र स ८७
४६७	५०७८	मयुमासतीकथा (सवित्र)		१८८१	२१६	चित्र स २२३
४६८	५०७९	मयुमासतीकी वात	धनुभूजद्वार	१८वीं	८८	लि स्या पालनपुर
४६९	५०८४	मयुमासतीचौपई		१६वीं	६०	चित्र स २०
४७०	५०८०	मयुमासतीचौपई		१६वीं	१२५	लि क सिसमल, कापरडा नगर
४७१	४६१५ (८)	मयुमासतीचौपई		१८वीं	१२५	होडोती बल्म के २७० चित्र
४७२	५४१८ (१२)	मनभवरा गीत	"	१८८७	१४१-१६६	लि क हररूप जालोर
४७३	४६१४ (२६)	मनोरथमाला	कवि माल	१६वीं	११३-११४	
				१८७७	२४८ गी	

क्र.सं.	व.सं.	प.सं.	कर्ता यादि ज्ञातव्य	निधि मग	प.सं.	विशेष उल्लेखनीय
१८८	७७२२(४)	मगस भट्ट दस	गोपालयाम	१६वीं	४८-५२	३० पण
१८९	६६१४(४४)	मरदेओतो मगसो	गान्धारा	१८७७	२७२-२७४	र.फा. १६६६
१९०	५०७७(५)	मलमसुन्दरीचोर्ष	गन्धवास पर्वतमुल	१८वीं	१६ वीं	
१९१	६४४२(१८)	महादेवचौरी लन्		१८७७	२८८-३००	
१९२	४६१६(५३)	महापराजो गोमती		१६वीं	२१	
१९३	६८५१	महादेवमन्मन्दीरास		१८वीं	८	
१९४	४७४३	महाराजा गोमतीसिंहजीजःमो- राहण		१६वीं	३३-३६	
१९५	५४३५(५)	महागोमतीचौरी मारसो		१७६८	२	
१९६	७७५६	महावीर दसोडण जीमणवार विगत				
१९७	७७५८	महासती गोपाचरिय	पुन्ह कवि	१८७१	८८	लि. स्वा. अयोध्यापुरी र. फा १७७३ (?)
१९८	४६५२(१०)	माताजीचौरी चरवा	गोकाजी	१८वीं	१३ वीं	
१९९	४४५५ (१२)	माताजीचौरी मीत	कवि तारग	१८०८	१६ वीं	लि.क. प्रीतमोभाय
२००	४६५२(११)	माताजीचौरी द.व	चानण निद्रिचौ	१८०७	१४-१६	लि.क. प्रीतमोभाय, वनेडा ग्राम
२०१	४४५२(८५)	माताजीचौरी लन्	कुदावलाभ	१८वीं	१२६ वीं	
२०२	७७७१(११)	माताजीचौरी लन्	मोहनजिनाय	१६३१	१७७-१७६	लि.क. अमरसिंह लिडियो
२०३	६६११(५)	मागवाचन कामरुन्दाचौर्ष		१८३०	६	विजयपुरमध्ये लि.लि.लि.
२०४	६६२५(१६)	"		१७६२	१-२२	
२०५	७७१८	मागुज मन्वजोचौर्ष		१८वीं	२१	अणहलपुर पाटण, दुर्गादाम राठोः राज्ये रचित

क्रमांक	प्रमाण	प्रथम नाम	कर्ता प्राप्ति नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	६१३८	मानवतुल्य मानवतो रास	सोहनविजय	१८०६	४४	र का स ० १७१०
४६३	६१३९ (१)	मानवतुल्य मानवतो रास (सचित्र)		१८७८	६५	विश्व स ० म
४६४	६२२७	मानवतुल्य मानवतो रास		१८१४	३६	विश्व स ० म
४६५	६३३५	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२४	५०	विश्व स ० म
४६६	६३३५	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२४	५०	विश्व स ० म
४६७	७३६६	मानवतुल्य मानवतो रास		१८७६	७६	विश्व स ० म
४६८	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४६९	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७०	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७१	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७२	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७३	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७४	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७५	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७६	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७७	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७८	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४७९	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८०	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८१	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८२	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८३	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८४	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८५	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८६	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८७	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८८	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४८९	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४९०	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म
४९१	७५३८	मानवतुल्य मानवतो रास		१८२८	११	विश्व स ० म

क्र.सं.	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२२२	मेघमाता		१६वी	५	लि. क. भगवानदास
५१३	४६१४ (१६)	मेरुजयमाता		१८७१	२०६वीं	
५१४	४६५२ (६०)	मेघसाकृति आदि		१८वीं	११७वीं	
५१५	६८२२	मंगरेहा चौपाई		१६४६	७	लि. क. मुनि केशरीचंद
५१६	५१०२	मोनो कपासिया याद	श्रीसार	१८वीं	५	लि. क. मुनि नित्यसागर
५१७	७०७७	मोनपकावशीकथा (मोतममहावीर-संवाद)		१८२४	५	खेडामध्ये
५१८	६७६२	मोहमरदराजाकी कथा (पद्य)		१६५३	१३	लि. क. गरीबदास
५१९	५६०१	मोहविवेक चौपाई	धर्ममंदिर	१७६६	६६	लि. क. भीमविजय
५२०	६४००	योगदुष्टिस्वाध्याय	नयविजय	१६वी	५	दोमक से कटे जीर्ण पत्र
५२१	५४१८ (१८)	योगसारके दोहे	योगचन्द मुनि	"	१३४-१४०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाता (राजिन)		१८४६	११०	लि. क. स्वामी शोभाराम
५२३	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसुन्दर	१८वी	११	खातोपुरामध्ये
५२४	४०८७	रत्नचूड चौपाई	कनकनिधान	१८१४	१२	र. का. स, १७३८
५२५	४८१६	रत्नपालरास	मोहनविजय, वृधरूपविजयशिव्य	१८६७	५४	लि. क. हितसौभाग्य क्षमा-सौभाग्यशिव्य
५२६	६०५७	"	मुरविजय	१६००	७६	
५२७	४६१४ (३०)	रत्नाय		१८७७	२४८वीं	
५२८	६५३२	रत्नपालरास	सेनक सूर	१८२७	३२	र. का. स १७३२, छोटी खाट-मध्ये, प्रथम पत्र अग्रपत्र

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रंथ नाम	वर्तमान स्थिति	लिखित समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
५२६	४८३३	रतन महेन्द्रासेतरी वचनिका	सदियों जगो	१७४१	७	लिक प्रमोद मुनि रोहितासपुरे
५३०	४८१५ (३)	रतनाहरीररी यात (पठवट)	कथिजण (?)	१८८७	४२-७५	२०० गण लिक प्रमोद
५३१	४८१८ (२६)	रविकथा	सिद्धरा गिरिनिवासी गगगोनीय	१६वीं	१५४-१६३	लिक रामसागर
५३२	४८१८ (२७)		य प्रकृपुत्र (?)	"	१६४-१६५	
५३३	७४४४ (१६)	रागवदहोत्तरी	मानुकोति	१८८५	२७०-२६४	लिक नेमविलय
५३४	४८८७ (६)	रागवदसमह	ज्ञान दधन	१८वीं	१७-२८	
५३५	४८००			१६वीं	३	
५३६	४८१८ (३४)	रागरासावटक		१७६५	१७५-१७६	
५३७	७७२० (२३)	रागनामोपरि विरहसुभाषित	रसिक (?)	१७६५	६-११	
५३८	४८०६ (२)	राजसभरजग		१७६८	१-२५	क र का स १७५६ ३७० बोहा
५३९	४८१५ (१७)	राजावधरी वातरा दूहा		१८८७	४०६-४१०	
५४०	४८१६ (२)	राजाभोज माघपडित न दोकसीरी		१८७५	४५-४६	लिक सीभागव गणि
		वात				
५४१	७७२१ (६)	राजा रतनरी वचनिका	लिखितियों जगो	१८२५	११६-१४१	
५४२	७७२० (२१)	राजावली		१८वीं	७	ग १२६७ से १७७० गण के
५४३	४७६६	राणारी वगावली		१८वीं	१	सीसोदिया राजासोका वनपरिचय
५४४	४८१५ (८)	राजुनपचीसी बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७-१६८	नामपरानेग से अमरसिंहपुर
५४५	४८१८ (३५)	राजुलपचीसी	ज्ञान दधन	१८०६	१-६	सम्राजसिंह तक
						लिक दयानिधि

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजतुलसी	तालचंद	१८५८	४	लि.क. सन्धा, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजतुलसी	"	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राठोड रतनमहेशदासोतर वचनिका	निडियो जगो	१८०२	३७	लि.क. धर्मसुन्दर, नयम पत्र आश्रित
५४९	४४५२ (६१)	राठोडारी वंशायली		१८वीं	१२६ वीं	१११ राजाभो के नाम
५५०	४८३४	राठोड नाहृत्वातरो छन्द	गाउन साधोदास	१९वीं	१	"
५५१	६४४६ (७)	राधाजोती वारहगुणे		"	१४-१६	
५५२	७७४४ (३)	रागातितास		१७५८	८-१७	
५५३	४४५२ (१६)	रामकिशनजीरो छन्द		१८वीं	१६ वीं	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौमई	ताचण्यकीर्ति	१७११	३०	र.का. स. १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गय)	रामनाथ	१८वीं	६	
५५६	७८१० (२)	रामचरणदासजीका कृतिगह	रामचरणदान	१८वीं	२६-२३०	७ कृतिगो का संग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८६४	११४	र.का. म. १६८७
५५८	७७४४ (१)	राममञ्जरी		१७५८	१-२	
५५९	६३५७	रामयदोरासायन	गोविन्ददास	१७६४	८६	
५६०	६७४६ (२)	रामरक्षाभाषा	केशराज	१८वीं	८८-६२	
५६१	७६०६	रामरक्षामत्र	रामानन्द			
५६२	४६२४ (५)	रामगुणरासो	"	"	३	लि.क. केशवराज
५६३	७७२१ (२)	रामरासो	साधोदास दमजाडिया	१७८८	१-३२	लि.क. जयमीभाग्य गनि
५६४	७७३५	रामरासो	"	१८२५	२५-६६	
५६५	७१४०	रायप्रशनश्रेणीमध्ये दुग्धारह प्रशन	"	१८वीं	८१	गुटका, सपूर्ण
५६६	७७२२ (८)	राज सत्रसातरो गीत		२०वीं	७	
				१८वीं	१०५ वीं	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्त्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२ (७५)	रासभचक्र	धर्मसंग्रह	१८वीं	१२३ वीं	गद्य के विषय में शकुन विचार लिंक भक्तिविशाल
५६८	४४५७	राजभोजन चक्रपई		१७७७	७	
५६९	४६१४ (४३)	राजभोजन रास		१८७७	२६६ वीं	
५७०	४६१४ (४१)	राजभोजन सभाय		१८७७	२६७-२६८	
५७१	४६१४ (४२)	राजभोजन सभाय		१८७५	१-२५	लिंक मनुष्यविजय
५७२	४६०५ (१२)	दीक्षासुवरी बात स्फुटबोहा		१६वीं	१२-४२	अपूर्ण
५७३	७१२२	दक्षिणसीमगट (कृष्णको व्याहारी)		१८६७	१३२	मुद्रका, स ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त
५७४	६६७५	दक्षिणसीमगट				लिंक कीदगदास, रेवा प्राप्त
५७५	४०७६	दक्षिणसीमगट (सत्तावावोप)	मू पन्दीराज, टी कुणवधौर पत्ति	१८२६	४३	
५७६	४०७७	दक्षिणसीमगट (सत्तामक)	मू पन्दीराज टी लक्ष्मिविधान	१७८६	२८	
५७७	७१६५	दक्षिणसीमगट नागमण्य श्रान्ति		२०वीं	मुद्रका	जीण
५७८	४०७८	दक्षिणसीमगट (राजस्थानी अयसहित)		१८वीं	२७	
५७९	५२२१	दक्षिणसीमगट रास	पन्दीराज	१६वीं	१५	पत्र १, १२ अप्राप्त
५८०	५८६४	दक्षिणसीमगट रास (सविन)		१८वीं	१३	लिंक साध्वी मेरवी खिन्न स १६
५८१	६६३७ (४)	दक्षिणसीमगट रास	रत्नास	१८११-१८१६	२०१-२०६	लिंक रामदास निराणाप्राप्त
५८२	४०२७	दक्षिणसीमगट श्रान्ति	श्रीसार, राज श्रान्ति	१८वीं	२२	
५८३	६११६	दीक्षावती चौपई	सामवेदन	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	दीक्षावती चौपई		१६वीं	३६	
५८५	६०५६	दीक्षावती भाषा	सातवद	१७८३	२०	रका स १७३६

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	तिथि समय	पृथ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८६	४८३६	लीलावती रास	उदयरतन	१८०७	१६	ति क मुनि जेठा
५८७	५२८६	लीलावती रास	"	१६वीं	१२	र का स १७६७
५८८	४६१४ (२५)	लूंकमतनिराकरण प्रतिभास्थायन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४ से २४२	ति क रूपविजयजी वातानगर
५८९	४०८८	वच्छेराजहंस चौपाई	जिनोदय	१८६१	३३	
५९०	४७८१	मध्याकल्प		१८१४	४	
५९१	७७२६	यशभास्कर	सूर्यमल्ल	१६४३	१८४	ति.क. वारहूठ चालावसजो, ग्राम हणूव्या, काशी ना. प्र. सभा में ग्रन्थमाता के मर्यापक
५९२	७७२७	यशभास्कर	"	१६४०	१८४	ति क श्वेताम्बर पञ्चायण
५९३	७७२१ (३)	यमेकवारस्तारी नौसाणी		१८२५	६६-११०	ति क भैरवाम, जोरपुरमय
५९४	७१५१	वदन्तिबुका कवित्त आदि		१८७६	७५	
५९५	४७१६	वर्गोत्पत्ति		१६वीं	२	
५९६	५३७६ (२०)	वारसेनमुनिकथा			२२६-२४२	
५९७	६७३८	विक्रमलापरा चौपाई	अभयसोम	१६वीं	१६	तण्डित
५९८	६४१४	विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी)	हेमानन्द	"	२७	
५९९	६६१५	विक्रमचरित्र (चोवोलोसतीचौपाई)	उभयसोम	१८६५	११	र.का. म १७२४
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूषणपञ्चदण्डकचरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र का स १७२८
६०१	६४१५	विक्रमादित्य लावणी	धर्मदेव (?)	१६७७	६	ति रथा. देवगु
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयासेठानीलावणी	तातचंद	२०वीं	३	र.का. स. १८६१
६०३	६१११	विद्याविरास चौपाई	जिनहर्ष	१८२६	१८	
६०४	४०६६	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा	शृंगभसागर	१६वीं	७०	र.का. स. १८१०

क्रमांक	पृष्ठांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
६०५	५६२४(६)	अन्नक (विशेष) भारतीय नौसैनिकी	अन्नक	१७६३	१-१५	लि. क. जयसिंह-नाथ, आठपहररा द्वारा आदि भी हैं।
६०६	५५५२(५१)	विमानगुरुजीरो सिलोको	नातिविमान	१८वीं	४५-४८	
६०७	५१४५	विमानगुरुजीरो सिलोको	पंडित विमान	१८वीं	१४	
६०८	५५५२(५३)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१०६५	
६०९	५६१४(५)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१६०-१६१	
६१०	६३३४	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१३	
६११	७७२२(१५)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१५२-१५३	क. लि. क. आणंदराम
६१२	७७६६(१)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१-३७	विमान सं० १८
६१३	६१३६	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१६२४	लि. क. प० लोचो
६१४	५५५२(५२)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१८वीं	लि. क. प० प्रोत्तमनाथ
६१५	७७४३	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	३३-४६	क. लि. क. बाई सिरकवरी, सागरगढ़मध्य
६१६	५३६८	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	४०	लि. स्या - जोधपुर
६१७	६४४३	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	४४	लि. क. पुरवोत्तम व्यास
६१८	७०४४	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	५२	६१ कवित
६१९	७७२२(२)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	३७-४५	
६२०	७४४४(८)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	१८०-१८१	
६२१	७१२२	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	२१	
६२२	७७५३(८)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	४२-४४	
६२३	७८१६(१)	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	४८	
६२४	६०२४	विमानगुरुजीरो सिलोको	अन्नक	१८वीं	२६	लि. क. नातिनाथ जेतारणमध्य

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल्ल	१८५८	१००	लि.क. ब्राह्मणगुलाव, भगवतगडमध्य
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहंय	१८२३	२५	
६२७	६६१६	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१६२८	७८	लि.क. मगमल, प्रगमपत्र अप्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा	ग्यानसागर	१६१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	जिनहंय	१७६१	३४	र. का. स० १७२६
६३०	४१३८	"		१८६४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा	हेमचन्द्र, रत्नशेखरशिष्य	१६वीं	३१	
६३२	७०८६	"		१८२३	१३७	लि.क. गोपीचन्द्र
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र. का. नं० १७२६
६३४	६५२८	"	विनयविजय	१८५७	५५	र. का. १७३८
६३५	६७४६	"		१८७७	गुटका	र. का. १७३८
६३६	५३७३ (५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०६	१०६-११८	
६३७	४४५२ (७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वां	कुत्तेके कान फटफटानेके विषय मे फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनदोषिका चौपाई		१६वीं	८	
६३९	४४५२ (६२)	शकुनरा कवित तया जीसह सवाई-		१८वीं	१२० वां	
६४०	४४५२ (३०)	वखतेसयुद्ध		१८वीं	३१-३२	
६४१	४४५२ (७)	शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		"	११ वां	४ पयो का फल
६४२	४१६०	शकुनविचार		१७वीं	२	
६४३	५१२३ (४)	शकुनावली		१८वीं	१६-२७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञात-य	लिखित समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	नातसवतारी	हेम कवि	१६वीं	६	लि क प्रोतसोभाग्य
६४५	४७२५	नातीसारी यण्ड		१६वीं	४६	लि क सोपाल नि. ३, श्रीरागपुरा
६४६	४४५२ (६५)	नातचरका (स्वर्गीय) आदि		१६वीं	२१	वासा
६४७	४१६६	नातचरका		१६वीं	२१	मासोपनगरे लिखित
६४८	४७८८	नातचरका	भामिह	१६वीं	६	कर का सं १६३८
६४९	४८२४	नातचरका		१६वीं	२	
६५०	६३०७	नातचरका		१६वीं	२	
६५१	६३८६	नातचरका		१६वीं	६	
६५२	४४३६ (२)	नातचरका	नमसुंदर	१६वीं	५-१७	लि क दानविजय भाविका
६५३	६५३८	नातचरका		१६वीं	६	साहमरेपठनायक
६५४	४८८०	नातचरका		१६वीं	२२०	१०४ १०५ पत्र आभास
६५५	७७२० (७)	नातचरका		१६वीं	४५	र का सं १६७८
६५६	४०२४	नातिभद्र चरित्र	मत्तिसार	१६वीं	१२	
६५७	४८०४	नातिभद्र चरित्र		१६वीं	१२	
६५८	४०६५	नातिभद्र चरित्र		१६वीं	१८	लिखित सवाईजयपुरमध्य
६५९	६१३१	नातिभद्र चरित्र		१७वीं	२५	लिखित ग्वाक्षियरमध्य
६६०	६१४०	नातिभद्र चरित्र	"	१८वीं	४८	
६६१	६५४३	नातिभद्र चरित्र		१८वीं	२३	लि क शिवदत्तसार
६६२	६८४६	नातिभद्र चरित्र		१८वीं	१७	लि क लुम्पाविव

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लि क ऋषि चापो
६६४	७५६४	"	"	१८०६	२६	लि क खुशाल, वेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८ (५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१-१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	"		१६१५	१०५	पत्र १ से ३ अत्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका)		१६४३	३४	लि क राव जयसिंह, बनोर, फतहगुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)		१६वीं	१३६	चित्र स० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)	महाराज नकुल पंडित	"	६-७२	चित्र स० ४८
६७१	७७२२ (१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५-१५२	लि क. कासटीहा
६७२	५२६६	श्रीमलवावनी		१६वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	श्रीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७६२	७	लि. क लब्धिसागर
६७४	५४१८ (२३)	श्रीलरासा	कवि जैत	१६वी	१४६-१५०	
६७५	४०१०	शक्रजहोसरी	देवीदान	१८६६	४७	लि क विजयसमुद्र, जेसलमेर
६७६	४४१६	"	देवदत्त	१७६०	५०	प्रथम पत्र अत्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चाशिका भाषा	मूल-पृथुना, टी उत्पल भट्ट	१७६६	१५	
६७८	५३७६ (६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	"	६०-६४	
६७९	५३७६ (१७)	"	सकलकीर्ति	"	२०६-२११	
६८०	५३७६ (१६)	षोडश कारण रासा	दादूजी	"	२०३-२०६	
६८१	६६३७ (६)	सर्गगी	समयसुन्दर	१८१६	२६३-४३०	लि क मनि सुन्दरसोभाग्य
६८२	६५३६	साम्बप्रद्युम्न चौपाई		१७२४	१६	कृष्णदुर्गमध्ये

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान प्राप्ति नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	७४०१	साम्बन्ध प्रम बोपाई	समयसु-वर	१६७३	३१	लिखित श्राव्य मरुपठनायम
१८४	४६१८(२)	सायन्तिका सवय-धुकी घात		१७६६	२१-४२	लि क प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
१८५	७१७३	सायन्तिका घात		१६७६	२७	लि क मयुरालाल
१८६	७७२२(५)	सायन्तिकासूरी घात		१६७६	५३-५६	६८ पद्योमे रचित
१८७	५४५८(२)	सायन्तिकासूरी घात (सवित्र)		१८३८	१-५४	विश्व सं० ७
१८८	४६२४(१)	सायन्तिकासूरी घात		१८३८	१-८	जीन प्रति
१८९	४६१६(४)	सायन्तिकासूरी घात		१८७५	५४-७२	लि क सोभाय गणि
१९०	४१४७	'		१८१६	३६	
१९१	६६८२	'		१८५६	१६-१०८	लि क राधाकृष्ण ब्राह्मण
१९२	७७२०(२०)	सायन्तिकासूरी घात (सवित्र)		१८७६	१-७ १६ २५	विश्व सं० ७७
१९३	७७६८	सायन्तिकासूरी घात (सवित्र)	सिद्धिनिधय देवघट्ट	१८२४	७५	विश्व सं० १४
१९४	७८४५	गुटका		१८४८	७-८४	
१९५	५२०२(७)	सायन्तिकासूरी घात (अपूर्ण)		१८८५	१२३-१४१	
१९६	४६१५(११)	सायन्तिकासूरी घात		१८८७	३६१-३७६	
१९७	४४५२(६६)	गिरामण		१८८७	१३१ घा	७३ गिरासके वाक्य
१९८	७२४७	स्यन्तिकासूरी घात		१८८७	१	
१९९	४६२४(१४)	स्यन्तिकासूरी घात		१८८७	३५-३६	
२००	७४४४(१२)	स्यन्तिकासूरी घात		१८८७	२१२-२४५	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सम्ख्या	निकोप उल्लेखनीय
७०१	४४५२ (७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३५	सियार के दोतने का मुभा- शुभ विचार
७०२	५१२३ (८)	स्फुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१-४६	गोरदाचर, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३ (१५)	स्फुटपद्य		१८३७	८६-१०६	सोरठ, राजुल आदिके बूहा, पद आदि
७०४	४४५२ (८२)	सक्रान्तिफलचक्र		१८८०	१२४५	
७०५	४६७५	सक्रान्तिविचारआदि		१८८०	५	
७०६	४६८५	"		१८८०	५	
७०७	७३३५	सस्तारकप्रकीर्णकसवाताबोध		१८८०	१६	
७०८	४६१५ (१२)	सज्जनप्रेमबूहा		१८८७	३३७-३८४	११० बूहा है
७०९	७४४४ (१)	सज्जायसग्रह		१८८६	३२७-३७३	
७१०	७५३८	"	सायुतीति	१८८०	४	लि क हृषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा		१८८३	१५	
७१२	७४८०	सत्तरशेषपटाणप्रकरण		१६२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणवलीचोपई	गजकुशल	"	१२	र.का स० १७१४
७१४	७८१० (१)	सन्तदासकीवाणीआदि	सन्तदास	"	४-२६	वाला ३ पृ. मप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८६४	६६७	जीर्ण प्रति
७१६	७०६०	सन्तवाणीप्रतिकमणविधि		१८८०	१४	
७१७	४४५२ (६)	सन्तवाणीरावशनाम		१८८०	१०५	
७१८	५११६	सन्तकुमारप्रबन्धचोपई		१८४०	२०	प्रथम पृ. मप्राप्त
७१९	४६१४ (५१)	सन्तवाणीसन्तानू बूहा	वीरपद लक्ष्मीचन्दशिरम	१८७७	२७६-२८३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्ता आदि नात्व	लिपि समय	पत्र संख्या	विवरण उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो वल्ल (व्यवहिकल)		१६वीं	१	
७२१	४७७६ (१४)	समाधि रास		१७वीं	२०२-२०३	
७२२	४६१४ (३)	सम्भेद गिरार निर्माणबीड		१८वीं	१४८-१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती ध्वज		१६वीं	३	
७२४	४८८७ (१६)	सर्वाई अतिपञ्चोकोयपुर चण्डाई		१८वीं	१२७-१३०	
७२५	४४५२ (८३)	सयवासगृह	श्याम कागोराम आदि	१८वीं	१२४ वीं	
७२६	७७५३ (१३)	सवया		१८वीं	७० वीं	
७२७	४८८७ (३)	सयवा इकतीसा	बनारसोवास	१८वीं	१२-१३	स्वयं बनारसीदास के कथारो से लिखित ५ पृष्ठ
७२८	४०८१	सयवाकावली	राजसी	१६वीं	५	
७२९	४६०६ (४)		राज कवि	१७वीं	२५-३४	लिंक केवलसोभाग्य
७३०	४४५२ (१४)	सयवासगृह	प्रताप बह्मगुलास आदि	१८वीं	१७ वीं	लिंक प्रेतसोभाग्य
७३१	४४५२ (२०)	सयवा सयलरा आदि		१८वीं	२० वीं	
७३२	४४२४	सयह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८वीं	६	र का १६१८ लानमन होलीरो पोनाळमय्ये
७३३	४४१०	साठो सयद्वारी आदि		१८वीं	८३	प्रज्ञावली और महरम के बाद धादि का फल
७३४	४६२४ (१२)	सात बारारा विपदिवा		१७-०	१३-१४	लिंक जयसोभाग्य गणि
७३५	४६२४ (११)	सात सलोरो सयव		१७वीं	१२-१३	
७३६	४४५२ (६४)	सात सनोरो सयव (प्रहेरी)		१८वीं	१३० वीं	
७३७	७३०५	सिद्धातबोल		१६वीं	४७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धातसारोद्धार	लावण्यसमय	१७७६	५६	श्रुतिम तीन पत्र त्रुटित
७३९	६३८३	सिरी सातणी भास	समयसुन्दर	१८वीं	२	सा चन्द्रावलि पठनार्थ
७४०	४००६	मिहलसुत चौपई	"	१७६४	६	लि क कुशलहृष
७४१	४८२८	मिहलसुत चौपई	"	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	जिन हर्ष	१८वीं	६२	
७४३	७७५३ (२)	सीतासज्जमाय	नन्द (?)	१८३७	३०-३१	
७४४	५३७६ (१)	सुवर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१-३१	र का स० १६६३
७४५	४००७	सुवर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लि.क ऋषि इन्द्रभाग
७४६	४०८६	सुवर्शनसेठरा कवित्त	"	१८८४	२०	लि.क चाई चपा
७४७	६२७४	सुवाहुचरित्र आदि		१६वीं	८	
७४८	६३८८	सुवाहुचरित्र	जिनमाणिक्य सूर	१८वीं	६	र का न १६००, जैसलमेरमध्ये
७४९	४००८	सुभद्रातत्तरी चौढालियो	मानसागर	१८७६	५	लि क स्वाविरजी श्रीचैन- रामजी
७५०	४६१२	सुभाषित		१६वीं	४	६५ पद्य हैं
७५१	५४१८ (३)	सुरतपचमी कथा	वनवारीदास	१६वीं	१-८७	
७५२	५६३०	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्धनवान	१८४२	२८	
७५३	५६७५	सुरसुन्दरी चौपाई	"	१७८२	२५	पत्र स० २० से २३ अप्राप्त
७५४	४००६	"	शुभशील	१६वीं	१७	लि क नेमचन्द
७५५	७२४४	"	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६८८	२६	लि क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूचितसुतावली	केशरविमल गणि	१६वीं	२५	लि क. इष्टहस

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्तमान भाग-२	वर्तमान भाग-२	निधि संख्या	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको	करणोदानजी	"	१८४१	३००	२ का स १७८७
७५९	७७२५	सूरजकाग	भोविवराय (?)	१८४२	१८४३	४६-४८	तिपिस्थान-बदनोर
७६०	६७५२	सेऊसमकी वरजी	भोविवराय (?)	१८४३	१८४४	४६-४८	लि क जीवराय
७६१	४०११	सोमवती भगवतरो वार्ता	भोविवराय (?)	१८४४	१८४५	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६२	७७२२ (३)	सोरठरा ब्रह्मा	भोविवराय (?)	१८४५	१८४६	४६-४८	लि क जीवराय
७६३	५४१८ (२२)	सोमह कारण का रासा	भोविवराय (?)	१८४६	१८४७	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६४	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८४७	१८४८	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६५	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८४८	१८४९	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६६	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८४९	१८५०	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६७	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५०	१८५१	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६८	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५१	१८५२	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७६९	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५२	१८५३	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७०	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५३	१८५४	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७१	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५४	१८५५	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७२	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५५	१८५६	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७३	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५६	१८५७	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७४	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५७	१८५८	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७५	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५८	१८५९	४६-४८	४३ ब्रह्मा
७७६	४६१४ (४५)	सोमह स्वप्न वीजती	भोविवराय (?)	१८५९	१८६०	४६-४८	४३ ब्रह्मा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता	जिनहर्ष	१८६७	६६	गुटका
७७८	६४४६ (४)	हरजस	कनकसुन्दर	१६वी	१-४	लि क प क्षेमादि
७७९	४०१२	हरिचंद रास	रतनहमीर	१८८२	२५	र का स १६६७
७८०	४८२६	"		१८८५	१७	
७८१	७७२१ (६)	हरजस नाममाळा		१८८५	१४४-१६५	
७८२	४६०५	हरियालीरा दूहा आदि		१८८५	३६-३८	
७८३	(१०, ११, १२) ४६२४ (८)	हरिरस	ईसरदास	१७६३	१-१०	प्रतिप पत्र पर सोलह श्रु गारो की सूची
७८४	७७२१ (१२)	"	"	१६३१	१८०-१६६	लि क फूलनिरि
७८५	७७५० (१)	"	"	१८६०	१-२१	लि. स्या. वीरघार
७८६	५३४३	" आदि	"	१८वीं	५	
७८७	४६१४ (२)	हरिवशपुराणनो रास	अमृजिणदास	१८७१	७-५७	लि क चक्रकीर्ति, एहमदावाद- नगरे
७८८	४४५२ (६२)	हाथियारा बलाण	नाहरखान राजसिंहोत	१८वी	१३० वीं	रोमकद छंदो मे वर्णन
७८९	४६२४ (६)	हागीरा बणाव		१७६३	११वीं	
७९०	४४५२ (२४)	हिनुलाटक	रामसरण (?)	१८वीं	२४ वीं	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि		१७वीं	१	लि क प सेतसी
७९२	४१६८	हीर रास्य को तमासो	रत्नखोबर सूरि	१६५४	३२	लि क नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३६	क्षेत्रमास		१७८२	७१	पत्र स. १, २ प्रब्रान्त, जैसलमेरनगरे लिखित
७९४	७३६७	"		१७वीं	१५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	वर्त्तमान दिनांक	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६५	७४०३	क्षेत्रसमाप्त	मन्त्रालय खोर्दाई प्रकरण सहाय्यबोध	१८५१	६	र का स १५३६
७६६	७४२३	, गणित		१८३६	१२	सन्निध प्रामे लिखित
७६७	४४२४	खोर्दाई		१६८२	१४	र का स १४६४
७६८	४०२१	प्रकरण सहाय्यबोध		१८२१	२०	र का स १६८६ (?) उदयपुर नगर

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	अकडमचक	हीर	१८वी	१३६वॉ	अगद रावण सवाद का वर्णन है
२	४०३८	अगद वसीठी संव्या	कवि भान	१९वी	३	
३	७७२०(६)	अध्यात्मवृत्तीमो	बनारसीदास	१८वी	४३-४५	
४	४६१४(६)	अध्यात्मवत्तीसी	"	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	"	"	१८वी	४२-४३	
६	५३६२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकांड)	भगवान् अर्जुन नागा शिष्य	१८वी	३२	रचनाकाल स० १७४१
७	५३६३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकांड)	(निरजनी)	"	४८	
८	५३६४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकांड)	"	३७		
९	५३६५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किधाकाण्ड)	"	३१		
१०	५३६६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकांड)	"	२१		
११	५३६७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	"	६५		
१२	५३६८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	"	१७८३	३६	* रचनाकाल स० १७२८ लि.क. मेघा, नागपुरमध्ये
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्ददास	१८५६	१६२-१६६	

क्रमांक	प्रमाणिक	ग्रंथ नाम	कर्ता प्राप्ति नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१४	६७४३	प्रमत्तपारा	भयधानदास निरानो	१८२२	५६	भयान
१५	४८०३			१६वीं	५२	
१६	७४६१	प्रलङ्कारदोषक	नयनाथ मिश्र (सुखदेव गिण्य)	१८वीं	२८	
१७	४०३७	प्रलङ्कारमाला	सूरदास मिश्र	१८वीं	५	र का सं १७६६ प्रागरा में रचित
१८	४२७०	प्रलङ्काररत्नाकर	वसुधामिहिराय	१६वीं	६०	वसुधामिहिर कवि की व्याख्या सहित
१९	६६४३	प्रलङ्कारप्रकरण भाषा		१८६४	१४	लिक वसुधामिहिराय
२०	४२८७ (१)	प्रलङ्कारसौखी		१७२६	१-४	लिक रामचन्द्र
२१	४२८७ (१२)	प्रलङ्कारसौखी	सुंदरदास	१७२८	६३-६८	
२२	४६८०	प्रलङ्कारसौखी	आत्मराम (बालरामसौखी गिण्य)	१६वीं	३६२	लिक ताराचंद प्राहण
२३	६२४०	प्रलङ्कारसौखी भाषा	गुणभट्ट	१८८८	१३८	आत्मराम का नगर महुवा मध्य
२४	७७२० (१७)	प्रलङ्कारसौखी		१८वीं	५१ या	
२५	४४१८ (६)	प्रलङ्कारसौखी के रेखते		१६वीं	१०५-१०६	
२६	४६१७	प्रलङ्कारसौखी	महाराजा गणपतिमिहिर	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससूचक भाषा	लालदास	१८१२	८६	
२८	४२६३ (३)	इतिहाससूचक भाषा	रत्नराज	१८८२	६-१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आश्रित था
२९	४२६३ (४)	इतिहाससूचक भाषा		१८८२	१७-१८	लिक जयसोभाग गणि
३०	४६२४ (१७)	उपदेशसूचक भाषा	जिनदिया	१८वीं	२२-२७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपदेश वावनी	कृष्णदास	१६वीं	१०	र का सं १७७२
३२	५१६६	उपाख्यान सहित दश लीला		१६२१	३-२६	लि.रु ब्राह्मण बालमुकुन्द, मयुरा मन्त्रे
३३	४३१३	ऐन पचीसी	लाला सुन्दरलाल	१८६७	=	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविषयक		१६०७	२५	लि.क. हरिदास
३५	७७४४(५)	कठणाभरण नाटक	कृष्णजीवन लब्धोराम	१७५८	२३-५१	लि.क. चैतकुचरी
३६	७७५६(२)	कालको अंग	सुन्दरदास	१६वीं	२२-३७	
३७	४४५२(२७)	कवित्त कुण्डलिया	केशव, गङ्गा	१८वीं	२६वीं	
३८	४४५२(२१)	कवित्त वावनी	लेमचंद आदि	"	२१-२२	
३९	५३७४	कवित्त संग्रह	आनवधन	१८४६	५६	५३२ कवित्त हे
४०	५३८२	"	जगदीश कवि	१८६३	१६३	५ १००० कवित्तों का संग्रह
४१	४२१७(२)	कविप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पत्र सं ७६ ने ८४ मप्राप्त
४२	५३८०(१)	"	"	१८४६	६६	
४३	७०६४	"	"	२०वीं	१६६	
४४	६६७६(२)	काव्य सिद्धांत	सूरति मिश्र	१८६०	७४-८८	
४५	४१४०	"	"	१६०१	३१	लि.क. मृदुपि देवराज
४६	४२६४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१६६	प्रथम पत्र अम्रात
४७	५२०१	किम्सा गुलबकावली		१६वीं	३-७६	
४८	७७४४(७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७-६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१६वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चौपई		"	१७५	१८४६ पत्र १ र का सं १८३६ स्थान-अमरा

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	निधि मय	पत्र सन्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६६८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१६वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मन्दिर की निम्नार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२० (१६)	गोरखव्रजचक्रिका		१८वीं	५१वाँ	वदनोरमध्ये लिखित
७३	७७३४	गोवर्द्धननाथजी की प्राकट्य वार्ता		१६२३	४८	र का सं १८६३, कवि गोपाल-
७४	५३६७	गोविन्ददत्तास	कृष्ण कवि	१८६७	११६	मुल, खालियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दघन	गोविन्द नाटाजी	१६वीं	३०	कवि जयपुर वासी
७६	५३८३	चक्रता पातशाही की परवरा		"	१४१	र. का. सं १८५८
७७	५३४७ (१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण राजाजी वात		१८३७	१-३०	रि क लाला तुलसीराम सेनवशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी आदि	नन्ददास	१८८७	८५	
७९	५४३८ (५)	चिन्तामणि माला	रामेश्वरदास आदि	१८६०	६२-६६	
८०	४६१३	चिन्तावणी संग्रह	वनारसीदास	१८८०	५१-५२	र. का सं १८०८
८१	७७२० (१८)	चेतन सुमति गीत		१८वीं	२७०	रूपनगर मे उम्मेदपुर
८२	७११५	चौरासी वैष्णवों की वार्ता		१६वीं	१८६-१६३	वाकावती के निरावाई
८३	५३८२ (२)	छक पचीसी	जगदीश कवि	१८६३	७१	लि क भट्ट स्वामसुन्दर
८४	५३७७	छवमोडगी	वृन्दावनहित	१८६०		राधाकृष्ण गोता वर्णन,
८५	६७६३	छन्दस्तावती	हरिराम	१६२०	१०	वृन्दावनमें लिखित
८६	५८१६	छन्दलता	चिन्तामणि	१६०६	३१	र का सं १८२५, पुरनगर मे
						लिखित
						लि क. वजवासी, वृन्दावन मध्ये

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	विषय	पत्र संख्या	लिखित समय
८७	४२१३	पुस्तक विचार	सुन्दर मन्दिर	२५	लिखित समय कबीर
८८	४२७६ (२२)	गोष्ठिजनक कथा	सुन्दर मन्दिर	२५-२५३	लिखित समय कबीर
८९	४३०३	सिद्धवर्धन चरित्र	सुन्दर मन्दिर	७१	लिखित समय कबीर
९०	७७४६ (१)	जोग मीसा	सुन्दर मन्दिर	१-७	लिखित समय कबीर
९१	४२८७ (७)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	२६-३३	लिखित समय कबीर
९२	४३७१ (२)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	३४	लिखित समय कबीर
९३	७७२० (१०)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	४६-५१	लिखित समय कबीर
९४	४४०७	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	३७	लिखित समय कबीर
९५	४३१६	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१४३-१५२	लिखित समय कबीर
९६	४४३८ (४)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	५६-६२	लिखित समय कबीर
९७	४२६३ (१५)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	३४-३५	लिखित समय कबीर
९८	४३०६ (१०)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१६-२०	लिखित समय कबीर
९९	७४२१ (११)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	५६, ६०	लिखित समय कबीर
१००	४३६१	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१०३	लिखित समय कबीर
१०१	४४५५ (१)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१६	लिखित समय कबीर
१०२	६०८८	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	३	लिखित समय कबीर
१०३	६३१४	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	६	लिखित समय कबीर
१०४	४२८८ (२)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१८-४५	लिखित समय कबीर
१०५	४४१२ (२)	सुन्दर मन्दिर	सुन्दर मन्दिर	१-२०	लिखित समय कबीर

र का सं १८१२,
बि भरतपुर कासी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	रिति समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि	मनोहरदास सोनी	१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१६	धर्मपरीक्षा	प० विरोमणिदास	१८६०	८७	र का सं० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	विलास	१८वी	३४	र का सं० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा		१८०७	४७	र का सं० १८६७ करोलीमध्ये लिखित
११०	७३५१	नयतत्त्वविचार सार्थ	नगनसुख केशवपुर	१८वी	११	चित्र सं० २
१११	७७६६ (२)	नयनसुख (वैद्यमनोत्सव)	"	१८५६	१-४४	
११२	७००६	नयनसूत्र		१८८४	२६	
११३	६८३५ (१०)	नयकारमत्र		१८६६	३	
११४	७४४२ (१)	नयतत्त्वभेद		१७६४	१-४६	
११५	७७२० (८)	नयदुर्गाविधान	बनारसोदाय	१८वी	४५ वी	
११६	७७२१ (७)	नयदत्तकवित्त		१८२५	१४१-१४२	
११७	६८३५ (५)	नागोरीगच्छपट्टावली		१८६६	१	
११८	७७२० (६)	नामनिर्णयविधान	नन्ददास	१८वी	४५-४६	
११९	६३४३ (४)	नाममजरी (मानमजरी)		१८८६	४२-६६	
१२०	७७६७	"	"	१८१३	१८	लि क उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३ (१)	नायिकाभेद	नन्ददास	१८४८	२-५	प्रपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	म. प्रतापगिरि	१८८५	४७	लिखित जिनगीमध्ये
१२३	४५५७ (१)	नीतिमजरी	"	१८वी	१-१३	लि क महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१ (१)	नीतिमजरी	"	१८१४	१-२	लि स्था उदयपुर, सेठ गभीरमल पठनार्थ
१२५	७७४६ (१)	"	"	२०वी	१-१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नात-य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनाय
१२६	५३७२	नहनियान	रस भानुद	१८६६	१२	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	५४५२ (४०)	ननयत्तोसी	व द कवि	१८वीं	४४-४५	र का सं० १७४३
१२८	७७२१ (५)	प्रकीर्ण कवित्त	वनारसीविद्यासात्मगत	१८२५	१४३-१४४	
१२९	७७२० (१६)	प्रकीर्ण वद	व द कवि	१८वीं	५२ वीं	
१३०	५४०८	प्रतापविज्ञान	व द कवि	१६वीं	१६	कायप्रकाश पर आधारित रस
१३१	६२६२	प्रबोधपञ्चाशिका	पद्मनाकर भट्ट	१८६३	२०	पथ
१३२	४८०५	प्रबोधपञ्चीसी	सुंदर कवि	१६वीं	२	कवि सरतलक्ष्मीप्रणालिबास का शिष्य है
१३३	४२८८ (३)	प्रह्लादचरित्र	गोपाल	१८८६	४२-८८	
१३४	५३७१ (३)	प्रदत्तपनियत भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	३५-६४	
१३५	७७२० (१२)	प्रास्ताविक सवया		१८वीं	४७-४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सवया (प्रज्ञोत्तर)	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	६	५१ सवया है
१३७	४३०६ (१२)	प्रोत्तिपञ्चीसी			२३-२७	
१३८	७४४१ (१६)		रत्नराशि	१६१४	७५-८०	
१३९	७७४६ (६)		म प्रतापसिंहजी	२०वीं	१-५	
१४०	४२६३ (११)	प्रोत्तिपता		१८वीं	१०-१६	
१४१	४३०६ (६)			१६वीं	१०-१३	
१४२	७४४१ (८)		"	१६१४	४६-५२	
१४३	४२६३ (८)	प्रेमतरङ्गिणी	सुरतीधर भट्ट	१८वीं	१-२३	कवि म प्रतापसिंहका श्रावित था

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३ (१२)	प्रेमप्रकाश	म प्रतापसिंह	१८वी	१७-२०	र.का स० १७४२, म कु रत्न-
१४५	४३०६ (४)	"	,	१९वी	६-८	पाल, करौली प्रशस्ति परक
१४६	७४४१ (१३)	"	"	१९१४	६३-६६	
१४७	५३४७ (२)	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१८३७	३०-४०	
१४८	४७६४	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८वी	१७	
१४९	५२०२ (६)	पंचाध्यायी (भाषानुवाद)	वशीश्रली	१८८५	११४-१२३	
१५०	४२६५ (१)	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०-२९	
१५१	७७५६ (१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरदास	१९वी	३१	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१५२	४२९२	पदमुक्तावली	श्रीनागरोदासजी	"	९२	तुलित
१५३	५३७८	पदसंग्रह	किशोरीश्रली गोस्वामी	"	२१२	जलविहार अमर गीत, सामी
१५४	५४४०	"	"	"	६६	आदि से सम्बन्धित पद
१५५	६८४२	"	"	"	११०	निम्बार्क संप्रदाय मन्वन्धी
१५६	७८१५	"	"	"	१२८	पद है
१५७	७८३६	"	"	"	५५	जैन धर्म सम्बन्धी पद
१५८	५१७७	"	रसनायक	१८८६	५६	वल्लभ संप्रदाय के पद
१५९	७७३८	पाण्डवपञ्चोदुचन्द्रिका	नन्ददास आदि	१९वी	१३६	३०८ पद
१६०	७७४२	"	स्वरूपदास	१९वी	११२	लि क पठान उमेदखाना,
			"	१९२३	११२	बदनौर राज्य
			"	१९१४	११२	लि क. वंणव हरिदास

क्रमांक	श. या. सं.	ग्रन्थ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पृष्ठ संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३६	प्राचीनकालीन कविता	स्वच्छ पद्यात	१६४१	२६६	लि. ५ वल्लभ सोतारामदास
१६२	६३३१	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४२	३	र. का. सं. १७८६
१६३	६१७७	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४३	६५	भाग. २ में रचित
१६४	६६२१	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४४	६४	पृ. सं. ४०, १५ अक्षर
१६५	७१०८	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४५	८६	र. का. सं. १७८२
१६६	५६६६	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४६	६	रजत प्रादि धातुओं की निर्माण विधि
१६७	६३४३(३)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४७	२७-३८	
१६८	५२०५(१८)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१६४८	८८-९१	
१६९	७७४४(१०)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१७५८	७२-११५	
१७०	५३०६(१३)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८६६	२८-३१	
१७१	७४४१(४)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८६७	३५-४०	
१७२	५१२३(६)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८६८	२८-२९	
१७३	५२६४	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८६९	११८	४२५ कविता है
१७४	५३०६(१५)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८७०	५५-५०	
१७५	५२६३(१०)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८७१	१-६	र. का. सं. १७५५ कर्ता प्रागरा
१७६	७४६०	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८७२	१२४	निवासो ताल-गो कटारिया का पुत्र
१७७	५३७१(१)	प्राचीनकालीन कविता	अक्षर	१८७३	१-२७	लि. ५ महात्मा न्योजी (सिखजी)

क्रमांक	गथांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	वनारसीविलास	वनारसी गर्ग, ग्रन्थवाल	१८वी	११५	र.का. स० १७७१, पत्र ८६ से ६६ अप्राप्त
१७९	७४४२ (२)	वनारसीविलास भाषा	"	१७६४	१-११६	
१८०	५४२८	बलभाष्यान	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहत्तरी	मोहनदास	१७६७	८	लि.क. नरसिंह अग्रवाल
१८२	५२०२ (५)	वारहखडी	वत्तलाल	१८८५	१०६-११४	भाषा पर पंजाबी प्रभाव है
१८३	५४२० (४)	"	"	१६वीं	६७-१०३	
१८४	५४२६ (१)	"	विष्णुदास ठण्डोराम शिष्य	"	१-१२	
१८५	५४२६ (३)	"	वत्तलाल	"	२६-३५	
१८६	५४२६ (६)	"	भत्रानी	"	४६-५३	
१८७	५४२६ (११)	"	"	"	१-५	
१८८	५४२६ (४)	" प्रह्लादजी की	"	"	३५-३८	
१८९	५४२६ (५)	" परसेश्वरजी की	"	"	३८-४२	
१९०	५४२० (६)	" रामायण की	कुशला	"	१०३-१०७	
१९१	५४२० (५)	" विरह की (बसुन्नेह	रामरत्न	"	१०३	
		वारहखडी)				
१९२	५४०३	वारहखडी सुरत की	सुरत, देवधरशिष्य	"	८	
१९३	५४२६ (६)	वारहमासी	भुरलीदास	"	४२-४७	
१९४	५४२६ (७)	"	भवान्नी (गवधपुर वासी)	"	४७-४९	
१९५	५४२६ (८)	"	सूरदास	"	४९ पौ	
१९६	४७९०	बावनी संव्या	जसराज	"	४	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कता आदि नामधेय	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१८७	४३०७(१)	विहारीमतसङ्घ	विहारी	१७८७	६६	सि क यति कुसला मालपुरामध्ये
१८८	४४१२		,	१८१२	५०-६१	सि क प्रीतसोभाग्य गणि खारिया ग्रामे
१८९	४६०७(३)		,	१८३७	३५-१३५	ग्रन्थ में शेरामक और रकुट कवित्त हैं
२००	६३४२(४)		टी कृष्ण कवि	१९वीं	१३२	
२०१	४१४४	विहारीमतसङ्घ सटीक		१८०२	७२-१६०	
२०२	४२१६(२)	विहारीमतसङ्घ टीका		१८५६	५६	ग्रन्थ
२०३	६३१५			१९वीं	१५	सि क मुनि मनोहर
२०४	४४१२	विहारीमतसङ्घ	विहारी	१७६६	२००	सि क भूभणू वासी बिरामण रामधन
२०५	४२६१	संज्ञिसागर	कवि ज्ञान	१८६८		
२०६	४४२६(२)	भरमणीस टीका भरमणुजजी	मकु दयास	१९-२६	१७	प्रथम पत्र खण्डित
२०७	६७२६	भरमणीस		१९वीं		
२०८	७७४६(५)	भरमणीस	नवदास	२०वीं	१-६	
२०९	७७४४(६)		रसिकराय	१७५८	५१-५७	
२१०	५४००	भक्तमान टीका	मू नामदास टी प्रियादास	१९वीं	१६५	
२११	५४७६	भक्तमान टीका रसबोधिनी	"	१६००	३०६	रक्षा सं १७६५ वृ दी मे निहित
२१२	५४०६	भक्तमान टीका	"	१७६६	१४१	सिखणित माजी जोधपुरीजी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८६३	१०४	लि. क. हेमदास, कबीरशाह को साधक
२१४	६६३६	"	लालदास	१८७०	१६८	लि. क. गोपालदास श्रवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	"	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११६	र का स० १७६६
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी		१८वी	२०५	लि. क. रामकृष्ण महाजन
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक		"	२७६	
२१८	७७३२	"	प्रियादास	१६२५	१६५	र का १७६६
२१९	७८३१	"	लालदास	१८५६	१३२	लि. स्था० बदनीर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१६वीं	४	लि. क. शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२१	५४२४	भक्ततरङ्गिणी	चरणदास	१६४१	४०	लि. क. इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२६ (१)	भक्तिपदार्थ		१६०२	१-१४४	श्र. त. से भजत हैं
२२३	५४१३	भगवद्गीता भाषा पद्य		१६००	८६	लि. क. हरिदास ब्राह्मण, वैराठ
२२४	७५०८	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि. क. डालचंद ब्राह्मण, शाहगज दिल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह मागानेर के	१८२७	४७	र का. स० १७७०, कई स्थानो पर प्राचीन पत्रों के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	"	किशनसिंह सिधवी	१६०६	३६	लिखित श्रवणसरहरमध्ये
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१६०६	४०	

क्रम-सं.	ग्रंथा-सं.	ग्रंथ नाम	वर्तमान स्थिति	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२० (३)	भक्त हरि-गोविन्द-ग्रन्थ भाषा पद्यानुवाच	म प्रतापसिंह	१६वीं	६५-६७	१०५ छ-६
२२९	५३०८ (४)	भरतचरित	जयगोपाल (?)	१८वीं	५५६-५६७	लि क रामदास निराणा ग्राम
२३०	६०१०	भक्तिव्यक्त चोपाई	ब्रह्म रामदास	१६वीं	५७	लि क जती जीवणसागर
२३१	६६३७ (५)	भागवत एकादशस्क धनुवाच	ब्रह्मदास	१८११	२१०-२६३	गुडकाकार
२३२	५२५६	भागवतचरित भाषायाण लीला	भाषदास	१८वीं	३८	जीण प्रति
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१६८०	६१	लिपित रूपवासा मध्ये
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम प्राण वसुल	१६वीं	१३	ब्राह्मण केसवरायजी
२३५	६०६८	, ,	हरिवल्लभ	१७८६	६५	पत्र सं० ५६ १७ अत्राल
२३६	६०६०	भागवतभाषानुवाच (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१६वीं	३३	लि क डासूराम
२३७	५२६५ (२)	भाषपञ्चांगिका	ब-ब करि	१७६३	५-१४	लि म्या०-लीवडी
२३८	५८१३	, ,	, ,	१८३६	६	२५१ सं० १७४३
२३९	५८०६	, ,	, ,	१७८८	१३	लि क केवलसौभाग्य
२४०	५४३२	भाषा-भरण	सरस्वती (करोसाल)	१६वीं	२५	लि क गोपाल ब्राह्मण
२४१	५०४८	भाषाभरण	म जसवन्तसिंह	१८६०	२६	
२४२	६६७६ (१)	भाषाभरण टीका	न-दास	१-७३	१-७३	
२४३	५२६३ (६)	भाषासरोदय	रसराणि	१८८२	२५-२६	
२४४	५३०६	भाषासरोदयप्रदीपिका	तेजसिंह	१८वीं	५३	
२४५	५०८२	भाषासरोदय	भोयम	१८वीं	१०	
२४६	५१७६	भाषासरोदय	रूपचव	१८वीं	२०	
२४७	५४१८ (५)	भाषासरोदय	रूपचव	१८वीं	६१-६६	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	मतिचन्द्रिका	मनीराम	१६वीं	४	मोहरम और वारो का विचार
२४९	मनीरामपञ्चोत्तरी		१६०२	५१	
२५०	महावीरस्तवन		१६६६	१	
२५१	"		"	२	
२५२	मालिन तोला	नन्ददास	१६१४	४३	
२५३	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१६वीं	१-२०	
२५४	मातृकाक्षरवाक्यनी कवित्त-संग्रह	सार कवि	१८वीं	=	अन्तिम पत्र नूतित
२५५	मानसञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५६	३६०-३७०	प्रथम पत्र अप्रारत
२५६	"	"	१८८७	२-१९	
२५७	मानसञ्जरी नौका	रत्नराशि	१८८२	२	
२५८	मालिकमुकाम	"	"	२०-२४	
२५९	मिथ्यात्ववाक्यनी	"	१८वीं	४६-४७	
२६०	मुरलीविहार	म. प्रतापसिंहजी	१८६६	८-६	
२६१	"	"	१६१४	५७-५८	
२६२	मूर्तचक्र		१८वीं	१८वीं	लि.क. प्रोत्तमोभाष्य
२६३	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र.का. सं० १६३३
२६४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुदास	"	२१	लि.क. गोपीनाथ शर्मा
२६५	योगवासिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	रंग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	५०-५६	
२६७	"	"	१६१४	६६-६८	
२६८	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१६वीं	२१	र.का. सं० १७५५

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनाय
२६६	४३०६(८)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५-१६	
२७०	७४४१(६)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	४२-४३	
२७१	४६६६	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	४	
२७२	४४३४	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७३	४४३४	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७४	४४३४(२)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७५	४४३४	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७६	४४३४(६)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७७	४४३४(२)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७८	४४३४	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२७९	४४३४(२)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८०	४४३४	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८१	४४३४(२)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८२	४४३४(३)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८३	४४३४(१)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८४	७०६३	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८५	४४३४(५)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८६	४४३४(१)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	
२८७	४४३४(१)	रसकनक कर्तालो	म प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५४	

र का स १७६४

आप पत्र माला

सं १७२३ में रचित

र का स १८६१ मूल प्रति

द्वितीय प्रभाव तक प्रयुक्त

र का स १६४८

लि क तलमीचव गठ हर्णोरमय्ये

लि ण कवि मालाल

प ७६ से ८४ तक प्रयुक्त

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र मत्स्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि का)	मुलसीदास	१८६६	४६	लि. क. परमानन्द कापस्थ
३२४	४१२८	" "	"	१८३८	१८	लि. क. नरेन्द्र सोभाग्य
३२५	४२२५	" (मु का)	"	१८३२	२४	
३२६	६२००	" "	"	१८१०	१७	लि. क. हरदयाल
३२७	६७३१	" "	"	१८५०	४३	मिश्र मोहनलाल
३२८	७८०२	" (ल. का)	"	१८५५	२४	दो प्रकार की लितावट है
३२९	६०७२	" "	"	१८५०	६२	लि. क. सरदारसिंह विद्याधर
३३०	६३२१	" "	"	१८०३	६८	लि. क. काशीराम व्यास, भीरा
३३१	६६२४	" "	"	१८४४	७२	की पोथी सू
३३२	७८०३	" "	"	१८४४	६३	लि. क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	" (यु. का.)	"	१८६५	७८	लि. क. कृपाराम पुरोहित
३३४	४२२६	" (उ का)	"	१८२१		जयनगरे
३३५	६२१८	" "	"	१८६५	६८	
३३६	६२४५	" "	"	१८११	४८	लि. क. चैणव भगवानदास
३३७	४२२७	" (उ का) चातकसोलसी	"	१८२७	७६	
३३८	४२२८	" (उ का)	"	१८५०	६५	
३३९	६६२५	" "	"	१८०३	३८	लि. क. काशीराम प्रतिमपत्रमुद्रित
३४०	६६६६	" "	"	१८८३	६६	लि. क. बलदेव
३४१	७६२३	" "	"	१८७२	१२५	

लेखने मति मरुतुलसी प्रसह ॥ या योपम विद्याम राम सप्तान धनुना ही कह ॥ दोहरा ॥
 नो सम दान न शान हि तनुम समान रघुवार ॥ व्यस विचारि रघुव स मनि हू हू विधम
 भव भीरा रा कृति मति निर्गिरि पयारि रजि मिले भिहि थिय र्जि मिरा म ॥ तिमि र्छे नाथ
 लन रति विपल गौ मुहि रामा ॥ २७ ॥ इति श्री राम चरित्र माने से सकल कोलि कलु
 ख विध्वंसिने श्री वर ल भक्त से या इती नाम सप्तमो सर्ग ॥ ३७ ॥ अम म स्त ॥
 इति श्री उन्नर कारा दुसमा ॥ यर सपुस्तक देप्सा तह सलि पित्त मया ॥ यार मु
 क्त मरु कया म दो शो न रापुते ॥ अथ मुभ सवत्सरा ॥ ३७ ॥ सम से मार्ग शिरमा
 से फल पक्ष प चमया सोम वासे रहस्ता सार उपाध्याय लि भद्र स्थय विचार पाठ्य ॥

३२८

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	त्रिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उर्का)	गुत्तरीदास	१८४८	४०	लिखित मिश्र मोहनलाल यह प्रति पचाहू, ७७६८ की बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, स० १७३७ की प्रतिलिपि है अलिखित च लभ्य उपाध्याय लिखित मिश्र आनन्दनारायण
३४३	७७६८	' , ' , धरात्मसदावन नाम द्वितीयसंग	' , ' ,	१७३७	७७	
३४४	७४७१	' , ' , धरात्मसदावन नाम द्वितीयसंग	' , ' ,	१८८६	५	
३४५	४२५७	राम चरित्र	गुजरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामलक्षणखण्डन	भाषोदास	१६वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थों से संग्रहीत रका स १७५०,
३४७	६०७१	रामनौरनसार संग्रह	रामचरण	१७६३	७८	प्राद्य पत्र ११ खण्डित
३४८	४८४५	रामकिनोद	रामचन्द्र मुनि	१८३२	८६	कृति क प्रत से ' हनुमान छब' है रमा ॥ १६०१
३४९	६१३६	रामविनोद अष्टक	कानिदास	१६व	४	
३५०	४२७१	रामविकास काव्य	रामप्रसाद सोतापतिनरन	२०	२	विश्व मुगलक्षण मिश्र
३५१	५४११	रामस्तवरात्र भाटी	गुप्तसोदास गोस्वामी	१८वीं	२६३	प्रतापसिंहजया निर्मित लिखित रामसेवक पत्र १-७६
३५२	४२४३	रामसुति गीत	"	१८३०	३४१	२१०-२३१ अष्टावलि
३५३	४२४२	रामसुति पत्र	मनोहर, कविकान्तिनिधि	१८३७	५०	पत्र रिपुपुरवाह श्रीर ८८
३५४	५३६२	रामायण (युर्का)	"			पत्र यटुकाड सम्बन्धी है
३५५	४३८६	रामायण (युर्का)	"			
३५६	७११३	रामायण (युर्का) सोताराम रामायण	कश्चित् गर्भासिंह निर्दिष्ट	१६वीं	१३८	

क्रमांक	गथा-क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाज्ञा	तुलसीदास	१८वी	३६	
३५८	७७४६ (७)	"	"	२०वी	१-२१	
३५९	६८२८ (२)	राव हमीरको वारता	"	१६वीं	७	
३६०	४२६३ (१७)	रासको रेलता	म. प्रतापसिंह	१८वीं	४०-४२	
३६१	४३०६ (६)	"	"	१८६६	१७-१८	
३६२	७४४१ (१२)	"	"	१६१४	६१-६३	
३६३	५२०२ (६)	रासपञ्चाध्यायी	वशीश्री	१८८५	११४-१२३	
३६४	५३६६	"	नन्ददास	१६४३	१२	
३६५	४६२३ (१)	रूपमञ्जरी	"	१७२८	१-१८	* लि. क. मुरलीधर मिश्र ३०० पृष्ठ हैं भाषा पञ्जाबी प्रभावित है
३६६	५२०२ (४)	रेखता		१८८५	१०८-१०९	
३६७	५४२६ (१०)	रेखता लैलामजनूका	डेडराज (जनराज)	१८०४	५३-५६	
३६८	६८३५ (२)	लघुचाणक्य		१८६६	२	
३६९	७७२८	लीलाललितविवोद		१६०४	२७७	लि. क. अकारनाथ व्यास, रामद्वारा उद्वेपुरमध्ये
३७०	५८६६ (२)	लैलामजनूका किरसा	कवि खेतसी	१६वी	१-११	*
३७१	७७४४ (६)	ब्रजनागरी	ब्रजवासीदास	१७५८	६६-७२	चित्र स १७
३७२	६६७८	ब्रजविलास (सचित्र)	म. प्रतापसिंहजी	१६३	१६३	
३७३	७४४१ (१५)	ब्रजशृङ्गार	म. प्रतापसिंहजी	१६१४	६८-७५	
३७४	६०१६	ब्रतकथाकोश भाषा	श्रुतसागर	१६२३	६२	* भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचन्द्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है
३७५	४१४३	चून्दसतसङ्ग	चून्द	१८८१	४६	लि. क. मनसुख कदोई, बीकानेर

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	वर्ता आदि नातव्य	तिथि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३७६	४२१६(४)	यक्षस्तसई	व द	१८५६	१६७-१८१	
३७७	४६१६	वनपक्की कथा		१८६६	१३	
३७८	६२३२	वसन्तवत्तिचरित्र भाषा	नयमल नौभावद का पुत्र	१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	वल्लभाचार्यगिनित शीर स्तोत्र नामावली		१८वीं	२-३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गगन मिथ	१८६६	१०२	भरका स १७३६
३८१	५४१५	विक्रमादित्यचरित्र (पञ्चदशका)	वदनाथ कवि सोमनाथका बगल	२ वीं	५-३३	रका स १८८४ मार्च ४ गण अग्रस्त
३८२	६६५२	विवारमासा		१८६३	५	रका स १७२६
३८३	६१५७	विजयमृतावली (महाभारतअनुवाद)	धर्मसिद्ध श्रीवास्तव	१८६५	२३१	अष्टरपुर (भवावर) के राजा कल्याणसिंह के राजसे स १७५७ से रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविबर रामलाल	१९०३	१४१	कणपय से भारे पद्यानुवाद है स्रष्टा कल्याणसिंह के लिए रचित स १७६८ में राजा आयासल को भासा से रचित, म भा उद्योग यक्ष का अनुवाद
३८५	६३४१	विदुरप्रजापार	कृष्ण कवि	१८६५	६४	
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजापार भाषा	गणपति मिश्र	१९३७	१-४६	
३८७	७५६२	विजयपत्रिका	गो तुलसीदास	१९१४	८२	लिक हरिदास कबीरप यो बदनोरमध्य
३८८	६०८६		"	१९वीं	८१	

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३६	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वी	२४	* लि क बढीनाथ व्यास
४२५	५४२१ (१)	सिद्धान्तके पद	बृन्दावनदास	१६वीं	१-२५	
४२६	७४४१ (७)	स्नेहबहार	म प्रतापसिंहजी	१६१४	४३-४६	
४२७	४४५२ (३१)	स्नेहलोला	"	१८वी	३३, ३४	
४२८	५२३४ (१)	"	कवि गिरिधरराय	१६११	१-१०	
४ ६	५४३८ (३)	"	विष्णुदास	१८६०	४०-५६	
४३०	६७४६ (३)	"	"	१६वी	६२-१०५	
४३१	७४४१ (६)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१६१४	५२-५७	
४३२	४६२३ (३)	स्फुट कवित्त आदि		१६वी	१-१४	
४३३	४२२६	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		"	३३	
४३४	६३४२ (१)	स्फुट कवित्त		१८	१०	
४३५	६३४३ (१)	स्फुटोक्ति		१८	१२	
४३६	६६६२	स्फुट पदसंग्रह	सूर आदि	१७४२-	६८	
४३७	६८२३ (६)	स्फुट राग पद		१७४४	३५-३७	
४३८	७७५३ (६)	स्फुट सवैया		१८५२	३८-३९	
४३९	४२६३ (१३)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१८३७	२७-३०	
४४०	४३०६ (२)	"	"	१८वी	१-३	
४४१	४२६३ (१४)	स्नेहबहार	"	१६वीं	३१-३३	
४४२	४३०६ (३)	"	"	१८वी	४, ५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रदास	"	८	

समाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि पातव्य	निर्माण समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरसोक्त	१६४६	११	लिंक प्रभु पुरोहित नागौर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा	साक्षि	१६वीं	१४	
४४६	५६५७	स्वरोदय टीका	सोमनाथ नीलकण्ठारव्य	१६वीं	६	
४४७	५७८५	संग्रहवर्णन		१६१५	३४	रका सं १७८६ प्रथा सं में कविकुल वर्णन है
४४८	७७३६	संग्रहसार, द्रोणवक्त्रा प्रनवाव	कुसुपति मिथ	१६५७	१६५	म रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लिंक कृष्णचंद्र, बूंदी
४४९	७७३७	, ,	हरिवल्लभ	१६वीं	१५२	आद्य २ पत्र समाप्त
४५०	७८१६	संगतिवर्णन भाषा		१८३१	३-७६	
४५१	४००५	सयोगद्वान्तिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	सयागवतीसो	, ,	१६वीं	२	
४५३	७७२१ (४)	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिदास	१८२५	१११-११८	
४५४	५३४६			१८२५	२४	रका सं १६२२ लिंक प्रताप मिथ,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका मय		१६वीं	१४	
४५६	७८१६ (२)	सत्यनारायण		१८३१	६	
४५७	६६८६	सत्याग्नि भट्ट प्रार्थितपरक गाथा		१८४१ से पूर्व	७	कृतचंद्र गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५८	५३८४ (२)	संतुलीला	मनोहरदास	१६०४	७०-८२	
४५९	७६०७	सत्यकविजीमय		१६वीं	१	लिंक वैश्यावास
४६०	४६०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लिंक मगतोराम शास्त्रिय भाट्टगढ़मध्य
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रका सं १७५७ रथा सारगपुर ग्रहमदाबाद

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४२	१६	* लि.क. ऋषि किशोर, सोभत प्रथम पत्र अप्राप्त
४६३	४४२१(२)	समयप्रबन्ध	वृन्दावनदास	१६वीं	१-३११	लि.क. प्रीति सौभाग्य
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२-८४	र.का.स १६६३
४६५	४७६१	"	बनारसीदास	१८वीं	६६	
४६६	४८१६	"	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	"	"	१८६०	१२५	
४६८	६४४२	"	"	१८२४	६०	लि.क. मोहन, रचना स्या० आगरा ।
४६९	७७२०(२)	"	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१-५४	लि.क. मतिवर्द्धन, हुसीरगढमध्ये द स श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	"	१६	८६	
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	र.का. स० १६६३
४७२	५३७३(२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा	"		४-७३	
४७३	५३७६(१२)	"	"		११२-१६७	
४७४	७४४२(३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१-७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	"	१६१३	१३२	लि.क. ववे अमरचंद
४७६	५३८०(२)	समरविजय	"	१८४६	१६	प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थ
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१६वीं	१५	
४७८	६८३५(३)	सवा सौ सीत	"		४	
४७९	४४५२(२३)	संख्या	बालपुरी	१८वीं	२३ वां	

क्रमांक	प्रथाङ्क	प्रथ नाम	वर्तमानादि नाव्य	निवि समय	पत्र सख्या	विष्णुप उत्सवनीय
४८०	४४२(३३)	मवया	चद कवि आदि	१६वीं	४० वीं	लिक प्रोत सीभाग्य
४८१	४४२(३३)	सिखरयवीरविवाह	मुत्तसोदास	१८६६	११८ वीं	लिक काशीराम पचोत्ती
४८२	४४२(३३)	मिहासनवत्तोसी (प्रपुण)	कुण्डदास	१६वीं	६३	जीण प्रसि
४८३	४४२(३३)	सीताचरित्र चौपाई	चद कवि	१७७७	१०२	रवा स १७१३
४८४	४४२(३३)	सीताचरित्र चौपाई	कवि वासक (चद ?)	१८६८	१२३	योगवत्त कुसावतस गभूतिहा
४८५	४४२(३३)	सीताराम ध्यानमन्त्ररी	अपदास	१८६८	१००	क्या प्रणीत
४८६	४४२(३३)	सीताराम रामायण		१८६८	१२३	
४८७	४४२(३३)	(प्रयो की० खनवास काट)		१८६८	१२३	
४८८	४४२(३३)	सीताराम रामायण		१८६८	१२३	
४८९	४४२(३३)	(प्रार की०, सीतापहरण की०)		१८६८	१२३	
४९०	४४२(३३)	सीताराम रामायण		१८६८	१२३	
४९१	४४२(३३)	(कि की० कविमित्र का)		१८६८	१२३	
४९२	४४२(३३)	सीताराम रामायण		१८६८	१२३	
४९३	४४२(३३)	(सु का रिपुपुत्रका का)		१८६८	१२३	
४९४	४४२(३३)	सुसरेख सीता	मुत्तसोदास	१८६८	१२३	
४९५	४४२(३३)	सुवामाको यारहलडो	नरोत्तमदास	१८६८	१२३	
४९६	४४२(३३)	सुवामाचरित्र	सुगत गडिच्य विप्र	१८६८	१२३	
४९७	४४२(३३)	सुवामाचरित्र (चवथा प्रगाली)	मुत्तसोदास	१८६८	१२३	
४९८	४४२(३३)	सुवामाचरित्र (चवथा प्रगाली)	मुत्तसोदास	१८६८	१२३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६६७७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८६	४५	लि स्या फतेहपुर
४६८	४३१३ (२)	सुन्दर भक्तविलास	लाला सुन्दरलाल	१८६७	६-७१	लि स्या. जयपुर
४६९	४२१६ (८)	सुन्दरशुभार	सुन्दरदास	१८५६	३३३-३५६	
५००	४३०७ (२)	"	"	१८३७	८७	लि क वेणीराम
५०१	४८१४	"	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि क श्रीकमजीशिष्य डाह्याजी
५०२	४८३५	"	"	१७८६	२१	लि क मुनीलाल सूरत बन्दरे
५०३	४०२६	" व द्वादशमास वर्णन	"	१७४२	२२	र का स १६८८
५०४	६३१७	"	सुन्दर कवि	१६वीं	४०	र का स. १६८०
५०५	६६४४	सुन्दरमंथ्यासग्रह	सुन्दरदास	१८८६	७६	लि स्या फतेहपुर
५०६	६६४५	"	"	१८०४	४४	लि क. प्रेमदासशिष्य भिलारी-दास
५०७	७७२० (१८)	सुमतिकुमुतिसवाद (कहरामाभाकी चाली)	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	५०वीं	
५०८	४३०६ (७)	सुहागरेन	"	१६वीं	१४, १५	
५०९	७४४१ (५)	"	"	१६१४	४०-४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण	"	१८६२	२२	पद्मपुराणोक्त
५११	६३४२ (३)	सूरसागर पद	सूरदास	१६वीं	१६-२४	लि. क. मनसाराम कायस्थ
५१२	७७२२ (१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	"	१८वीं	१-३६	१७२ पद है
५१३	५८६६ (१)	सोदागर वच्चेका किस्सा	"	१८वीं	१-१०	
५१४	६२०२	हनुमानबाहुक	तुलसीदास	१६१७	१४	
५१५	७७३१	हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर	लक्ष्मणदान वारंठ	२०वीं	५२	

क्रमांक	प्रकाशक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
५१६	७८११ (५)	हरयोत्तविलासनी	सुंदरदास	१८वीं	१८-१६	
५१७	४२५३ (७)	हरिकोतनवाला	रत्नाराज	१८८२	३०-४४	
५१८	४४६५	हरिनाथवाला		१६वीं	१	
५१९	४२८७ (६)	हरिद्विखितविलासनी	सुंदरदास	१७२८	२३-२५	लिक आनवराम
५२०	६३४०	हरिबाग भाषा		१६वीं	१५४	आदि के १५३ पान मुद्रित
५२१	५३६०	हरिकृष्णराज भाषा	सालखद	१७१५		सि स्या सबाबती पत्र १ से ७
५२२	६१५८		सालखद	१७८४	५८	अप्रामा
५२३	६१७५		गुणासचर्य	१८४२	१६७	पत्र ४ से ७ १६, १७, ३०, ३४
५२४	७१३४	हितहरिचरण ज मोरसव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	४२ से ४६ नहीं है
५२५	५३७६	हितामन-प्रतिका	राय कवि	१६वीं	१३३	लिक स्या रचयिता संवावत मध्य
५२६	४२१६ (१)	हितोपदेश टीका	विष्णु नर्मो	१८५६	३७०	ब्रजप्र संतवत सिद्धान्त दरिद्र
५२७	४०१५	हितोपदेश पद्याव्याज		१८५६	७२	लिक नृपि टकचंद्र
५२८	४३१६ (१)	हितोपदेश भाषानुवाद		१८६४	१५८	
५२९	४६१२ (६)	हितोपदेश भाषा		१८८७	२००-३४७	लिक मुंशी पन्नालाल जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचिन)		१८वीं	१७६	क पत्र सख्या ४७ कोटा कनम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	कोविद मिश्र	१८८८	७८	मुंदेलखर के महाराजा पद्मो
५३२	४२६५ (३)	हितोपदेश (चतुर्थ तंत्र तक)	विष्णु शर्मा	१८०१	१५-१६७	सिद्दी की प्राप्ति से रचित लिक आनवराम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४०(२)	होतृपदेश भाषा पद्यानुवाद	श्रीपति भट्ट	१६३७	४६-१२५	लिस्था लोचनपुर (बूढ़ी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश		१६०८	४५	र का स १७३०, प्रथम पत्र अप्रान्त
५३५	४३०६(१६)	होरीवहार पद टीका	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	३२-४४	
५३६	६३४५	हुदयाभरण कवित्त	व्रजजीवन	१८६१-६२	१८२	
५३७	६६५१(२)	ज्ञानचरणवाचिका		१८६१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	कृष्णदास	१८८०	४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३९	४६१४(७)	ज्ञानपचीसरी	वनारसीदास	१८७१	१६७-१६८	
५४०	७७२०(४)	"	"	१८वीं	४१-४२	
५४१	६६५१(१)	ज्ञानमञ्जरी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८६१	२०	लि क हूहेराम मिश्र, हस्तेडा मध्ये
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	"	१६वीं	२६	र का स १७१६
५४३	४०६५	ज्ञानवचनमूर्णिका	"	१८५५	१८	लि क सहजुराम दाहूपयी
५४४	६७७१	"	"	१८५२	२२	
५४५	४०५७	ज्ञानभूङ्गार	सुमति रंग	१८५०	२२	र का स १७२२ मुलताणमध्ये
५४६	६६०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१६०७	३१	लि फ वलदेव यासुण
५४७	४३०८(२)	ज्ञानसमूह	सुन्दरदास	१८वीं	४१०-४४६	६०० छन्द है
५४८	६८३७	"	"	"	६१	र का स १७१०

राजस्थान पुरातत्वावेपण मंदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२, २२-जन स्तोत्र]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कठौत आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६०६	प्रतिस्तरावचना छंद	भाव विजय	१८४५	३	लिंक हेषविजय
२	४६०७	मत्स्य		१८११	२	
३	४६०८	प्रजित्नातिस्तव सवातावबोध		१६वीं	३	
४	४६०९	आराधना	सकलकीर्ति	१७वीं	४	
५	४६१४ (३६)	चौपई		१८७७	२६२-२६४	
६	४६६०	इलायुदरतवन	सौ विजय	१४६२	१८	
७	७७४३ (६)	एकादशगणधर स्तवन		१८३७	४४-४५	
८	४६५२ (६८)	ऋषभजिनेश्वर	भावकीर्ति	१७वीं	५	
९	४६१४ (२३)	ऋषभभावजीनो छंद		१८वीं	१२० वीं	
१०	४६१४ (२३)			१८७१	२३० से २३१	
११	४६१४ (६०)		मूना भवाराधनसूत	१८७७	३१७ से ३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छंद	धमसो	१६वीं	१	
१३	४६१४ (१७)	ऋषिमंडलस्तोत्र		१८७१	२१० से २१२	लिंक घनजी
१४	७५५०	कल्याणमंदिरस्तोत्र (राजस्थानीभाषासहित)		१७५७	१२	
१५	४३७३ (१)	मूत (मटोक त्रिपठ)		१८वीं	१-३	
१६	४६८२		कुमुदचंद्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२४६		हेपकीर्ति	१८४८	२५	लिंक हेतराम यता श्रीमंचंद को पोथो सू राजराजा रणजीतस्यधजी ने लिखी
१८	७३६८	(राजस्थानीभाषासहित)		१८वीं	८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६१४	कल्याण मंदिर स्तोत्र	साधुकोतिगणि	१७८२	१८	लि.क. समयकीर्तिमुनि
२०	४०३०	राजस्थानी भाषार्थ सह		१७वीं	३	
२१	५०६६(७)	कायस्थिति स्तोत्र (सवालावबोध)	लावण्यविजय	१६०६	१३ वीं	
२२	५०६६(१)	गौडीयपाश्वर्णस्तुति	कुशललाभ	१६०६	१६३	
२३	५०६६(४)	गौडीयपाश्वर्णनाथ चौढालियु	कीर्तिविलास	१६०६	१० से १२	
२४	५०७७(१)	छन्द	सकलचन्द्रसूरि	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौडीपाश्वर्ण स्तवन	सोमप्रभाचार्य	१६८५	६	
२६	४३६६	गीतमदीपाली का स्तवन		१५२४	५	लि.क. धीरसूति गणि विषय लि. स्या. श्री भृगुर महात्तगर लि. स्या. मसूवा
२७	६३२६	स्तुति	वपभट्टिसूरि	१७८२	६	
२८	७२७५	स्तुति		१६वीं	४	
२९	४२८७(५)	(सावचूरि, पचपाठ)		१७२६	१६-२२	
३०	४६१४(३२)	चतुर्विंशतिस्वयभूतोत्र	वीरचन्द्रमुनि	१८७७	२४६ से २५१	
३१	४६२४(४)	चैत्यवदन चौपाई	लावण्यसमयमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६(१)			१८५३	१ से ३	लि.क. दीनाराम मुनि लि. स्या. मारोट
३३	५४४१	चैत्यवदनादि जिनस्तवनसंग्रह		२०वीं	२४२	
३४	७४४८	"		१६१५	१२६	लि.क. अमरचंद ? स्तवविप- यक ३१ कृतियों का संग्रह
३५	५०७२	चौबीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५६६	" भाषा	महानन्द मुनि	१६वीं	६	

क्रमांक	प्र.पाठ्य	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नात य	सिधि समय	पत्र सख्या	विगप उल्लेखनाम
३७	७४४४(१)	चोबोसी	अनन्य	१८८५	१-५३	इस गृहके से १६ कतिगो का सपह है
३८	४६१४(३८)	चोरासी लाख जोबोनिबोन्तो	मानभूषण	१८७७	२५६से२६२	
३९	४६१४(५६)		हृयकीति	१८७७	३११से३१७	
४०	७३६६	अयनिहुवण (सावचूरि)	प्रभयदेव	१८८२	५	लि स्वा जसलसेर
४१	७४०६	(सबासाबबोय)		१९२५	६	लि क भूवनसवर
४२	५४३६(१८)	जिणकुगलसूदिबद्धितवन		१९वीं	३	दो स्तवन है
४३	५४३६(१९)	जिणकुगलसूदितयुस्नवन				
४४	६३८३	जिननमस्कार	जिनकोतिसूरि		१	
४५	४२८७(११)	जिनाटोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचाम	१८वीं	४	
४६	४६१४(४०)	जोवदया धृद	भूधर	१८७७	७८से६२	
४७	६१८०	जनचमस्तव (सरवतीस्तोत्र)		१९वीं	२६५-२६६	
४८	५३७६(४)	जनगतक	भूधरदास	१९वीं	५	
४९	५४१८(८)	तिरेयन क्रिया	अष्टांगनाम	१८वीं	६७से१०६	रचना सं १७८१
५०	५४१८(१४)			१९वीं	१०१से१०५	
५१	४६१४(५६)	तिरेयन क्रिया दोनती	प्रभाचद		११६से११८	
५२	५४३६(६)	तीर्थकीलस्तवन		१८७७	३११-३१२	
५३	७०८४	दण्डकविचारपटात्रिणिकामुत्र		१९वीं	३६-३८	
		सटिपण			१०	
५४	५४३६(१७)	दादेजोरा स्तवन	गजसारसार्थ धवलचद महोपा	१९वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमन्त्रमण्डिमास्तयुस्तवन	ध्यायनिगय टिक यग सोम		४०-४३	
५६	७२६०	नवकारमहोमनस्तव्य	अपवत्तमसूरि	१७वीं	५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६ (१४)	नवकारमहिमास्तवन		१६वीं	३	
५८	५४२७ (१)	नवस्मरणस्तवन		१८वीं	१-३१	
५९	५९१४ (२१)	नीमोदनी वीनती		१८वीं	२२६-२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको		१८वीं	४	लि.क फतेचद्र साधुसम्ये
६१	५९१४ (१२)	प्रभातो	उदयरतन	१८वीं	२०८ वां	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	सकलकीर्ति	१८वीं	१७	
६३	५४३६ (१३)	पंचकल्याणस्तवन	गोविंदगणि	१८वीं	२	
६४	४९१४ (१)	पंचकल्याणीक	रूपचंद	१८वीं	१-७	
६५	४२६८	पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपार्वनाथसमस्तुतस्तव श्री साथ मे है, लि क नयनकमलगणि
६६	६२६६	पंचमंगलस्तवन	रूपचंद	२०वीं	८	
६७	४९१४ (१५)	पंचमेरु अष्टक	मुदयानविजय	१८वीं	२०८-२०९	
६८	५४३६ (१५)	पंचसवरस्तव		१८वीं	२	
६९	५०६६ (५)	पद्मावतीछन्द	हर्षसागर	१६०६	१२-१३	
७०	४९१४ (४६)	पद्मावतीवीनती (१)	पुजारज	१८वीं	२७५ वां	
७१	४९१४ (४७)	" (२)	"	"	२७५-२७६	
७२	४९१४ (४८)	पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक)	जिनसागर देवेंद्रकीर्तिशिष्य	"	२७६-२७७	
७३	५१३१	पद्मावतीस्तोत्र	"	१६वीं	२	
७४	७४४४ (१७)	पनरे तिथिरी थुई	"	१८वीं	२६४-३०२	लि क नेमविजय मानविजयशिष्य गोधूदा नगर में लिखित
७५	७४४४ (६)	पांच तिथिरी थुई		"	१६०-१६४	

प्रमाण	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातय	त्रिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७२६४	ग्रन्थ भिन यमकपयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६ (१०)	पादवनायजिनकयस्तवन	भुवनकोटि	१८७७	४४-४६	
७८	४६१४ (४२)	पादवनायजिनो ध्वज	अभयसोम	१८०४	२८३ से २८८	लिंक प्रीतिसोभाग लिंक रथा नंविडा र का वि० १५३५
७९	४४४२ (६६)	पादवनायजो पादगत ध्वज		१९वीं	११६ वां	
८०	७४०४	पादवनाय तथा साधारण जिनस्तवन	प्रमविमल	१९वीं	१	
८१	६६८४	पादवनायस्तवन	कोटिप्रभ	१८वीं	३	
८२	७७५३ (५)	पादवनायस्तवन		१८३७	३७-३८	
८३	७४६५	पुनः ७४६५ स्तवन सवालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६ (१६)	बोसवर्हिनास्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	बोसवर्हिनास्तुति	हरिदास	२०वीं	१८	
८६	५२६८	भक्तान्तर वासवोध टीका	मानतुंग (हिमराज)	१८वीं	१८	कमलनपुरमण्ये रचित ४६ पत्र
८७	५४१८ (२)	भक्तान्तर भाषा		१८वीं	८	
८८	७१०६	भक्तान्तर भाषा कान्तरवाटकादि		१८वीं	८८	इस गुटके में आठस्तवन स्थूल भद्र सज्जाय, साधुवदना मंग साष्टक चतुर्विंशतितोयकर स्तवन सरस्वती आष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है र का सं० १७४७
८९	६३४७	भक्तान्तर महाचरित्र भाषा	विनीवीनाल	१८२८	२६३	
९०	५४२७ (२)	भक्तान्तरस्तोत्र		१९वीं	३१ से ४४	
९१	४०२५	आहुत वास्तिक सहित	मानतुंग सूरि	१६८६	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त । लिंक भिन्न आता वसताली, रथा देवालहरान, श्रीफितेपुरमध्य
९२	४३६०	सवालावबोध		१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग सूरि, बाला. मेरुसुंदर	१७००	१४	
६४	७४०८	"	मू. मानतुंग	१८२६	१६	लि. क. रूपचंद
६५	५६०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वी	३२	
६६	४२८७ (२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	१७२६	५-११	लि. क. रामचंद्र
६७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पंचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वी	७	लिपि सुन्दर है
६८	६०३६	" सार्थ	भा. विनयसुन्दर	१८वी	१६	
६९	६२७१	" भाषा टीका	मू. मानतुंग, भा. अखैराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि. स्था. तूंगा
१००	६२७७	" भाषा	हेमराज	१६४१	१६	लि. स्था. अमदा नगर
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियाँ		२०वी	२३२	* कृतियों के नाम परिशिष्ट में देखिये
१०२	६२८६	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुंगाचार्य	१८वी	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी. कनककुशल	१६२८	२४	लि. स्था. विराट नगर
१०४	७१८४	" (मुखबोधिका)	टी. अमरप्रभ	१७वी	५	
१०५	७३८१	" वृत्ति (सुबोधिका)	वृ. का. समयसुन्दर	१८२१	७०	रचनाकाल-सप्तवसु भुंगावसति १३८७ (?) पत्तने नगरे
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पंचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	
१०७	४६१४ (११)	मदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७-२०८	
१०८	५४३६ (२०)	मरोटकोटमण्डण, दादेजी श्रीजिन-कुशल सूरिजीरी नौशाणी		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मंडन वीरजिनस्तवन	मानदेव आचार्य	१८वीं	२	लि. क. दोलतराम मुनि
११०	७८२७	तद्युशातिस्तव सटीक		"	१६	र. का. १६११

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नात्व	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	सलितवितरा पञ्चिका (वात्स्य दत्ता यति)	मुनिचन्द्रगिरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वधमानस्तुति	धनराजगुल्लगणि विजयतेज सरिगण्य	१६५७	१	लि. क. साहू हरण (ल) ग्राम-हालीवाडा
११३	५०७६	वाग्भुषणस्तवन	प्रियविजय	१६वीं	७	
११४	४३४४	द्योतरामस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५६३५	द्योतरामस्तोत्र सावचूरि पचण्ड	हेमचन्द्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामन द्वितीयस्तव भागीस्तवे विश्वनिष्क्रान्त
११६	५६३६	"			१०	
११७	५४१८ (११)	द्योतराज-द		१६वीं	११२-११३	
११८	५०७४	द्योतराज समस्तक	वीरविजय गुनविजयगिर्य	१८५८	१०	
११९	६४४६ (२)	द्योतराज			४०-४१	
१२०	७३७६	द्योतराज विह्वरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय	विजयसागर सहजसागर	१८वीं	३	लि. क. लक्ष्मण लि. स्या. पोषाद नगरे
१२१	५०६६ (३)	द्योतराज-द	भूला बाबक	१६०६	८-१०	
१२२	४३४५	श्री-विमलस्तवन	धर्मयोग सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५६	श्रीविद्योतद गवतवरस्तुति		१६वीं	३	
१२४	५०७५	गल्ल-वरपामवच्छेद	हृदयसि		३	
१२५	७७५३ (४)	गतिनायस्तव	गुणसागर	१८३७	३४-३६	
१२६	७७२० (१५)	गतिनाय त्रिमङ्गरी छ. द	जनरत्नोदास	१८वीं	५०-५१	
१२७	५३८५ (७)	गीतनायमस्तोत्र	सिद्धनिधि	१६वीं	१८६५	
१२८	४५११	गीतनायमस्तुति		१७वीं	६	
१२९	७४७२	" पचण्ड	धनपाल पंडितबा यव	१६३४	१०	लि. क. पूरणमल सागुर कायस्थ लि. स्या. गान्ध. रणयन्मोर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वीं	११	
१३१	४८४०	स्तभनपार्श्वनाथस्तवन जम्बूकुमार स्वाध्याय	कुशललाभ कवियण हरिविजय- शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३६	स्तभन पार्श्वनाथस्तुति आवि		१६वीं	७२	* लि स्था सांगानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें
१३३	४६१४ (१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वीं	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयम्भूस्तोत्र)	समस्तभद्र स्वामी	१८वीं	१६	इस प्रति में २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शातिजिन)		"	३	
१३६	७४४७	स्तवनसम्भाय पवसग्रह		१६१६	१७०	लि क अमरचद्र, सेठ गभीरमल- पठनार्थम्
१३७	७४४६	"		१६११	२००	*
१३८	७४४४ (१०)	स्तुतिस्तवन		१८८५	१६४-२०५	इसमें पञ्चसूत्री युई, सेवुंजाजीरी युई, पांचमरी तवन, आठमरी तवन, इयारसरी तवन हैं * इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परि- शिष्ट में देखिये
१३९	६८२५	स्तोत्रसग्रह		१६वीं	४	
१४०	७४४४ (६)	सप्तस्मरण	नानू ऋषि	१८८५	१४४-१६८	
१४१	५४२७ (३)	"	ब्रह्महंस	१८८७	४५-४६	
१४२	४६१४ (३६)	सात वसणनी वीनती	जयानन्द, श्रव वानर ऋषि	१८८७	२५७-२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)		१७५८	५	

राजस्थान पुरातनशान्देयण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-२, २२-जन स्तोत्र]

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	वर्तमान ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७(३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयनिन्द्य	१८०२	१ला	कुटकर बाल, भवतामर, तथा घटाकण स्मृति आदि कृतियाँ हैं
१४५	५४१८(२१)	साधारण स्तवन	वनारसीदास	१८वीं	१४५-१४७	
१४६	५११४	सीमघरखोतलो		१८वीं	२१	
१४७	५६१४(२२)	सीमघरस्तवन		१८७१	२३० वाँ	
१४८	७७५३(३)	' , आदि	भक्तिस्तोत्र	१८३७	३२-३४	
१४९	६८४०	(किर्गतिविहार स्तवन(दि)		१८वीं	२२६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनगम]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समग	पत्र संख्या	निशेग उत्प्रेक्षनीय
१	७२५८	प्रस्तकृदशाविपरण तथा अनुत्तरो- पपातिकविपरण	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलथारी	१७वीं	११	संस्कृत-प्राकृत
२	७६४०	अन्तकृदशाङ्गसूत्र		"	१२	प्राकृत
३	७५३४	अन्तकृदशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानी- भाषासहित)		१७६६	६२	प्रा. रा. ति क ऋषि त्रीलम्, राणझपुरे
४	७२५४	अन्तगण्डशा (राजस्थानीभाषा- सहित)		१६३६	३८	प्र प्रा., लि कर्त्रो-जिया
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	अमराजीशिव्या
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानी- भाषासहित)		१७७३	१६	प्राकृत, लि.क ऋषि हरजी प्रा. रा., ति क ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१६वीं	४	प्रा अ
८	७२०२	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१६६६	१०४	संस्कृत, ति क. गुणनन्दन मनि विशालकीर्ति, ति. स्था. पुष्क- रिणीनगरी (गोहकरण)
९	७४११	आचारान्न (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राज- स्थानीभाषासहित)		१७वीं	१०१	प्रा रा.
१०	७४१५	"		१६वीं	६६	"
११	७५५१	"		१७२७	५६	" ति.क. मुनि मनोहर ति स्था. चौरसगाम
१२	५६३२	आचारान्न (प्रथमश्रुतस्कन्ध बाता- वबोध)	चा. पासचव साधुरत्नशिष्य	१५८६	१४२	पा रा, ति.क. रतनभट्ट गुजर- गौड ति. स्था. सोमपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५६३१	आचारान्न (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बातावबोध)	"	१७६६	८१	प्रा.

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वर्तमान स्थिति	लिखित समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७१५८	आचारारण्य (द्वितीयप्रतारक-य राज स्यानोभाषासहित)	श्रीविमलेश्वर नीसाङ्ग	१६२३	६५	प्रा रा लि क गोडा अमरवरा
१५	७५४०	आचारारण्यनियति		१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२४०	आचारारण्यदोषिका		१६५५	२१६	स प्रा
१७	७२२२	आचारारण्यवति		१६वीं	२८१	, प्राकृत
१८	७२७४	आचारारण्यसूत्र		१७वीं	११५	, प्रथम पत्र अप्राप्त
१९	७४२६	आचारारण्यनियति		१६वीं	६१	प्राकृत
२०	७४३६	"		१६२२	४७	लि क श्रुति बाया
२१	७४४०	"		१६वीं	८१	प्राकृत
२२	७७६६	आचारारण्यनियतसूत्र		१५४६	११६	, लि रथा अणहिलपुर
२३	५६४६	आचारारण्यवहति	श्रीहरिभद्रेश्वर (?)	१६३१	१२७	पत्तन
२४	७२०४	आचारारण्यवहति		१६३१	४०५	संस्कृत लि क लक्षणमूर्ति
२५	७४००	"		१७वीं	५४६	लि रथा असतमेर
२६	७३३४	आचारारण्यसूत्र (सटीक बहति)	हरिभद्रेश्वर		२०१	संस्कृत प्रति में ५४७ ४८, ४६६
२७	४३५८	आचारारण्यसूत्र (सबासावदोष)			१६	पत्र लिखित हैं
२८	७५५४	आचारारण्यसूत्र			४	संस्कृत
२९	७१८८	आचारारण्यनियति (सचित्र)		१५०१	४	प्रा रा
३०	७११६	उत्तराध्यायनसूत्र		१५४८	६८	प्राकृत, लि क प० धमकीतिमुनि
					३५	प्रा चित्र संख्या २ लि क चित्र
						वास, लि रथा माण्डली नगर
						प्राकृत ग्रन्थ धीरोपावला
						कुले माणिक्यन लिखित

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकदशाङ्गविवरण	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१६४७	२०	संस्कृत, लि.क मुनि लषमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकदशाङ्गग्रह		१७१३	४७	रा प्रा., लि.क. छोतर (शिव- चन्द्रशिष्य वंराठडुगें, आसन्दी
५६	७३१८	उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	ग्रामे, पाचवा पत्र अप्राप्त प्रा रा , लि.क लालसागर
५७	७६३४	" "		१६८०	६६	प्रा.रा.
५८	७२२८	उववाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ- सहित)		१८६६	८६	प्रा.रा , लि.क. ऋषि हुकमचन्द, राणावासनयरमध्ये
५९	७४१६	उवाइसूत्र		१६८४	६५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	ओघनियुं वित		१६वी	२३	प्राकृत
६१	७५५३	ओपपातिकोपाङ्गसूत्र (सस्तबक)		१७वी	११५	प्रा रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता	स्त पादर्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य)	१६वीं	१५२	रा., अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)		१६वी	१३१	प्राकृत, चित्र स ३४
६४	५३५६	" "		१६वी	८५	स पा., राजस्थानी कलम के चित्र
६५	५३५७	" "		१६वी	७२	प्रा , चित्र स १६
६६	५३५८	" "		"	५३	प्रा., चि सं. १४
६७	५३५९	" "		१५०२	६१	प्रा , चि. स. ४०
६८	७८४१	" "		१४वी	१३३	प्रा , चि सं ३६



क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वर्तमान आदि ज्ञात	चिपि समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
६८	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा चि स ८
७०	७८४६			१५५० से पूर्व	५०	प्रा चि स २८
७१	७८४७	,		१५३१	१०	प्रा स्फुट पत्र, विप्र स १०
७२	७८४६	"		१४८५	६	प्रा नूटित वि स ३ मुद्रासिद्ध
						सयोगच्छायाय सोमसुंदरसूरिके
						आदिग से आश्लित
७३	७८५०	,		१४६०-	३६	प्रा नूटित वि स ७
				१४६० के		
७४	७८५१			मध्यवर्ती	४	प्रा , प्रति मे पत्र ८ १७, २३
				१५५० के		व ८२वें हो प्राप्त हैं
७५	७३८६	कल्पसूत्र		समग्र	५४	प्रा , लि क सतोषचंद्र मुनि,
				१८६५		नागोरमध्वे
७६	७३६०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषाय सहित)		१८३३	१७२	प्रा रा १ से १० पत्र अप्राप्त,
						लि क कृष्णविजय बहुसप्त
						च्छदो (बडो सावडी, मेवगाट
						देवो ?) नगरे
७७	७४१३		भा गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा रा प्रति के अत्र में जिन
						धर्मप्रवक्तक विद्वानों को जम
						नितिय विभिन्नप्रच्छो को स्यापना
						नामकरण का समय एवं विविध
						आचार्यों की कृतियों का परिचय
						लिखित है अन्तिम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	,		१८४५	१७५	प्रा रा प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषासहित)		१८३६	१३६	प्रा. रा., लि. स्था. फलोधी
८०	७५५५	"		१७२६	८८	प्रा. रा., लि. क. मुनि मनोहर, बनूवा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तवक)	स्त. सोमविमल	१६७२	१०६	* प्रा. रा.
८२	७५२६	"		१७२६	६१	प्रा. रा., लि. क. मनोहरश्रुति, अहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	" (सट्पण)		१८वी	६६	प्रा. श्र., प्रपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय
८४	५३५४	" (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा. स., वि. स. ३६, भिन्नमात मे लिखित
८५	७८४०	" "		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., वि. स. २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को स. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८६	" (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-संस्कृत
८७	७८४४	"	डो. सुमतिहसूरि	१६२१	६५	" "
८८	५३५५	" (सटीक, सचित्र)	डो. सुमतिहसूरि	१७३४	११५	प्रा. सं., लि. स. ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणवालीटीका	डो. धर्मसागरगणो	१६७६	३२२	स. प्रा., प्रथम पृ. अप्राप्त
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१९वीं	११८	लि. क. कमलसी, महतवसीमुत, इंदरपुरा (अहमदाबाद) स्थाने संस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातय	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	७५५६	कल्पसूत्रगीता	तक्षशीयस्तम्भ (लक्ष्मीनिधि)	१६वीं	१११	स प्रा रा
६२	६३२	कल्पसूत्रवातावबोध	गिरिविधान	१७६४	१२८	राजस्थानी लि क प हरराज
६३	७५५८	, , (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	श्रीनीमगरे
६४	६६१७	कल्पसूत्रभाषा		१६३३	१२७	प्रा रा लि क मानखिलम
६५	६८५८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१६५७	१६६	मालपुरामध्ये
६६	७३१०	कल्पसूत्रवर्ण्य		१६६२	५४	राजस्थानी, लि क श्रुपि केग रीचन्द्र, विक्रमपुरमध्य
६७	७२६०	कल्पसूत्रवाच्यटीका		१७वीं	५०	राजस्थानी, १-२ पत्र कीट-
६८	७४६६	सूत्रप्रकृतिमञ्च		१५वीं (?)	३६	विट लि क श्रुपि लक्ष्मीचन्द
६९	४३०४	चित्तसम्पत्ति (श्रवणेश्वरायथना न-तरम)		१६वीं	७	सकपचन्द रेवासो (पालणपुर, गुजरात) मध्य
१००	७३०१	जीवाभिगमवर्तित	व धोमसमिर्दि	१६वीं	२६२	प्रा स, लि क सौभाग्यद्विमत
१०१	७२१४	ठाणाङ्कसूत्र		१६०८	७७	श्रीसिरोहीनगरे रचनाकाल
१०२	७२२६	ठाणाङ्क (श्यानाङ्क) सूत्रवर्तित			१८२	१५७० (?)

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र	दी मुमत्तिसूरि (बोधकशिष्य)	१७वी	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	"		१८७८	२०	लि. क. अष्टु
१०५	७४८८	"		१६६६	२६	लि. क. हरजी (ललित प्रभक्षिष्य)
१०६	७६३६	"		१७७७	२५	प्राकृत, लि. क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७वी	५८	प्रा. रा.
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)	दी मुमत्तिसूरि (बोधकशिष्य)	१६२३	३७	प्रा. स.
१०९	४४५६	" (सटबार्थ)		१८वी	५४	प्रा. रा., ३६वां पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका		१७वी	५४	संस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	संस्कृत, लि. क. जितचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि	हरिभद्रसूरि	१५वी	१६	संस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा., लि. क. मुनि महावजी, खीरपुरनगरे
११४	७४८४	नन्दीसूत्र		१७वी	१६	प्राकृत
११५	७२५६	निरयावत्तिका (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८६७	६२	प्रा. रा., लि. क. मूल० मुमत्तिहंस, भाटा उमवहस, कोसाणामध्ये

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिय समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयायातिकासूत्र	निरयायातिकासूत्र निर्णयसूत्र (सधु) (राजस्थानी भाषाय सहित) निर्णयसूत्र , प्रतिभरणसूत्र , आदि	१६६५	२६	प्रा. लि. क. वच्छा
११७	७३६५			१८३२	७७	प्रा. रा. लि. क. कपूरविलाय हरचंद मोवाडनगरे
११८	७४८१			१७वीं	१६	प्राकृत
११९	७५४१			१८वीं	२३	, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	७०८५			१८वीं	२३	प्रा. प्रपूण १६वीं पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४ (७)			१८८५	१६८-१८०	प्राकृत
१२२	७४४५		सहजकति अभयदेवसूरि , प्रदन्-याकरणाङ्गटीका " प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (सवातावबोध) प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (सवातावबोध पत्रपाठ) प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषाय सहित)	१८८७	४६१	* विशिष्ट भाषा जरी के बपुड के जिल्लबध गुटके में आठ कतियो का सयह है
१२३	७४४६			१८२२	६६	* विशा, सुवर जिल्लबध गुटके में १० कतियोका सयह है
१२४	५६७३	प्रतिभरणसूत्रवातावबोध		१८८६	६१	प्राचीन राजस्थानी
१२५	६८५६	प्रदन्-याकरण		१५६८	४३	प्रा. द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२६	७२५६			१७वीं	२६	प्राकृत
१२७	७२११			१६०२	८३	संस्कृत
१२८	७३४५		अभयदेवसूरि , प्रदन्-याकरणाङ्गटीका " प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (सवातावबोध) प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (सवातावबोध पत्रपाठ) प्रदन्-याकरणाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषाय सहित)	१५वीं	४८	* संस्कृत
१२९	७४४७			१७वीं	६५	प्रा. रा.
१३०	७३१५			१६५४	११२	प्रा. अपभ्रंश
१३१	७३४६			१७४६	७३	प्रा. रा. लि. क. ललितहस सत्य हस शिल्प सप्तसदी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र	मू श्रीस्थामाचार्य ? टी श्रीमलयगिरि	१७वी	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	"		१६५६	२२७	" १-२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१६७	प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)		१७वी	४२६	प्रा. संस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनोपागसूत्र		"	१७१	प्राकृत, १-२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	वाक्षिकसूत्र		१६वी	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	विण्डनित्युक्ति	अभयदेवसूरि	१७वी	३२	"
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, सवत् १६ आषाढादि
१३९	७२८६	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	२५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशाया-
१४०	७२०३	" टीका		१७३०	३४२	तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम्
१४१	७२२०	" वृत्ति		१६वी	४१०	प्राकृत, लि स्था अणहलपुर
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र	"	१६७०	८३	संस्कृत, लि स्था. जैनसमेर
१४३	७६३५	" (राजस्थानीभाषार्यसहित)	भा० मेघराजवाचक	१७वी	२०६	राजल श्रीप्रमरसिंहजीराज्ये
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र		१४१५	८१	संस्कृत. लि क शास्त्रण जीवा
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (संवात्ताव-		१७०२	७७	प्राकृत, लि. क मोढजातीय
१४६	७५२६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी-		१७वी	१३६	जोशी कुलसी
		भाषार्यसहित)				प्रा. रा.
		नोध, पञ्चपाठ)				प्रा स, प्रदक्कीय प्रति
		राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (संवात्ताव-				प्रा. रा, लि. क. मुनि मानसिंह
		नोध, पञ्चपाठ)				प्रा. रा.

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जात-य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राज्यदत्तयोगाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषायसहित)		१७५६	६२	लि क मुनि मनोहर बोदाद पात्रे
१४८	७२२५		भ्रा० मयराज वाचक	१६१२	११८	प्रा रा श्रुति रूपचन्द पीहीमध्ये
१४९	७३७६	राज्यदत्तयोगाङ्गसूत्रलिपि	च सप्तगिरि	१७वीं	७७	सङ्कृत
१५०	७१८५	अमरहरसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
१५१	७४६६			१७वीं	१४	
१५२	७१८७	विष्णुकर्म (सटिपण)		१५१३	२४	, नि क बाद्यक
१५३	७७६३	विष्णुकर्मसूत्रटीका	डो अमरववावाय	१५६१	१६	प्रा म
१५४	७३८४	अमरसूत्र (सवासावबोध)		१८वीं	८	प्रा म लि क मुनि मिरकू
१५५	७२३८	आष्टप्रतिपन्नसूत्रवार्ता	भीरनगरगणि	१६५५	१८५	भारुणजीशिव्य
१५६	६१३५	पटावश्यकबालावबोध	भा ऐन्दवस	१८वीं	१२१	प्रा स सशोधनकर्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५७	७४२३	पटावश्यकर्मसूत्र		१६८८	१३	प्रा म
१५८	७२६६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	प्राकृत
१५९	५६७८	स्थानाङ्गसूत्र (सवासावबोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०६	, लि स्या गुजाडलपुर प्रा रा लि स्या बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवर्ति	अमरदेवसूरि	१६१८	८४	प्रा स प्रा रचनाकाल ११२० वि
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा पालसाहस्रकबरराज
१६२	७२१५			१६६७	३३	लिपिकृतम
१६३	७४६५			१६वीं	५०	प्राकृत

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृथ मन्था	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	"		१८१४	१६५	प्रा रा., लि. क. होराचन्द्र भावचारी, तीव्रडीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (चटोक)		१८वीं	७३	पा न, अमूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा., लि. क. माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	" (द्वितीय स्कन्ध, सस्तवक, पञ्चपाठ)	स्त पाञ्चचन्द्र (मीमांशरत्नशिख्य)	१६५०	४८	पा रा., लि. क. लूणिया- वोमनी पुत्रेमासूत्राण, गंगलमेर- मध्ये
१६९	७२०६	सूत्रकृदङ्गटीका	श्रीलानार्थ (वाहुरिगणसहायेन)	१६वीं	२४५	पा न
१७०	७४३६	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५६६६	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (मन्त्रातावबोध)		१६०१ (?)	५१	प्रा ग
१७२	७४३३	" " (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	" "
१७३	७५३१	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राज- स्थानी भाषासहित)		१६५३- १६६७	७३	" , स. १६५३, भाषा- १६६७, लि. क. श्रुतिभाण
१७४	७५३२	" "		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञातार्थार्मकयाज्ञ		१६७५	१८६	प्रा., लि. क. श्रुतिभाषाग पृ. १,
१७६	७३५६	" " (राजस्थानीभाषासहित)	भा पेमजीगणि	१८४८	०२७	केतोयामय्ये प्रा रा., लि. क. जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३६८	" "		१८६६	२६८	पा रा

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	जाताधमकथाङ्कवलि	व अभयदेवपुरि	१६३८	७०	ग्रा स, प्रथमपत्र क्षयात्
१७९	७४६२	जाताधमकथाङ्कसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	"		१७वीं	१५०	
१८१	७४७८	"		१४८३	६४	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २४-जैनप्रकरण]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञानव्य	लिपि नमय	पत्र माप	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५ अङ्गचूतिया	माणिक्ययुन्दस्वरि ब्राममसारोद्धारगत देवचन्द्र (परतरगस्थीय)	१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५६१ अन्तसमाधि		१६०६	७	राजस्थानी
३	७२६७ अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात- पचाशिकावृत्ति)		१६४८	४०	संस्कृत, रचनाकात् १४८४, नि स्था प्रणहृतपुरपत्तन
४	७५२५ अष्टाद्विकव्याख्यान (पर्ययणादि)		१८८८	१०	संस्कृत
५	७५३७ ब्राममवाणी आदि		१८वीं	१४	गजस्थानी
६	६१६२ ब्राममसार		१६वीं	५६	हिन्दी-रा, र का १७८३ नि र मुनि कुगदास जतोरमध्ये, पर ५६-७६ नरु भित्तिनिधि है
७	७०१६ ब्राममसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८६०	७६	० हि रा र ता १७७६ ति रु मयेन उमकरण, कृष्णगजगम्भे
८	७३३१ ब्राममसारोद्धारस	" मनि	१८३०	३८	हि रा नि स्था पुस्तान्नीतने
९	७२७३ (३) ब्राविनायवेशनोद्धार		१७वीं	१०-१६	प्राकृत
१०	४७६६ ब्राविपुराण	सकनकीर्तिभट्टारक	१८वीं	२०४	नोभुन, अग्रिम पत्रा यथाप
११	७११० ब्राधनामून (सायं)		१७३६	६	पा रा प्रथम पत्रा यथाप
१२	५६३४ उपदेशबातावबोध	सोमपुर	१७वीं	७६	अन्य पत्रा नोभन
१३	७३०८ उपदेशमाता (सावचूणि)	श्रीरतोगर	"	३३	पाकृत-संस्कृत
१४	४०१८ उपदेशमालाप्रकरणकथा (मवा- लावबोध)	धर्मवासगणि (वृद्धिजय ?)	१८५६	२१८	पा न रा, ति रु निमजतन स्थिति, पात्तीरुगे
१५	५६६० उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६६३	३६	पाकृत, ति रु मुनि रुतगण- सुन्दर, तिपि सुन्दर व पदसंगीत

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि गतव्य	विवरण	पत्र संख्या	विभाग उत्पत्तिसंज्ञा
१६	५३०२	श्रीमद्भगवद्गीता	१७वीं	७	क प्राकृत	
१७	७४६३	श्रीमद्भगवद्गीता (सावर्णिक पञ्चपाठ)	१६वीं	१२	प्राकृत	
१८	७२९८	श्रीमद्भगवद्गीता	१६वीं	१६	प्रा म	
१९	७२४२	श्रीमद्भगवद्गीता	१६वीं	३५३	॥ लिखा रामगढ़	
२०	७३०६	कर्मप्रथमपादकावचरि	१६वीं	४३	सा	
२१	७२८८	कर्मप्रथमपादक (स्वोपनिषद्कोषित)	१७वीं	२६२	१ से ५ तक स्तोत्रदीक्षा तथा ६० की मलयगिरिकृत टीका हे	
२२	७२३६	कर्मप्रथमपादकसूत्रप्रति (स्वोपनिषद्कोषित विपाठ)	१६४६	२२५		
२३	७२६७	कर्मप्रकृति	१६०२	१२	प्रा लि क लक्ष्मणरत्न	
२४	५४९८ (१०)	कर्मप्रवर्ती	१६वीं	१०६-११२	हिन्दी	
२५	५०६०	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	४७	अप्रकाश	
२६	६८८०	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	५६	॥ प्रा रा	
२७	७८५५	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	६	प्राकृत वि स ६	
२८	५३६१	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	१२	५	
२९	७८४८	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	६	३ मुद्रित प्रमाण	
३०	५३६०	कर्मप्रवर्ती (सहित सप्ततिका पद्यत्)	१६वीं	२५	१२	
					पत्रा ७६-१०३ तक	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा	रत्नशेखरसूरि	१७वीं	१६	प्रा रा
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	"	१६८८	१४	सस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	"	१६वीं	३	"
३४	५४२७ (६)	गुणसख्या (१०८ गुणोकी सख्या)	क्षमाकल्याणमुनि	१६वी	१४८-१४९	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	"	१८७२	२८	सस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाष्टपञ्चाशिका आदि	"	१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१ (४)	गौतमपृच्छा	मतिवर्द्धन	१७वी	३८-४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	"	१७५७	३१	प्रा. सस्कृत, र. का. सिद्धौरामे मुनीचन्द्र (१७३८) लि. क ऋषि रत्ना
३९	७५२७	" "	" (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा स
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)	"	१७वीं	१०	प्रा अ
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक	"	"	६	प्रा, मोडजातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्वंशस्थानकविचार	"	१७७५	१९	अ, लि. क निहालचन्द्र, पाडली- पुरे, पत्रा १५-१८ तक अप्राप्त
४३	५०६२	चतुर्विंशतिपण्डकसूत्रम् (सबालाव- बोधम्)	गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य)	१६६८	५	प्रा अ., लि. क सौभाग्यगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५६०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति	"	१६०४	७	स प्रा., लि. क हुमौरविजय, कुणगडमध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र	"	१७वीं	११	प्राकृत

क्रमांक	ग्रंथ या क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञात या	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनाय
४६	६१०४	जम्बूध्वजपत्र (जम्बूध्वरित्र)	तिसकावाय	१६८७	१६	अपभ्रंश प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	६३२७	जिनदशम (चित्ररत्नजिनपावको चौढासियो)		१६३६	२	संस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति		१७वीं	२६	स प्रा, अपूर्ण
४९	७१८६	जीनवस्त्रवर्ति		१६वीं	४०	संस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (ससत्तक)		१७५८	१०	प्रा अ त्रि क मोहनविमन
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)	जलपूजाविधि स्तुति आदि	१५८१	२	प्रा स, त्रि स्या गभीप्राप्त
५२	६८४३	जलपूजाविधि स्तुति आदि		१६वीं	२३७	सोभाग्यनचिबूदिविजयराज्य
						विचित्र भावाके इस गुटकमें
						तीर्थङ्करोकी पूजाविधि आरती
						स्तुति क्षात्रपालपूजादि संग
५३	५३३४	सत्त्वाध्यायमसूत्र	उभास्वामि	१६०१	२५	होत है
५४	६३०२	(सटिपण)		१८वीं	७	स त्रि क देवचन्द्र
५५	५६१४ (६)	(साय)		१८७१	२०१-२०७	विलसदास
५६	७७६१	सत्त्वाध्यायमसूत्रटीका		१६३१ (२)	४४४	सं रा
५७	७७६०	सत्त्वाध्यायमसूत्रभाष्य		१६३१	६६	संस्कृत
५८	६२६६	सत्त्वाध्यायमसूत्रभाषाटीका	मू नेमिचन्द्र व अक्षदेव	१८वीं	१०४	त्रि क प नाइया श्री
५९	६०३५	द्रव्यसङ्ग प्रहर्षित		१६३१	६१	प्रवलगच्छस्वर श्रीधर्ममूर्ति

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	सा, प्रतिका शोधनकर्त्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प शालावबोध		१८११	२०	स रा, र का 'शरयुग शिखि- शशिर्वर्ष (१६४५)' लिक कृष्णाजी धाड् धडामध्ये
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनमुन्दरसूरि (सोममुन्दरसूरि- शिष्य)	१८वीं	१५	स, लि क हेमविजय 'सवत्सरे- ऽग्निद्विपविश्वसमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		"	६	अपभ्रंश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१६वीं	४६-६४	स.रा अ, प्रतिमापूजन एव स्त्वन भी लिखित है
६५	५६४६	धर्मप्रदशोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीर्तिभट्टारक	१६१३	७४	स, इसमे १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है।
६६	४५६२	धर्मोपदेशश्लोक (सार्थ)	महावीरभगवदुक्त अ भीमविजय	१८४६	८०	प्रा र, पादलितनगरे शत्रुञ्जय- तीर्थलिपीकृतम्
६७	४५६६	धर्मोपदेशश्लोका	जैनपुराणोक्त	१६वीं	६	४ संस्कृत
६८	५३७६(१६)	नृवणकथा (स्नपनकथा)		१७६१	२१८-२२६	संस्कृत
६९	४०१६	नवकारवालावबोध		१८२१	४	प्रा रा, लि स्था जैरालमेर
७०	६३२०	नवकारमन्त्र आदि		१६वीं	६१	हि, इस गूढके मे जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, बारहभावना 'जैनशतक' भक्ता- मरवालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है।
७१	७४४४(४)	नवतत्त्व (सट्बार्थ)		१८८५	१२६-१३६	प्रा रा, लि क नेमविजय

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	कर्ता याति यातय	तिथि समय	पुत्र संख्या	विगण उल्लसनीय
७२	४०१६	नवतत्त्व (सबालावबोध)	पद्मचन्द्राविव कश्चित (खरतर गच्छीय)	१८०३	५२	स प्रा रा र का १७६६ लि क श्रुतिदेवचन्द्रादि लि स्या ब्राह्मरा
७३	४०६१	"	मेखुसूरि (ओमच्छेग) निल्य कश्चित	१६५२	७१	प्रा रा लि क केशराज धोरामपुर
७४	४४६२		बा पावचन्द्र	१७३०	१०	प्रा रा , लि क हुसविजयगणि
७५	७६५६			१८७७	८	प्रा रा
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८०७	१३	स प्रा लि क नमच ॥ कलौषीयाममध्य
७७	७५३६	नवतरकप्रकरण (सबालावबोध)		१८०७	१३	प्रा स लि क रिजयगणि रामसेधनगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सबालावबोध)		१६५०	६	प्रा रा
७९	६२३०	नमिपुराण	सोमसुन्दरसूरि	१८८६	२१२	स , लि क हेतराम
८०	७४७६	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि	सू देवदसूरि, ॥ सोमसुन्दरसूरि	१६५०	२३	प्रा स
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)		१६५७	१६	प्रा स
८२	७५४४	प्रत्यकवृद्धचरित्र		१७५०	१०	लि क धमकीति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकरण	जयशेखरसूरि	१८५०	१५	स प्रा
८४	७२००	प्रशेषचि तामणि		१५	७२	कसकृत, र का -१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार	सिद्धतेज	१७५०	४४	प्राकृत
८६	७३४७	' , (सटीक)		१६५०	३७६	कप्रा स
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रयप्रकरण (सावचूरि पञ्चपाठ)		१७५०	५	
८८	७३०६	पञ्चनिर्ग्रयग्रंथ (सावचूरि)	सू धर्मयदेवसूरि	१७८०	७	" लि क प कल्याणचन्द्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८६	७१६३	पञ्चपरमेष्ठिपूजनप्रकार	सोमसूरि	१६वीं	३६	संस्कृत, अपूर्ण
८७	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	६	हि र का १७६१
८८	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	संस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त
८९	६४०१	पर्यन्तराधनासूत्र		१७४०	७	प्रा स, लि क ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिऔरग-विजयराज्ये
९०	७७४१ (३)	परमरसप्रकाश	म. जिनवल्लभ, वृ श्रीचन्द्रसूरि	१७वीं	१२-३८	प्राकृत
९१	७१५६	पादर्वनाथपूजाद्यभियेकान्त आदि		१६वीं	१२१	स हि रा, अभियेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र का १५६७, इस गूढकेमे तत्त्वार्थ-भिगमसूत्र. भक्तामरस्तोत्रादि अनेक कृतिया भी लिखित हैं। प्रा म.
९२	७१८२	विण्डविशुद्धि (सावच्चरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	१२	प्रा पति के कोण भग्न हैं।
९३	७२०६	विण्डविशुद्धि	म. जिनवल्लभ, वृ श्रीचन्द्रसूरि	१६वीं	४	विधिविधभाषा के इस गूढकेमे चौबीस एव बीस तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि तथा दशवैकालिक, तत्त्वार्थभिगमसूत्र एव विविध स्तोत्रादि संग्रहित हैं।
९४	६६०६	पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि)		१६वीं	११३	प्राकृत, लि क कचोद्वसगार
९५	७४१८	पोषधाविधि		१८७५	६	संस्कृत, इसमे लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एव विद्याविलासकथा लिखित हैं।
९६	७५२२	बृहज्जान्तिटीका आदि	म. जिनवल्लभ, वृ श्रीचन्द्रसूरि	१६०१	२७	प्रा रा., लि स्या श्रीनारदपुरी, लि क गुणनाभगणि
१००	४३०१	बृहदाराधना		१५६०	१२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तभारतपूजापद्धति	श्रीहंसचक्रसूरि हेमचन्द्रसूरि भक्तधारी	१६वीं	१८	संस्कृत
१०२	७३३८	भगवत्पञ्चबीजक		१७वीं	६	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रवाङ्मयहिता		१६वीं	६६	संस्कृत
१०४	७१६६	भक्तभावना (मूल)		१५६८	१८	प्राकृत
१०५	७१६६	भक्तभावना (सूत्र)		१७वीं	२६	प्राकृत
१०६	७३८५	भक्तभावना (सूत्र)	, अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है उसी पर उक्त सवत लिखा है किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है	१८६७	६	
१०७	७३२०	भक्तभावनासूत्रप्रकरण		१८६७	२५	
१०८	७२५२	भक्तभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३ (२)	भक्तवरायणस्तक		१६वीं	६-१२	
११०	५४१८ (६)	भक्तिसंयुक्तपुद्गो	रूपचन्द्र लक्ष्मीदेव	१८वीं	६६-६७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकस्तकचौपाई		१८१६	२७	क. म. प्रा. लि. स्या. खोंवसर ग्राम रचनाकाल १७१६, स्या. -काकवीनगर
११२	५१२०	मङ्गलकस्तन तथा द्वितीयवाचना	मं कमकसोम	१७वीं	१०	प्रा. द्वितीयवाचना पत्र १५ तक में लिखित है मङ्गलकस्तनका र. म. १६४६ है उक्त दोनों ही प्रतियां अपूर्ण हैं
११३	५३०१	महापुरुषणसंग्रह	गुणभद्राचार्य	१६वीं	१३८-१८१, १८४-२५८	संस्कृत अपूर्ण

क्रमांक	संख्या	ग्रन्थ नाम	गतां भादि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मोनएकानवदो	नगवितास (जिनचन्द्रसूरिशिष्य)	१८वी	२	स. प्रा.
११५	७२६३	मोनएकानवदो	प्रजापनोपासुसंगत	१७वी	२	संस्कृत, लि.फ. १० सोमनन्दन
११६	१०८७	तोकनालाश्रयवातायवोध	कोटिमणि	१८वी	५	"
११७	७२६४	धन्वाकृत	सकलकीर्ति	१५५६	७८	" अन्तिम पत्र के प्रक्षर उठ गये हैं
११८	७३४३	यनस्पतिशिरसीप्रवचुरि	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१६वी	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्तमानवेदना (गणवन्ध)		१८६०	१०६	संस्कृत
१२०	६२२०	वर्तमानपुराण		१७६८	१४६	" लि.फ. गुणयिजय
१२१	४२६६	विशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह		१७वी	६६	* प्रा.सं., अथम पत्र अप्राप्त, र.स्था. वीरभाम, र.का. १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसंग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वी	२१	* सं.प्रा., र.का. १४४३
१२३	७१७६	विवेकविलास	जिनवत्ससूरि	"	२१	संस्कृत
१२४	७०७६	विशेषणयती	जिनभद्राचार्यगणेश क्षमाश्रमण	१८वी	६	प्राकृत
१२५	६१८३	भावकातिचार	देवेन्द्रसूरि	१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५६७०	ज्ञातकर्मग्रन्थजातायवोध		१८वी	१८	" लि. फ. ऋषि विश्राम
१२७	४०२६	शीतोपदेशमातायातायवोध	मू जयकीर्ति, बा. मेरुसुन्दर	"	१५०	परगारायपुरे
१२८	४०३३	"	"	१६११	१६५	* प्रा. रा., लि.क. गुणपति-
१२९	७३३०	पञ्चोक्तिकशतकर्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-दीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६५४	११०	संस्कृत
१३०	७४१६	पण्डितशतक		१६वी	४	प्राकृत

क्रमांक	पृ.पाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५६८६	यटिगतकवातावबोध		१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्यधिरावतो		१८वीं	४१	प्रा. म
१३३	६३२७	स्वर्णचित्तमहात्म्य	देववत्त दीक्षित (हृषतामरात्मज)	१८४७	६७	स, लि स्या भरथपुर
१३४	७२२१	सङ्ग प्रहण्यचूरि	देवभद्रसूरि	१४६६	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	"	ओचन्द्रसूरि (हृषपुरीय)	१६वीं	२३	"
१३६	६१३३	सङ्ग प्रहणी		१६२४	१७	प्रा, लि स्या झलवर प्रथम
१३७	७४०५	(मूस)		१८६६	४०	३ पत्र अप्राप्त
१३८	७५४६	"		१७०२	८	प्राकृत, लि क श्रुति बलिचन्द्र, बूखनगरमध्य
१३९	७४७५	(सटीक, त्रिपाठ)	ओचन्द्रसूरि ओदेवचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा, इसमें शण्डक भी लिखित हैं। लि क यग सागरमुनि सावडीमण्ये
१४०	७५६२	सङ्ग प्रहणीप्रकरण (सस्तवक)		१७१०	३१	प्रा स लि क नयनगणि जीव कलंगगणिसिध्द
१४१	७६३३	सङ्ग प्रहणीप्रकरण	स्त शब्दराज उत्तमश्रुति	१८वीं	३५	प्रा रा
१४२	४३५६	सङ्ग प्रहणीवातावबोध	निवनिधानगणि	१८३७	८५	" रचणाकाल झटचतुर दीक्षिके धामराख्ये महानगरे
१४३	५६७२	"	"	१८३६	६२	६ प्रा रा, लि क श्रुति झातचन्द्र, श्री वेनातडपुर प्रा रा, लि क शिवराज,
१४४	७३२६	सङ्ग प्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (ओचन्द्रसूरिनिग्य)	१८७७	१०१	आमलभा (भी) पुर संस्कृत ३४ वां पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (सघेणनो रासछन्व)	मतिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क प्रमोदतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तबक)	लेख(ज्ञ)सूरि	१६६२	२७	* प्रा.अ., लि कर्त्तो-आर्याश्री ५ सज्जनजीरो शिष्यना आर्यसू-
१४७	५३५३	" (सचित्र)	"	१८वीं	६७	वट, बीलाडग्राम
१४८	६१४१	"	"	१८३०	४७	प्रा रा., चि स. ३२
१४९	७१७५	"	"	१८२१	६४	हि रा.अ., लि स्या डीडवाना
१५०	७८४३	"	"	१६७५	२४	प्रा. अ, चि स ३५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र	"	१७वीं	२०	प्रा, चि स ५
१५२	७३२४	"	"	१८६०	२२	प्राकृत
१५३	७३२७	" (सबालावबोध, पञ्च-पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	" लि क. सुन्दरहम, राणा- वासमध्ये
१५४	७४४४ (२)	" (सटवार्थ)	"	१८८५	५४-१२०	प्रा. अ
१५५	४१४३	सप्ततिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रमुनि	१७वीं	६२-१८३	" लि क. नमविजय, गोघु- न्दाग्राममें लिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५६	६२०७	सत्त्वयसनकथासमुच्चय	भारामलसघो (परसराममुल)	१८७८	६२	सं, अ रा., प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५७	७५४३	सत्त्वस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्थ-सहित)	"	१८४३	३६	हिन्दी, लिखित महाचन्द्र श्रीमालवासी पाण्डुका पटवारी प्रा रा, लि क रूपसोम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्तनी आदि पातय	निर्गमय	पत्र संख्या	विशय उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सप्तमध्याख्यान		१८वीं	१७	॥ अ इससे ऋषभदेव आदि नाम आदिके चरित्रका व्याख्यान है प्रतिके पत्र चिपड़े हुए हैं प्राकृत
१५९	७६६९	सम्बोधसत्सरोप्रकरण	देवदत्त दीक्षित	१९वीं	७	* संस्कृत
१६०	६२०३	सम्बोधनिलरमाहात्म्य			८१	" प्रपुण
१६१	७११८	समयसुतिपूजा	प्रभावद	१६६५	४०	* " तिक प केसव
१६२	७२१७	समाधिगतटीका		१८वीं	२५	प्रा अ तिक क कपलविजय साध्वी
१६३	७१९३	साधुसमाचारी			६	श्रीसोभाग्यश्रीपद्मवृत्ते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	साङ्गगतकविति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	स अ आद्य ४ पत्र अश्वत् प्रतिके कोण खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पञ्चलाणा सद्विषय)		१७वीं	४०	प्रा अ
१६६	७३८२	सिद्धांतरसार		१७६३	६५	प्रा स रा तिक नालसागरराणि
१६७	६१४७	सिद्धांतरसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	स तिक प मयाश्वि जय- सिंहपुरामध्ये (माधवांसिहराज्य)
१६८	७२६९	सिद्धिदण्डिका		१६वीं	४	॥
१६९	७५३९	सूयप्रज्ञिति		१७वीं	६२	,
१७०	६१०९	संस्कारप्रकरण (सवालावबोध, पञ्चपाठ)			१०	ग्रन्थअंश
१७१	५९११	हरिवंशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	* संस्कृत

राजस्थान पुरातत्वावेक्षण मन्दिर — हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २५-प्रकीर्णग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१ (१)	अपभ्रंशस्फुटपद्य		१७वी	१०-१२	
२	७७४१ (५)	"		"	४२-४३	
३	६०२५	इग्यारसितपसुव्रतकथा		१८वी	४	अपभ्रंशमे
४	५२०७	श्रीदुम्बरदशपरिचय		१६०८	१	यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एवं राजगुरुओंकी मूल सम्मतिया प्रकृत है। इस गुटकेमें औषधिके नुस्खे, यत्रमंत्र, शकुन आदिका संग्रह है इसमें श्रवृष्टव्रणकी औषधि व्रष्टव्य है प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी
५	६८२७	औषधसंग्रह आदि		१६वी	१६३	
६	७७२२ (६)	"		१८वी	१०६	
७	५१२३ (१)	गगस्तोत्र		"	१	
८	४४५२ (४२)	चण्डिकादेवीचित्र		"	४६ वाँ	
९	४४५२ (४३)	"		"	५० वाँ	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		"	१	२३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एवं व्रजभाषा नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं कामदारी लिपिमें इतिहास
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				
१२	६६६०	जयपुरराज्य एवं सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिप्पणिया आदि				
१३	७०६०	ढाईद्वीपका पटचित्र				
१४	७०५६	"			प्रकीर्ण पत्र	

क्रमांक	ग्रथांक	ग्रय नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखीय
१५	७८०६	तत्रिकयत्र (मूलोपलब्ध)	गुरुकीर्ति सु गान्धिवालेन द, गङ्गाधरभट्ट सोमसिन्धुकरि	१६वीं	१	श्रीवृष्ण विषयक राजभयागच्छमें संस्कृत राजस्थानी इसम वमत पञ्चमी के दिर भगवतप्रतिभा के भुङ्गार की विधिप्रदय है प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश प्राकृत संस्कृत भूषण प्राकृत विषय ज्योतिष लि क दोलत सामर्याण त जोषत प्रकीण पत्र एकादशकथ पय त प्राचीन हि दीगछ जितसुखसूरि प्रशस्ति, लि क प गोडिवत स्थान पालीग्राम
१५	४८१	तारतम्य (पद्य)			६	
१७	१५०६	द्विचिन्तनद्वारा दग्गमहापराधा सायसोःसकादि			४	
१८	५३७६ (५)	दग्गसाक्षिककथा	वनारसोदास श्रीधर	१८वीं	८७-६०	पञ्चमी में र का नक स १७१७, मराठी भाषा में, लि क वालाजी नीलाजी, रेवातटे राजराजेश्वर सन्निधौ आरभते लेकर दग्गम ग्रध्याय तक
१९	७७४१ (७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	
२०	७०००	प्राकृतभाषाकोशटीका		१६वीं	१६	
२१	७३३८	पुण्यभाषाप्रकरण		१५वीं	१४	
२२	४४८१	वहतसत्रसमास		१७८५	१६	
२३	६३६८	कविदानपद्धति		१६	६	
२४	६८२५	भागवत (मराठी अनुवाद)	मोसिवडा रामविजयमहाकाय	१६वीं	३	
२५	४०८३	मजलस		१८५२		
२६	१४४४८ (१)	मोसिवडा		१६वीं	१-३	
२७	५१८४	रामविजयमहाकाय		१८५२	५६४	
२८	५५५०			१८वीं	६८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६	७११६	"		१८६१	३६७	र.का १६२५ शके (१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक स. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रंथ पूर्ण हो जाता है
३०	५३७६ (११)	रोसहकोजयमाला		१७६२	१११-११२	लि. क. डालचन्द नथमलसुत लि. स्था. दरियाबाद
३१	६०६२	विष्णुमहोत्सवमाला		१८६५	२४	प्रा. रा. गु., लि. क. मनोहर
३१	५२३७	वैराग्यशतक	केसरीकवि बालकृष्णभट्टसुत	१७४५	१५	इन्द्रजीत शिष्य
३३	६६७७	षट्चक्रनिरूपणखरड़ा		१६००	१	
३४	५२३६	त्रैलोक्यसाधना		१६७६	१२	लि. क. धर्मकीर्ति उपाध्याय
३५	७१७६	ज्ञानवाजीकापटचित्र		१६वीं	१	मंगलोर मध्ये

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विनोद परिचय]

१-स्तुतिस्तोत्रादि

८ ४२३४

ग्रहल्यास्तोत्र

प्रादि- ॐ ततो हृत्वा २धुपठ पीतकौशयवाससम्

धनुर्बाणधर राम नमःपुन समन्वितम् ।

अत- ग्रहाणां गुरुतत्पणांषि पुष्प स्तेयी मुरापांषि च

भ्राता रा [प्रा] मविहंसको पि सतत भोगकवीषा (बद्धा) गुरु

नित्य स्तोत्रमिद जपन क्षुपतिन भवया हृन्दिष स्मरन

ध्याय मुक्तिमुपति नि पुनरसौ त्वाचारयुता नर ॥ २८

इति श्रीमध्यात्मरामायण उग्रमहेश्वरसंवादे बालकाण्डे ग्रहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९ ४२५४

अज्ञानविमोचनस्तोत्र

प्राणि- ॐकारे प्राणिरूप सुरुतवद्विषये चेतपते च कृष्ण

नील रक्ते वपाते तदुपरि रहिते मन्वर्णे विवर्णे ।

प्राणायामे समान विपरितररण यान उद्यानपीठ

एका ध्यायी त्रिवोध्य इति वदति हरिर्नास्ति देवो न्तीय ।

अन- ध्याता ध्याने विनामे जयविजयनरे भावभावे विभाव

रामारामति रामे अमन्विषमय सुधचन्द्र धनुष

स्वर्गे नर्वे अनर्वे अन्विलसिलमय चतिचेते अचने

एषो ध्यायी त्रिवोध्य इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीय ॥१०

इति श्रीनदीपुराण नारायणवृत अज्ञानविमोचनस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

४८ ७१४८

गरुडस्मरणाष्टक (स्तोत्रसप्तष्ट)

पत्र- १ १४ १६ १८, १९ यां प्रप्राप्त

(१) श्रीनमस्तव (२) गोपात्रमत्रध्यान (३) राधिकागतनाम (४) कृष्णगरुडगतति
स्तोत्र (५) अन्वोरी (६) राधाष्टक (७) चतुर्गोत्री (८) आन्वित्यस्तात्र (९) निव
दाष्टक (१०) नारदगरुडगतितुष्ट (११) निम्बगारुडगतितुष्ट (१२) आचार्य
पद्मस्तोत्र (१३) पद्मनाबी (१४) राधास्तत्र (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निजान्दिय
सप्तुस्तव (१७) युग्मपौष्टनामस्तव (१८) समुद्राष्टक (१९) गोपात्रमत्ररात्र (२०)
हरिध्यागाराष्टक (१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

१ प्रथम मन्वा त्रयोदश पीठ नित्य मन्वा त्रयोदश सूचक है ।

१३६ ६७०१ यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतिपा ।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक २ बालबोध ३ मिह्रातमुक्तावली. ४ मिह्रा-
न्तरहस्य ५ नवरत्नस्तोत्र ६ अन्त करणप्रबोध. ७ विवेकवीर्याश्रय ८ कृष्णाश्रय ९
चतुश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा ११ भक्तिवर्द्धिनी १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि
१४ मन्यासनिर्णय १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल. १७ पञ्चश्लोकी । (विट्ठलेश्वरचित)
१८ यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक (वल्लभा-
चार्य) २२. भागवत्सारममुच्चयेनामसहस्रम् २३ नामावलीत्रिविधलीला २४ सेवा-
फलविचार २५ पूतनामोक्ष २६ गोपालाष्टक २७ नवनीतप्रियाष्टक. २८ शरणाष्टक
२९ दैन्याष्टक ३० बलदेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक ३२ गोकुलेशाष्टक. ३३ जन्मवैकल्य-
निरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक ३५ स्वामियुगलाष्टक ३६ पञ्चाक्षरगभितस्तोत्र
३७ वल्लभशरणाष्टक ३८ सप्तश्लोकी भागवत ३९ स्वामिन्यष्टक ४० स्वस्वामिनी-
स्तोत्र ४१ आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्ठलेश्वर) ४३ आर्या (रघुनाथ) ४४ शिक्षा-
श्लोकी ४५ दैन्याष्टक ४६ भुजगप्रयाताष्टक ४७ अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ स्फुट पद्य ।

३-कर्मकाण्ड

२६ ५७३६

कुण्डकल्पद्रुम

आदि— ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्तद्दहन्त म्यिन,
नत्वा मौति विभर्ति विध्वमखिल यस्मिन् पुनर्लीयते ।
शास्त्र वीक्ष्य समुद्रराम्यय मता श्रीमाधवोऽह मुवी-
निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलद श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥ १

अन्त — आसीत् काश्यपवशज क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रणी-
गोविन्द श्रुतिवित्तदात्मज इहामृत नारायण ।
तत्सूनुनिगमक्रियामु निपुण कूकाभिधस्तत्सुत
शुक्लो माधवसज्जको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीपु फलाजयादौ विकलाश्च तेषाम् ।
कृते मूखेनेष्टफल. शिवाग्रे 'तापीपुरे'ऽरोपि मुकल्पवृक्ष ॥
मवद्वितो य कृपया शिवेन फलप्रदोऽमाविति बालकानाम् ।
शिव प्रमत्तो भवतीह येषा तेषा फलाप्तिर्नहि सज्योऽत्र ॥
पद्य मवाव यदि मत्कृतो चेद् ग्राह्य च तत् साधुजनैर्विशोध्य ।
स्वर्वाहिनीसङ्गमत कुवीर्या कुनिम्नगायाञ्च यथैव तोयम् ॥
रविधनमित्तवर्षे विक्रमार्के प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते ।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैपशुक्ले ॥
परितिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत् ।

२७ ४६६०

कुण्डतत्त्वप्रदाय

प्राति- नत्वाऽच्युतब्रह्ममहामूर्तीस्त्रिषु पूतये यदङ्गमाद्यम् ।
साग मम कुण्डमनवमम् ब्रूतेऽस्मिन् तत्त्वममममूरि ॥ १

प्रति- कते श्वतवराहान्नि विदिता ववस्वत सन्मम
ममवतरकेऽष्टविंशतितमे प्रा ते कनी सम्प्रति ।
अहि स्व प्रथमेऽग्निरक्षिपनिश्रीविक्रमावप्रभो
वपागतिसहेव पागतातीने च काले त्विह ॥
श्रीमन्मूपतिगालिवाहनगान पञ्चाधितिष्यविते
श्रीमये गतमौम्यन्वय वमतर्तो च चत्र गभ ।
गवने (गच्छति) पूणमामि हिमगो सावित्र्यधिष्य घतो
कयास्ये हिमगावयावनियुत मेघ वुन मीनग ॥
मिहे श्वपुरी मिने मरुग कर्के गती सस्थित
कयाया तममि प्रवेद्युप भय सस्थ च पुण्यऽग्नि ।
सुव्यष्टया करग च सनमिधुनक लम्भमिजिस्वे मुदू
नैसत्कुण्डविचारणाधुदिता दीप प्रवाग प्रयात् ॥
श्रीमत्सम्भसुपतने (स्थित) महेऽग्न्याधियाग वसन् ।
नागागाम्रविचारण पटमति श्रीगोडरत्नाकरात् ॥
त्रानो वसत्कुसाधिगीतविरण सत्कुण्डतत्त्व स्फुट
गुक्लस्थावरमनुरत्नवज्रभद्रास्य प्रयति स्वयम् ॥
य पूव सहिरण्यगममतुल रूप दधन वाग्विनाम
मध्य भट्टसमाख्ययाऽमवसी वेत्तचित्त्व स्वराट ।
भूय श्रीजयदवगीक्षितमणि सम्राट् मुविस्तागितु
साङ्ग वमषय चरन विजयन श्रीमन्सिंहारमभू ॥
यन श्रीमगवान् मगवहृदिय मत्तपित शास्त्रतो
यन द्वादशमीत्येवाग्निचयन मन्त्राजप्यादिभि ।
दृष्ट तेन गुणान्नवदविदुषा तत्त्वोपगमाय चा-
गजेनाममगाधसागरजनान् पूर्येदुवकागित ॥

२८ ४६७८

कुण्डप्रकरण (श्रीकृष्णविद्या)

रथा- रममननिधिप्रमाणवर्षे यतगति विक्रममूर्तिवा [पा] सान'
निव सगगाजर अग्निरेन्द्रमुत्त महागवरपीत्र जागन्तरपन्नायम् ।
गान निवामी ।

२९ ४१२८

कुण्डाक (मरीचिमातादीश्वरेण)

प्रादि- कृष्णात्रिमात्राद्वयवर्णिता समुत्पन्न विद्वन्पूजकम् ।
तत्त्वमाश्रय श्रीरघुश्रीरविन तारात्रिपुण्यमराविमानाम् ॥ १

अन्त- शाखा सप्तभिगवेष्टय वेदी पञ्चभिरेव च ।
कनय तु त्रिरावेष्टय स्थापायेद्देवताक्रमान् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त- त्रिशर्गजकुम्भे (१८५३) विक्रमातीतगने
रवितिशिवुध्वारे माघवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूप गेटशान्तिप्रकार
सुमतिभिरवलोक्य योदृगाजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकार नमोऽभिमानान् ।

निषिक्ता—प० नाबूरामपुरी वचृणी^१मध्ये ।

१०० ४६४६ मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त- व्योमाचनावमृतिगारनाम्नि वर्षे
पक्षे सिने तपसि रमाधवाह्वारे ।
विधी जयपुरे च गुणेतिदेशात्
प्रालेगि पुन्तकगिद गिरधारिगर्मा ॥ १ ॥

११३ ४६६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त- नवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रगते गते । (१६७७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कान्तिका च प्रकाशके ॥
श्रीदीक्ष्यजातिविप्रेण श्रीत्यगलार्यमुना ।
मालजिना कृता चेय महारुद्रस्य पद्धति ॥



४-तन्त्रमन्त्रादि

१७ ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्व भूनेश सर्वात्मन् सर्वमभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाह भूयोप्यद्यानुकपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमश्रस्त्वया मे कथित प्रभो ॥ २ ॥

अत- अथ वक्ष्यामि भर्गास्य मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।

भुज्य नाम्ना भुने सोऽभूत पुत्र वनवसप्रभ ॥

तस्यास्यादचना भक्तिहरी गोपालरूपिणि ॥२५२॥

न्ति समाहि (ह) नी (न) तथे श्रीवृष्णचरित समाप्त ।

२४ ६२४७

गघोतमानिणय

अन्त- सदिग्यसदेहविनाशमुत्तर चक्ष म अथ गुहमेवरो मुदे ।

एन सुधीयोमुग्जुलधरे नाश्वर कौलवता प्रपद्य हि ॥१॥

मिहस्ये द्युमणौ गुरौ घटगत मासे नभस्याभिष ।

मने प्रह्लासिधौ विधौ तिमिमते पथे गुमे मेचके ॥

गाके विप्रमभूपते परिमिते द्वयाभ्राञ्जितातक

(१७०२) विप्रप्रत्यनयासमाप्तिभगमन् गघोतमानिणय ॥

न्ति श्री कालेत्पुनामकपुण्येवक कृत गघोतमा निणय ।

गुजरपुष्पोनानेन कु भावस्या लिपिकृतम् ॥

नहुशास्त्रावितो अथो कौलप्रयविनिणयम् ।

२२ ४८६७

मन्त्रलोलावती

आदि- कुजे मञ्जुलजरीपुलविते भू गागनासगते ।

माद्यस्त्रोक्लिक्वाकनीविलपिते मदान (नि) नादोलिने ॥

सानदग्र [अ] जमुदरीभिरभितो नि नपमालिगिते ।

वन्दे साद्रपयान्मुदररश्चि शृगारिण माधवम् ॥१॥

श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधि सत्कीर्तिचक्रावर

भ्यातो विप्रमवसरा जगति यो दारिद्र्यनागातक ।

मानागास्त्रविचारवनिचतुरश्रीवणभूमि

पतिर्द्धारि मतनुन मितन वचसा श्रीतन्त्रीगवला ॥६॥

भालोवय तत्राणि विचाय सार निवृत्त्य यत्नादिह साधकानाम्

विशोदहतागुणवक्त्रगम्य सिद्ध निदान प्रवटीकराति ॥७॥

अत- होमानावप्यगतस्वेगुद्विण जपमाचरेत् ॥

इदं तु पञ्चाङ्गपुरस्करगात्रियम् ।

अथैव हापानीनामनुत्तरा ।

इति श्रीनन्नीलावत्यां ततीय पटन समाप्त ।

२३ ७७११

तत्रस्थद्वय

आदि- श्रुतानां तत्राणां बहुनयनात्तत्रगपुरे

ममायते मोह द्विजवरगणानां च विदुषाम् ।

अतस्तु सम्पत् हरिहरविरच्यादि चरणे

स्तुवन् शान्तानाथो रचयति हि तत्रस्थद्वयम् ॥ ४ ॥

अन्त — गुणजनक साधूना बालमुकुन्ददीक्षित स्वार्थम् ।
 व्यलिसत् परार्थमेतत् हृदय यत् नर्चतत्राणाम् ॥ १
 शिष्यकल्पतरुत्पितकल्प वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
 शुद्धमार्गपरम व्यलिमिषत् श्रीकृष्णदीक्षितमुत स्पर्शार्थम् ॥ २

४४. ७७०८

परशुरामकल्पसूत्र

अन्त— इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरणेणुकागर्भगम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नाग-
 यणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचित कल्पसूत्र समाप्तम् ।

७३ ४२६६

महाविद्यादशरत्नोकीजिवरण

आदि— अपक्षमाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
 माध्यवद्वृत्तितायुवन साद्रूपे माद्वयवर्जिते ॥१॥

अन्त— तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्वेन व्याघातस्तदवस्थ एव तदर्थमनित्यनित्या-
 वृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७६ ४११८

रामपद्धति

आदि— श्रीगणेशाय नम । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर ।

गुरवे परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम ॥ १ ॥

अन्त— सर्प दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकपिता ।

ऊर्ध्वपुण्ड्रं कृतं तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकरा ॥ ५६ ॥

इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।

लिपिकर्ता— विप्रजयराम ।

८३ ६७४२

रामपूजापद्धति

रचना काल— इन्दुवाणरसोर्वीर्भिवत्सरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)

कार्तिकमासिशुक्लाया द्वादश्या भोमवाररे ।

काश्या कृताऽनवद्येय रामोपाध्यायसूरिणा ॥

राम एवार्पिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

६३ ५२३६

वसुधारा

आदि— ससारद्वयदैत्यस्य प्रतिहन्निदिवावहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्य कृपामए [यि] ॥

६४ ५२२५

वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि— ससारद्वयदेन [न्य] स्य प्रतिहन्निदिनवहे ।

वसुधारे सुधाधारे नम तुभ्या कृपामए (यि) ॥१॥

अन्त— वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारय इदमेवोचद्भगवान्नात्तमना आयुष्मान्
 नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा सालसवति परिपत् सदेवमानुषामुरगधर्वाञ्च लोको
 भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥ इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३ ४४६६ शिवपचासरी यासविधि

आदि- अथय ऊचु -वय पचासरी विद्या प्रमाना वा कथ वत् ।

वय क्रमो महामाग आतु वीतुह न हित (१) ॥

सूत०॥ पुरा देवन रद्रण शिवन परमठिना ।

पावत्या वयित पूव प्रवदामि ममासत ॥

अत- गये जप सम विद्याद गोष्ठ गतयुण भवेत ।

नद्या महमगुगित अनन्त शिवमभिधौ ॥

इति शिवपचासनीयासविधि समाप्त ।

११६ ४२०५ सिंहसिद्धांतसिधु

आदि- यस्याग्निद्वयपूजनेन निखिला सिद्धीलभत नरा

बुद्धी प्राप्य वसति वरुमसु परास्तेषा समा सपद ॥

भक्तम्बातनितातमोहदलन दक्ष विपन्न वर

विघ्नाना प्रणमाम्यनारितमह त श्रीगणेशीश्वरम् ॥ १

अति यास्वामिथीजगन्निवासात्मजगोस्वामिथीगिवानन्दभट्ट

विरचिते सिंहसिद्धांतसिधौ द्विनवतितमस्तरङ्ग ।

अत- चरन्वितुरगवसमिने वत्सरे सहसि गुवलपन्ती ॥

शीतारक्षितसितवासर गुभ अथ एष परिपूजतामगात् ॥ २

सवत् १८२५ वर्षे राजाधिपराज्यीमज्जयमिहतनूजथीममाधवसिंहोपहृरेण स्वात्मा
बनोक्ताय लिखायित पुस्तकमिन् श्रीमज्जयसिंहनिमित्त जयनगराख शुभपक्षने लब्धाय लक्षक
प्रयागाम् श्री श्री ॥

५-धर्मशास्त्र

१५ ४११३ आशीषदशक सभाष्य

आदि- आतुगभवित्स्वय त्रिदिवस मामश्रयतो यथा

मामा त्रिपु सूतिकावधिरत् स्नान पितु भवदा ।

पातीना पतनादिजातमरण पित्रादगात् सप्त

नाम्न प्राक् तदपति सूतकवगात् आतुगात् परम् ॥ १

भाष्यादौ- विज्ञानवरविरचितमुनिजनवाक्यमिताक्षरामध्यात् ।

आशीषदशकवर्ति वर्ति हरिहरिहरी नत्वा ॥ २

अत- गदो धय कलिधय इति यासवाक्यात् । "द्वयमसस्वाराणामाहत । धय
गान्गे मगलवाक्य इति । इत्याशीषदशकभाष्य हरिहरविरचित सम्पूर्णम् ।'

२४ ४३५१

कालनिर्णयसिद्धात सटीक

आदि— प्रणम्यैकरद देव, शारदा गुग्मेव च ।

कालनिर्णयसिद्धान्त व्याकुर्वे विगदोक्तित ॥ १

अन्त— एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थन्येयं व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयराममुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धात सटीक समाप्तिमगमन् ।

२५ ६२४६

कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल— भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण गहरी रविवारे ।

ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल राम श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पञ्चाल्लेख डम प्रकार है—

“श्रीवीसननगरवास्तव्यनागरजातीयनिपाठीकालात्मजग्रहलाम्नुहरनायतदात्मज भा. आ नत्सूनुवि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनमूनु त्रि० प्राणनायात्मजबालकृष्णस्येद पुस्तकम् । श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ मवत् १७५६ ।”

३२. ४१२६

तिथिनिर्णय

आदि— मा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककलावृत्तचवच्छिन्न काल शुक्लतिथि तत्कयावच्छिन्न काल कृष्णतिथि ।

अन्त— योजन्तदेवकृतमथनमन्निबन्ध—

क्षीराव्विजोथ कमलापतिना धृतो य ॥

नित्ये निजे हृदि सता प्रमुदे तु नस्य

तिथ्यात्पदीधितिरिय स्मृतिकौस्तुभस्य ॥

इति तिथिनिर्णय समाप्त ।

४० ४६८४

दानवाक्यसमुच्चय

आदि— पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य वृधं मह ।

पुस्तोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चय ॥

४३ ४६०५

धानतपद्धति

आदि— धानत इति भविष्योक्ते । जात कसब(व)धार्यायेत्यस्य परभागोऽत्र न संगृहीत ।

अन्त— ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेष्टादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थ ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम् ।

४६ ४१८४

प्रायश्चित्तमयूख

आदि— नमामि भास्वत्पदपकजतच्छ्रीनीलकण्ठोऽहमथ प्रकुर्वे ।

स्मृत्योपदेशान् गुरुशकरस्य विनिर्णय पापविशुद्धिहेतुम् ॥ १

अ त- निगाया वा दिवा वापि यदनामृत भवेत् ।
त्रिकालसध्याकरणात्तस्मात् प्रविगम्यति ॥

४ ४४४६

मदनपारिजात

आदि- प्रवासात्प्रसम्पद्यति निचयपर्यायवपुष
नमा विघ्नश्रणाग्रिघटनवरिष्ठाय सह्यम् ।
जगत्प्रादुर्भावस्थित्तिनयनिरायामरचना-
विनोदामत्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुये ॥ १
साऽय कौणिकवन्धूपणमणिप्रीभट्टविश्वेश्वरा ।
वत्समात्मते नयेच सय (प) दे वाक्य कृती वदत ॥ २
अन्त- 'मतिर्येषा ग्रास्त्र प्रवृत्तिरमणीया व्यवहृति'
परा सीन ह्लाध्य जगति ऋणवस्तु कतिपय ।
चिरचित्त तेषा मुकुटतलमूले स्थितिमिया-
दिभ व्यासारभ्यप्रवरमुनिगिप्यस्य भक्ति रिति ॥ '

इति पण्डितपारिजातकहरिमत्सत्यानिविद्धराजोविराजमानस्य आमदनपातस्य निबन्ध
मदनपारिजातविधान नवम स्तवक समाप्त ।

१६ ४४४४

महाव्रतभाष्य

आदि- मधुसूदन गुरु वत् स्वमात वयोविन्म ।
कृष्ण विनायक राम हरिराम ह्लाद्युधम् ॥ १
सप्त व्रतागुरुप्रत्वा तपा व पाप्मामव ।
भाष्य महाव्रतम्याह कूर्वे गादिस्तनव ॥ २

अ त- चातुर्विधान पुच्छनीत्युच्छ्रमस्य चातुर्विधानीत्यादिनिर्म्यास्तेष्वप्यपरि
समाप्तयम् । इति शाखायनपूत्रव्य व्याश्रुताऽध्याय ॥

६२ ४४१६

मानवधर्मशास्त्रसंहिता

आदि- स्वयम्भवे तमस्कृत्य ब्रह्माण्डमिततजमे ।
मनुप्रणीतान विविधान धर्मान व यामि दास्वतोन् ॥ १
अ त- इत्यतमानव दास्य भगुप्रोक्त पत्र द्विव ।
अस्याचारवात्रित्य यथेष्टा प्राप्नुयाद्गतिम् ॥ १२६
इति आमनवे धर्मास्तत्र भूमप्राप्ताया सहिताया द्वादशोऽध्याय ।

७६ ४३५

रत्नसंग्रह

आदि- नत्वा राम धन याम गारदा च महत्वरम् ।
बालगोषाय गाविद कुम्भे रत्नसंग्रहम् ॥ १

अन्त- धर्माधिकारिगमस्य निर्ममे तनुज कृती ।

निवधान् वीक्ष्य निर्व[रव]ज्जाद् गोविन्दो रत्नमग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितराममुत्तश्रीमद्गोविन्दपण्डितकृती ज्योतिषरत्नमग्रह समाप्तः ।

८८ ४५३३

शांखाशास्त्र

आदि- श्वयम्भुवे नमस्कृत्य सृष्टिमहारकारिणे ।

त्रातुर्वर्णप्रहिताययि शम्भु. शान्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त- शत्रुप्रोक्तमिदं शान्त्रं योऽधीते द्विजपुङ्गवः ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शान्ते धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्यायः ।

८९ ४४४७

शांखायनसूत्र भाष्य

आदि- ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नमः । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनिःश्रेयस-
मुपादित्सितं तच्च विधिपृथक्क्रियासाध्यं, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या वाचिन् कुत एतत्
इत्यादि ।

अन्त- शांखायनसूत्रस्य नमः शिष्यहितेच्छया ।

वरदत्तमुतो भाष्यमानतीयोऽङ्करोन्नवम् ॥

इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।



६-पुराणकथामाहात्म्यादि

७७

४२३०

भागवत

१. भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ. १ मे ३८ तक ।

२. नारायणकवच पृ. ३९ मे ५६ तक

३. मत्स्यलोकी गीता पृ. ५७ से ६० तक

४. चतुष्पलोकी गीता पृ. ६१ मे ६३ ,

५. एकल्लोकीरामायण पृ. ६४ मे ६५ ,

६. भारतसावित्री पृ. ६५ मे ६७ ,

७. रामरक्षाकवच पृ. ६८ से ८१ ,

८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ. ८२ मे ८९ ,

(पद्मपुराणातर्ग)

९. नारदगीता पृ. १०० मे १०१ तक, और

१०. इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ. १०२ से ११३ तक है ।

६७ ६४८५

भागवतक्रमसदभटोका

अत- इति वनियुगपात्रनस्वभजनविभजनप्रयाजनावतारधीर्धीभागवत्तत्पयवचरगानु
चरणाचार विध्यवपुणवराजमभाजनभजनरूपसनातनागुणासनभारतीगर्भे श्रीभागवतमर्भे
क्रममदर्भो नाम सप्तम सदभ समाप्तदद्याय भागवतमदर्भ ।

१३३ ६४८८

भागवतस दर्भे तत्त्वसदर्भ प्रथम

आदि- जयता मधुरामूमो श्रीलरूपसनातनी ।
यो विनेययतस्तस्य आपिबो पुस्तकामिमाम् ॥ ३
वाऽपि तद्वाचवा भट्टो दक्षिणद्विजवाज ।
विविच्यऽप्यलिखन्प्रय त्रिविताद्वद्ववपुणव ॥ ४
तस्याद्य ग्रन्थमालेख्य क्रान्त्युक्ता तस्यष्टितम् ।
पर्यालाख्याधपर्यायि कृत्वा लिखति जीवक ॥ ५

७-वेदान्त

२ ४५९४

अत करणबोध सविवलिक

अत- पितृपादाजपरागधनिना मया श्रीवल्लभन रचिता त्रि(वि)वति पूरातामगात ।

३ ४२४४

अनुस्मृति

आदि- गतानीव उवाच-
ॐ महातजा महाप्राण सवगास्त्रविगारम् ।
असागवमवधस्तु पुण्यो द्विजमत्तम ॥ १
अत- ननु ध्यायति या दहा वययामि च तस्त्वचम् ।
सवबधविनिमुक्त परपदमवाप्नुयात् ॥ ७३
इति श्रीमहाभारत विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृति सम्पूर्णा ।

२३ ४१४१

आत्मबोध सटीक

आदि- टीका- गतमखपूजितपाद गतपधमनसाप्यगोचराकारम् ।
विकसज्जलरहनेत्र(त्र)उमाछायाद्भुमाश्रय शम्भुम् ॥ १
मूर- तपाभि[] शीण[य]माना[जा]ना गताना वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मबोधो विधीयत ॥ १
अत- दिग्देवानाचनपेक्षसवग गीताहिहृत्तित्यसख निरञ्जनम् ॥
य स्वात्मबोध भजत विनि क्रिय य सववित् सवगतोऽमृतो भवन ॥ ६७

टीका— शीतादिद्वन्द्वदु खानि हरतीति गीतादिहृत् नित्यमुख मोक्षानन्दप्रापकत्वाद् ।
इतरतीर्थसु तद्विपरीत दृ(द्र)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे रनातरय न किञ्चिदवशिष्यत इति भाव ।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छंकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरण ममाप्तम् ।

५८. ६०६१

नाटकद्वीपाख्याख्या

श्रीगणेशाय नमः ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरी ।

अर्थो नाटकद्वीपस्य मया सक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य नि प्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षण मङ्गलमाचरन्
मन्दाधिकारिणामनायामेन नि प्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्वारोपापवादाभ्या नि प्रपञ्च
प्रपञ्च्यते शिष्याणा बोधसिद्ध्यर्थं तत्त्वज्ञककल्पित क्रम इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्वारोप ताव-
दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्णं पूर्णं स्वमायया ।

स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपतः ॥ १

देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।

मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम् ॥ २

अन्त— न तत्र मानापेक्षाम्नि स्वप्रकाशस्वरूपतः ।

तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुति पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५

यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धिय ब्रज ।

शरणा तदधीनोन्तर्वहिर्वेषोनुभूयनाम् ॥ २६

इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किञ्चित् प्रमाणम-
पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तो मान
नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृ-
गिति ॥२५॥ एवमुक्तमाधिकारिण आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाविकारिणस्त दर्शयति
यदि सर्वेति बुद्धिशरणात्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते बाह्यम-
भ्यन्तर वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तत्रैवानुभूयतामित्यर्थः ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिङ्करेण श्रीराम-
कृष्णस्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशम ॥१०॥

११-ज्योतिष

५ ८४४२

अदभतसागर

इति आपाकसमयाद्भुतावन ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्चयशिवरश्रीमदवल्लास
सेनेवधिररित अदभुतसागर समाप्त ।

पुस्तकके अन्तम इन्वाकुवशोत्पन्न भानसिंहादि राजाश्रावा वगवणन है ।

लिपिकता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भरू सिधजीपठनाथम ।

लिपिस्थान—गिवपुरी ग्राम । सवत १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६ ४६३०

अदभतसामरी प्रथम खण्ड

पूरा प्रथमी पत्र मरुया ऊपर २६० लिखी है किन्तु यह प्रति धपूरा है । प्रथिमे ऊपर
'पुस्तकमिद गुवनसनासुखजीवस्य ऐसा लेख है ।

७ ४३१४

(अयनाशादिकरणविधि)

इस गुटक म उपप्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त गीमबोध करणकुतूहल गनिचारफल बध्या
भद, सतानाथ औपधविधिके दोहे व यत्र बीच बीचमे दिय हुए हैं । दोहे उपयोगी है ।
२४ पृष्ठ तक अयनाशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ म ७४ पृष्ठ तक गीमबोध है ।
इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४ ७०६१

आकाशपुस्त्यधिर

यह मुपुष्पाकरक है जिसम पुष्पाकारम मुपुष्पा नाडाम नक्षत्रमानाकी स्थापना
करके बताया गया है । चित्र अध्वत य है ।

५० ४१०४

ग्रहणपद्धति

आदि— श्रीमद्गोबद्ध नथर नरना धीरमतामगाम ।

स्वस्थानपाथयुता कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त— नवधतिविक्रमवर्षे काम्यवनवासिनरामग ।

रचितोपरामगपद्धतिरियमतिहवा ग्रहणानाम ॥ २४

अति श्रीमन्नदरामविरचिता ग्रहणपद्धति समाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० सवत । स्थान—वाम्यवन ।

६१ ४ ६२

गणितनाममाला

आदि— गणितस्य नाममानाया बध्य गुरुप्रगादत ।

बानानां सम्बोधाया हरिदो द्विजाप्रगा ॥ १

अन्त— कुण्डलगाविप्रग हरित्तन धामता ।

नाममाना कृता अष्टा देवपुत्रो प्रमात्त ॥ ०

श्रीश्रीपतिसुनेनैपा बालाना वुड्विद्वये ।

गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रसग्रहे ॥ ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेय संपूर्णा ।

६३ ४७७१ (१)

गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० आके विभवनामचतुस्रे वसन्तर्तो वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्या-
मिन्दुवामरे सप्तपिक्वेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रथके प्रारम्भमे मराठी भाषामे गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र है ।

७८. ४६७२

चमत्कारचिन्तामणि

अन्त— दधीचे पुरे लाटहासे पुराणा गणाच्छीहरे' स्थापित स्यान्पाल द्विजोऽचीकरात्सुन्द-
राल द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीय ।

लिखित देराश्री लीलाधर पुरुषोत्तममुत्त कनकपुरमध्ये ।

८६ ४२८६

ज्योतिषरत्नमाला

आदि— प्रभवविरतिमव्यज्ञानवन्धा नितान्त

विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।

तमहमिहनिमित्त विव्वजन्मात्ययाना—

मनुमित्तमभिवन्दे भग्नहै कालमीशम् ॥ १

विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीत

वराहललादिप्रपञ्चशास्त्रम् ।

दैवज्ञरुण्ठाभरणार्थमेषा—

विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त— सुवृत्तया श्रीपतिदृढयानया

कठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।

अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यल

सभाम् भूम्ना गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचिताया ज्योतिषरत्नमालाया प्रतिष्ठाप्रकरणं विंशतितमम् ।

९७ ४४०५

ज्योतिषरत्नमाला

अन्त— आमदपडे चन्द्रा उत्तररु श्रीदुर्गाजीगण्डे रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावालगच्छे
भट्टारक श्रीगोडदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखित स्वशिष्यपरपरावाचनार्थ
तथा स्वकार्यार्थ तथा च परोपकारार्थ उच्छेकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७

ज्योतिषसार सग्रह

आदि— लग्न लग्नपतिर्वलान्वितवपु केन्द्रत्रिकोणे शिवे

पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपति ध्रुवम् ।

सच्छाल विभवान्वित गतवज्ज मुक्तातपत्रावितम्
जातो निम्नवृत्ते विभूतिपुष्प गसति गगादय ॥

अत- सत्त्वन जायत मिद्धि रजसिद्धिगुण पनम ।
तामसे पनता नास्ति निवस्य वदन तथा ॥

१०६ ४४१०

ज्योतिषसारसंग्रह

आदि- यन्म मेघ गुरुद्वय करोति तदा दुर्मिदमनावष्टि ।

अत- नेगा भागे पुरे ग्रामे मय भोपय नेवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ॥

११८ ६३६६

जन्मपत्रीप्रकार

यह ग्रन्थ मारवाण्डम रचित है क्याकि चरखड जोधपुर, जालार साजत आदि स्थानों के
दिय गय है ।

१२० ४२१५

जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानम ही लिखा गई है । कारण यह है कि 'राजस्थान' के प्राय सभी
नगरीक जन्मपत्री इसम विद्यमान है ।

१७४ ६४२०

ताजिकसारसति

वर्षे गनहयाङ्गभूपरिमिन मास तथा फाल्गुन
पक्षे शुभतर निधी द्वाभिन आम्बरवातत्पुरे
श्यामति विष्णुनामनपती बरीभवन् हरी
पति [ति] आगम्हपरल्लक्ष्मया सामन्तनामाङ्करीत् ।

१६१ ४८३०

नरपतिजयचर्या

पूर्णाभिप्रेतभीम निनपतिवपन्न माधव गुनपक्ष
मन्त्रान्दाष्टवन्न समयति तदा सामन्तावतस ।
देवाङ्गनाक्षमध्य त्रिदितम्बरपुटाराममित्री मिलस्य
पाठाव पाठयोग्य कनयति तन्मा ध्याजयपानसिन् ।

१६६ ४८५१

नवरोगप्रकाश

आदि- हृद्यतजीवमिजस्तिरोमकयवनादिगदित्तास्त्राणाम ।
मत्तमवनावधानाप वदय विचिच्छन्द रम्यम ॥

अत- श्रीगीरापतिनगरे यवनगास्त्राहमान् सुधमम ।
निवन्तावपाठनेन प्रकाशित गिध्यजनतुल्य ॥
छट्ठोऽयेच्छे भूतावा माधववननिवागरे ।
सम्पत्तिरामतोपाय मगाराम ममानिधन ॥

२०१ ७०८८

मष्टोद्दिष्टविधि

अत- विसमजसकिरणधनिय महिया मरनिवहपमिपय
पयजुधरम तिगुधणमिखर कुतहर मगहूर गुणनिलय जिगुजमहि ।

२०६ ७०१०

नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—मारमामध्ये महोपाध्यायगुणसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिर० दीना-
पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२

नारचन्द्रयत्रकोद्धार सटिप्पण

आदि— अर्हत जिन श्रीन नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।

मारमुद्धियते किञ्चित् ज्योतिषदीर्घनीरधे ॥ १

अन्त— इति नारचन्द्रटिप्पणके श्रीमागरचन्द्रमूरिकृते द्वितीय प्रकीर्णक समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्ररयोभयप्रकीर्णके गतकमाद्धंशत १५० यत्रकाणि समाप्तानि ।

२२८. ४१८३

प्रश्नमार्ग

आदि— श्री गुह्यो नम । मध्याटव्यविष दुग्गसिन्धुकन्याचव प्रिया ।

ध्यायामि साध्वह बुद्धे शुद्धयं वृद्धयं च सिद्धये ॥ १

अन्त— कुम्भपूर्तिविमानुचन्द्रमोवृद्धिरिप्फरिपुचन्द्रमदहक् ।

धान्यवृद्धिगुभदनवृत्तिका गङ्गनम्रवृत्तिनायराशय ॥ ३६

विदुमल्लिपिविसर्गवीचिकाश्ट गवद्विपदहीनदूषण ।

हस्तवेगजमबुद्धिपूर्वक क्षन्तुमर्हति समीक्ष्य सज्जन ॥

श्रीसावशिवापंणनस्तु । इति प्रश्नमार्गस्ममाप्तिमगमत् ।

२५५ ४४५२

पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि— अभिवद्य महादेव सर्वशान्त्रविशारदम् ।

भविष्यदर्थवोवाय पप्रच्छुमुं नयो मुदा ॥ १

अन्त— भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनच स्वप्ने ।

मृत्येषु वर्षं सुखता विचार्या कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाद्ध ५५५६ 'पञ्चपक्षी' मे यह ग्लोक निम्नप्रकार है—

भुवते तु माम गमने तु पक्ष राज्ये क्षणानीत्ययनच स्वप्ने ।

मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

२६८ ४८६३

पद्धतिप्रकाश

आदि— नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽय ग्रन्थो रवे पादयुगप्रभावात् ।

शौके नगाम्भोधिगरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचा प्रवधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥ १०४

२८२. ४६७८

पैतामही सारिणी

अन्त— आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन (व) र श्रीगोपिराजाभिध ।

सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणि ॥

तज्ज श्रीपतिरग्रणी कृतिविग्री मिद्धान्तपारगम् ।

तत्सन्तुर्मधुसूदनाख्यगणरु पैतामही निर्ममे ॥ —

२८६ ४२७७

बालावबोध

अत- अष्ट ग्रहरश्च त्याज्य चतुष सप्तमस्तथा
द्वितीय पचमा षष्ठ षष्ठी रविपूर्वक ॥

भादि- उन्वाचलपथत्तामस्ताचलमहीमिमा ।
विख्याता बालबोधोपाय मुञ्जान्त्या ॥
पूर्वमाग्रपथत्ता पश्चिमोदधिसमुता
बालमात्रमत नित्य समां तु दिनद्वय ॥

इति श्री भजादित्यविरचित ज्योतिष्शास्त्र बालावबोधोपाध्याय ।

२६४ ७११२

बालबोध

अत- इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवदाङ्गपाठक्षिणहिमाराजगराधवासश्रीसुन्दर
गमहृदयानन्द- श्रीहरिणखट्टे बालबोधमकरन्दपट्टितमणी ब्रह्माण्डमुद्राधिकार पचम ।

२६६ ६२१२

बीजवासनाभाष्य

अत- इति श्रीमन्मातङ्गारमजप्रवटस्थगोकुलप्रभनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य
मणिसोदण्डपण्डितमण्डलीमण्डलमन्त्रभट्टारमजमाधवभट्टसुतसज्जनापभट्टसूनुना गणकमण्डली
मण्डनेन ज्योतिर्विभिताततोपहेतव विरचित बीजवासनाभाष्य सप्त(क)म देहापनामनवस
श्रीमत्प्रचण्डप्रतापमावभौमरामसिहारायस्म्भावत्वां अम्बिकश्वरपुष्पामकाभनप १६०६ मित
गव चन्द्रगुप्तपथ गुरी भक्तम्या ममाप्तिमममत् । सवत १७७६ गव १६६१ प्रथम
प्राविनङ्कल्या १२ भोम लि० इन्द्रमणिना ।

२६८ ४१८६

बहुज्जातक

भादि- श्रुतित्वे परिकल्पित गगभता वरमा पुनजमना-
मास्मेत्यात्मविदा क्रतुद्वय यजना(ता)भर्ता मह ज्योतिषाम ।
- गोकाना प्रलयोद्भवस्थितिबिभुश्चानवधा य यती ।
वाच न स्वनेवकिरणस्त्रलोम्भदीपा रवि ॥ १

अत- दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातश्रुतप्रसादमतिनेद ।
शास्त्रमुपसग्रहा नमोऽस्तु पूर्वप्रणतभ्य ॥ १०

इति वराहमिहिरकृतौ बहुज्जातके उपसहाराख्य पञ्चविंशोऽध्याय ।

३३६ ४२८४

मयूरचित्र

भादि- अथ मयूरचित्र लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमय सुरभुटुटनिषट्चरणकमत्रोपि ।
कुल्लेङ्गजलि त्रिनेत्र स जयति धाम्ना निधि सूर्य ॥

३४ ४२८३

माससारिणी

भादि- सूर्ये स्पष्टग्रहविधि ५२ ।

अन्त- ^{४ ८ ८ १} वेदाष्टगजभूराज्याद्गता विक्रमवत्सरा ।

शालिवाहन

मार्गशीर्षे मिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।

मानानां सारिणीश्रेष्ठ बालानां शीघ्रवृद्धिदम् ॥ २

४२२. ५१६५

रमलनवरत्न

नगरसवमुच्चन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमाके ।

शिववाटिकाया अवन्त्या नीतारामपुत्रेण अनूपदेव्या मुनेन परमसुखमनादयत्न
रचितमिदम् ।

३३२ ४७६६

रमलमार

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टमुनगेकुलवास्त्वयश्रीपतिविरचित ।)

आदि- य सिद्धनदपुर्या म मे हरेत्युण्णामय

गुलावगायो धर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भव ॥ ३

गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षान्दवगशिरोमणे

प्रसादान् कुरुते रम्यमार श्रीपतिना मया ॥ ४

४७० ४३५५

धमन्तराजशाकुन

आदि- विरचिनारायणगणकरेभ्य शचीपतिन्कदावनायकेभ्य ।

लक्ष्मीभवानीपतिदेवनाभ्य सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्य ॥ १

अन्त- इति श्रीधमन्तराजशाकुने सदागमार्थशोभने ।

समस्तमत्यकौतुके कृत प्रभावकातनम् ॥ विंशतितमो नय ॥ २०

इति भट्टवसन्तराजविरचित दारिद्र्यचविद्रावण नाम सर्वशाकुन समाप्तम् ।

६२३ ४४२७

क्षेत्रसमाप्तावचूरि

आदि- श्रीवीरजिनेन्द्र सर्वकाततमोरविम् ।

नत्वा नव्यो नष्टक्षेत्रममामोहचवचूर्ण्यते ॥

ऐद युगीनान् मक्षिप्तस्त्रीनपेक्ष्य भगवद्भि

श्रीसोमतिलकसूरीस्वरविदवेयमति महार्थ ॥ २

अन्त- एव सर्वद्वीपलमुद्रादिसख्या आनेया तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वात्र सर्वेऽपि शशिनो-
रवयश्च पृथक् प्रत्येकं द्वात्रिंशच्छत तथा वह्निमनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्ध-
प्रमाणान्च ज्ञेया ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचितायां
नव्यक्षेत्रसमामस्यावचूर्णि. श्रीगुणरत्नसूरिविरचिता ।

१२-छन्द शास्त्र

४ ४४३२

वत्तमुक्तावली

आदि- मन्मथलघुमपूर्णा तत्कृताणां वक्तीना

म्प्रभवति सग्यहेतु सश्रितायन ।

क्षुभगणाद्या म्याललावावसान

कूलयति भवतीय छन्दसा मानिनीव ॥ १

अन्त- अतो मेरोरर्थास्त्वगविषयणीजातिपुलाङ्गिनामप्रमा

दकद्वपादिप्रमितिरधिराज्ञाति २ को युत स्यात् ।

०दन्तु स्यात्सम्या भवति यदि वा मित्रिनरकयुक्त

ममुद्दिष्टाद् स्याद्द्विगुणवपुषा मत्तययकोनमाध्या ॥

इति धामस्त विपुर् धरमस्तारिविरचितायां वत्तमुक्तावली (स्या) प्रस्तराणि कृणु नामा
१०मो गुच्छ ॥

निमित्तार्त्ता-वराहप्रामस्थ वम्मणुमट्टारमज वासिङ्ग ।

१५ ७८१३

वत्तरनागरवसि

अ त- गारवाणपम्बतवे चत्रक विगदे ३४ ।

एकाग्र्यां तिथौ राशौ यत्तसि विग्रहे पुर ॥ १

भूतनाथप्रमाण गमैगन लिपोक्तम् ।

कस्याणमस्तु श्रमास्तु विजयोस्तु गमस्तु च ॥ २

पुस्तित्वेय यदत्यवाविधमस्तु प्रजाम् च ॥

१३-संगीत

१ ६७४१

अनुष संगीतरत्नाकर

आदि- श्रीगुरुमखाधिपवटुक्कारदाभ्यो नम ।

श्रीमज्जनादननत्वा संगीतापवनप्र ।

त यते भावभट्ट न रागालापनमजरा ॥ १

त्रिगुणमरामास्यु नवोपरागका स्मृत ।

रागाणां विनाति प्रोक्ता भाषा पण्यवति स्मृता ॥ २

अन्त- इति श्रीमन्मण्डोदकुनदिनकरमाहाराजाधिराजश्री
मानचतु समुद्रमन्त्रविद्धमन्त्रेदिनीप्रतिपालनचतुरवदायताम्र (सर)

हस्तजयश्रीविराज
निजितचित्तमणिरिव

प्रतापतापितारिवगंधर्मावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपमिहप्रमोदितश्रीमहीमहेन्द्रमोनि-
मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजर्हा मभामउगमगीतराजनाईनभट्टागजानुष्टुप-
चक्रवर्तिसगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीय समाप्त ॥
२ छ॥ छ॥ ॥ छ॥ छ॥,

२ ४१६६

रागमाना

आदि— नन्वा शम्भुपदाम्बुज तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्व विघ्ननिवारक च सतत न वारणास्य स्मरन् ।
रागाणा किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदाना ब्रुवे
पण्णा लक्षणरूपगानसमयान् सगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त— रागाणा भैरवादीना पण्णा रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै व्रजनाथेन मूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्यव्रजनाथदीक्षितविरचित। हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला
समाप्ता । लिपिकर्ता— पुरुषोत्तम आचार्य ।



१४—कामशास्त्र

३ ४४२६

रतिरहस्य

आदि— येनाकारिप्रमभमचिरादद्धंनारीश्वरव
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोर्मित्र सजयति मुदा धाम वामप्रचारो
देव श्रीमान् भवरसभुजा दैवत चित्तजन्मा ॥ १

अन्त— सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूप ॥
वेश्मनि विहितस्तेषा परस्पर प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोककृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशम परिच्छेद ॥

४ ४७७५

रतिरहस्य

अन्त— शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुन ॥
तापीतीरनिवसिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तक ।
शिष्याणा पठनाय वामलघिया सीख्याय शैवेन यत् ॥

१५-काव्य नाटक चम्पू (१)

२ ४३७६ अर्ध्यात्मरामायण मुन्दरकाण्ड सटीक

आदि- श्रीमहाश्व उवाच- सतयोजनविस्तीर्ण समुद्र भकरालयम् ।
लिलपयिषुरानन्दसन्दोहा मारुतात्मज ॥ १

अत- यत्पादपद्मयुगलं तु न सीदलाद्य
रुग्णाय विष्णुपदवामतुरां प्रयाति ॥
तेनैव किं पुनरमी परिरक्षमूर्ता
रामेण बाधुतनय कृतपुण्यपुञ्ज ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायण उभयमहेश्वरसन्वाते मुन्दरकाण्ड पञ्चमः सर्गः ॥

३ ४५२० अर्ध्यात्मरामायणसमु

अत- इति श्रीमत्सरलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मतौ
वमरा पुत्रस्य श्रारामवमरा कृतावध्यात्मरामायणसंतावुत्तरकाण्ड नवमः सर्गः ॥ समाप्तः ॥

१० ४३३१ अनघराघव

आदि- ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिन्या नमः ॥
निष्प्रत्यूहमुपान्मह भगवतः कीमादकालक्षणे ।
कीकप्रीतिचकोरपारगपटुर्द्योतिष्मती लोचने ॥
याम्यामधविबोधमुग्धमधरशिरधनिद्रावतौ ।
नाभीपल्लवपुष्परीपमुकुटं कञ्च मपत्नीवृत ॥ १

अन्त- हृष्टवा सुप्यत्सुलस्या जयति विजयते जानकीजानिरैकः ।

इति निष्क्रान्ता सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम पष्ठाङ्कः समाप्तः ।

१२ ६४०२ अर्ध्यापदेश क्षतक

लिपिकर्ता-अभयराम दाहूपधी नागपुर-

नभेऽप्यगमदो तपोभिरमल धीपदमनाभात्सुतः ।
यद्गो मिथिलाखिलावनितलालकारचूटामणिः ॥
तेनेन मधुसूदनेन कविना विद्यावता निमित्त
लोकानां क्षतकं मुने सुहृतिनामयापनेनाह्वयम् ॥ १५

१४ ४३२५ अमरक्षतक सटिप्पण

अन्त- प्रासादे सा दिशिदिशि च सा पष्ठतः सा पुरः सा ।
पथके सा पथि पथि च सा तन्वियोगानुरस्य ॥

ततो जैत्र प्रकृतिरपरा नास्ति मे यापि मा मा ।

मा मा मा ना जगति भवति वाऽप्रमर्दतात ॥ १००

इति श्रीमद्भारवाच्यविरचितसमस्ततन्त्रमन्त्राधिभगवत् ।

१८ ४३३०

श्रुतुमहार

आदि— प्रचण्डगुप्तं स्पृहणीयान्द्रमा ।

मदायगाहधनपाग्निदय ॥

दिनातरम्पोऽनुपजातमन्मयो ।

निदाघकान्त मगुपागत प्रिये ॥ १

अन्त— आलक्ष्यचन्द्रनरना मन्त्रगन्तारा ।

कदम्बदंशिविनिर्गताग्रायपट्या ॥

माणे मयो मयुरतोमनभू गनार्-

नार्यो हन्ति हृदय प्रमन नराणाम् ॥ २८

इति श्रीविशेषाखाये श्रीतानिशमरतो श्रुतुमहारे वसन्तप्रगन्तो नाम पञ्च मर्ग मन्त्रा
तत्त्वमामो मन्त्राण्य गन्त्य ॥

३० ४३६५

कुमारविहारशतक

आदि— तेज पुण्यातु पाशो दुरितत्रिजयि न शाश्वतानन्दबीज ।

महान्त मन्त्ररन्त्या भुजगपतिफणाचक्रगर्भभाजि ॥

कमाण्यष्टी ममन्ताग्निभुवन भवनोन्मगताना जनाना ।

यश्चेत्तु नृत्पयान वहति निजतनुवृत्तनामान्यस्याम् ॥ १

अन्त— आस्ता तात्रमनुष्य प्रकृतिमलिनयी शाश्वतालोचक्षु-

वंक्तुं वक्ष्येत्तुभिविगिरपि किमन तस्य मोन्दयन्क्षमां ॥

स्त्रीणा शेषाभिलाप परमलयमय श्वानमाप्नोऽपि यस्मि-

न्नाम्या श्रीपाद्वन्तायस्त्रिभुवनहृमुदागमचन्द्रचकार ॥ ११६

इति विहारशतक समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१. ७७६४

कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त— शाके दृशश्चक्रे नभसि नभोमणिदिने पट्ट्याम् ॥

व्रजपतिमद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५ ५६०२

धर्मशर्माभ्युदयम्

आदि— श्रीनाभिमूनोश्चिरमन्त्रियुग्म-

नखेन्दव कोपुदमेघयन्तु ॥

यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-

चूडाश्मगर्भप्रतिविम्बमेण ॥ १

अतः प्रमज्जय विचित्रैर्वीजसूतोपचार
प्रभुरिहहरिबद्राधिता मागतदमाम ॥
तदनु तदनुयाया प्राप पयतपूजो
अचिन्तितमुत्तराणि स्वपद नानितोः ॥ १८१

इति महाविश्वेश्वरिचन्द्रविरचिते श्रीधम्मगम्भस्म्युदय महाकाव्ये श्रीधमनामनिर्वाणतमना
नाम अचिन्तितम तस्य पूरण । कविबोधनन तत्रव-

मुक्ताफलस्थितिरलङ्कृतिपुप्रसिद्ध
स्तथाद्रव्य इति तिमलमूर्तिरासीत् ॥
वायस्य एव निरवद्यगुणग्रहस्त
अकोपिय कुलमपमल चवार ॥ २
सावध्याम्बुनिधि बलाकुलगृह सौभाग्यसद्भाग्ययो ।
श्रीदायेमविलासवासवलभीभूपास्पद सम्पदाम् ॥
गीताचारविषयविस्मयमहीप्राणप्रिया दूलिन —
गर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रम्येति तस्यामनन् ॥ ३
महत्पदाम्भोरहचचरीव
स्तयो मुत श्रीहरिचन्द्र आसीत् ॥
गुह्यप्रसादात्मला बभूवु
सारस्वते श्रोतसि मय्य वाच ॥ ४
रा वणपीमूषरसप्रवाह
रम्यध्वनरच्छनि सायवाह ॥
श्रीधमगर्भागमुत्पाभिपान
महाववि काव्यमि व्यधत् ॥ ७

६६ ४०६२ नलोदय टीका

आदि- नरवा हरिकमलज्जगदासिपारिणि ।
लक्ष्मीनखीवविजसद्वदय दयाधिपम् ॥
वागीश्वरीमथ गुरु इव परापरेषा ।
टीका मनोरथकवि स्वधिया विवत् ॥ १
नलोदयपदावोपादनुषा खेद विमुञ्चत ।
मनोरथकृता टीका गुह्या सम्प्रति पश्यत ॥ २

अतः नलोदयमहाराध्यटीका विषयचन्द्रिका ।
आचन्द्रतारक यावन्मूयादानदवदिनी ॥ ३
एवेन यमकालपो निम्बरीतु मुदुगव ।
तस्मात्तन्तो दयावत् स्निह्यतु मयि निम्नरा ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचिताया विबुधचन्द्रिकाया नलोदयमहाकाव्यटीकाया चतुर्थ
प्रारंभः ॥ ४ ॥ समाप्त ॥

७४ ४३८८

नृसिंहचम्पू

आदि— कनकचिदुत्कूल कृष्णान्तामिगत
 धामितभुवनभार कोऽपि नीनावतार ॥
 निभुवनगुणकारी धोषधारी नृसिंह
 परिकणितरमागो भगल नस्तनोतु ॥ १

अन्त— इति श्रीमन्महाराजधिराजस्मृतगीमरीयोदायोजनेकानवद्यपद्यगुणगगविराजमान-
 श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूवाच्ये पञ्चमः स्तवः ॥ ५ ॥

८६. ६२४४

महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वराचरणं यथा—

गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुण शास्त्रप्रवाहागमे ।
 तेषामात्मजसद्व्यक्तिनिपुण स्यातो हि धर्मागमे ॥
 सोऽयं लेखितग्रन्थमेव गुह्यो गोवर्धनस्यातिवान् ।
 पाठे चात्मपरार्थमेव गच्छत तस्माच्छिष्टप्रीतये ॥ २
 अस्मत्पितामातुलपुण्यमूर्ते-
 विख्यातनाम्ना हरजीनि गजे ॥
 गोवर्धनोऽह इदमालोक्य
 प्रमाद तेषा गुरुमातुलस्य ॥ ३
 वर्णनीते वेदगोभूषेति ।
 मामेऽपाठे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
 ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
 तीर्थेऽपुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ॥ ४

स० १६६४ वर्षे आपाढमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमास्या भीमवामरे च ठाकुरगोविन्दमुत्ठाकुर-
 जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखित इदं पुस्तकं मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८. ६४७१

महाभारत कर्णपर्व

अन्त— हुताग्नागाद्रिकुर्मिमिते शके ।
 श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
 त्रयोदशी भीमदिने समाप्त-
 मिदं तु शास्त्रं हरिलालमिश्रात् ॥
 लिखनत इति शेषः । दाता मध्ये ।

११८. ६१६६

महाभारत मोक्षपर्व

अन्त— मनरामेणालेखि नभोत्यशरारे धृत्यव्दशके भारत्या सेष जगति शमस्तु ।

१२५ ४३९१

मुद्राराक्षस सटीक

आदि— सिद्धारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भू गिका ।
 भकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मद्रेण च ॥

तृतीयत्रिवरीतिमेति गिरसश्शस्वमदादोलन ।

यस्य श्रीगणनायक स दिगंतु श्रयामि भूयासि व ॥ १

अत- बाणाग्नयतुमहीसक्यामिते जयनामके ।

ढणिना व्याकृत जीयामुद्रागक्षसनाटवम् ॥

रचनाकाल-गावे १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येद पुस्तकम् ।

१३५ ४३६०

मेघदूत सटीक

अत- भासीनिमलवन्धतरणिस्वाचारचित्तामणि

सद्विद्यासरणिभवाचितरणि श्रीसोमनाथा द्विज ॥

सूनुस्तस्य घनेवरो व्यरचयटीका निशूदाविनी ।

काव्य स्मिन् सरसप्रपञ्चविषये श्रीमेघदूतामिध ॥ १

१३६ ५१५६

मेघदूत सटीक

अत- श्रीवकुण्ठाभिधगुरुवचोलघतत्वावबोधो ।

यारागस्था विबुधनिकरालकृताया मतीन्द्र ॥

पूर्णादिदशचतुररचना मधुस्तस्य टीका ।

काव्यच्छदानिगमनिपुणो बालबुद्धय व्यतानीत ॥ १

१५६ ७३०२

रघुवशटीका

अत- वद्वसुसम्मतसम बहिर्वाण परमानिय ।

आमोज सुदि एवादी भगुवार इह गानिये ॥

लिङ्ग छुगालसागरगणि मंदपाटदेग वराटमहते सप्तामगहनगरे तथा दुर्वरकाग्रामे ।

१६३ ७०८३

राधाकृष्णप्रभसम्पुटकाव्य

अत- पद्मशूयस्वनिभिमुणिते तपस्य ।

श्रीरूपवार मधुरिमापतपानपुष्ट ॥

राधागिरीद्वयरा सरसोस्तटाते ।

सत्प्रभसम्पुटमविदत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१ ४४००

रामहनुमन्नाटक

आदि- आरामे दारयन कवयो वाक्पात्रा वन प्रति प्रप्यमाण लक्ष्मणस्य भाव ।

निर्यातमावध्य वताय राम ।

मोमिनिहस्तभिनवापकष्य ॥

विश्रातदृष्टि विल जापयती ।

दध्यो स य सत्यमिन्द्र हृदत ॥ १

अत- रकारादीनि नामानि श्रव्यतो मम पावति ।

मन प्रपन्नतामेति रामनामाभिगयया ॥

इति रामहनुमन नाटकम् ।

२०२ ६०२०

रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त- वाल्मीकिना विरचिन श्रीरामायणपुस्तकम् ।

निमित्त लक्ष्मणाख्येन समाप्त भक्तनुष्टिदम् ॥

२१६. ७०८७

शिशुपाल ब(व)घ

अन्त- इति श्रीमाघवणिग्विरचिते महाकाव्ये श्रघ्वंके शिशुपालवधो नामविंशति(त)
म सर्गं ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ म० १५५२ वर्षे चैत्रशुद्धद्वादशीदिने सोमवासरे
ब्रह्मश्री(पि)रतन पटनाथे श्री माघकाव्ये लिखित ज्योतिरगुमल शुभ भवतु ।

२२१. ६१७६

शृङ्गारमाला

अन्त- श्री गुरुदेव ।

सत्तारसर्पमुखमर्दनतादयन्पा

विज्ञानभाषटनपाटितमोहकूपा ॥

येषा कटाक्षकनिता. फलिता नसन्ति

गङ्गेशमिश्रगुरव सततं जयन्ति ॥ १

कविर्वंशवर्णनम् ।

पानीयप्रस्थात् परतन्तु मार्गो

पट्क्रोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ॥

ग्रामो 'घरोडे'ति प्रनिद्धनामा

पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीया. ॥ १०

श्रीविष्णुदत्तस्त्वकुलाब्जभानु-

नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥

कौशल्यागोत्रो यजुषामधीता

माध्यन्दिनीयो द्विजगौडजोमी ॥ ११

तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्या ।

पङ्क्तिनीर्वरमपुत्रमत्री ॥

दामोदरो वैद्यकग्रथकर्ता

श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमामीत् ॥ १२

तुलसीमाधवगगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।

माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजै ॥ १३

साहित्ये रसग्रथकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजात कवि-

विवूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चागले ॥

तत्पुत्रेण कृता मया रत्नमयी माला रसोपासकाऽऽ-

ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितुं गुणैरपि युता कल्पारसब्रह्मणि ॥ १४

सुखलालेन सुकविना रचिता शृंगारमणिमयीमाला ।

सा रसिकानां सगुणसुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५

सुधाशुष्योमवस्विन्दो वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।

शुभा शृंगारमालेय रविपुण्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिन्धौ विप्रवरवावूरायभिष्रसूनुसुखलासमिश्रेण
विरचिताया शृंगारमालाया सवीणवर्णनं नाम तृतीयं विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथमं विरचनम्—नायिकाभदविवर्णनम् ।

द्वितीयं ॥ —शिवनसवर्णनम् ।

तृतीयं ॥ —पङ्कजसुवर्णनम् (सवीण विरचनम्) ।

२२३ ५३०३

सवित्प्रकाश

अन्त- श्रीगोविन्दकीर्णमीशमजनप्राप्त कवीगाग्रणी ।

श्रीमत्काहविव सुत प्रसुपुवे श्रीकमदेवी च य ॥

वेदाताम्बुजभास्वतायबहुल सवित्प्रकाशाभिध ।

काय तेन कृत समाप्तिमगमदविद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४ ४१२६

सप्तशती धार्यावसवद्धा

आदि- पाणिग्रहे पुलकित वपुःश भूतिभूषित जयति ।

अनुरित इव मनोभूयद्भूत्मावप्यपि ॥ १

अन्त- हरिहरणलीलाकविवरवर्णनवामनशीला वामन इव वविपद पिष्टय ।

अकृताधाय सप्तशतीमेका गोवधनाचाय ॥ ७५०

इति गोवधनाचायवृत्ता सप्तशतीय समाप्तम् ।

सप्त १८०७ मितो माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । सीलतं जोसी परसरामेण ।

पम्बलीकरोपनामरघुनायस्येदम् पुस्तकम् । नेखनपाठकयो शुभमस्तु ॥

॥ शुभ भवतु कस्याणम् भव ॥

२२५ ६०६३

सुन्दरमणिसद्वध

अन्त- मधराचायनाम्नय गानवाधमवासिना ।

सुन्दरामिधमदर्भो भावगोधाय निमित्त ॥



१६-रसालङ्कार

२ ४६६६

अलंकारचट्टिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि- अनुचिरय महातपसी हरिचोचनचिन्ताम् ।

कुर्वे कुवलयानन्दसन्तुष्टारचट्टिकाम् ॥

अन्त- अगो कुवलयानन्दचन्द्रातोकीर्त्यतापि सन् ।

प्रतिष्ठां नमते तय विनाम्नद्वारचट्टिकाम् ॥

इति श्रीमत्सदवावयप्रमाणतः सप्तममद्वारप्रवचनायवृत्तालङ्कारचट्टिकाया कुवलाया
मन्टीका ।

४ ५६८३ काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि— विमृश्य वाङ्मय ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।

काव्यकल्पलतारयेय कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त— इति श्रीजिनदत्तमूरिशिष्यमहान्विचक्रचूडामणिश्रीमदमर्गहिविरचिताया
काव्यकल्पलताकविशिक्षा(क्षा)वृत्ती अर्थसिद्धिप्रदाने तुर्ये(तुरीये) समस्यान्तवक सप्तम
समाप्त ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त— इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसजलशास्त्रा-
रविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे जरदागमे दशमो मयूख समाप्त ।

२४. ६४६८ रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकोमुदी

वर्षाभ्राकसुधाशुभिश्च मिलिते सवत्सरे भाद्रके ।

पक्षे मेचकसजके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥

व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिका गोविन्दशर्मा द्विजो ।

राज्ये भारतपत्तने च बलवत्सिंहस्यपुण्यात्मन ॥

प्रति के आदि २३ पत्रो मे काशिराज श्रीचन्द्रभानु के वंश का विस्तार से वर्णन है । (स०)

३४ ४३०६ वाग्भटालकारवृत्ति

आदि— श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।

मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या—श्रीनाभेयजिनो वो शुभम्य श्रिय दिशतु ददातु किंविशिष्ट श्रीनाभेयजिन देव-
दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देव यम्य भगवत् आगमपदावली मिद्धान्तपदपरम्परा सता
सत्पुरुषाणा मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धे पथान वदति । अन्यापि पदावली मार्गं ब्रूते ॥ १

अन्त— अनुमानमाह—

प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिनः ।

लिगिनो भवति ज्ञानमनुमान तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या—लिगतोहेतोर्गतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिनः सलक्षणस्य लिगिनो ज्ञान
भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२. ५६०३ श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि— अहं ॥ ४० ॥ नमो वीतराग ।

हेरम्ब वव किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चाद्रीकला

कृत्य किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तर स्यादिति ।

तात वुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्या कला-

माकाश जयति प्रसारितकरस्तम्बेरमग्रामणीः ॥

य साहित्यमुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दन ।

कुस्ते स श्रवणभूषणाख्या विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अत- इति श्रीनरहरिमहोदयविरचिताया श्रवणभूषण चतुर्थ परिच्छेद ।
मगल जयधर्मो ददेवसवेगमगल । मगल शब्दमधन लेखके मगल भव ॥ श्रीश्रमणसपाय ॥
श्रीचिदम्बमुखमण्डनवति ॥

१७-सुभाषितादि

२ ७२७२

एकपण्डितप्रश्ननाम

अत- अचलावैदवाहोदुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविनासगगिना लेखोद इति हादकृत ॥

३ ४३४७

कपूरप्रवर सायचूरि

आदि- कपूरप्रवर नामामतरस वनैन्दुबद्धातप
गुणध्यानतरप्रसूननिचय पुण्याधिकनोदय ।
भुक्तिश्रीवरपीठनेच्छति च यो वाङ्मामधनो पयो
०५३५५ नदयजिनेपेगलरज्योतिश्चय पातु व ॥ १

अत- आद्यअसेतस्य गुरोर्मित्रपट्टि
सारप्रवधस्फुटसदगुणस्य ।
निष्पण्य चक्र हरिणैर्ममिष्टा
सत्तावना नमिचरिप्रवर्त्ता ॥ ७८

इति श्रीजिनवधनसूरिपट्ट श्रीजिनवदसूरिपट्टालकारभाग्यसोभाग्यसारश्रीजिनमागरसरि
वरेणकपूरप्रवरामिषसुभाषितवीजस्वावर्त्ताग समामत इति ॥ १४००

१० ४४५२ (३४)

नीतिशतक

आदि- या चित्तयामि० इति ॥ १
अत- अन हरिभूपतिना रचितमिद नीतिरीतिविनन ।
जाते यत्र न मुह्यति धीरोधीर प्रमाण स्यात् ॥
इति आमत हरिदत्त नीतिशतक सम्पूर्णम् ॥

१४ ४४१५

प्रज्ञोत्तरपट्टिनाम

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव पणामसिषप्तवदीप्तय ॥
निगिनभीतितम नामनाय वि
सपदि पावजिन विनयोमितम् ॥ १
अत- निमपि यन्निष्ठितपट्ट विनष्ट तथा चिरमत्तवि
प्रवट्टितपणानिष्ट निष्ट मया मतिदोषत ॥

रिणीपुर की सारानगर कहाँ है जो कि बीकानेर जिले के चुरू जिले (राजस्थान) में है । (ग०)

तदमलधिया वोध्य शोध्य मुबुद्धिजनैर्मन -
प्रणयविशद कृत्वा धृत्वा प्रसादलवं मयि ॥ ६१

इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरपट्टिशतककाव्य समाप्तम् ।

१७. ४४८२

रत्नकोश

आदि- वंशपायन उवाच-

रत्नकोश प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।

पृथिव्या यानि रत्नानि तेषामुद्धरणं प्रभो ॥ १

कथयिष्ये महाराज शृणु त्वं पाडुनन्दन ।

सर्वशास्त्रमयं दिव्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् ॥ २

अल्पग्रन्थं मुबोधार्थं रत्नकोशं समम्यमेत् ॥ ३

अन्त- पञ्चविधा गतिः नरकगतिः । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगतिः ।

इति श्रीरत्नकोशरत्नाकरः सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीराम ।

२५. ६१२७

शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीबोधमते गोतमरिपीशिष्यग्रमरसिंहतच्छिष्यरूपचदविरचिते
मानुष्यबोधे त्यन्नबोधमतसम्पूर्णं । समतः १४३४ वर्षे आपादशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये
लिपितः श्रीवाडीगुजरातीबोधो हरीशर्माभट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रे लिपायत महाराष्ट्रभट्ट-
रामकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रन्थ ५१७५ सर्वम् ।

४१. ४४५६

सिद्धरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पाद्वंजिन नत्वा स्वोवगीयमकारकम् ।

सद्यः सस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ॥ १

श्रीचन्द्रकीर्तिसूरीणां सद्गुरुणा प्रसादतः ।

सिद्धरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्षकीर्तिना ॥ २

अन्त-सिद्धरप्रकरस्यव्याख्यायां हर्षकीर्तिभिः सूरिभिः विहिताया तु सामान्यप्रक्रमोज्ज्वलिनी ॥ १
तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचन्द्रकीर्त्याह्वयसरिराजा । तेषां विनयहर्षकीर्तिसूरिस्वरो वृत्तिमिमा-
मकार्षीत् ॥ इति श्रीसिद्धरप्रकरस्यटीका समाप्ता ।

५७. ४३४८

सुभाषितसूक्तावली

आदि- दानं सुपात्रे विशुद्धं च शीलम् ।

तपो विचित्रं शुभभावना च ॥

भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।

धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥

५८. ५६८४

सुभाषितार्णव

आदि- चन्द्रनाथ जिन नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।

सुभाषितार्णवं वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ॥ १

६१ ४४१४ सुवताली

आदि— गोर विद्वग्नुह नत्वा कृत्वा यत्नेन सप्रहम् ।

मदापकारसूक्ताली स्वायपाठाय लिख्यते ॥ १

अत— आराध्यद्वयमनयनर्मा प्राय प्रसादावधिरेव नव ।

आराद्धुमेन तत्त्वतः प्रसादं कस्यापि विस्फूर्तिरित्यति चेत् । १८३४

निब— शुभसुन्दरगणि । लिपिस्था—बद्धग्राम ।

५५ ४३४६ शुभापितसग्रह

पत्र २३वें ॥ पुष्पिका इम प्रकार दा हुइ है—

इति श्रीमन्नाचायजी श्री ६ वेगवाहृताति वा यानि समाप्तानि । लिपिकृत पुण्यश्रुति श्री २ सामजी तत्त्वित्य पू० रुपि या ५ महिराजा तत्त्वित्य पू० अतिथी ५ टाडरजी तत्त्वित्य पू० प्रतिभात्माश्री / भामजा तत्त्वित्यण मुनादामाश्रयणाश्रि शुभ श्रय सबद्धसुगगन समुच्चद्रवर्षे वातिकमास शुक्लपक्ष त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे त्रिविकृता प्रतिरिय शुभ थय ।

१८-कथा-चरित्र आटपानादि

१ ४३३० अथचरित्र

आदि— नम सिद्धभ्य ।

धर्मसिद्धयत लम्भाधर्माद्रूपमनि दत्तम् ।

धमा-सोमाग्यदाधाय धमा-नवसमीहितम् ॥ १

अत— एष गोरसयोगिनी वचनत सिद्धोद्भवः क्षत्रिय

गताङ्गवरः सर्वोत्तमस भूता १ चाभाविन ।

द्वानिर्गामित्वादिचरितं यत्नदपद्येन त

चक्रं श्रीमुनिरत्नासरविजयी तद्वा-यमान युध ॥

इति श्रीमुनिरत्नासरविरचिते गोरसयोगिनी दत्तगताङ्गवरसम्बन्धनम् सम्पूर्णम् ।

निबर्त्ता—पात्रमन्दर । स्थान—सवाला ।

७ ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि— प्रणम्य श्रीमहावार नम्राण्डसमष्टिम् ।

आरम्यत यथा वस्तुमुत्तराध्ययनस्थिता ॥

अत— गताङ्गयोगिनाथगर्भाप प्रवृत्ति अथय सम्बन्ध सत्र एव प्राप्ता । इति पञ्चविंश

अध्यायकथा समाप्ता ।

कथा कृता पण्डितपद्ममागरे
 ग्वशिष्यवाक्यप्रणयेन सम्कृता ॥
 पिपाडिगुर्या जिनपाश्वर्वाय-
 प्रसादत सत्कुशलाय सत्त्वमा ॥
 रचनाकाल—१६५७ । पीपाटग्राम ।

१६ ४३८७

चित्रमेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणरममाणेह नि सन्देह महोदयम् ।
 कल्याणदिनमद्देह वदेऽह वृषभप्रभुम् ॥
 अन्त— नभरमरमचन्द्रादे श्रावणमित्तपचमीनिगी मोये ।
 श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु वृष्टिविजयकृता ॥ ५६८
 श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णम् ।

१६ ४३६८

चित्रसेनपद्मावतीचित्र

आदि— नत्वा जिन प्रतीमाल पुण्डरीक गराक्षिपम् ।
 शीलालकारसयुक्ता साक्षर्या सन्ध्या त्रुवे ॥ १
 अन्त— शिष्यमन्दीयो महिमानिधान
 चरित्रपात्रै स्वगुणै प्रधानम् ॥
 पद्मावतीश्रीनगुणस्य कीर्तने
 कथाऽहरोत् पाठकराजवल्लभ ॥ १२१४
 श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति वृत्तार्थ ए ।
 चरित्र चित्रमेनस्य पुण्यार्थे चाह निमित्तम् ॥ १२१५
 इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहानतीचरित्र सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—रामविजयगणि । लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२ ४४३५

देवकुमारकथा

आदि— ॐ नम मित्रम् ।
 पुरा अमृतकुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वर ।
 विरोधिध्वंसकरप्रसरसुन्दर ॥ १
 अन्त— चिरमत्रिपद भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
 प्रपाल्य स्वयंयी मोक्ष गन्ता च कतिभिर्मयै ॥ ३६२
 पुत्रात्सुख न भवति जनस्य जनकस्य च ।
 रात्माश्चर्यमयी चौर्यव्रतपोपकरीकथा ॥ ३६३
 इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।

लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोक्षिष्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।

देवकुमारकथानकमतिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५ ४४३४ धमबुद्धिमन्निकया

आदि- उद्गाहे प्रथमा वर मित कलाग(शि)त्यादिवे यो गुरु
भूप च प्रथमो यति प्रथमस्त्रीयेश्वरश्चादिम ।
नाताय वरपात्रमाद्यमपर सिद्धो षड वादिम
सत्त्वश्री प्रथमश्च यस्य तनय मोष्ट्वादिताय धिये ॥ १
धमत मकल मगावनी धमत सकलसौख्यसम्पद ॥
धमत स्फुरति निमल यगो धम एव सदहो विधीयताम ॥ २
अत- धारोग्य सौभाग्य घनाद्यता नायकत्वमानन्द ॥
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जया वाछितावाप्ति ॥ १
घनदा धनमिच्छूना वामद वाममिच्छूनाम ।
धम षडापवयस्य पारपर्येण साधक ॥ २
इति पापबुद्धिमपधमबुद्धिमन्निकयानक सम्पूर्णम् ।

३७ ४४३३ युवराजश्रुति चरित

आदि- विद्यानास्तिपुराजनप्राप्तात् रतिमुदरा ।
जयति(ती)स्व पुरोमात्मधनधायसमद्धिभि ॥ १
अत- एव निगम्य युवराजश्रुतचरित ।
कपूरदास्तिभिरचौरशुण पवित्रम् ॥
समारवारिधितरीतुतिते प्रमत्त ।
स्वाध्यायकमणि गुणिन नुरु नि स्वपन्नम् ॥ १३
इति श्रीजुवराजव्यासमाप्तमिति । ति स्या —हृदपुर ।

३६ ४४०२ रूपसेनकथा

आदि- देवा स्ववशा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धम
मेहस्य। सुरपनुगाविमलमो यस्य प्रभावाभुल्लाम् ।
गण्डीगुणप्रदाननिपुण श्रीवीतरागादितो
लोभमामवपारदप्रतिदिन यम समाराध्यताम् ॥
अत- यगो धर्मो गुणा सौख्यं नन्दमोदाय सुमगलम् ।
सफना यतानि दत्ते च धमकपुमाह्वयम् ॥ १०१४

श्रीवीरगताया धमकल्पामे शिखरोपमरूपसेननपाक्यानवणुनीनाम नयम धन
समाप्त ॥ इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२ ४४५८ वरदत्तगुणमन्तरीकथा

आदि- श्रीमत्पादजिनापासं पन्वडिपुरमस्थितम् ।
प्रणम्य परया मत्तया सर्वाभीण्यसाधरम् ॥ १

अन्त- श्रीमत्तपगणगनागणदिनमणिविजयनेनसूरीणाम् ।
 जिघ्याणुना कथेय विनिम्मिता कनककुण्डनेन ॥ ५०
 वृधपचण्डिजयगणिनि प्रवर्ग भौमादिविजयगणिभिष्टच
 सशोधिता कथेय भूतेपुरसेदुमते वर्षे ॥ ५१
 गणिविजयमुन्दरागणामभ्यर्थनया वृत्ता तथा मयका ।
 प्रथमादर्शे निखिता तैरेव च मेरुतानगरे ॥ ५३

इति कार्तिके मीभाग्यचर्मीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुग्मंजरीकथानक सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४

शातिनाथचरित्र

आदि- श्रेयो रत्नकरोद्भूतमर्हत्लक्ष्मीमुपास्महे ।
 स्मृत्यति न के याम्ये जेप श्रीविरताजया ॥ १

अन्त- यम्योपसर्गा स्मरणो प्रयाति
 विष्टे यदीयाश्च गुणा न माति ॥
 यस्यागलक्ष्मी वनस्पय काति
 सधस्य शाति स करोतु नाति । ६२६

इत्याचार्यश्रीप्रजिनप्रभमूरिविरचिते श्रीशातिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठ
 प्रस्ताव । इति श्रीशानिनाथचरित्र सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१. ४३३६

शालिभद्रचरित्र

आदि- श्रीदानवर्मकल्पद्रुर्जीयास्त्रीभाग्यभाग्यम् ।
 पूर्वापश्चिमर्तावैश्वलक्ष्मीभोगमहाफलः ॥ १

अन्त- श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
 श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तम प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वाधिसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तम प्रस्ताव समाप्त ।
 जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । अन्येन द्वादशशती चतुर्विंशतिसयुता ॥

२०-राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७)

अकपाटी आदि गुटका

आरम्भिक दो पत्रोमे लघु चारुव्यनीतिके दूसरे अध्यायका अन्तिम श्लोक तथा तृतीय
 अध्याय लिखित हैं । आगे १७ पत्रोमे अकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमे ऊपर अंक-सख्या
 और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं । उदाहरणार्थ—

‘दान दया दमोद्विण दान दवपूजितं ।

दकारा पचयते दूगन नव गच्छति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव जो रप अयाण ।

सर वरीतर सायरा, अक्षर राज दुवाण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६ १७वें पत्रम—

दूहा ॥ काला तू कोयल भली जस मनपरो विवेक ।

अव बिहूणी मवरसु बोल न बोल एक ॥ १ (पत्र १६वाँ)

गाम गोरमे हात है, जोय दूर मत जाय ।

धनी घणाद पारसी, अरथ कहा इण माय ॥ १ (पत्र १७वाँ)

॥ सीपत । पीटत श्री ५ श्रीवालचदजी सीपी छ । स० १८३५ मीगसर सुद ५ वार
मगलवार अपसुर ज सवय गोठोरा छ ।

६ ६५२५ अजनाचोपाई

आदि— ॥८०॥ श्रीगणेशायनम ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुप एकादस अभिराम ।

मन वद्धित सुप मपज नित समरता नाम ॥ १

प्रथम उद्यम म माडियो मति दीस प्रति मद ।

तिण कारण पहिला नमु श्रीगणधर सुपवद ॥ २

सेवकन सानिध कर, ददघो अविरल याणि ।

जिम येगो सिद्ध चढ काइम रापिम काणि ॥ ४

अन्त— तिणि गछ पीपल चापीयो घाठ सापा विस्तार ।

मदत रुद्रवाबीसम बीसम हूइ सुपवार ॥ १२

ते गछ दीस नीपतो, साचीर नगर मझारि ।

धीर जिणैसर सीपती िहां तीरथ प्रगट उदार ॥ १३

वास पाट अनुक्रम हूवा, श्रीसीपमीसागरमूरि ।

विनय नरी मयसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४

सास सोस पुण्यसागर वाचक पभण एम ।

अजनासुदरी चौपई पूरण कीधी ते प्रम ॥ १५

सबत सोलसत्यासोइ थावण मास रसाल ।

सुदि तिथि पचमी निरमल रिद्धि वडि मगल भास ॥ १६

सब गाथा ॥ इति श्रीअजनासुदरीचौपई संपूर्ण । सबत १८६८ मीगसर वृष्ण पत्र
तिथि १ भौमवासरे द्वितीय प्रहरे लिपत श्रुपी नोलचद पोही शमे उदावत राय वाचनाथ
धीर नय श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

३० ७७४३

मध्यात्मरामायण भाषा

आदि— श्री गुरुसाये नीम ॥ सुरमती नीमो ॥ श्री गीनारामजी मत छं जी ॥
श्री रामाये नमा ॥ कथेन अथातम रामायने भाषा लीपन रामहृदय ॥ राज श्रीराजमणजी
सभापीत ।

चौपई— जवें भुव भार भयो दुटनतें । तव ही देव गये जाचन प्रभुवें ॥
चिदानंद मुनी ब्रह्म बानी । परजापते अमनुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्त मन भेये भगवाना । चिदानंद यनकी मव जाना ॥
मेय गिरा बानी जु बुचारी । मुनीक ब्रमा नने बीचारी ॥ २

अन्त— दुहा ॥ राम हीरदैकी राजदानीते प्रीते करतें बुचारें ।
सीच्याराम हीरदै बनेद्या ममे नाहे बीचारें ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथे कीनी मते बुनमानें ।
सुनी कह रीजै न घारी है करीवे मते अपमानें ॥ ६६

ईती श्री अवाननं रामारणं रामं हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते महाराजे श्रीराज-
सीधजी ॥ सुभ समुरथें ।

८५ ५२११ कण्ठवाहोकी वशावली

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कुट्टावाकी वशावली निरूप्यते ॥

श्रीआदिनारायणतै कवलमै ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कम्प ॥३॥ सूर्य ॥४॥
बवस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इप्वाक ॥७॥ विकुपि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

अन्त— महाराजाधिराज जन्म नाव मोहोनसिध नरवलका राजाकी बेटो मो राज
पायो । जदि मानमिधजी नाव पडयो । मीती पोम वदि ६ स० १८७५ का । राज कीयो
महीना ४ दिन ६॥ माहाराजाधिराज श्रीमवाई जयसिधजी मवत १८७० कै साल श्रीजमनायजी
पवारचा जाति देवा । सब माज्या साथ पवारी मीती असाट सुदि ८ सवत १८८४ कै साल ।

८७ ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारम्भ इस प्रकार है—

• • • • • डि पिलंग पर सुदर डोलियै वाय ॥ १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ डोलिए बोलाय ।
माल मुहं गीधे लाजिये, मो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सपुकी नाडी चली, कचु वण्यो सुचग ।
रतन जडीत नीरपी, सोनी सुदर अग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीआर ।

तिणि बेला मदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१
प्रीआग गगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।

कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ॥ ३२

इति कपडकुतूहल संपूर्ण ॥

६६ ४०२०

विकल्पलता

आदि- ॥ ६० ॥ अथ श्रीसारवृत्त वावन्नी लिप्यत ।
 अँकार अपार पार तसू कोइ न सम्य ।
 सबर कर सिरताज मत्र घुरि कवियणम्य ॥
 अरघचद आनार उवरे मोहो जसु सोह ।
 १ घ्याव चित नाय तिय तिहुयण मन मोहै ॥
 साधक सिध जोगी जती जासु ध्यान अह्निस कर ।
 कवि सार कहै अँकार जप काइ सण भुलो फिर ॥ १

अत- क्षिते मडल क्षिति तिलक सह्र पातो पुर साहै ।
 गरु मरु मदिर महिष बाग बाढा सनमाहै ॥
 राज कर जगताय सुर सामत र मनायौ ।
 मानगरे सुसमय भुजस बसुधा बर तायौ ॥
 समत मोलनि आसिय आसु मुदी दमयी दिन ।
 श्रीसार वधित वागन कहा सामनिज्यौ माच मन ॥ ५५

इति श्रीविकल्पलता श्रीसारवृत्त भवुण । सुभ भूयात ॥ श्री सवत १८८८ रा
 मसी फागुण सुदी १० स श्री आगुराजी श्रीधनरामजी । लीपता कु इन्द्रभाण वाचनारथम्
 अणदपुरमध्य ।

१०५ ४४१५ (१६)

कागदरी नकल

सप्त गुर्वेस पत्र म० ३१८से पत्र म० ४०६ तक चार बागजा प्रम(पत्रो)की तकलें दी
 हुई हैं जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल । आदि- बागदरी नकल ।

छंद नराच- मत हत माभर गहर सुधर । ध्यारी निज ह्राष दिया पतर ।
 सूभ वान नयानर गुनरिय । छिव गात अनत चित हरिय ॥ १
 सनिता सर निसर नीर बहै । नलनि सूभ वास घर र लहै ।
 बर दास निवास न कुप बन । यनिता गनि तीर सुनीर धन ॥ २

अत- दिन जात बधा तुम मग बिना । कबहु मुप होत न आप बिना ।
 बहता ज रजौ समचार सब । सु मिथ्या तन मानहु साम कब ॥ १७
 न लिपे तुम पय सनेह धनौ । पय जावनकी सुम रोन गनौ ।
 जुग राम बसु रासि सवत य । सुभ मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल-

[सवत १८३४]

आदि- बागदरी नकल लीपते । स्वस्त श्रीमधुवानगर सुधाने सुवन सुभ आपमा
 वेसास बमारी, प्रगरसप्यारी चदनदनी मृगलोचनी नगनरी लढी जायरी जहो
 हीयारी हार मेजरस सिनगार प्रीतमरी धोनार चितरी ऊनार हमतमुपा सदा
 सुधी ।

अन्त- मव सरपी नारी नही, सब सरपी नही बाण ।
 मव गुण एकणमे नही, दापु चतुर मुजारा ॥ ६२
 इती ओपमा लिपणरी, जयाजोग मन जारा ।
 कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवारा ॥ ६३ ॥ सपुरां ।

तीसरी नकल-

आदि- सिध श्री प्यारी दिमे, जैपुर नगर जट्टेह ।
 प्रीतम लिपत वगायकै, नित २ नवलै नैह ॥ १
 चदवदन मृग-चोचनी, चिता लक नुचग ।
 गजगमणि रम जोग है, अतहि जाण सुचग ॥ २
 अन्त- बाहू उत्तर देजो मदा, कागद अधिक उजाम ।
 हित कर लिपजो हेतम्, दगकत अपणा पाम ॥ २० नपुराण ॥

चीथी नकल-

आदि- मिध श्री मरवओपमा विराजमान अनेक ओपमानायक गुणनिधान ब्रह्मांतर
 कलामुजारा, चवदै विद्यानिधान, मूरज जेहा तेज, चकवा चववि जिहा हेज, चद्रमा जेहा
 सितल, रूपा जेहा उजला' .. ।

अन्त- मत किणहिंसु लागजो, नैणाहदो नैह ।
 धुकै न धुवो नीसरै, जलै मुरगी देह ॥ १८
 मजन फलजो फूलजो, बड जु विसतरजा ।
 नालेरा जु लूबजो, यावा जु फलजो ॥ १९
 इति श्रीपत्री सपुरां ।

२५७ ४६१४ (५४) जोगी रासा

आदि- अथ जोगी रास लीपीते ॥ २० नम मीव्येभयो नम ॥
 आदिपुरिप जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
 आदिजगोत्तमो जोग पयमो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
 तान परपर मुनिवर हुआ, दीगावर सहिनारणी ।
 कुदकुदाचरज^१ गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
 अन्त- जोगीह रामो सीपहु श्रावक, दुप न कवहु लहिसी ।
 जो जिएदासह त्रिविवि हि, मिधहु समरण कीजहु ॥ ४२

ईती जोगीरामो सपुराणमस्तु ।

२६१ ५४१८ (५४) टडाणा गीत

आदि- टडाणा टडाणा वे, जियडे टडाणा टडाणा ॥
 इत ससारै दुश भडारै, क्या गुण देपि लुभाणा छे ॥
 जिन ठग ठगिया नादड कालै, फिर तम जोग पत्याणा छे ॥

अत- कृि उदिम आपन बल मडी भोगी अमर विमाला छे ।
समिवि तपोहण दस विधि पूरा निरमल घरम कराणा छे ॥
सुध सरीर सहज लव लावहु भावहु अतर भा(णा) छे ।
जग वृचा तम सुप पावहु बल पद निरबाणा छे ॥

इति टटारणा समाप्ताम् ।

३३६ ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपुण)

आदि- ॥६०॥ श्रीसारदाय नम ॥ अथ नागदमणि लिप्यते ॥

ब्रह्मा ॥ बलतो सारद विनवु गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगा सरस, जहुपति कीयो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया देत बडाचा दन ।
कं पालण पोढीया कं पय पान करन ॥ २
कोइ न दीयो कानवा सुण्यो न लोला वष ।
आप वधावण उपला, बीजा छोडण बष ॥ ३

अत- बल ॥ सुणें गुणें सम वास, नदनदन अहिनारी ।
समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनतर आणद सब वपताप मुणाव ।
भगति मुगति भडार कशन मुगताह कराव ॥
रमीया चरित राधारमणि ॥

५३८ ४६०६ (२) राजसभारजन

आदि- ॥६०॥ अथ राजसभारजन लिप्यते ॥

गगाधर सेवहु मदा गाहक रसिब प्रवीन ।
राजसभारजन कहो मन हुतास रस लीन ॥ १
दपतिरति नीरोग तन विद्या सुधन मुगेह ।
जा दिन जाय आनदमैं जीतबकी पन एह ॥ २

बीचस कुछ उदाहरण—

गार सहेट चलयो कहै मुग्धा तिय पिय छल ।
पीमने कोढी ही रने बागनी मल ॥ ६७
महन रीति कुन तजि लग वाम वनाव माज ।
वाप न मारी भीडकी वेटा नीरदाज ॥ ७०

अत- छ ॥ तीनग गाठ सब यवहार सुप देत ।
राज-सभा-रान गरस कियो रसिबजन हैत ॥ ६७
अर वोन मुनि ससि (१७५६) समा विथम सब नम भाग ।
उजा नवमी भगु दिवस पूरन रस प्रकाश ॥ ६८

मुपद भूमि मग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।
 तहि कवि मन सुप्रमन्न अति, मति रतिसो अवगाह ॥ ६६
 जब लो मुप सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।
 तब लो चिर जीवहु रमिक, पढत गुणत गुन नाम ॥ ७०
 इति श्रीराजमभा-रजन दोहा ममाप्त ।

सवत् १७६८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्रे लिपिकृत श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५० ४८३४

राठोड नाहरपानरो छद

आदि- छद राठोड नाहरपानरी गाडण माधोदासरी कह्यी ॥

आरज्या ॥ उप्पन्ना पुरसाणी उडा । पाणी पछा पापर होडा ।
 औराकीआ रछ्छीस जोडा । नाहरपान समर्प घोडा ॥ १
 भाडजी केवी मुगलाणी । पासा पैग जिके पुरसाणी ।
 वड पाता सुण अवरल बाणी । रेवत रीभ दीयै राजाणी ॥ २
 अन्त- कलस ॥ वहम तेज वहु सफल वहुत मोला वहु भोयण ।
 धीरज तेज अनत लोय दीप ववहलोयण ॥
 धड विसाल पै करह गात उतगह मैगल ।
 पवग वेग विमराल वाजि वीया वेगागल ॥
 वरहास वडा वड कवीयणा त्यागी छण हरतै रवै ।
 समपीया पान राजानकै कुंप करन्नह अभिनवै ॥
 इति नाहरपान घोडारा दाताररी छद सपूरण ॥

६४१४

विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि- ॥६०॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ प्रणम्य देवदेव च वीतरागमुरचित ॥
 लोकाना हि विनोदाय ऋरिष्येह कयामिमा ॥ १
 नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।
 पद्मपत्रविसालाक्षी नित्य पद्मासने स्थिता ॥ २
 अन्त- श्री विक्रमने वेताल कथा कही चउवीम उदार ।
 सोल छियालै भाद्रव माग । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३६
 इति श्रीवेतालपचीमी २४ कथा ।

दोहा- बलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिरा ही डाल ।
 मडवधी काघड कीयो, तव बोलै भूपाल ॥ १

विशेष- आगेका अग अपूर्ण है ।

६०३

६१११

विद्याविलास चोपाई

आदि- ॥६०॥ श्री सरस्वत्यै नम ॥

दूहा- सरसति नित आपो सुमनि, चित हित धरि प्रणमेवि ।
 जित तित थित थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ॥ १

कविपण तरसा निजि करण द्वर हरण अणयान ।

चरण मरण उपम धरण उपावण गुण ग्यान ॥ २

अत- वाचा गुणवचन सुपदाया श्रीसोमगणि सुपसाया जा ।

इम जिनहरण पुण्य गुण गाया, सोम दास गुप पाया जी ॥ १८

हिव राजानि सुण गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचापई संपूण ॥ स० १८२६ वर्षे मिति घासाढ

मुदि ७ निने ।

६११ ७७२२ (१४) धीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कवित्त- गदत एक दईवत एक करन आहिराण ।

अनत धीन अहि वेसत पान पेसत पत्राण ॥

अमरत आम माया तपास रस होइ महा जल ।

परमा दात साजन दात चित्त बणाजन ॥

अणराइ चाइ एकाएक साहितातर दिठा मवे ।

निहू राइ तिनव नारियेण तना दाता सो धीरमदे ॥

अत- पर परि जिण गिरवर धरणी मपुरा मारणी वस ।

रपा रापस निरन्तर आयवारा जदुवन ॥ १०

धीठापुरारी सापी छ ॥ लिपन मिथ धानराम ॥ गुममस्तु ॥

६१५ ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥ श्रीरामजा ॥ अथ वेदस्तुति भाषा नाप्यते ॥ राजप्री राजनीपजा सभापन ॥

छ- श्री भागीत दमन सपन, वेद सतुल्य भाषा वध ॥

अनी धानद अथ वध छे, आवागमन मित्र भ्रम पे ॥

चापई- आमुपत्र ग्रहा सतुयगाता । वेदयामक पुत्र विद्याना ॥

तानव वन्दन म वर । सोनको ध्यान हीराम वर ॥

अत- नाताप्रती पाठ जु जे कर बुपज व्रम गात ।

सन वर नाह्य पाय है राज प्रम बापात ॥ ६०

इति आर्यगुरुती भाषा अरथ मपुराण ॥ कथीत अरारा श्रीराजसाजा ॥

६७५ ४०१० गक्यहोतरी

आदि- ॥ १०॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वान मूवावहूतरी निप्यत ।

छ- करि प्रणाम था गारदा अषी बुध परमान ॥

गुरु अन्व याती उ वरी गायन श्री गान ॥ १

विजय नगर मुलामला गुण मपतकी ठार ।

दिहू धान अ जिहू परम अमी महर न धीर ॥ २

अत- हरण गठ हाम करायी निहू कारिका विण धाई । उपरम निध्याना

पक्ष । उतर अन्व रना मरुप छु गुणगानि वधव गाय घासा साव गता ।

वार । इदं पुस्तकं ममाप्त । दसकृत भट्ट शामसुंदरका । रंगजीत तत्सुत बलदेव पठनार्थ ॥
यादृश पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥राम ॥

३५५ ५३८६

रामायण, युद्धकांड

आदि— (प्रारम्भिक पत्र अप्राप्त)

मनोहर कवि कलानिधि रच्यो ।

तथा जुद्धकांडहि नारदागमं सर्गं वत्तीसी सच्यो ॥ ३२

अन्त— ब्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।

श्री रामचरन सरोज अलि परतापतिथ विराजई ॥

तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनै रच्यो ।

तह जुद्धकांडहि सतरु चौतीस ग्रंथ फल वर्णन सच्यो ॥ १३४

लिख्यते लेपक रामसेवग लिखायत ठाकुरजी श्रीमेदसिंहजी तस्य पुत्र पृथ्वीनिह आत्म-
पठनार्थं सवत १८३७ शाके १७०२ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे उत्तम मासे अश्वेन ।

३६५. ४६२३ (१)

रूपमजरी

आदि— श्रीगणेशाय नमः । अथ रूपमजरी नदं कृतं लिप्यते ।

दोहा— प्रथमं हि प्रगाऊं प्रेममयं, परमं जोतिं जो आहि ।

रूप उपावनं रूपनिधि, नित्यं कहत कवि जाहि ॥ १

अन्त—

दोहा— जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति है जाहि ।

तदपि गीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि ॥ ११७

इति श्री नददास कृत रसमजरी ग्रंथ संपूर्ण समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु । सम्बत्
१७२६ चैत्र वदि तृतीया बुधवारे भोकांम रंगामाटी सवलसिंध कुवरस्य पठनार्थं रसमजरी
ग्रंथ मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ॥

३७४. ६०१६

व्रतकथाकोश

आदि— ॥ दै० ॐ नमः ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिप्यते ।

चौपई— आदिनाथ वट्ट जिनरा [य] । कर्म कलक रहित सुपदाय ।

घनुष पंच से जाको काय । वृषव लब्ध्वा सोभै अधिकाय ॥ १

अन्त—

छप्पै— श्री जिनद गुण धाम जास वच सुणि चित धरिये ।

आवकको आचार पालि कर्मनिमौ लरिये ॥

दान सील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारो ।

और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो

सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि ।

ताते पुस्याल अनिको अवै इनि विनि मनमे किम धरहि ॥ २१

इति श्रीनूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथाकोशके अनुसारि भाषा श्रीपत्य विद्वानकी

समापिता ॥ मितो माघमिर मुदि १३ पचम्या तिथी वार बहस्पति वासरे सबत १६२३ या ।
थी ॥ थी ॥ थी ॥ थी ॥ थी ॥

४६२ ४०२८ सभासार नाटक

आदि- प्रथम पत्र प्राप्त

म पथरन भीज पानी बब लो विचारीय ॥
तिहा बबवाद तिहा अत न मवाद बन्तु
आप जो न सुवर तो बौनको सुधारिये ।
जोप छति ओर तो यताउ एब ठार तोहि
जानीये जगत जोप एब मन हारीये ॥ २६

बोहरा- सब लछन पहिल मुनी पुण्य सुलगत पाय ।
मा चचनतामू यस नीच सग न सुहाय ॥ २७

अत- मतगुद साही नो बताव साच मारगहु
साथी मत्तमग जाम चलत ने हान है ।
पहन अरुप कोउ कोट घाम केस तेज-
पूज घाम जाहि जसी ही पहिचान है ।
साहिम मगा दहको विगर जा
यदको विचार यहै जान है गुजान है ॥
यहै पम लछिना अनय भक्ति मुक्ति यह
यत्र पत्रप्राप्ति विग्या निरवान है ॥ २७

नाटिका- सब बिध सब रस गाहियत कहत यहै रघुराम ।
यद् नाटिक सम मदा भूषन भेन मुनाम ॥ २८

नाटिका- यह नाटिक जा मुन ताहि हिय पाटिक पुन ।
गह नाटिक जो मुन सुषबल बमल प्रपुन ॥
यह नाटिक जा मुन ग्यात गुरत मन भाव ।
नाटिक मुन मुजान मरम मनुजका पाव ॥
विग्यान जा निरवान, जोम ध्यान घर घन लहे ।
पावत परमपुरुष ग, मनि प्रमान बनि रघु बहे ॥ २९
इति ॥ बनि रघुराम विरचित सभासार नाटिक संपूर्णम् ।
गुरत मुगुन वसु गंगी सपम्यपक्ष निनि जा ।
पसति दया गुत निवग, यथ चन्दा परमात ॥ १
रूपि बिगार सा तन ह । रराचद्रक मित ।
गभासारनाटिक मिय्या सबन रिनाया चित्त ॥ २
निगम निरमको मन्त्रम मररन पारिरग ।
निगम यथ बाधउ मुनन बराया बनन ॥ ३
॥ थारगु ॥ मबान ॥ भद्र भूवा नि ॥ थी ॥

४८४

५८६५

सिंहामन वत्तीसी

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ न्यपामन वत्तीसी भोज प्रवध हितो उंपदेम
कवि क्रस्तदाय कृति लिपते ।

छँपा— प्रथम मुमरि गण जान गणनायक ।

विघ्नहरन मति राय काज मिभिकरण सहायक ॥

येक दत्त भय मन अत नहि पाव पाव मुमति गति ।

फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ॥

कवि क्रस्तदान वदत चरन, श्रीर मुमति दुस्तर तरन ।

रस सिधु मोढ विक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ॥ १

अन्त— दीनो घर विक्रमको गोय, मारिवाहन तन दाहन द्वीय ।

तो लगि मो नृप आयो तहा, विक्रम वीर अवि जहा ॥ ४०

चली वाच तेरे हेत दहयो तन आय . . .

विशेष— इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२—जैनस्तोत्र

३.

४१४६

अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव

आदि— श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिप्यते ।

दूहा— सारदपाय प्रणमा करी, आपो अविरल वाणि ।

पुरमादाणी पास जिण, गास्यु गुण-मणि-पाणि ॥ १

अद्भुत कीतुक कलियुग दीसै एह अदभ ।

घरतीथी अधर रहै, मदा अतरीक धिर थभ ॥ २

अन्त— कीयो छद आनद वृ द मनमाहै आणी ।

सामलता सुपकद चद जिम सीतल वाणी ॥

श्रीविजयदेव गुरराज आज तम गणधर राजै ।

श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ॥

गणधर दोय प्रणमी करि थुणियो पास असरण-सरण ।

भावविजय वाचक भणै जयो देव जय जय करण ॥ ४६

इति श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छद मपूरण ।

४

४३४६

अजित शातिस्तव (मवालावबोध) त्रिपाठ

आदि— अजि, अजि असघ भय सति च मत सब गय पाव ।

जय गुरु सति गुण करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १

अत- जइ इच्छह परम पय अहवा किंत्तिसवित्यह भुण्णे ।
ता नेलकुद्धरणे जिएवयण पु आयर कुण्ह ॥ ४०
इति श्रीप्रजित्तातिस्तव ।

८ ४३६२ एकादश गणधर स्तवन

आदि- गीयम गणहर पदम मधयण ।
तित्यवर वीर जिए पटमसीम गोत्रन समागउ ॥ इत्यादि ॥ १

अत- इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति तित्त मत्ति वधिया ।
वगाए सुत्ति इय्यारिसि दिनि वार नाहइ धापिया ॥
ए समयलणहर ए इय्यारिमि जे आगहइ भाविया ।
एतवा भणसि भाव सुणसि त सहइ सुख मपया ॥ १
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री गणादिनसम्बन्धि श्री एवादशगणधर स्तवन सम्पूर्ण ॥

२० ४०३० वायस्थिति स्तोत्र

आदि- आ पप्रवणा भगवती माहि यची उदार करी गीताय पूर्वाचाय वायस्थिति
नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहनु हृत्सण रहिउ वायठिई भोसण भवारत्ते ।
भमिउ भवभय भजणा जिणदत्तह विप्र विस्तामि ॥ १
जह कहना जिम ह जिनेवर तुह दसण रहिउ ताहरइ आदि ।

अत- सह गो धनंती वार हिव धणइ पुण्य लगइ
उत्तय राप्रन तुम बुमइ दीव उछइ ।
ता तस्मात्तिगि वारणि अवाय नही वाया जिहा एहवा जे मिद तेह तउ
पद मुक्तिपत्त तेहती मपत्त ह तीधवर इ मुनइ ॥ २४
इति श्रीवायस्थितिस्तवनमातावबोध समाप्त ।

२५ ४१६३ गीतम दीपास्ती वा स्तवन

आदि- इह भूता मढतम भणुद तिसवा कुमि निधान ।
गाए पुतनू पामीउ दइ मुम मुगनिनो दान ॥ १

अत- देव गुरु भगत्वमी सुगती वर अणुगरा ।
सकस कहि हार गुरु गुण विचारा ॥ ७५
जिा वचा दीप दापानिका राजती ।
इति आ गठनम पिपासिकाति स्तवनम् ॥

२६ ४५६६ चतुर्विंशति तिनस्तोत्र

आदि- जाहपव्वमइने मरवा मायेप्रमुग्गा निनान ।
मारवा समस वचय ममकइ निवसिचाम् ॥ १

अन्त- स्निग्धा अविग्ना चान्मो दिग्मा दीप्तिष्ठ अन्च्छविभा अगकाना केयाना अन्ता
यग्या गा अन्च्छविभालकाता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनमक्षेपतो वृत्ति ममाप्ना ।

३७ ७४४४ (१)

चौबीसी

इम गुटकेमे निम्न कृतियाँ हैं—१. आनदपन चौबीसी २ नग्रहगी मूत्र ३ जीव-
विचार प्रकरण ४ नवतत्त्व. ५ दण्टक प्रकरण ६ मण्डनमरण. ७ प्रतिग्रमणमूत्र
८ पाच तिथिरी थुई १० स्तुतिमन्त्रन ११ गौतम रामो १२ स्नायपूजादि १३ चोटा-
लिया १४ शूलभद्र नवग्रहो १५ वार भावना १६ आनदपन बहोतरी १७ पनर
तिथिरी थुई. १८ पञ्चमवि (सारस्वन प्रदिया) १९ मिहूरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५ ४२६८

पञ्च-परमेष्ठि-नमस्काराय

आदि- श्री जिनाय नम । नमो अग्रिहनाग ।

माहरउ नमस्कार श्री अग्रिहत्त भगवंत नड हूठ । किमा छट ते अग्रिहत्त जीव
अग्रिहत्ते राग द्वेष रुपिया अउरि वज्जी जीना अनड अठारे दांये रहित ।
इत्यादि ।

अन्त- माहरउ नमस्कार पचाग प्रणाम त्रिकाण वदगा नदा हूड ।

इति श्री पञ्चपरमेष्ठिनमस्त्यारय मम्पूर्ण ॥

६१. ४०२५

भक्तामर-स्तोत्र

आदि- इनही पद्य आपणे घरे पाछा आवी राजानी नेवा करिवा लाग पूर्विली
रीतड आदि ।

अन्त- अन इन्वत्तिकरी मानतुग मूरि ड रची, मई इन ताहरा स्तोत्र रुपिणी पुष्प-
माला जे वठ कदलि धरड तेह नह लक्ष्मी स्वयवर वरड ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवातिरुवृत्ति ममाप्नम् ॥

१०० ६२७७

भक्तामर भाषा

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।

जे नर पटे मुभाव मो, ते पावे मित्र खेत ॥

इति श्री भक्तामर भाषा मपूर्ण ।

१०१ ७४५०

भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ

इम गुटकेमे निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १-१६ २ चौमठ
योगिनी नाम तथा घटाकर्ण १७-२१ ३ कल्याणमन्दिर भाषा २२-३२. ४ चैत्यवदन
२-४. ५ भक्तामर स्तोत्र ५-१७. ६ कल्याणमन्दिर स्तोत्र मिहमेन कृत १७-२६
७ लघु शांति २६-३३ ८ अजित शांति ३३-३६ ९ स्तोत्र नग्रह आदि १३ कृतियाँ
३६-५१ १० शक्ति मंत्र ५३-५४ ११ पदस्तवन ५४-५६ १२ वसुधारा ६०-११५.
१३ मोलह पद ११५-१२० १४ स्नाय अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१-१६५ १५ वीस

विहरमान गीत १६६ वीं । १६ अतीत अनागत वतमान चौबीसी १६७-२०० । १७ वावन वीर नाम २००-२०२ । १८ पदस्तवन (१२ कृतिर्माँ) २०२-२३२ ।

११४ ४-४४

घोतराग स्तोत्र

आदि- य परात्मा पर ज्वाति परम परमेष्ठिनाम् ।
आन्तित्यत्र तमम परस्तात्मनन्ति यम् ॥ १
अन्त- तव प्रप्याऽस्मि ञामास्मि मेवगोऽप्यस्मि विवर ।
उमिनि प्रतिपद्यन्व नाथ नाथ पर ब्रह्म ॥ ८
श्रीहमचन्द्रप्रभावादीतरागस्तवादित ।
धुमारपालभूपाल प्राप्नोतु फनमीप्सितम् ॥ ९
एति वी रमोत्र आगास्तवो विन प्रकाश ॥ २०

१२३ ४१५६

श्रीदेवीछन्द गीत चर स्तुति

आदि- मङ्गल मिद्धि गीतार पाश्व नत्वा स्तविमह ।
वरदा मारदा दयी जगदानददायिनी ॥ १
अन्त- इच्छे बह भक्ति भर अन्त छन्द सध ।
या देवी भगवई तु म पसो ह्यो सया सग कल्याण ॥ ४५
एति श्री त्रैलोक्यद मयूरग ।
गनि स्तुति-आनदन जग जयो रविमूत सामलवान ।
कोड कवित करो सुभ स्नव तुज गुण को हवै मान ॥ १
अन्त- ए मन्त्र धरी ऊवार उन्तर सारह । ए मन्त्र जपीय नर धारह ॥
एगो मन्त्र उलट धरी बिनतडी चीत आणिय ॥
रिथ वृष सहजै सदा बनी बली एम मनीसर बधाणीय ॥ १९
इति गनीसर स्तुति ॥ लिपिकर्ता-सुबुद्धिविजय गणी ।

१२८ ४५११

गोभन स्तुति

आदि- भ याभोत्रविवाधनवतरण विस्तारि कर्मावनी
गभा सामजनाभिनदनमहा नष्टा पदा भासुर ।
भक्त्या वी दपपादपद्मविदुषा सपादय प्रोज्जिता (स्थिता)
गभा सामजनाभिनदन महा नष्टापदा भासुर ॥ १
अन्त- सरभमनातनाविनारी गनीरोजपीठोलुत्तारहारस्फुग्द्रक्षिणमारसमाभोद ।
परमवसुतरागजारावसगगितारातिभाराजित भासिनी हारतारावक्षाम्पा मन्त्र ।
सण्णचिहचिरोरचचत्तममनटात्तत्तवठोदूटे मस्थिते ।
मनटा भव्यलोच त्वमवाविदे परमव मुनरां गजारावसगगिताराति भा
गजिते भासिनी हार तारावक्षाम्पा मन्त्र ॥ ६६ ॥ २४ ॥ श्री गुम भवतु ॥

१३० ७२७८

शोभन स्तुति

आदि— आसी[द्]द्विजन्माग्निलमध्यदेशप्रकाशमानाभ्यनिवेशजन्मा ।

अनन्वदेवपिरिति प्रमिद्वि यो दानवपित्वविभूषितोपि ॥ १

शास्त्रेवधोतो कुशल कलामु बन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्ट ।

तस्यात्मजन्मा ममभृन्महात्मा देव स्वयभूरिव (वा) मुदेव ॥ २

अव्जायताम्यदनाध्यस्तनूजो गुणानन्दपूज ।

य शोभनत्वशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुपाप्यधत् ॥ ३

कातन्त्रचन्द्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धयौद्राहंततवर्कतत्त्व ।

साहित्यविद्यागुणवपारदर्शी निदर्शन काव्यकृता बभूव ॥ ४

कीमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टा चिकीर्षन्निव रिष्टेमे ।

य सर्वमावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५

एता ययामति विमृश्य निजाम्यु (नु) जस्य

नस्योज्वला कृतिमलकृतवान् स्वचृत्या ।

अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणा

तेनैव साप्रत कविधनपाल नामा ॥ ६

अन्त— इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिवृत्ति, कृतिरिय तस्यैव ।

१३२ ६८३६

स्तम्भ पाद्वंस्तुति आदि

इस गुटकेमे निम्न ५ कृतियाँ हैं—१ स्तम्भ पाद्वंस्तुति, २ आत्मोपरि मज्झाय,
३ शातिजिनस्तवन, दानशीलादि चौदालियो, ५ जम्बूकुमार मज्झाय ।

१३४ ६१६०

स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक

पूर्व पाटलिपुत्रमव्यनगरे भेरी मया ताडिता

पश्चान्मालवसिंघुटकविपये काचीपुरे वंदुपे ॥

प्राप्तोह कलहाटक बहुभटैर्विद्योत्कटै सकट

वादार्षी विचराम्यह नरपते सा(शा)दूर्लवत्क्रीडितम (क्रीडितुम्) ॥ १

काञ्च्य नगनाटकोऽह मलमलिनतनुल्लाम्बुसे पाण्डुपिण्डु ।

पुड्रोङ्गे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिब्राट् ॥

वाराणस्यामभूवं शशिकरधवल पाडुरागस्तपस्वी ।

राजन् यस्यास्ति शक्ति म वदतु पुरतो जैननिग्रधवादी ॥ २

इति समतभद्रस्वामिविरचित स्तवन ॥छ॥

१३६ ६८२५

स्तोत्रसंग्रह

इस गुटकेमे निम्न ५ स्तोत्र हैं—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र,
३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशातिनाथ स्तोत्र, ५ सगीत बध नमस्कार, ये पांच स्तोत्र हैं ।

२३-जैनागम

२७ ४३५८

आवयवसूत्र समासावबोध

आदि- नमो अरिहताण नमो सिद्धाण नमो आवयरियाण ।

नमो उवज्जभायाण नमो लोय सवमाहूणम् ॥ १

अन्त- ममाईय पोमह सठियस्म जीरस्स जाइजो कालो ।

मो मफलो वाघवो ममो मसार फल हउ ॥ १

इति श्री आठगव संपूणम्

४२ ४४१८

उत्तराध्ययनसूत्र (समासावबोध)

आदि- सजागाविष्णुमुक्कस्स अणगारस्स भिक्षुणो ।

विणय पठ करिस्सामि आणुपुन सुणोहमे ॥ १

अन्त- श्रीवद्धमानस्थामी परिनिवत्त निर्वाण प्राप्त वि० ।

उत्तराध्ययनभवसिद्धिवा भयजीवा तेषा समतात् ॥८२ छ॥

इति पटविगत श्रीउत्तराध्ययनवालावबोध समाप्त ॥

५० ४३५७

उत्तराध्ययनावचूरि

आदि- श्रीवद्धमानमानम्य वृहद्द्व त्यनुसारत्त ।

श्रीउत्तराध्यायनागमवचूरि गिगाम्यहम् ॥ १

अन्त- योग उपधागादिरुचितध्यापारस्तदानतिशमेण यथायोग गुरु० तवित्तप्रसन्नता

स्यादतोरधीयत्त न तु प्रमात्तुयादिति भाव ।

इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरि ॥

८१ १०६

वत्सपूत्र (मस्तबव)

आदि- ॐ नमो अरिहताण नमो सिद्धाणमित्यादि ।

अन्त- श्रीमत्तपागगाधीशश्रीदेवविमलप्रभो ।

श्रीमोमविमलाहमे ढवार्थो नितित स्फुट ॥

ढवाप वत्सपूत्रस्य मूणगिप्पस्य हेतवे ।

वृहद्द्व त्यनुमागेण सगोप्य मयधीधत्त ॥

१२१ ७४४५

प्रतिश्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिश्रमणसूत्र । २ जयतिट्ठयणस्सोत्त । ३ आववच्चरणीस्वाध्याय जिहपहत्त ।

४ गमुञ्जयराम-ममयमुदरुत्त । ५ गीतमरात्त । ६ मुत्तिमात्तिवा-यादिश्रमिहत्त ।

७ गीतमस्सामिस्तवनात्ति । ८ वानगानभापापोपई-सम्मीयस्तमगतिहत्त ।

१२२ ७४४६

प्रतिश्रमणसूत्र आदि

१ प्रतिश्रमणसूत्राणि । २ मुत्ति-मस्तबव । ३ शत्रुञ्जयराम । ४ गीतमरामो ।

५ स्तवनादि ८ । ६ जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्यसहित । ७. नवतन्त्रप्रकरण ।
८ विचारपट्टिका । ९ बाबोन परिग्रह छद । १० ब्राह्मभावनाम्नाध्याय ।

१२७ ७३४५ पञ्चदशमस्कन्धाटीका

अन्त- निर्वृत्तिरकुलनभस्यलचन्द्रोणाग्यमूर्गमुग्येन ।
गण्डितगणेन गुणावत्प्रियेण मयाप्रिता चैयम् ॥

१५६ ७२२३ नमवायान्नवृत्ति

वृत्तिरचनाकाल - एकादशशतेष्वय विगत्यधिकेषु विक्रमसभानाम् ।
अर्गाहिलपाटकनगणे(रे) रचिता नमवायटीकेयम् ॥



२४-जैनप्रकरण

७ ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह श्रीर मस्या ७३३१ बानी प्रति मिलती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमे विशेष है—

करघो इहा सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
ममभावन निज मित्त की, कीनीं ग्रन्थ पवित्र ॥ १२

१६ ४३०२ ऋषभपञ्चाशिका

आदि— ॐ नमो वीतरागाय नम ॥

भक्तिभरनमिरमुरवरानिरीट मणियति कतिकयमोहो ।
उसभाड जिणवरिदाण पायपकेन्हें नमिमो ॥ १
निज्जिय परोमहचमु सभयुव मगवग्ररिउपसरम् ।
सपत्तकेवलिसिरि मिरिवीरजियोसर वदे ॥ २

अन्त- इयवभाणग्रपलीवियरुम्मिधण वालवुद्धिणा विमय ।
भत्ती डपू उभयभयसमुदवो हिच्छवो हि फलम् ॥ ५०
इति ऋषभपञ्चाशिका समाप्ता ॥

६७. ४५६६ धर्म्मोपदेशश्लोका

आदि- हृष्ट्वा शत्रुञ्जय तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम् ।
स्तात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १
अन्त- इति श्रीपुराणे कथिता श्लोका ।

८४ ७२००

प्रबोधचिन्तामणि

अत- यमरसभुवनमिता दे स्तम्भनकाधीनभूषिते नगरे ।
आजयोस्वरसूरि प्रबोधचिन्तामणिमार्पण ॥

८६ ७३४७

प्रवचनसारोद्धार सटीक

ग्रंथात्- श्रीमानवृद्धपद्मप्रभुरभूत भूमान् मुरग्राणभू
मत्या ह्यभुवि राजसिंह इति यो रामावतार पर ।
श्रीमानक्षयरारातिलक प्राद्यप्रतापास
स्तत्पुत्रोद्भूतः शम्भुभूमिरधुना बालोऽपि पाति शितिम् ।
तस्य श्री मत्पुत्रद्वयमयुतो
राज्यस्तम्भनिभ समस्तभुवनप्रख्यातकाशिप्रज ॥ २
मात्रा श्रीविमलाक्षस्य महता सपेन माहम्बर
द्वयाभूततपागगस्य सुचिराद्भरिवाचयद्वृत ।
संघान् च भियां विधाय भतवान यो बोधिलक्ष्म्याङ्गिन
म्वात्मानं सुजित श्रिया च यगसा द्यावापथियन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छतायकगुन्धीहीरसूरीशितु
मये श्रीमदुपामकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विजयतो रसाक्षुरसदमाम्भिते वरसरे (१६८१)
चित्कोणे स्वदृते चिर विजयतामया गहीता प्रति ॥ ४

१११ ४०८५

मङ्गलकलाचोपाई

आदि- श्रीगुरुभ्यो नमः ।

ब्रह्मा- प्रह उठी नीत प्रणामीयइ श्रीरिसहसरदव ।
नाम धकी नवनिध मीलइ सिवपद आपद सब ॥ १
मंगलकलसङ्ग दानसु पामि परधल रिद्ध ।
राजलीना सुख भोगवी दम तणी गति दीप ॥ ७
अत- तस सेवक नित्य हृषगणि रे सदा मन आगद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहृष कहै रे सग नरनाव द ॥ ५ ॥ दा०
महेर कावदीनयर भली रे रह्या तिहा बोभास ।
आवक सदा सुखिया बस रे पुय करी जम वास ॥ ६ ॥ दा०
माभनवो करवा भावसू रे भाम आणी विनोद ।
घरम वर ते सुख लहै र उछ एह प्रमोद ॥ ६ ॥ दा०
इति श्रीमंगलकलाचउपी मपूण ॥

१११ ४२६६ विगतिस्थानकविचारामृतसंग्रह

प्रकाश- विगतिस्थानकाचारविचारामृतमागर ।

गच्छेद्वाप्राजयचन्द्रसूरिगिरिप्यण निमित्त ॥ २२

वीरग्रामाख्यपुरे युगमव्योमेन्दुपञ्चभि ।
 प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
 ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभि ।
 लभन्ते प्राणिन प्रौढा श्रीजिनेश्वरमम्पदम् ॥ २४
 ग्रन्थोऽष्टाविंशतिशतानुमित सर्वसख्यया ।
 जोवेदय बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
 इति श्रीविगतिस्थानकविचारामृत सग्रह मम्पूर्ण ॥

१२२ ७४७७

विचारामृतसग्रह

अन्त- सूरि श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि
 ञ्चक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिम रामावधिगक्राव्दके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६

शीलोपदेशमालावालावबोध

अन्त- इति श्रीशीलोपदेशमालावालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुमुन्दरोपाध्यायविर-
 चित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी आपणाउ
 नामगर्भित मगलगाथा कहड
 ईय जईसिहमुणीमरविनेयजयकित्तिणा कय
 एय मीलोवएसमाल आराहिय लहड बाहि मुहा ॥ ११५

व्याख्या—इराड पूर्वोक्त प्रकारि करी जयमिह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य
 शिष्य जयकीर्तिमुनि तीराइ ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलमूत्र
 कीधऊ । इति श्रीशीलोपदेशमालावालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्था-
 ग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागावधिचन्द्रो, वृद्धमास त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो
 अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२ ४३५६

सग्रहणीवालावबोध

आदि- श्रीपार्श्वनाथ फलवर्द्धिकाख्य गुरु ञ्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।
 गोदेवता भाष्यसुधासमुद्र क्षमाश्रय श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

अन्त- इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगणिविरचिते सग्रहणीवालावबोधे
 सामान्याधिकार समाप्त । इति श्रीलघुमग्रहणी वालावबोध समाप्त ॥

१४५. ४००४

संग्रहणीसूत्र (संघेननो रासछन्द)

आदि- दशमइ ग्रह सातमीड चौदग तर आटमड । अधिके एकेक तिहा थी
 तिमड । २३॥

अन्त- (ढाल एह) अर्थ- निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणे सुख करी,
 विचार करता चित्त धरता कर्मकोडिना दुख हरे ।
 ता रहु रास प्रकास उत्तम मेरु हू शशि दिण्यरू,
 शासना देवी पमाउलि श्रीसघ चतुर्विध जय करू ॥ ५५०

इति श्रीसग्रहणीसूत्रे परिपूर्णता नाम सप्तमोल्लास ॥ श्लोक सख्या ग्रन्थाग्र ॥ ६४१

१४६ ४०३१

सप्रहणीयूत्र सस्तबक

अत- मलिहारि हममूरीण सीस लसण सूरिणा रइय ।

रुधयणिरयगमेय नन्द वीरजिगतिच्छ ॥ ३०

इति श्री सप्रहणीयूत्र सपूगमिति ।

१६० ६२०३

सम्भेदशिक्षमाहात्म्य

ग्रन्थात्ते पुष्पिका- इति श्रीभगवन्ल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूषणीपदना
कडीमहीछितदेवदत्तक(कृ)ते श्रीसम्भेदसिद्धिरिमाहात्म्ये समाप्ति सूचका नाम
एकविंशतिमोऽध्याय ॥ २१

१६२ ७२१७

समाधिज्ञतकटीका

अत- तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसयुते (१७२७) सुवत्सरे,
तपस्यगुणलपञ्चमीदिने च तक्षणे पुरे ।
ममुद्धत सुपुस्तक समाधिसाधितायम्
सुवादि राजधीधनेन धारित स्तब्धो गहे ॥

१७१ ५६११

हरिवंशपुराण

अत- इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपादकमलवर्णनो
नाम पटपटितम संग ।

विशेष- श्रीवट्टमानपुर श्रीपावलय नगराजवसती निर्मितम् ।

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ
अखैराज २४२
अग्निवेश मुनि १३६, १५४
अग्रदास २११, २१३
अचलकीर्ति १६५
अजितप्रभ १५२
अद्वयारण्य ७१
अनुभूति स्वरूपाचार्य ७७, ७८, ७९
अनुपसिंह १६५
अनंतदेव ४१, ४३, ४५, १५७
अनन्त पण्डित १२६, १४६
अनन्त पण्डित (त्र्यम्बकात्मज) १४३
अनन्त भट्ट २५
अनन्तराम ६६
अन्न भट्ट ७०, ७१
अप्पय (?) (वेकटेशशिष्य) ११७
अप्पय दीक्षित १००, १४१, १४३
अभयदेव २३६, २५५, २५६, २५७,
२५६, २६५
अभयसोम १८६, १६४, २४१
अभिनव नारायणोन्द्र सरस्वती १५
अमृत कवि १७४
अमृतचन्द ७०
अमरचन्द्र १४१
अमरप्रभ २४२
अमरसिंह ८२, ८३, ८४
अमर भस्कर १२६, १२७
अष्टावक्र ५८
अहोबिल शास्त्री १२
आ
आद्यमल्ल १६०

आणन्द जेठूमल १७५
आत्माराम २०७
आनन्द कवि २०६
आनन्दगिरि १६, ६१
आनन्दघन १६१, २०८, २३६
आनन्दचन्द १६१
आनन्दतीर्थ ४
आन्हिदत्त १०२
इ
ईमरदाम २०४
उ
उज्ज्वलदत्त ७३
उत्तम २६६
उत्पल भट्ट ६६, १०३, ११२, ११५, १६८
उदय २११
उदयनाचार्य ७०
उदयप्रभ ८५
उदयरत्न १६४
उदयरतन १७८, १६४, २४०
उदयरज १६७
उदयवन्त १७०
उदैराज १८२
उपेन्द्र ११४
उमास्वामी २६३
ऋ
ऋषभभागर १६४
ऋषि शर्माचार्य (महर्षि) १२१
क
कृपाराम १०४, १७४
कृपाराम मिश्र १०२
कृष्ण कवि २१७, २२७

कृष्ण जीवन २०८
 कृष्णान्त १५६
 कृष्णानाम ५६ २०८ २११ २१८
 २३३ २३६
 कृष्णदास पयोदारा १३
 कृष्णानन्द ६६
 कृष्ण मिश्र ७६
 कृष्णयाजी ६४
 कल्याण महर्षि ७१
 कनकवीर १७८
 कनककुमार १५१ २४२, २४३
 , (विजयसेन सुरिगिण्य) १५३
 कनकनिधान १६०
 कनकसुन्दर २०४
 कनकमोम १६५ २६६
 कवीर १६७
 कमलबन्धु १८१
 कमलसम २४६
 कमलाम्बर ३६ ११५ १२०
 , (रामकृष्णसुत) २८
 भट्ट ४२, ४५
 कल्याणदास २०३
 कर्वाचाम २१ २७
 कर्णसिंह ३२
 कर्मचन्द १७३
 कलश कवि १७१
 कल्याण १४६ १८६
 कल्याणकर १००
 कल्याण मिश्र २२२
 कल्याणराम ६०
 , वर्मा ११८
 कविकांत सरस्वती ४४
 (शान्तिवाचाम सुत)
 कवियोग १८१ १६१ १६३
 कविराज भिगु ६६
 कवि गेवर १२५
 कवी-प्राचाय २२०

कात्यायन २८
 वालिदास ७, ६०, १२२, १२८ १२६
 १०७ १२८, १३० १३४ १२५
 १३६ १४०, १४२
 वागानाथ ६८ १११, ११४ १५४
 , भट्ट (जयराम सुत) ३२
 वासीराम १६०, २०१
 विश्वसिंह २१८
 विगोरी शर्मा २१४
 वीरप्रभ २४१
 वीरविलास २३०
 कुबकोक पण्डित २५
 कुवेरानन्द वर्मा ५०
 कुमुदचन्द्र २३७
 कुलपति मिश्र २३१
 कुलमण्डन २६८
 कुशलधीर १६३
 कुशलसाम १७७ १८८ २३८
 कुशला २१६
 केदार भट्ट १२२
 कल्याण १५५
 कशरविमल २०२
 केदारराज १७६
 काव्य ८७ ६३ १११ ११४, २ ८
 (प्राचाय) १८६
 (कवि गेवर) १३०
 दास १६५ २२१
 , दत्त ६२ १०७
 देवद भट्ट १३१
 मिश्र ७०
 देसरसिंह १६७
 देसरी कवि (बालकृष्ण भट्टसुत) २७४
 देवत्याग्रम १३
 दोव १२५
 दीविद मिश्र २३५
 दीण्ड भट्ट ७६
 देवानी भाटण १७४

ख

खडियो जगो १६१, १६२

खुशाल २३३

खुशालचद १८७, २३५

खेतल १७३

खेतसी २२६

खेमचद २०८

खेमो १६३

ग

गजकुशल १७०, २००

गजसागर २६२

गजसार २३६

गणपति दैवज्ञ २४, २८, १०५

(रावल हरिशङ्कर सूनु)

गणपति मिश्र २२७

गणेश ८८

,, गणक (दुदिराजात्मज) ६४, ६५

,, दीक्षित ६०

,, दैवज्ञ ६३, ६४, ६५, १०२, ११४

गर्ग ऋषि ८८, ६८, १०१, १८३

गाङ्गला १८८

गिरिधरराय २३०

गिरिधारी मिश्र १११

गुणकीर्ति १६७

गुणभद्र २०७, २६७

गुणरत्न १२१

गुणविजय २३८, २५१

गुणविनय १२६

गुणसागर १६७, १७६, १७७, १८०

गुणसार २४३

गुणाकर १२०, २४२

गुरुप्रसाद २२०

गुरुसेवक (श्रीकाल) ३२

गोपदास ५८

गोपाल ३, ७८, ६२, २११, २१३

गोपालदास १५४, १८३, १८८, २१६

गोपाल (न्याय पचानन भट्टाचार्य) ४२

गोपाल भट्ट ६४, १४२

गोपीनारायण (सूर्यसेन महीमहेन्द्र) ४२

गोपेश्वर ६८

गोरखजी १७१

गोरक्षनाथ ३८

गोवर्द्धन ७१, १२६, १३०, १३१, १४०

गोवर्द्धन कण्ठोलक (द्विज राम सुत) १०१

गोविन्द (त्रिपुणु दैवज्ञ सुत) ६६

गोविन्द कर्वादार १४०

गोविन्द गरि २४०

गोविन्द ठमकुर १४१

गोविन्ददाम १६२

गोविन्द दैवज्ञ ११६, ११७

गोविन्द गाटाणी २१०

गोविन्द पण्डित ४२, ४३

गोविन्दराम २०३

गोविन्दाचार्य ५६

गीतम मुनि ८६

गीरीकान्त भट्टाचार्य ७०

गीरीकान्त सार्वभौम १३

गङ्गा १६७, २०८

गङ्गादास १२२

गङ्गाधर (रामचन्द्र पाठक सुत) २६

,, १००

गङ्गाधर भट्ट २७३

गङ्गागम १०६

,, कवि (जडच पनामक) १४१

,, भट्ट ४१

गङ्गेश्वर ७०

गङ्गेश मिश्र २२७

च

चक्रधर १०६

चक्रपाणि ६७, १५८

चक्रवर्ती ६

चक्रदास २१६

चतुर्भुजदास कायस्थ १८७

चतुर्भुज मिश्र २ १२७

चतुरविजयगणि १०७

चरणदाम २१८, २३६

चानण विजियो १८८

चारणक्य १४५

चामुण्ड कायस्थ १४५

चिन्तामणि २०६ २१०

पण्डित ११०

चिरञ्जीव भट्टाचार्य ६६

ब्रह्ममणि चक्रवर्ती १०४

ब्रह्ममणि भट्टाचार्य ७१

चतनदास १७४

चतयदाम १२७ १७६ १६६

चनराम २०१

चना १८६

चोयमल १७६

चोषो श्रावक १६६

चौर कवि १३०

चद ? १८४

चद कवि १८४, २३३

चद्रकीर्ति ७८ ८१ १८५

चद्रचूड २५

चद्रमिह ६०

चद्रशावर ११२

छ

छयमिह श्रीवास्तव २२७

छीतरदास १७४

ज

जगन्नाथ १०८

जगदानन्द महामहोपाध्याय ३१

जगदीश २०८ २१०

जगदीश भट्टाचार्य ७१

जगन्नाथ भट्ट (सलङ्ग पण्डितराज) २

जगन्नाथ (पण्डितराज) ५, १३ १३१

१४१

जगन्नाथ मिश्र १२२

जगन्नाथ सम्राट १११

जगन्नाथ मालावत १७०

जटमल १७१

जटभरत ६१

जनगोपान २१६

जनादन २२८

जयकृष्ण ७५

जयकीर्ति २६८

जयमणि ६२

जयदेव १२६, १३१, १४१

जयपारदीक्षित १५६

जयराम ६४

जयराम गायपञ्चानन ७१

जयराम भट्ट १७

जयराम भट्टाचार्य २२

जयरङ्ग १६७

जयवल्लभसूरि २३६

जयशंकर २६५

जयानन्द २८४

जसराज १८२ २१६

जसवन्तमिह १७६, २१६

जानकवि २१७

जिनकीर्तिसूरि २३६

जिनचन्द्र ८१

जिनदत्तसूरि ७२ २६८

जिनदास १७६

जिनप्रभ २६४

जिनभद्र २६८

जिनमाणिक्य २०२

जिनरङ्ग २०३

जिजवल्लभ १४४, १६५, २४२ २६५

जिनसागर २४० २४१

जिनसागरसूरि १४२

जिनसुन्दर १७६ २६४

जिनसूरि १७०

जिनसेन २३६ २७१

जिनहाथ १६४, १६६ १७४ १८२

१६४, १६५, १६६, २०२, २०८
 २०७, २६८
 जिनहर्षमूरि (सुमतिहम) १६४
 जिनहस २४७
 जिनोदय २०३
 जीवक ५५
 जीवगोस्वामी ५६, ६०, ६१, ६३
 जीवनाय ११६
 जीवागुर्जर (याज्ञिक नरहरिमुत्त) ६६
 जैनकवि १६८
 जोरावरर्मिह २२१
 ठ
 ठण्डीराम २१६
 ठाकुरमी १८२
 ड
 डेडराज २२६
 (जनराज)
 ड
 दुण्डियज्वा १३४
 दुण्डिराज ६३, १०६
 त
 तत्त्वहम १६६
 तत्पणीवीरेन्द्र ३२
 (नरोत्तमारण्यमुनीन्द्रशिष्य)
 तिलकसूरि १८६
 तिलकाचार्य २६३
 तुलछीदाम २०६
 तुलसीदाम १४, २२२, २२३, २२४,
 २२५, २२६, २२७, २२८, २३३, २३४
 तेजसिंह १४८, २१६
 तेजसिंहगणि १४२
 तेराकवि १८५
 द
 दत्तलाल १७८, २१६
 दलपतिराम २

दलपतिराय २०७
 दक्षनकवि २११
 दाह १६८
 दाहजी १७८, १०६
 दामोदर १०८
 दामपण्डित १६०
 दिनकर ८७, ८६
 दिनकर भट्ट (रामकृष्णात्मज) ४५
 दिवाकर १००, १०१, १०४, ११२
 दिवाकर (नृमिहगणकमुत्त) ६२
 दिवाकर भट्ट ४५
 दीपचन्द्र १४५
 दीपोऽपि १७०
 दीपो १७८, २०२
 दुर्गदेव ८५
 दुर्गशिङ्कर ११६
 दुर्गशिङ्कर पाठक ८८
 दुर्गशिङ्कर शुक्ल २८
 दुर्योधन ६८
 दुर्वासा ऋषि ६
 देव कवि १६६
 देवकीनन्दन (जीवानन्द सुत) २३
 देवगुप्त १६३
 देवचन्द्र २६०
 देवदत्त १६८, २६६, २७१
 देवप्रभ १३१
 देवभद्र २६६, २७०
 देवयाज्ञिक २१, २२
 देवयाज्ञिक (प्रजापतिमुत्त) २३
 देवमागर (रविचन्द्रशिष्य) ८२
 देवसूरि ७२
 देवसेन पण्डित ७१
 देवीदान १६८
 देवीदाम २१४, २२२
 देवेन्द्र २६५
 देवेन्द्रसूरि १४४, २६१, २६८
 देवेन्द्राश्रम ३३

घ

घनपाल (पण्डितवाधव) २४३
 घनराजगणि (भुवनराजगणिगिण्य) १०५
 घनमार १४४, १४५
 घनेश्वर १३४ १३६ २७१
 घनञ्जय ८४
 घनञ्जयसूरि ११
 घमकुमार १५२
 घमघोष २४३
 घमदास १४३ २६०
 घमदेव १६४
 घममन्त्रि १६४ १६०
 घममन्दिरगणि १८२
 घममेरुगणि १३६
 घमराजाध्वरीन्द्र ६६
 घमयद्वारा २०२
 घमरामुद्र १६३
 घमसागर २५२
 घमसी २८७
 घममुषी १४३
 घमेश्वरमालवीय ८६
 धुरधरमल्लारि १२२

ग

नृपति भूपति ११८
 नृमिह २५
 नमिहन्वण १२०
 नृमिहाश्रम १३०
 'वायवागी' भट्टाचार्य १४१
 गकुल १६८
 नयमल २२७
 नयनमुल २१२
 नयामुल (वेगवमिश्र मुल) २२८
 नयधियाय १६०
 नयविनाम २६८
 नयमुदर १६७ २०२
 नयना नारण १६३

नरपति ८७ ६६
 नरसिंह १३
 नरसिंह (रतनराजगणिगिण्य) १०६
 नरसिंह सरम्बती ६७
 नरहरदास २०३
 नरहरिदास बारहठ १६४
 नरहरि भट्ट १४३
 नरेन्द्रपुरी ७६
 नरोत्तमदाम २३३
 नामदेव उपाध्याय ३६
 नागभट्ट ३८
 नागराज (टाकवशीय) १३१
 नागरीदास २१४ २०६
 नागाजुन १५५
 नागाजुनसिद्ध ३१
 नागेग ७६ ८१
 नागेग भट्ट ७५
 नागेग भट्ट (श्रीकालोपनामकविबभ्रमुत)
 १४२
 नागोजी भट्ट १२ ३२ ७५
 नाथिया १८१
 नानू ऋषि २४४
 नाभासि २१७
 नामदेव १८१
 नारचन्द्र ६७ १०३
 नारायण १० २१ ८६ ६० १०८
 (रामेश्वर भट्टमुत) २५
 नारायणलाम सिद्ध (श्रद्धादासमुत) ६८, ६९
 नारायणदवण (मनतपुत्र) १०७
 नारायणवज्र कीर्ति ११२
 नारायण पण्डित (नृमिहन्वणमुत) ८८
 नारायण भट्ट ३ २७ १३६
 (रामेश्वरमुत) २८
 नारायणमुनि (मठकोषमुनि) २६
 नाहरगान रात्रिहीत २०४
 नित्यनाथ १५८
 नीलकण्ठ = ४२ ४५ ६४ ६५ ६८

१०४, ११२, ११३, ११६, ११७,
१३२, १३३, १४०

नीलकण्ठ (शकरभट्टात्मज) २४, ३६

.. (गोविन्दमृगिमु ३७)

नीलकण्ठ शुक्ल ७६

नेमिचन्द्र २६१, २६३

नेमिप्रभ १४६

नन्द २०२

नन्दमिश्र ६८

नन्दन (श्रमरमिहमूनु) ६०

नन्ददाम १४, ६०, १८१, २०६, २१०,

२१२, २१४, २१७, २१८, २२०,

२२१, २२६

नन्दराम ८७, २२०

नन्दराम मिश्र ८८, ६८, ११६

नन्दिशेखर ८८

प

पतञ्जलि ६५, ७३

पतञ्जलिन्पि ७५

पृथ्वीधर मिश्र (शाण्डिल्यगोत्रज, जगन्नाथ-
सुत, हरपुरवामी) ३७

पृथ्वीधराचार्य ७

पृथुयश ११५, १६८

पृथ्वीराज १६८, १६३

पद्म कवि १६८

पद्मचन्द्र मुनि १७५

पद्मनाभ ११२

पद्मनाभ (नर्मदात्मज) १०२

पद्मप्रभदेव ८

पद्मप्रभमूरि १०४

पद्मसागरगणि १८६

पद्मसुन्दर ७६

पद्माकर २०६, २१३

परमानन्द ५४

परमानन्ददेव ६६

परमानन्ददाम २११

परमानन्द विष्णुपुरी (दण्डिपुर) ८३

परमानन्दमार्मि ६८

परमन्त्र १६६

परममुरसोपाध्य १००, ११०

परमहम विष्णुपुरी ६२

पर्वतधर्मार्थी (कुन्दकुन्दाचार्य शिष्य) ६८

पराशरगुणि ११२

पराशरमुनि ८८

प्रकाशानन्द ७२

प्रजापनिदाम १००

प्रताप २०१

प्रतापगद्देव ३१

प्रतापगद्देव ३३

प्रतापसिंह मवाई १६४, २२८, २२९,

२३०, २३४, २३६

प्रतापसिंह (महाराज) २११, २१५

प्रतापसिंह २१२, २१३, २१४, २१६,

२२०, २२१, २२६

प्रद्योतम भट्टाचार्य १४१

प्रधानपुस्तक २२१

प्रद्योधानन्दमरन्वती ११, ५६

प्रभाचन्द्र २३६, २७१

प्रभुचन्द्र १७६

प्रभुपनिगटीय ७३

प्रज्ञानन भट्टाचार्य ७२

पाणिनि १७, ७३, ७५

पारस्कर २६

पार्श्वचन्द्र २५०, २६५

पाजचन्द्र १७७, २५८

पासचन्द्र २४३

प्रियदाम २१८

प्रियादाम २१७

पीताम्बर १५४

पुञ्जराज २४०

पुञ्जराजनरेन्द्र ७८

पुण्यकीर्ति १८४

पुण्यानन्द मुनीन्द्र ३१

पुण्यसागर १६२
 पुनहकवि १८८
 पुलिन्द भट्ट (वाणभट्टतनय) १२७
 पुरपोत्तम ४०, ४१, ५५ ६८
 पुरपोत्तमदेव ७६
 पुष्पदत्त ७, १२
 पूर्णानन्दगिरि ३६
 पूर्णानन्दपत्नी १३४
 पूर्णानन्द श्रीगौड ६०
 प्रेमजी गणि २५८
 प्रेमविजय २४३
 प्रेमनिमल २४१

ख

बहुस्पति ८३
 बल्लती १८५
 बनवारीदास २०२
 बनारस १६५
 बनारसी गंग २१६
 बनारसीदास २०१ २०६, २१० २१२,
 २२६, २३२ २३६, २४३ २४५,
 २८३
 बप्प भट्टि २, ८
 बलदेव २
 बलभद्र ७२ १०६, १२०, २३०
 बलभद्रगुप्त २२
 बल्लानन्द ४२
 बल्लालसेन ८५ १५३
 बल्लगुप्त २०१ २३६
 बल्लभक्त-ममुनि ६०
 बल्लजिणदास १६३, १८२ २०४
 बल्लदेव २६३
 बल्लरायमन २१६
 बल्लहता २४४
 बल्लाद ६७
 बल्लानन्दतत्त्वसार ५६
 बाण १२७

बाबादवन (रामपुत्र शिवानुज) १००
 बालकृष्ण १००, २२२
 बालकृष्णानन्दसरस्वती ६४
 बालचन्द्र १८६
 बालपुरी २३२
 बिहारी २१७
 बीका १८८
 बुद्धिविजय ११०
 बुद्धिराज ३३
 बजापण्डित ६०
 बीपदेव १५७ १६०
 बीपदेवमधुसूदन १४०

भ

भक्तिलाभ १७२ २४५
 भक्तिविजय १५०
 भगवतीदास २१५
 भगवान् (अजु नवागांगिप्य) २०६
 भगवानदास निरजनी २०७
 भगवतीदास १७६
 भट्ट गदाधर (ज्ञानानन्दपरनामधेय विमल
 शिष्य शिवगङ्गस्मृत) ३८
 भट्टाचार्य ३६ ४०
 भट्टाचार्यशिरोमणि ७३
 भट्टाचार्यसिद्धातपञ्चानन ७१
 भट्टाजी ८१
 भट्टोजीदीक्षित २६ ४१, ४६, ७५, ८०
 भट्ट १८६
 भरत ११७ ११८
 भर हरि १४४, १४५
 भवदेव ७०
 भवदेव महोपाध्याय ६५
 भद्रराजदगाण १७६
 भद्रसन १७२
 भवानी २१६ २२२
 भान २०६
 भानुकीर्ति १६१

भानुजी दीक्षित ८३
 भानुदत्त १४१
 भानुदत्त मिश्र १४२
 भानुमेरु १६७
 भारवि १२७
 भारामल २७०
 भाव कवियरा १६३
 भावचन्द्र १५२
 भावदेव १५१, १५३, १५६
 भावप्रभ १६५
 भावभट्ट (जनार्दनसूनु) १२४
 भावमुनि ६०
 भावविजय २३७
 भास्कराचार्य ८६, ८७, ८८, १०२,
 ११२, ११६
 भास्कर धर्मा १२२
 भीमविजय २६४
 भीमनेन ७५
 भीषम २१६
 भुवनकीर्ति १६२, २४१
 भूधर ५६, २१५, २३६
 भूपति मिश्र ७६
 भैवानन्द ७६
 भैरवदत्त (हरिरामशमपुत्र) ११२
 भोज १५८

म

मकरन्द २०६
 मगनीराम १८२
 मञ्चनाचार्य २५
 मण्डनसूत्रधार १११
 मणिकण्ठ भट्टाचार्य ७३
 मतिकुशल १७३
 मतिचन्द्र १६७, २६१, २७०
 मतिराम २२१
 मतिवर्धन २६२
 मतिसागर २०५
 मतिसागर उपाध्याय ११२
 मतिमार १६७, १६८, २७०

मथुरानाथ (मानवीय मुगल) ६१
 मदनगोपान १५५
 मदनपाल १५६
 मदन भट्टोपाध्याय ७१
 मदनम्वामी ६३
 मधुशर्मा ६
 मधुराचार्य १४०
 मधुसूदन १२६
 मधुसूदन दैवज्ञ (श्रीणनिगिप्य) १०१
 मधुसूदन सरस्वती ७, १२, ६८
 मनगम १७३
 मननाराम (रामकृष्णमुनि) १०७
 मनोगम ११५, २००
 मनोरथ कवि १३०
 मनोहर २०५
 मनोहरदाम २२६, २३१, २३६
 मनोहरदाम सोनी २१२
 मयानुर ११८
 मयूर कवि १४०
 मलयकीर्ति १७३
 मलयगिरि २५३, २५६, २५७, २६१
 मल्लिनाथ ६३, १२७, १२८, १३६,
 १४०
 मल्लकदास १८३
 मलयेन्द्रसूरि १०६
 महमद १८६
 मन्नात्मा आग्निपूरुष ६
 महादेव ६२, ८८, १००, ११०
 महादेव (हीरामणिसुत) ६०
 महादेव (कान्हडजी वाडवसुत) १०७
 महादेव दैवज्ञ ६३
 महादेव राजगुरु २२, ११८
 महादेव सरस्वती मुनि ६०
 महानन्द २३८
 महानन्द पाठक २७
 महामुद्गल भट्ट १३५
 महाक्षपणक (काश्मीराम्नायी) ८२
 महिमानिधान १५०

महिमोत्प १६६
महीनाम ७७
महीनर ३४ ३५ ६४, ६५ १०३
महान्वि २०३
महेवर ७६ १३८ १५८
महेवर वि ७३
महेश्वर भट्ट ६
महेवर नामा ८३
मह द्र सुनि १०६
माघ १५६
माणिक्यसु १४६ १५०, २६०
माघव १५ २२ ४२, ४३ ७७,
१०३ १५६
माघवदास २१६
माघवदवा (गोविन्दगुप्त नीलाण्डपीठ)
१२३
माघवपण्डित १५४
माघव भट्ट ७८
माघो (मगवत हरिदासगिष्य) २२८
माघोनास १८१ १६२, २२५
माघोदास गङ्गा १६२
माघवि १६५ २३१
माघ वद्वार १६६
मानसु २४१ २४२
मानसु (हमराज) २४१
मागदव २४२
मानसागर १६८ २०२
मागववि १८७
मातजा (रमणनामभट्टगुप्त) २७
मानव्य १८४
मागमुनि १८३
मिठ्ठा गुप्त ११६
मुकु २१७
मुकु १५ १०५
मुनिष २६३
मुनिरागुनि १४६
मुरारि १२६

मुरलीदाम २१६, २३३
मुरलीधरभट्ट २१३ २२२
मूला (मयारामगुप्त) २३७
मूला वाचक २४३
मेघराज वाचक २५६, २५७
मेघराज (सविषविजयगिष्य) १८२
मल्लुङ्ग २६५
मेरुसुन्दर १२२, २४२, २६८
मोतीनास २०६
मोतीनाम २१६
मोरेवर १५६
मोहन २१५
मोहनदाम २१६
माहनदास मिश्र १४०
मोहनविजय १७२ १७३ १८२, १८८
१८६ १८० २४५

॥

यदुनाम १०७
यगवतसिंह (महाराज) २०७
यगोदानन्दगुप्ता २२२
यगोधर मिश्र ६७
यगोयधन १७२
यगमोम २३६
यगद्वार ११३
यामुनादास १ २
यामवलाय क्रवि १६ ६५
यागि दीक्षित ४५
यामवला १६
यागेवर ६१
याद्वाराज २३

२

रामुने ७३
रामुने तर्कानन्दार ७१
रामुने भट्टाचार्य ७०

रघुनाथ ८, १७, ७०, २२०
 रघुराम (जिवराममुत्त) ५६
 रघुराम कवि २३१, २३२
 रघुवीर १०८
 रघुवीर दीक्षित २२
 रत्नकीर्ति १५१
 रत्नजेवर १६५, २०४, २०५, २२०,
 २५७, २६०, २६२
 रत्नाकर पुण्डरीक ४०, ४१
 रत्नेश्वर गूरि २८
 रत्नविमल १८४
 रत्न हमीर २०४
 रविदाम १३४
 रमग्रानन्द २०६, २१३
 रमानन्द २२६
 रमनायक २१४
 रसरशि २०७, २१३, २१६, २२०, २२१,
 रमिक १६१ २३५
 रसिकराय २१७
 रमिकोत्तम ६१
 राघवचैतन्य ७
 राज १६३
 राजपि भट्ट ६०
 राजन्रपि १०६
 राजमार्तण्ड १५८
 राजवल्लभ पाठक १५०
 राजसिंह १६३, १८५, १८५
 राजसी २०१
 राजशील पाठकवर १४६
 राजानक क्षेमराज १३
 राजुल १६१
 राधाकृष्ण २२२
 राधागोविन्द मिश्र (क्रिओरीरमणियाय
 नवनन्दमुत्त) १३६
 राधादामोदरदाम १२२
 राम ११०, १५८
 रामकृष्ण ११, ६०, ६१, ११०

रामराम कवि ५, ६
 रामराम देव (नीलमण्डपनीय
 नापदेव मुत्त) ३८
 रामराम भट्ट (नागयणमुत्त) ५१
 रामरामपि ६०
 रामराम १७२, २३५
 रामचरण १८१, २२५
 रामचरणदा १६२
 रामचन्द्र ७८ ११८, १२७, १६६, १८६,
 २०५, २२६
 रामचन्द्रराम २३०
 रामचन्द्र नैमिषाणी २२
 रामचन्द्र भट्ट (मिष्टानुत्त वाचस्पती) ४०
 रामचन्द्राचार्य (गोदानगुप्तिया) ४०
 रामचन्द्राचार्य गोमयाजी ११७
 रामचन्द्राश्रम ७४, ८१
 रामतीर्थ ३५
 रामदान मुत्ता २२६
 रामदेवज ८६, १०६, १०७, १०८,
 ११०, १११
 रामदेवज (मधुनूदनात्मज) १०६
 रामनाय १६२
 रामभ्रात (नीतापनिशरण) २०५
 रामरत्न २१६
 रामरुद्र ११०
 रामलाल २२७
 रामशरण २०४
 रामानुजाचार्य ६२, ६६
 रामानुजदाम ६६
 रामानन्द १६२
 रामानन्द भिष्म (रामेन्द्रवनशिया) १
 रामाश्रम १३०
 रामेश्वरदाम २१०
 रामेश्वर भट्ट (नारायणभट्टमुत्त) ४१
 रायचन्द्र कृपि १८५

रावण १२, ११८, १५६
रघुदास १६४
रचिपति महोपाध्याय १२२
रुद्रधर २८
रुद्रधर (लक्ष्मीपरात्मज) ४१
रुद्रधरशिपाठी ११० १११
रुद्रमणि १६
रूपगोस्वामी ६२ १२७ १४०
रूपचन्द्र १४५ १७६ २१६ २४०
रूपचन्द्र २६७
रूपनारायण ४२
रूपसनातन ५६ ६३
रदास १६३
रगनाथ ८६ ११४ ११६
रगदाम १३

स

सच्छीराम २०८
सचिचन्द्र ६२
सचिचिजय १८०, २३७
सचिचिजयान १६३
सल्लभाचार्य ११२
सल्लभराजान वारठ २३४
सल्लभराजाचार्य ६६
सल्लभीधर १४१
सल्लभीनिवास (नसिहाश्रमशिष्य) ३१ ३६
सल्लभीनिवास १३५
सल्लभीपति (कृष्णानन्दसुत) ८६
सल्लभीपति ८६
सल्लभीवल्लभ १६४ २१३
सल्लभीवल्लभ गणि १६८
सल्लभीहृष २६७
सल्लभवन १८ १६३
सल्लभ १८० १८७ १६२ १६३
१६४ २३५
सल्लभचन्द्र २३१
सल्लभदाम २०७ २१८

सालभट्ट (अनारगिरिशिष्य) ३६
सालमणि (जगन्नामात्मज) ६६, १०७
सावण्यकीर्ति १६२
सावण्यविद्या २३८
सावण्यसमय २०२ २३८
सीतागुरु २ १२७
सेगसूरि २७०
सोनिभ्वराज १४० १५८, १५८

य

यद्विनिष्ठ २३
यद्विजय २६०
यद्व १६७ १८२ २०६ २१३ २१६
२२६ २२७
यद्व (यद्वराज) २२८
यद्वराजनवास २३०, २३२
यद्वराजनहित २१०
यद्वराज २७६
यनमाली ६७
यद्वराज ७५ ७६ ७६
यद्वराज ६०
यद्वराजाचार्य (बहुतनाथाचार्यशिष्य) ५८
यद्वराज ७३
यद्वमान सूरि ७४
यजजीवन २३६
यजनाथदीक्षित १२४
यजलाल गोस्वामी ६६
यजवासीदास २२६
यल्लभ ४६, ५८
यल्लभ (आनन्ददेवायनि) १३६
यल्लभगणि ८२
यल्लभाचार्य ५३ ५४ ६० ६१, ६२
६८ ६९ २११
यराहमिहिर १०२ १०३ १०५ १११
११२
यसत १८०
यसतराजभट्ट ११३

वमिष्ठ ऋषि ११३
 वसुदेव दीक्षित २३
 वाग्भट्ट १४२, १५४
 वाचस्पति ६७, १७६, १५७
 वानर २४४
 वाल्मीकिमुनि ६७, १२६, १३४, १३७
 १३८, १३९
 वासुदेव भट्ट ७८
 विक्रम १३०
 विघ्नराज १८५
 विजयचन्द्र १६७
 विजयदेवनूरि १६८
 विजयगमाचार्य ८
 विजयहर्ष १६३
 विट्ठल ८, ८६
 विट्ठलदीक्षित २२, ५४, ६१
 विट्ठलेशदीक्षित ११
 विद्यातीर्थ ११
 विद्यानन्द ८०
 विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) ३८
 विद्याभूषण ५४, ६८, १२२
 विद्यारण्य ३७
 विद्यारण्य योगी १३१
 विद्यारवि १७२
 विद्याराम १४२
 विद्याविलास ६१
 विद्वत्तारायण ६३
 विनयविजय १६६
 विनयानन्दर २४२
 विनीतविमल १६४
 विनोदीलाल २४१
 विमलमूरि १४४
 विलाम २१२
 विष्णुदास २१६, २३०
 विष्णुदेवज १०२
 विष्णुपुरी ६३
 विष्णुगुप्त १५३ २३५

विथाम १७८
 विष्णुनाथ ११, २२, ७०, ८८, ९३,
 १०४, ११३, ११८, ११९
 विष्णुनाथ चक्रवर्ती ३
 विष्णुनाथ दैवज्ञ ८७, १२०
 विष्णुनाथ पञ्चानन, भट्टाचार्य ७२
 विष्णुनाथ (श्रीपतिद्विवेदिमुन) २२
 विष्णुभूषण २११
 विद्वामिन ऋषि ८
 विश्वेश्वर ५०, ५८, ६१, ८४, १४१
 विश्वेश्वर (लक्ष्मीधरानन्द) १४१
 विश्वेश्वर लीलाय ४२
 विश्वेश्वर सम्बन्धी ६२
 विश्वेश्वरानन्द ७०
 विद्यामदत्त १३४
 विज्ञानेश्वर ४०
 विज्ञानेश्वर (श्रीपञ्चनाभभट्टापाध्यायात्मज)
 ४३
 वीरचन्द २००
 वीरचन्द्र २३८
 वीरविजय २४३
 वीरनागर गणि १०६
 वेङ्कटाचार्ययाजी १३६
 वेङ्कटनाथ वेदान्ताचार्य १०, १४
 वेङ्कटेश १०६
 वेणीराम १७६
 वेदाचार्य १४
 वेदव्यास ५, ११, ४८, ४९, ५६, ५७,
 १३१, १३२, १३३
 वैजलभूषति ७४, ७५
 वैद्यनाथ १४१, १५७
 वैद्यनाथ शाम्भव ६५
 वैद्यनाथ (नीमनाथवशज) २२७
 वगसेन १५५
 वशीश्रुती २१४, २२६
 वजीधर ६४
 श
 श्याम २०१

दयामन ११५
 दयामाचाय २५६
 श्रीगृष्ण (नरसिंहमूरिसूनु) ७८
 श्रीगृष्ण कवि २२२
 श्रीगृष्ण भट्ट २०६ २११, २१५ २२०
 श्रीवण्ठ १२२
 श्रीचन्द्र २६६
 श्रीचन्द्रपुरि २६६
 श्रीघर ११
 श्रीघरस्वामी १० ५१ ५२, ५३, ५४,
 ६२ २३ ६४, २७३
 श्रीनिवासदास ६, ११, ६४, ६५
 श्रीनिवास भट्ट ६६
 श्रीनिवासाचाय ४४
 श्रीपति ६०, ६१ ६२, ११०
 श्रीपतिपण्डित ६४
 श्रीपति भट्ट ८६, १०४, २३६
 श्रीरामवर्मा (हिम्मसयमपुत्र) १२६
 श्रीरामाजुज ३६
 श्रीरामोपाध्याय ३६
 श्रीवल्लभ ८६
 श्रीवल्लभगणि ८१
 श्रीविठ्ठल ६६
 श्रीसार १६४, १६५, १६७ १६६
 १६०, १६३
 श्रीहृष ७० १३०
 श्रुतसागर २२६
 शठारि ? ६६
 शताब्द १०४, १०७
 शायर ७१
 शनिनाथ मायुर २११
 शम्भुजीपाध्याय १८ २०
 शाण्डिल्य श्रुति ६७
 शाण्डिल्य १८६
 शांतिनाथ १५७
 शामिताहन २७३

शान्तिघर १५६, १६० १६१
 शांतिविमल १६५
 शांतिहृष १६४, १७० १८७
 शितिकण्ठार्मा ७१
 शिरोमणिदास २१२
 शिवकवि २०८
 शिवचन्द २५०
 शिवदासराय २३२
 शिवनिधान १६३, २५३, २६६
 शिवपण्डित १६०
 शिवप्रसाद ७४
 शिवराम १६५
 शिवलाल पाठव ६६
 शिवानन्द ११४
 शिवादित्य ७२
 शिवानन्द भट्ट ३८, ४१ १५६
 शीलाङ्क २४७
 शीलाचार्य २५८
 शुक् ११५
 शुद्धकीर्ति १६८, २७३
 शुभचन्द्र १६४
 शुक्कचन्द गणि २६१
 शुभगीत २०२
 शूलपाणि ४६
 शैलमालम २२१
 शेरसिंह १८३
 शेपकमनाकर १२६
 शेपचित्तमणि १४२
 शेपनाथ ६०
 श्यामद पण्डित ७२
 शोभन २४४
 शकर भट्ट २२, १५१
 शारदाचार्य १, २, ३ ४ ५, ६ ७ ११
 १२ १३, १४ १६ ३८ ५०, ५८
 ५६ ६४, ६५ ६६, ६७, ६८, १००
 १२६ १२५ १५४

शङ्कराचार्य नारायणतीर्थ ५६

शङ्कर ऋषि ४४

शम्भूनाथ मिश्र (मुख्यदेवशिष्य) २०७

स

सकलकीर्ति १५१, १५२, १७१, १८३,

१६८, २३७, २३८, २४०, २४२,

२४४, २५५, २६४, २६८, २७१

सकलकीर्ति भट्टारक २६०

सकलचन्द्र सूरि २३८

सत्यानन्द ३३

सदानन्द ६६, ६७

सदानन्द गणेश ८१

समयराज २४०

समयसुन्दर (सकलचन्द्रशिष्य) १२२,

१३६, १७०, १७३, १७४, १७८,

१७९, १८० १८१, १८२, १८६,

१६८, १६९, २०२, २४२

समरसिंह ८६ ६४, ६५

समुद्र ऋषि ११८

समुद्रमुनि १६५

समन्तभद्र २४४

सरूपदास १७७

सरस्वती (वरिसाल) २१६

सरस्वतीतीर्थ (परमहंसपरिव्राजकाचार्य)

१२८

सर्वदेव ७१

सहजसागर २६०, २४३

स्वच्छन्द शङ्कराचार्य ११३

स्वप्नेश्वराचार्य ६७

स्वात्माराम योगीन्द्र ६६

स्वरूपदास २१४, २१५

साईदास १८०

सागरचन्द १७४, १८६

सागरचन्दसूरि ६७

साधुकीर्ति २००, २०१, २३८

सामन्त (हर्षरत्नशिष्य) ६५

नायणाचार्य १८

नारकवि २२०

नारग १८८

सानवाहण २३५

मिद्वमेन ७१, २६३, २६५

मिद्वान्तवागीश ७१

मिद्विविजय ११६

सिद्धमेनमूरि १६६

मिहतिनक १०४

मिहानन्दि २४३

मीतागम पर्वणीकर १३, १३०

मुसदेव मिश्र २११

मुगलाल १४०

मुखसागर २०६

सुजसविजय १६६

मुदर्शनविजय २४०

सुन्दर २१३

सुन्दरदाम २०७, २०८, २११, २१४,

२२५, २२८, २३३, २३४, २३५,

२३६

सुन्दरलाल २०८

सुन्दरसूरिचन्द्र १६७

सुवन्धु १३६

सुमतिकीर्ति १६४

सुमतिरग २३६

सुमतिविजय १३६

सुमतिसूरि २५४

सुमतिहंस २५२

सूत्रधारमण्डन ६६

सूर २३०

सूरज १८१

सूरजीशाह १६५

सूरत २१६

सूरतमिश्र २०७, २०८

सूरतदास ४१६

सूरदास २३४

मूरदेव भट्ट (गोपीनाथमुल) १३६
 मूरकवि ६५ १३७
 मूरमल्ल १६४
 मूरविजय १६०
 मूरविप्र ८७
 मूरसागर १७६
 सयर १६६
 सेवकसूर १६०
 सोमतिलक २७३
 सोमचन्द्र १२२
 सोमचन्द्र (रत्नगोस्वरगिण्य) १४४
 सोमनिलक १२१
 सामनाथ १२१ २११, २२१
 सामनाथ (नीलकण्ठात्मज) २३१
 सोमप्रभ १४६, १४७, २३८
 सोमप्रभाचाय १४०
 सोमबिलास २५२
 सोमसुन्दर २६०, २६५
 सोमसूरि १६५, २६६

ह

हनुमत्कवि १२८, १२९
 हरदयाल २२९
 हरदास १८६
 हयवीति ८४ १४६, १८२, २३८,
 २३९
 हयवीतिसूरि ७४, ७९ ६२, १०९,
 १५७
 हयमुनि १८४
 हयचन्द्रगणि १८४
 हयचि २४३
 हयविजय ६३
 हयगागर २६०
 हयगोभाष्य (गुणगोभाष्यगिण्य) ८५
 हरिकरा १०२

हरिवकीश्वर १४४
 हरिदत्त ८८
 हरिदत्तभट्ट ६१
 हरिदास २३१ २४१
 हरिनाथ ११६
 हरिभद्रसूरि २४७, २५४
 हरिभट्ट ६५, १०८ १७७
 हरिभद्रस्वतमिषा ६४
 हरिभद्रसूरि ७२
 हरिमुनि (वज्रसेन गिण्य) १४४
 हरिराम २१०
 हरिराय ८ ६१
 हरिलास २३५
 हरिवल्लभ ६३ २०९, २१९, २३१
 हरिहर ४०
 हलायुष २६
 हरिश्चन्द्र (भ्रात्रदेवकायस्थ) १३०
 हस्तिकवि १५९
 हारीत ऋषि ४६
 हितहरिवगोस्वामी ५७
 हिस्लाज ६४
 हीर २०६
 हीरवल्लभ १६८
 हीरगन्त १६२
 हेमकवि १६७
 हेमचन्द्र ७३ ८१, ८२ ८४ १३१
 २४६ २६७
 हेमचन्द्र (रत्नगोस्वरगिण्य) १६६
 हेमचन्द्रसूरि ७६, २४३
 हेमचन्द्राचाय ६५ ७२ ७९ ८०, १४०
 हेमप्रभसूरि १२०
 हेमरत्न १७१, १८३
 हेमराज २०९ २४२
 हमहम ७१ २३७
 हेमहमगणि ८५
 हमामि ४१

हेमानन्द १९४

हसकवि १७१

क्ष

क्षपणक ८४

क्षमाकल्याण ७५, १८२, २६२

क्षमाश्रवण २६८

क्षीरस्वामी ८३, ८४

क्षेमशर्मा १६०

क्षेमहंस १२२

क्षेमेन्द्र १२३, १४४

क्ष

त्रिमल्ल १५४, १५५, १५६

त्रिविज्जमाचार्य ११८

त्रैविध्यवृद्ध २१

ज्ञ

ज्ञानकवि १७६

ज्ञानचन्द १८३

ज्ञानभूषण १८४, २३६

ज्ञानविमल ८६

ज्ञानराज ११६

ज्ञानविमल १६५, १७०

ज्ञानमागर १६६, १७३, १९६

ज्ञानेन्द्रसरस्वती ८०

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१८६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश स० २६१, दिनांक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढ़स्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थों की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त संग्रह को इस संस्थान के संरक्षण में प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र स० एफ ६ (६२) एज्यू वी ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ़ से उस संग्रह को इस विभाग में प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ़ (कोटा) का पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री गिर्वसिंहजी के समय में 'सरस्वती भंडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा गिर्वसिंह स्वयं अच्छे विद्वान् सुकवि एवं विद्याप्रेमी थे। इनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ इस संग्रह में भी प्राप्त हुए हैं। गिर्वसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाडा सग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये बड़े ही विचारसिद्ध एवं सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पंडितों को पुरस्कृत करना एवं ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। इनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से भी अधिकांश इन्होंने अपने ठिकाने में शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्रायः अप्राप्त हैं। उक्त हाडा सग्रामसिंहजी के समय में इस संग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वतः अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिंहजी के निःसंतान अवस्था में अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस संग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्ततः नष्टभ्रष्ट एवं जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस संग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप में रखा हुआ था। बहुत से ग्रन्थ गढ़ में धूल में दबे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था में पड़े थे जिन्हें प्राप्त करके इस विभाग के संग्रहालय में व्यवस्थित-रूप में संगोष्ठी के उपयोगार्थ रखा गया है। सप्रति इस संग्रह में २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमें बहुत से ग्रन्थ हाडा सग्रामसिंह एवं उनके पिता महाराजा गिर्वसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवर्गीय साहित्यकार हाडा सग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानों का ध्यान नहीं गया है। उक्त संग्रह की पुस्तकों की प्रस्तुत सूची विद्वानों एवं सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ़ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कृता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्गमकाल	विशेष
१	मल्लकारम्भारी	सद्यार्थसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३२	१६११	निम्नलिखित दृष्टत अलंकार
२	नागिहोत्र		राजस्थानी	प्रायुर्वेद	१३२	१८६५	मञ्जरी का भाषानुवाद
३	हनुमानटक लटीक (रत्नमञ्जुषा टीका)	श्री हनुमन्कवि, टी मोहन दास साधुर चतुर्वेद चतुर्भुजदास	संस्कृत	काव्य	१३०	१८६५	लि क गुमानोसाह
४	समुद्रालती चौपई		हिन्दी	"	२२२	१८६५	लि रत्ना इन्द्रगढ़
५	छन्द कोस्तुभ	सद्यार्थसिंह	"	छन्द शास्त्र	४३	१६३४	कामवारी लिपि आरम्भ
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	"	रसालंकार	७६	१६२३	संस्थानावलि के ५ पत्र
७	पद्मोदयरातो (पद्यावली समय)	श्रीधरदायी	"	काव्य	७४	१८२६	लि क वनीधर गुजराती
८	हिकमतप्र-५		फारसी, हिन्दी	प्रायुर्वेद	६५	२०वीं श	लि क चमराम आरम्भ लि रत्ना कला रण स्तम्भवर हिकमत के फारसी भाषा के मुखे नालरी लिपि में लिखे हैं

क्रम-क्र.	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्गमकाल	विशेष
६	रूपकप्रभाकर	सशर्मसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१६वीं श.	
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	"	८५	१६२(?)	शिवमिहिरपतिकाशिता
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१६१२	आदि में कुछ स्पष्ट
१२	नाममञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	कोप	५८	१६१४	कवित्त तिले है। चारों कृतियों के कुल ५८ पत्र हैं।
१३	(क) हरिरस (ख) नीसाणी विवेकवार्ता (ग) नीसाणी ईसरदास (घ) सूरदासके पद	ईसरदास	राजस्थानी	काव्य			
१४	सिलनय शृंगार सटिप्पण	वज्रभद्र	"	"			
१५	रसतरंगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	हिन्दी	"	१५	१६२३	
			"	रसातकार	४१	१६२४	अन्तिम प्रकाशित में पुताव कवि (प्रतापरजासी) ने स्वयम् को प्रत्यकर्ता बताया है।
१६	रूप(क) रत्नावलि	सशर्मसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श.	प्रपूर्ण, लि. क. धर्मार्थ
१७	रसार्णव	सुखदेव (?)	हिन्दी	काव्य	५७	"	तक्षमण, निमिहिरान्ये
१८	केसोदासकी वाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	३-२५४	१८८८	लि. क. भवानीराम
१९	काव्यरसायन	देवदत्त कवि	हिन्दी	गालिका	७८	१६३१	शिवमिहिराज्ये
२०	(क) जनकजुहार		राजस्थानी	काव्य	१-४	१६२६	लि. क. रामदत्तभगुजराती

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	वर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि नं०	विशेष
२१	(ग) सुतमन्तरालो (ग) इत्येकान्तरिय (घ) तारातम्योत्तको विस्तार (च) कोटाके महाराजाओं की सूची मानव्ययन बुध प्रकाशदीक (रसाल बोधिनी)	मू स्वल्पदत्त दो रसाल	राजस्थानी हिंदी	काव्य इतिहास , काव्य	४-७ ८-११ १२वीं १३वीं १४२	१६२६ , १६१७	लि क बगसोराम
२२	(क) विज्ञानसागर (ल) गङ्गासुति (म) प्राच्यनिधान (घ) भगवित्तितामणि (च) चौदहस्तन खल		राजस्थानी , , , , ,	व्यक्त स्तोत्र देवता , ,	१-११ ११-१३ १-६ ६-३२ ३१-४	१६११ १६१३ १-६ ६-३२ ,	
२३	पद्मीराजरासो	चन्द्रधररासो	हिंदी	काव्य	३१६	१६वीं ग	मुलिलिखित प्रति
२४	(क) बबीर की सारी (ल) हरिवंशपुराणभाषा		राजस्थानी "	सतसहस्रिय काव्य ,	१-४ १-४७ १-१४४	१८३६ " १६वीं ग	लि क सुगलवाण्ड
२५	(क) रामचरित (ग) सुदामाजी की वारहलहरी	सुलखीदासदाहूपयो	"	"	१४-१६२	"	
२६	(क) कविकुलकल्पतरु (ल) सूरजनसय (पि) गग (ग) सभाप्रकाश (दामोन्तासात)	चित्तामणि सूरजनसय (?) हरिवंशदास	हिंदी , ,	रसायकार छन्दशास्त्र रसालकार	१२-१८ १८-२२ १-२४	२०वीं ग १६२६ २०वीं ग	आद्य ११ पत्र अग्रान्त, अग्रपू अग्रपू लि क दीक्षित वडिचव लि रया इन्द्रगढ़ अग्रपू
	(घ) रघुनाथरूपक मरुपरदेगभाषा	कविमधु	राजस्थानी	काव्य	१-४	२०वीं ग	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
	(घ) पाण्डवयशोदुचन्द्रिका तृतीय-मयूखान्त		हिन्दी	रसालकार	१-१२	२०वीं श.	
	(छ) कविप्रिया	केशवदास	"	"	१२-३६	"	अपूर्ण
	(ज) साहित्यानन्द, पोडशस्कन्धान्त	बालकवि	"	"	३७-२५३	"	"
२७	(क) इक्षकचमन	देवीदास	"	काव्य	१-१४	"	अपूर्ण
	(ख) राजनीति कवित्त		"	नीति	१-३५	"	"
	(ग) स्फुटकवित्त सग्रह		"	काव्य	१-७	"	"
२८	रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड	गो तुलसीदास	"	"	१३३	१८६८	लि. क. लाला खुमानसिंह
२९	(क) गुप्तपरिचय		"	सन्तसाहित्य	१-७५	२०वीं श.	'श्रीगुरु बलदेवजी शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं।
	(ख) ग्रन्थपरिचयग्रन्थालय		"	"	१-६६	"	
३०	फुटकर गजल		"	काव्य	८	"	
३१	(क) धनञ्जयकीर्ण (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	संस्कृत	कीर्ण	४-१५	१७५१	लि. क प दयाराम, गूढके के आदि व अन्तमे स्फुट कवित्तादि है तथा दोनों कृतियों के मध्य अत्रबन्ध कवित्त आदि हैं।
	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहराय समय)	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	१-१३	१७६०	लि. क. चारण विहारिदास
३२	विहारोत्तसई लालचन्द्रिका टीका	कवि लाल	"	"	५४	१९वीं श.	अन्तमे नृपस्तुति आदि है।

राजस्थान पुरातत्वावेपण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग २, परिशिष्ट-३, इन्द्रगढ़ पोखाना ग्रन्थ सूची]

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	त्रिपिसमय	विशेष
३३	गोतायलो (कवितावली)	मोहनराय	हिंदी	काव्य	३०६	१८८०	निधिसिंहजी द्वारा तिलाये मये गीत, लि क गुजराती भाषात
३४	रामचंद्राण्य	सय्यामसिंह	, राजस्थानी	रसालंकार	१०६	१९२६	लि क्या इन्द्रगढ़
३५	खड्गलोकीका (रसमयूल)	सय्यामसिंह		योग (मयित)	३८	१९वीं न	लि क गुजराती बगीचर
३६	नवितभूयण	, ,	राजस्थानी	काव्य	४०	१९२७	अपूर्ण
३७	(क) रागचमनचौलीसो (ग) खुगारतिलक		हिंदी	रसालंकार	१-१२	२०वीं न	लि क गुजराती बगीचर
	(ग) हठमढीपिका			काव्य	१-५	, ,	
	(घ) फण्ट कवित				१-६		
	(च) राधाटक	खालकवि			१-७		
	(ख) सितारसिद्धांत				८-११		
३८	रामचर्चा प्रका	सय्यामसिंह		संगीत	१२-८१	, ,	अपूर्ण
३९	(क) वैतरसिद्धांत (ख) कविप्रिया (विशालेकारप्रकरण)	केगवदास	, ,	काव्य	१५५	" ,	"
	(ग) वसंतराकर (द्वितीयाध्यायात)			सतसहित्य	२	, ,	
	(घ) मय्यममप्रकाश	सरकुत		रसालंकार	१-१२	१९०६	
४०	यद्यपनभाषकथा (चारो भित्तन)	केदारभट्ट	संस्कृत	छंद गान्ध	१३-२५	२०वीं श	
४१	स्वरोदय सटीक	कबीरदास	हिंदी	सतसहित्य			
४२	(क) निगाने (विशेषविचार)	वेगवदास गायड	संस्कृत हिंदी	कथा	८८	१८११	लि क साता छोटोराम
			हिंदी	ज्योतिष	१-२४	२०वीं न	अपूर्ण
				काव्य	१-१८		
					१-२०		

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र सख्या	लिपि समय	विशेष
	(ख) स्फुट साहित्य (कवित्त आदि)	ईश्वरदास	हिन्दी	काव्य	२०-२५	२०वीं श	अन्त में गीत व भौरगीता हैं
	(ग) गुणनद्याधुति	सुन्दरदास	हिन्दी	"	२५-४८	"	
	(घ) ज्ञानसमुद्र		"	काव्य	४१-८१	"	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह		"	काव्य	८१-९४	"	
	(छ) गुरुद्वुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी	गोरखनाथ	"	सत्तसाहित्य	९४-९६	"	अन्त के २२ पत्रोंमें कबीर, नामदेव, मीरा, सूर आदि की साहित्य व वीहें हैं
	(ज) निसानी, केशवदास गाडण चारण की		राजस्थानी	काव्य	११८-११९		
	(झ) प्राणशक्ति		"	"	१२०-१२१	"	
	(ट) शंकावलि		"	"	१२१-१२२	"	
	(ठ) डूंगरी बागडो की गीत		"	"	१२३-१२४	"	
	(ड) वज्रशतपुनियब्	शकराचार्य	संस्कृत	धैरान्त	१२५-१३०	१८८२	आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ श्रौवधियों के योग हैं, सि. क. 'निहाल'
४३	विहारीसतसई टीकाजय	कुण्ठकवि	हिन्दी	काव्य	१२३-२७६	१९२४	र का. १७८२
	(क) कुण्ठचन्द्रिका	हरिकवि	"	"	"	"	र का. १८३४
	(ख) हरिकान्त						

प्रमाण	ग्रन्थनाम	वर्ति	भाषा	विषय	पत्रसङ्ख्या	त्रिषिकाल	विशय
४४	(म) प्रभुदेवचन्द्रिका (क) सत्यवासादावलिगरी भाग (ख) यज्ञादीरमदेकी बात दिगन्त प य	वसदेव	हिन्दी	काव्य वार्ता	१२३-२७६ १-७२ १-६२	१६२४ २०वीं न १६१४	२ का १८७३ लि क वि नूरोलाल
४५	कुसुमकाग (हारावडा के परब)	सधर्मसिंह	"	काव्य	२७	१६३०	"
४६	शृगारगुणो	सधर्मसिंह	"	इतिहास	६४	२०वीं श	"
४७	(क) भाषाभूषणटीका	मू जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालंकार	७	१६३३	
४८	(ख) कविप्रियास्यास्या (कविप्रिया भरण, पिपलकाव्यविभूषण	टी हरिचरणदास मू देवावदास टी हरिचरणदास वधनी सुमनेन	"		४१	१६३०	लि क वनीधरगुजराती
				श्र व नास्त्र	२४२	१६२६	लि स्या इन्द्रगढ़
					१०२	१६१२	
४९	(घ) प्रभाटक नीति (व) पद्यामत्तरगिणी	विश्वनाथसिंहदेव भास्कर शनिहोत्री	संस्कृत	काव्य	१०३वीं १-२७	२०वीं श १६३०	लि क वनीधरगुजराती श्रावण लि स्या भाव सुगमामपुरा
५०	(घ) काव्यरसामन हरिरस विहारीसतई	देवदास बाराहठ ईसरदास विहारीलाल	हिन्दी	रसालंकार का य	१-४ १-१२ ६८	२०वीं न १७८६	प्रति कोटिकविज जीगनीय श्रागे पत्र ८५वें तक भाव वेद सवधी कुछ स्पुट योग है । लि स्या इन्द्रगढ़

क्रमांक	ग्रन्थरूची	कर्ता	भाषा	विषय	पासख्या	तिथिकाव	विशेष
५१	शकुनावती		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वीं श.	ग्रन्थमें १८ पत्रोंमें कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द (ख) भजन-समूह (ग) फुटकर कवित्त	जयदेव चन्द्रसखी भौरा आदि	संस्कृत हिन्दी	काव्य	१-३८ १-५० १-३४	" " "	"
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो लसीदास	"	"	१२४	१८८४	अपूर्ण, वा का. के केवल २ पत्र (३१वा व ३२वा है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण है। बीच बीचमें पत्र नहीं है
५४	पाण्डवशोचनिकाटीका (योधनी)	रसाल	"	"	१६३	१९१७	लि. क. ब्राह्मण रामनाथ
५५	पृथ्वीराजरासो (एकादशखण्डान्त)	चन्दवरबायी	"	"	१३०	१८७१	लि. क. लच्छीराम भगत
५६	भावाभूषण	जसवन्तसिंह	"	रसालकार	२३	१९०२	
५७	हितहेमेल (४२वां ग्रन्थ)	सप्रामर्तिसिंह	राजस्थानी	काव्य	१००	१९२९	लि. क. रामनाथब्राह्मण, काठो
५८	(क) रताराज सटीक (ख) शालिहोत्र	मू सतिराम, टी शिवरत्न नकुल	हिन्दी	रसालकार	९३	२०वीं श.	
५९	(क) प्रजापिलचरित (ख) कबीरजीकी बरली (ग) नामदेवजीकी वाणी (घ) ध्रुवचरित	कबीर नामदेव जनमोपाट	" " " " "	आयुर्वेद काव्य सन्तसाहित्य " काव्य	७७ १-१० १-१२१ १२१-१७५ १७५-१९६	" १८९८ " " "	ग्रन्थमें ८ पत्रोंमें 'नाम महिमा' व 'वासजीकी नाममहिमा' है लि. क. ब्राह्मण भुवाना

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्गी	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निषिक्तान	विगण
	(घ) प्रह्लादचरितम्	जनगोपाल	हिंदी	काव्य	१६६-२१४	१८६८	अ तमें ८ पत्रोंमें नाम सहिमा व दासजीकी नाम सहिमा है। लि क दासगुण भूदाता।
६०	(घ) भरतचरितम् (ज) राजा मोहमदकी कथा (झ) सुंदरदासजीके सपना (क) फुटकर कवित्त (ख) सुषीक सखण (ग) रागमात्रा	सुंदरदास	" " " " "	" " "व्योतिव सगीत	२१४-२२१ २२१-२२६ २२६-३१७ १-३५ ३६-४७ १-१६	२०वीं न " " १६०७ २ वीं श	" " " लि क रघुनाथसिंह अ तमें पत्र स ४० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं। अपूर्ण कि ना रघुनाथसिंह, कोटमिठ
६१	नलगिरिकण्ठन व कोकसार	आनंदकवि	राजस्थानी	कामगान	२६		
६२	(क) सुखसबाह			सतसाहित्य	१-४६		
६३	(ख) गणेशगोरससबाह सप्तसई (दिगल)	सप्तसईसिंह	"	" काव्य	१-१६ ६३	" १६३४	" अपूर्ण कि ना रघुनाथसिंह, कोटमिठ
६४	पीतवहरी (६८० गीताका संग्रह)		"	"	२२८	२०वीं श	लि क आसिण भूषाना
६५	भगवद्गीता का अनुवाद		हिंदी (मिज)	वेदांत	१८८	१६००	लि क राज कुहार
६६	(क) विवेकविचार	गिरिसिंह	हिंदी	"	४०	१८६७	मताप (महाराज) पुत्र,
	(ख) फुटकर रागसंग्रह		"	सगीत	२०	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पृष्ठसंख्या	तिथिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविल, श्रन्त से १० पत्रों में स्फुट श्लोक, पद्य व राग है
६८	रघुनाथरूपक	कवि सनसाराम (कविमच्छ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१६२५	ति क. बालासुण रामनाथ
६९	यवनछन्द (फारसी छन्दों का वर्णन)	सम्राट्मह	हिन्दी	"	२८	२०वीं श.	'गणपतिचरणसरोजरज, घर हुआ संगम । यवन छन्द रचना रचत, इन्द्र-बुर्ग निजधाम ।'
७०	संगीतपयोनिधि (७६वर्ग ग्रन्थ)	"	"	संगीत	११	१६३३	रामरामगुहचन्द्रमा, वरश हरियाली रत्न । इन्द्रबुर्ग निजधाम से, ये ती गय लखत । गुनसन्तियोगन्य जो, यह रच्यो संग्राम, यह सुधार सुध कीजियो, जो सुकवि गुणधाम ।
७१	(क) सुखसवाद		"	सन्तसाहित्य	२६	१८८४	ति क. 'रामरतन', श्रन्त से ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि है ।
	(ख) सन्तदासजीकी साली	सन्तदास	"	"	१	"	ति. क. रामरतन
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	"	"	२-३२	"	"
	(घ) ध्रुवचरित्र	"	"	"	३२-६३	"	"
	(च) फुटकर वृद्धा	अहमद	"	"	२	"	"
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना	कल्याणदास भटनागर	"	"	२	"	"
७२	छन्दोवक्रपाणकल्पद्रुम		"	छन्द शास्त्र	५५	१६वीं श.	कोटविल, श्रपूर्ण, जीर्णशीर्ण

राजस्थान पुरातत्वा-वेधनमंत्रि-विर-हस्तलिखितप्रत्यक्षी भाग २ परिशिष्ट ३, इन्द्रगढपोखीस्थानाप्रत्यक्षी

क्रमांक	प्रयोजन	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिवर्तन	विभाग
७३	फोटोपुस्तिका	सशर्मसिंह	हिंदी	प्रकीर्ण	४७	१६वीं ग	जोरा
७४	मुद्रितचित्र	बगभास्करगत	"	काव्य	१६०	२०वीं ग	अपूर्ण
७५	गुप्तलिखन	रत्नकिशोर तगत (विगवदास)	"	रसालंकार	१०	१८६७	नि. वि. मंत्रालय लि. स्या. करवाड
७६	गुप्तलिखन	"	"	काव्य	३८	२०वीं ग	अपूर्ण
७७	श्रीगणेशकरी वार्ता	राजस्थानी	"	वार्ता	१३४	"	
७८	गुप्तलिखन	"	"	वेदांत	८६	"	
७९	(४) भक्तिमतिप्रयोग	हिंदी	"	वेदांत	१-७०	१६११	
	(५) तत्त्वसारगोला	राजस्थानी	"	संगीत	७०-८७	"	
	(६) गुप्तलिखन	"	"	संगीत	८७-१६०	"	
	(७) भक्तिप्रदाय	"	"	भक्ति(योग)	१-१३	"	लि. क. शास्त्र वि.
	(८) गीतमणिसार	"	"	वेदांत	१३-२२	"	सम्पत्ति
	(९) सहजानंदभक्ति	"	"	भक्ति(योग)	३२-५५	"	लि. स्या. सेवागरी
८०	गुप्तलिखन	राठोड पथोरारज	"	काव्य	८७	१८१६	मध्य. वनप्रवर्तित
८१	गुप्तलिखन	चाणक्य	"	इतिहास	११७	२०वीं ग	प्रवर्तित
८२	गुप्तलिखन	नर हरि	संस्कृत	नीति	१-२०	१८६४	अपूर्ण
	(१०) भक्तिप्रदाय	"	"	"	१-१६	"	
	(११) सहजानंद	"	"	व्योक्ति	१-११८	"	अत. में तीन पत्रों में नव प्रवर्तित लिखे हैं

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	तिथिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वीं श.	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		संस्कृत, हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	"	"
८५	पातवाहीका किरसा		हिन्दी	कथा	१२२	१६वीं श.	"
८६	हाडोके प्रशस्तिगीतके रफुटपत्र		"	काव्य	६३	२०वीं श.	
८७	रफुटकीर्तनकवित्तसंग्रह		"	"	५०	"	
८८	हरिदासजीके पद	हरिदास	"	सन्तसाहित्य	४३	१८०७	लि. क. जोशी जीवरज
८९	गजलचन्द्रिका	सग्रामसिंह	"	काव्य	४१	१६२८	गुर्जरगोड, गुल्ल ४१ वें व
९०	अकारादिकमसे कवित्तसंग्रह		"	"	५८	१६वीं श.	४२ वें से देवाचारणके
९१	रसभक्षितय	शिवदत्त	"	योग(भक्ति)	१२	१६३५	कवित्त लिखे है।
९२	लीलावतीगणितभाषा		"	ज्योतिष	१४	१६वीं श.	कवित्त सख्या ११६ से
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	संस्कृत, हिन्दी	"	१-६	"	७७५ तक
९४	(क) स्वरोदय (ख) नामसार	चरणदास फतेहसिंह राखीर	हिन्दी	"	१-१३	"	अपूर्ण
९५	(क) स्वरोदय (ख) त्रिदिकपद्म		"	काव्य	१४-५४	"	पुल्ल सं. १० पर नक्षत्र -
९६	(क) सुमुलीपञ्चाङ्ग	सग्रामसिंह रुद्रयामलगत	"	ज्योतिष	१-१६	"	स्वरूपचर्चा एवं पत्र ६ तथा
			"	"	१६-२४	"	१० के पृष्ठोपर दोहा
			"	तन्त्र	समग्र	१८२६	आदि लिखे है।
			"		१३६		लि. क. आचार्य नगाद-
			"				विन्ध्य(?) लि. स्या. सागौदा

क्रमांक	ग्रन्थ का नाम	वर्तिका	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि का नं	विषय
	(१) राज स्वयंस्तोत्र (२) निवमहिम्न स्तोत्रादि	पुष्पदत्ताचार्य	संस्कृत	स्तोत्र	समग्र १३६	१८२६	उच्छिष्टद्विगणपति व वटुक भरवस्तवराग आदि भी हैं। प्रपूण वि क वि रामरत्न वास्तव्या
६७	रामायण	मो तुलसीदास	हिंदी	काव्य	१	१६१८	
६८	ज्योतिषाचार्य			ज्योतिष	४१	१६०७	
६९	फकरनामा (ज्योतिष भाष्यबंद कयोग व मोरल विद्या)			प्रकीर्ण	१७	२०वीं न	
१००	स्फुट्यातर्क (चौतुर्गणयण आदि)			,	१०		प्रतिमे तीन खूले पत्र हैं जिनमें लोह परोशा आदि लिखित है।
१०१	रामचरित	चिन्तामणिपंडित	संस्कृत	ज्योतिष	२७	१८६८	
१०२	प्रमाणपत्राधि और स्वरोदय (कबीरदासहस्त)		राजस्थानी	,	१४	१६वीं न	
१०३	(४) ज्योतिषसार (समुदास कानसार)				१-३१	१६१०	लि क द्वारा रत्ना श्याम आते पत्र ३६ तक ज्योतिष एवं जन्मशास्त्र सम्बन्धी कुछ चित्र हैं।
	(५) मेघमाता (६) चम्पकारादि ताम्रलिपि			,	३६-४० ४०-६१		
१०४	सुनाहितपंडित	गान्धर्व दामोदरसूनु	संस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं न	प्रपूण हस्तीरूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराधावल नाम्न पौन (प्र क)

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पृ. संख्या	लिपि काल	विशेष
१०५	जुवदा रमलभाषा, सोदाहरण		राजस्थानी	ज्योतिष		१८७०	लि क ब्राह्मणनानजी, गुर्जरगोड
१०६	व्ययसप्तपञ्चाशिका	सग्रामसिंह प्यारेराम	"	रसालकार	१७	१६३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०७	किष्किन्धाकण्ड उप्यय		हिन्दी	काव्य	३१	२०वीं श.	आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०८	विक्रमभूषकी कथा		"	कथा (वार्ता)	२१	१८८३	
१०९	सवत्सरीफल		राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श.	कामदारीलिपि
११०	सुन्दरपदमुक्तावली	सुन्दर	हिन्दी	काव्य	१०८	१६३४	लि. कि वज्रल्लभ लि. स्था माधवपुर
१११	रोऊसमनजीकी परची	अनन्तदास	"	"	१०	१८८६	लि क भुवना
११२	राशियोंकी किताब		उर्दू	ज्योतिष	१२	२०वीं श.	फारसी लिपि
११३	दीवान मोजीज		"	काव्य	१६८	"	"
११४	गुत्तापरामकी किताब		"	प्रकीर्ण	५५	"	मुद्रित
११५	किताब खलायक मुहम्मदरफी उकदीन		"	"	१२०	"	फारसी लिपि
११६	किताब रमल		"	ज्योतिष	७४	"	"
१२७	किताब तानवी बीका रोजा		"	प्रकीर्ण	१४	"	इस पुस्तकमें ताजमहल निर्माणका न्यौरा दिया गया है। फारसी लिपिमें फारसी लिपिमें
११८	याफता		"	"	१३७	"	"
११९	वाकैराजपूताना		"	इतिहास	८८३	"	" मुद्रित
१२०	वशभास्कर		हिन्दी	"	१४६	"	जीर्णशीर्ण अपूर्ण
१२१	विनयपत्रिका		"	काव्य	६	"	अपूर्ण
१२२	मर्यादापरिणारीसमाचार	गो. तुलसीदास	संस्कृत, हिन्दी	धर्मशास्त्र	८६६से १०३२	१६३४	मुद्रित

क्रमांक	प्रयत्नाम	वर्तनी	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	नितिकाल	विषय
१-०	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भाषा रत्नमाला	हिंदी	काव्य	३३	१७४१	लि. क-स्वामी खेमदास भाग १२ पत्रोमें स्फुट कवित्त आदि है ।
१२४	पद्मीरजोर्षी सान्धी	कवीर	,	,	२०२	२०वीं श	आद्य ५ पत्र भ्रमरात् । अमृण
१२५	धिरदेवकाम	उमेदसिंह	,	,	२७	१६१६	
१२६	गुहवपन (३६वीं प्रप्य) (यात्रा विषयवचन व रत्नमाला के नाम)	सम्राजसिंह	,	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श	
१२७	गात्रिरोत्र	मकुल	"	आयुर्वेद	५८	१८६०	
१२८	मन उमग भनुराग	सम्राजसिंह	"	काव्य	१६	१६३५	लि. क-वसीधर गुजराली आसुण
१२९	(क) यत्नसिद्धांत (ख) वनुरमहाशेख	"	"	देवता	२७	१६१३	आद्य दो पत्र भ्रमरात्
१३०	(क) ध्यायवर्जिका (ख) पादसपत्नीसी (ग) प्रेमवचनीसी	मत्तायकवि जगन्नाथकवि गुलाबकवि	"	"	११	"	अमृण
१३१	(क) अलङ्कार मुरतावली (ख) द-द प्रस्तार (ग) अलङ्कारदीपिका	सम्राजसिंह	"	रसात्कार काव्य	१४-१६ १७-१८	१६६२ "	
१३२	(क) अलङ्कार (ख) धामप्रकाश (ग) मुक्तिरत्न (घ) मुक्तिरत्नप्रकाश	सम्राजसिंह	"	रसात्कार छन्द शास्त्र रसात्कार देवता	३ ३ ५ १-५३ १-२५ २५-३२ ३२-४०	१६१० " २०वीं श , , , ,	छन्द सख्या १२२

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१३३	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०-४७	२०वीं श	
	(छ) मुक्तिमाल	"	"	वेदान्त	४७-५५	"	
	(ज) स्नेहसार	"	"	काव्य	५५-५८	"	
	(झ) ग्रन्थसंस्कृति	"	"	"	५८-६७	"	
	(ट) स्फुटकवित्त	"	"	"	६७-७८	"	
१३४	भर्तृहरिचरित	"	"	सन्तसाहित्य	४०	"	
	रामचरित	सेनापति	"	काव्य	१८	"	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोंमें)
१३५	संग्रामसिन्धु ग्रन्थसंग्रह (व्याख्यान-मौक्तिकमाला)	संग्रामसिंह	"	"	४७	१६०८	
१३६	रामचरितमानस (वालकाण्ड)	गो तुलसीदास	"	"	११७	२०वीं श	अपूर्ण
१३७	पावसपोडनी (५०वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	"	"	१७	१६२६	
१३८	भूगोलप्रश्नोत्तरी (१६वाँ ग्रन्थ)	"	"	"	१५	१६३१	
१३९	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसूत, नरवर-निवासी	"	रसालंकार	३७	१८३०	लि. क-लच्छमण धामाई लि. स्या.-बडोदा
१४०	विहारीसतसई, सटीक	विहारीलाल	"	काव्य	१८४	१८५६	
१४१	महाभारत उद्योगपर्व, ६ अध्याय, पद्यानुवाद	कृष्णकवि	"	"	८१	१६२७	र. का १७६२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४२	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिष्ठप्रतापशिष्य)	"	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्या.-बूढ़ीपतिभाव-सिंह राज्ये
	(ख) " भक्तिभक्तप्रदाय	"	"	भक्ति (योग)	३२८	"	रं. स्या. " "

[illegible]

क्रमसं.	ग्रंथनाम	वर्ति	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्गमिका	विषय
	(१) छोटमरीको जङ्गडी	छोटमरी	हिन्दी	काव्य	४१-५१	१७६१	
१५८	(२) शम्भुचन्द्रावगनाम टीका	सभामनिह		कथा (पुराण)	५१-५७	१८१६	
१५९	रसचन्द्रोदय			रसालंकार	३५	१८१७	
१६०	रसचन्द्रोदय				२०	१८१७	
१६१	राजयोग भाषा	राजा प्रथोचन्द्र अनय	"	वेदांत	४	१८२१	लि क-थीसाल
१६२	वहुलाटमी स्था			कथा	५	२०वीं न	
१६३	लौचरा बागसराको वारता		राजस्थानी	पार्श्व(कथा)	१७	१८५४	लि क-थीसाल (आकोत) लि स्था गणोली (बूंदी) प्रथमपत्र समाप्त
१६४	पदरंग रागरानीटीकासहित		संस्कृत	ज्योतिष	११	१८वीं न	
१६५	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी		१४-१६	१८०५	कोटगिड
	(ल) छामपुरदोषचार				१६-१७		
	(म) ज्योतिषके रेलता			संज्ञासहित	१८-२५		
	(न) मासप्रकाश				२५-३०		
	(व) बालयोगिनी चौथाई		हिन्दी		३८-४६		
	(ख) हरिवोल		"		४६-४८		
	(ग) गव				४८-५०		
	(घ) कवीराटक				५१-५२		
	(ङ) भलण्डपररसिकी स्तुति				५२-५३		
	(च) मासवान भारती		"		५३		
	(ड) सम्यक्सको ज्ञान			ज्योतिष	५४		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिमात	विवरण
१६५	(ड) गुप्तज्ञानगुदरी	कवीर	हिन्दी	सन्तसाहित्य	५५-५६	१६०५	
१६६	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत, हिन्दी	"	५७-५८	"	
१६७	(य) मूलपात्रीग्रन्थ विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	हिन्दी	"	५८-६१	"	अपूर्ण
१६८	शुभ्रारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	संस्कृत	वेदान्त	७	२०वीं श	"
१६९	(क) सिद्धान्तबोध	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालंकार	१४	"	
१७०	(ख) सिद्धान्तसार	"	"	वेदान्त	५-३२	१८१०	ग्राह्य ४ पत्र अग्रपत्र
१७१	(ग) गोरक्षशतक	"	"	"	१-२२	"	
१७२	(घ) चौबीस अवतार	"	संस्कृत	योग	२३-३०	"	लि क-विश्वनाथ
१७३	चौहानोंकी वंशावली	"	"	प्रकीर्ण	३१वाँ	"	
१७४	गीतबही	गोविन्दराम बडवा, कोटा- निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	इतिहास	१२	१८८३	
१७५	गीतमठ्याक्षरी	बेला चारण	"	काव्य	१४	१९वीं श.	खरडा
१७६	(क) श्रावित्यवतमाहात्म्य	शिवसिंह	"	"	१	"	
१७७	(ख) नक्षत्रफल	"	संस्कृत	पुराण (कथा)	१-७	"	
१७८	मानसदीपिका व्याख्या	"	"	ज्योतिष	८-३३	"	
१७९	पञ्चानन	"	हिन्दी	काव्य	५२	"	
१८०	सूर्यजीकी कथा (हिन्दी)	"	संस्कृत	ज्योतिष	१३	१९१६	
१८१	धर्मबन्ध	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वीं श	
१८२	रामायण	गोरखा ठाढी	संस्कृत	रसालंकार	१	"	
१८३	(क) कवित्तशतक	श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजा- धिराज)	राजस्थानी	काव्य	२१	"	
१८४			हिन्दी	"	१-२८	"	

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकान	विभाग
१७८	(ब) बोधान्तक	मोहनदास	हिन्दी	काव्य	१-१४	२०वीं पृ	लि. क.—रामचन्द्रसिंह चौब गुजराती लि. तथा इन्द्रप्रयोग
	(ग) रघुचरित				१-६	"	
	(घ) विष्णुपुराण			"	१-४०	"	
	(ङ) मोहनदासपञ्चोत्तर			"	१-२	"	
	(च) बोधोत्तर			"	१-१२	"	
	(क) भृगुगणेशस्तोत्र	सधर्मसिंह		"	१-६	१६३२	
	(ख) प्रमथमन	"	"	संगीत	६-११	"	
१७९	(ग) रागसंयोग	"	"	रसालंकार	१२-२३	"	प्रपूर्ण
	(घ) द्रष्टव्यसंनिधि (६८वीं प्रयोग)	"	"	संस्कृत	२४-२७	"	
	(ङ) द्रष्टव्य गान्धर्व	समयसुन्दरगणि	हिन्दी	कथा	१-१०	२०वीं पृ	
	(च) यत्तरनाकरटीका			"	१०-२०	"	
	(क) गणेशमहिमाकथा	सधर्मसिंह		रसालंकार	४१	१७८५	
	(ख) सधर्मसिंह	निर्वसिंह (महाराजा)	"	वेदांत	१-६	१६०८	
	(ग) गीतापरिचयटीका		राजस्थानी	काव्य	८-११६	२०वीं पृ	
१८०	धारणमोक्षसंग्रह—			काव्य	३४४		लि. क.—ध्यास कालूराम इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतों का संग्रहित है।
१८१	१ परित्त होमछात्रको			कवित्तसंख्या?	१		
१८२	२ कवित्त बीजागणितको			२	१		
१८३	३ गीत नरसिंहजीकी			२५	३		

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४	दुहर सीरदुण			१	४		
५	कवित राढ (ठ)			२६	४		
६	गीत जाति श्रीवल			३०	४		
७	कवित यम्रतध्वनि			४७	५		
८	नशाणीमी राखलतन (त) जीकी			५४	६		
९	गीत हानाजीकी			१	७		
१०	गीत चतश्रद्धोळ हनुमत-जीकी			५१	८		
११	गीत गोल ओहो देवजीको			५३	८-९		
१२	गीतजोगारमा (रम)			५६	९		५६वें गीत का प्रस्ताव नहीं मिलता है।
१३	कवित् धवाणकी उतप्ती			५६	१०		
१४	गीत गोग (गोगा) चहुवाण			५८	१०		
१५	गीत राव फोलणको			५९	१०		
१६	गीत हाळुजी को			६३	११		
१७	गीत रो (गो) पाळजीको			६४	११		
१८	गीत वंसल			६५	११-१२		
१९	गीत लालाहाडाको			६६	१२		
२०	गीत भावो पशुकाळको			६७	१२		
२१	गीत राव श्ररजनजीको			६८	१३		
२२	कवित राव सुरजनकी			६९	१३		
२३	गीत रावसुरजमलजीको			७१-७६	१३-१६		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्तिका	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	तिथिका	विर्णय
२४	नसाणो राय मुरजनको			८०	१६-१७		
२५	नीसाणो राय दूदा भोजकी			८१	१७		
२६	नीसाणो दूदाजीको			८२-८३	१७		
२७	गीत दूदागोशे			८३-८७	१८-१९		
२८	राय भोजको गीत			८८-९८	१९-२३		
२९	गीत पाटगति			९९-१५८	२३-४०		
३०	राय नावसिधजीका गीत			१५९-१६७	४०		
३१	गीत भगतसिधजीको			१६८-१७८	४२-४६		
३२	राय प्रसेव(जमेव) सीधनीका गीत			१७९-१८३	४६-४९		
३३	रा(गोय)सिधनी स्वार सतो होई जीको			१८४-१९१	४९-४३		
३४	गीत राय धनसाजीको			१९२वां	४३वां		
३५	गीत म्हााराजा ईंदसाजीको			१९३-१९९	४३-४५		
३६	गीत म्हााराजा सरवारसीध जीको			२००-२११	४५-४८		
३७	गीत म्हााराजा मेधसिधजीको			२१२-२२०	४८-६०		
३८	गीत म्हााराजा धीर्नासिधजीका (गीत घोसरो)			२२१-२६८	६०-७५		
३९	गीत म्हााराजा देवसीधजीको			२६९वां	७५वां		
४०	गीत योग्यो साणोर			२७०	७५-७६		
४१	गीत श्रीकुटुम्ब			२७१	७६-७७		

इसमें इन्द्रगढ़महाराजाकी
प्रगति है

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	निर्णय
४२	रूपका महाराजाजी भगत- रामजी का कवित			२७३-२७६	७७-७८		भगतेननेराको प्रगन्ति है
४३	गीत सुक्ताग्रह			२७७-२७८	७९		"
४४	गीत चोसरा			२७९	७९-८०		
४५	गीत त्रिकुटवध			२८०-३०४	८०-९०		
४६	भाखडी			३०५-३६२	९०-१०४		इसमें रघुकवित्त भी है।
४७	साली महाराजा सरवारसिंघ- जीकी कही			३६३	१०४		
४८	रूपक कवयत्री सुनमानसिंघजी का गीत पचसर			३६४-३६५	१०४-१०५		
४९	गीत सुक्ताग्रह			३६६-३६७	१०५-१०६		सुनमानसिंह प्रगन्ति है।
५०	गीत सुपतरो			३६८-३७८	१०६-१११		"
५१	गीत त्रिकुटवध			३७९-३८५	१११-११७		"
५२	गीत (हु)परजी श्रमानसिंघ- जीका			३८६-३८८	११७वा		
५३	गीत म(म)तापसिंघजीको			३८९-४०६	११७-१२०		पद्यसंगी म० पुस्तकमें
५४	गीत राव श्रजीतसौधको			१	१२०-१२२		केवल १ ही नोट है।
५५	रूपक साहाराजा श्रमरसौध- जीका गीत बेलीयो			४०४-४०८	१२३-१२४		पुनः ४०४ से प्रारम्भ है।
५६	गीत साहाराजा फकीरसौध- जीकी			४०९-४१०	१२४-१२५		

क्रमांक	प्रचलनम्	वत्सा	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	विविक्तकाल	विशेष
५७	माहाराजा ज्योतीराम-गीता				१२५-१२६		
५८	गीत महाराजा सायमसौध कोका			५११-५१३	१२६-१२७		
५९	गीत चासीराम-गीता			५१७-५१८	१२७		
६०	गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			५१९	१२७-१२८		
६१	गीत वरतसौधजीको			५२०	१२८		
६२	गीत महाराज मरजासौध -गीको			५२१-५२३	१२८-१२९		
६३	गीत कोंवर ज्ञेससिंघजी घुगण सौधजी ईश्वरसौधको			५२४-५२५	१२९-१३०		
६४	गीत बरीसालीकाका			५२६-५३६	१३०-१३५		
६५	कवित रूपचो माहारीगीत			५३७	१३५		
६६	माधोसौधजीको			५३८	१३५		
६७	गीत मुकुनसिंघजीका सावकडो			५३९-५४६	१३५-१३६		
६८	जीजी कसोरसौधजीका गीत			५४७-५५१	१३६-१३८		
६९	गीत रामसौध-गीता			५५२-५५५	१३८-१३९		
७०	गीत भीम (व) सौधजीका			५५६-५६५	१४०-१४३		
७१	गीत स्यामसौधजीका			५६६	१४३-१४४		
७२	गीत बुरजलसाल (बुरजलसाल) जी का			५६७-५७८	१४४-१४८		
७३	गीत जराम घोषास (क्यास)			५७८-५८०	१४८-१४९		

क्र.सं.	शब्द	वर्ण	भाषा	निष्पत्ति	प्राप्ति	लिपिमात्रा	विशेष
७४	गीत गोरोक्षिणीको			४८१-४८२	१४६		
७५	गीत गोरोक्षिणीको			४८३-४८४	१४६-१४७		
७६	गीत गोरोक्षिणीको			४८५	१४७		
७७	गीत गोरोक्षिणीको			४८६-४८७	१४७-१४८		
७८	गीत गोरोक्षिणीको			४८८	१४८		
७९	गीत गोरोक्षिणीको			४८९	१४९		
८०	गीत गोरोक्षिणीको			४९०	१५०		
८१	गीत गोरोक्षिणीको			४९१	१५१		
८२	गीत गोरोक्षिणीको			४९२	१५२-१५३		
८३	गीत गोरोक्षिणीको			४९३	१५३		
८४	गीत गोरोक्षिणीको			४९४	१५४		
८५	गीत गोरोक्षिणीको			४९५	१५५-१५६		
८६	गीत गोरोक्षिणीको			४९६-४९७	१५६		
८७	गीत गोरोक्षिणीको			४९८-४९९	१५७-१५८		
८८	गीत गोरोक्षिणीको			५००-५०१	१५८		
८९	गीत गोरोक्षिणीको			५०२-५०३	१५९-१६०		
९०	गीत गोरोक्षिणीको			५०४-५०५	१६०-१६१		
९१	गीत गोरोक्षिणीको			५०६-५०७	१६१-१६२		
९२	गीत गोरोक्षिणीको			५०८	१६२		
९३	गीत गोरोक्षिणीको			५०९	१६३		
९४	गीत गोरोक्षिणीको			५१०	१६४		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विषय
६३	गीत देवताका ठाणुर बलत सीय चहुबाण को । सुपलरी चोटीबध			५१५से५१७	१५६-१६०		
६४	गीत चहुबाणको			५१८-५१९	१६०-१६१		
६५	गीत सत्रसाळ देवडाको			५२०	१६१		
६६	गीत स्रपसीय देवडाको			५२१	१६१		
६७	गीत सुरताण देवडाको			५२२	१६१		
६८	गीत (बी)रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
६९	गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
१००	गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२-१६३		
१०१	गीत कुभा(कुभा) ओचीको			५२६	१६३		
१०२	गीत घोरतसीय सोचीको			५२७	१६३-१६४		
१०३	गीत नया ओचीको			५२८-५२९	१६४		
१०४	गीत फतेसीय सोचीको			५३०	१६४-१६५		
१०५	गीत बकबर पतस्याको			५३१-५३२	१६५		
१०६	कवित साहिजादो दामसाहको			५३३	१६५		
१०७	कवित सान नवाबको			५३४-५३६	१६५-१६६		
१०८	कवित मोरजे(व) पतस्याका			५३७	१६६		
१०९	गीत साहिजादाको			५३८	१६६-१६७		
११०	गीत बलिको			५३९	१६७		
१११	गीत राणा कुंभाको			५४०-५४३	१६७		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्त	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निर्दिष्ट	विभाग
१३२	गीत सीहो चलो			५७५	१७६-१८०		
१३३	गीत देवीसीय बगुका ठाकुरको			५७६	१८०		
१३४	गीत बगारिकावास			५७७	१८०		
१३५	गीत जसोतसीय चोडावतको			५७८	१८०-१८१		
१३६	गीत नरायणदास			५७९	१८१		
१३७	गीत गजगति नरायणदास			५८०-५८१	१८१-१८२		
१३८	गीत प्रताप			५८२	१८२		
१३९	गीत गोकुलदास सगतावतको			५८३-५८६	१८२-१८४		
१४०	गीत परतपसीय सगतावतको			५८७-५८९	१८४-१८५		
१४१	गीत जगतसीय सगतावतको			५९०-५९५	१८५-१८६		
१४२	गीत गालसीय सगतावतको			५९६	१८६		
१४३	गीत सगतासीय सगतावतको			५९७	१८६-१८८		
१४४	गीत सुरतसीय सगतावतको			५९८	१८८		
१४५	गीत सगतावतको			६००	१८८-१८९		
१४६	गीत राणा संघाससीय गीको			६०१-६०४	१८९-१९०		

କ୍ରମ	ନାମ	ପି.ଏଚ୍.ଏ.	ପି.ଏଚ୍.ଏ.	ପି.ଏଚ୍.ଏ.	ପି.ଏଚ୍.ଏ.
୧୮୮	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୮୮	୧୮୮	୧୮୮	୧୮୮
୧୮୯	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୮୯	୧୮୯	୧୮୯	୧୮୯
୧୯୦	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୦	୧୯୦	୧୯୦	୧୯୦
୧୯୧	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୧	୧୯୧	୧୯୧	୧୯୧
୧୯୨	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୨	୧୯୨	୧୯୨	୧୯୨
୧୯୩	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୩	୧୯୩	୧୯୩	୧୯୩
୧୯୪	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୪	୧୯୪	୧୯୪	୧୯୪
୧୯୫	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୫	୧୯୫	୧୯୫	୧୯୫
୧୯୬	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୬	୧୯୬	୧୯୬	୧୯୬
୧୯୭	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୭	୧୯୭	୧୯୭	୧୯୭
୧୯୮	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୮	୧୯୮	୧୯୮	୧୯୮
୧୯୯	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୧୯୯	୧୯୯	୧୯୯	୧୯୯
୨୦୦	ଶ୍ରୀମତୀ ସୁମିତ୍ରା ଦେବୀ	୨୦୦	୨୦୦	୨୦୦	୨୦୦

प्रमाण	प्रयनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निष्पत्ति	विशेष
१६४	कति हरीजीको			६२८-६२९	२०१-२०२		
१६५	गीत सातसौघ गीत(ल)सोने			६३०-६३१	२०२		
१६६	गीत कसनसौघजीको			६३२	२०२-२०३		
१६७	गीत बीरसवे सोलसोको			६३३	२०३		
१६८	गीत सोघराय जसपको			६३४	२०३-२०४		
१६९	गीत मुळराज सोलसोको			६३५	२४		
१७०	कथित नाथावताको			६३६	२०४		
१७१	गीत देवीसौघ नाथावतको			६३७	२०४-२०५		
१७२	कथित करण नाथावतको			६३८	२०५		
१७३	गीत गोयदा सबराडाको			६३९-६४०	२०५-२०६		
१७४	गीत समरासिघ भाटी जसलेभरको			६४१	२०६		
१७५	गीत सखटा भाई			६४२	२०७		
१७६	गीत जावुको			६४३	२०७		
१७७	गीत विजासर घमाको			६४४	२०७-२०८		
१७८	गीत करण सरयमाको			६४५	२०८		
१७९	बुहा जसा सरयमाका			६४६	२०८-२१०		
१८०	गीत राठोडीका			६४७	२१०		
१८१	गीत राजा गजसौघजीको			६४८-६४९	२१०		
१८२	गीत राजा असोतसौघजीको			६४९-६५०	२१०-२१२		
१८३	गीत श्रमरसौघ राठोडको नागोरको राजा			६५०-६५१	२१२		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	पाने	पत्र	पानां	परिमाण	मूल्य
१८४	गीत गता खोलीगीली		११८-११९	२१२-२१३		११३० रु० १०० पैसे
१८५	गीत गता धा(स)नीली		११८-११९	२१२-२१३		
१८६	गीत वारागीली		११८-११९	२१२-२१३		
१८७	गीत गता रानी		११८-११९	२१२-२१३		
१८८	गीत गता विनीतली		११८-११९	२१२-२१३		
१८९	गीत राजगीत गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९०	(गी) न गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९१	गीत गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९२	गीत गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९३	गीत गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९४	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९५	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९६	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९७	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९८	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
१९९	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		
२००	गीत गता गता गता		११८-११९	२१२-२१३		

वसार्क	ग्र धनम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसख्या	लिपिवाच	दिनाथ
	२०० गीत जतसोय समीपीएरी अङ्कुर राठोडको			७०३	२३०-२३१		
	२०१ गीत केसरीसीय उदाजतको			७०४	२३१-२३२		
	२०२ गीत उदाजतको			७०५	२३२		
	२०३ गीत मोहोकम राठोडको			७०६	२३२-२३३		
	२०४ गीत पिना राठोडको			७०७	२३३		
	२०५ गीत हठीसीय राठोडको			७०८	२३३-२३४		
	२०६ गीत तेजसीय राठोडको			७०९	२३४		
	२०७ गीत कुसलसीय धापावतको			७१०	२३४-२३५		
	२०८ गीत तेरसीयमी कुसल सीयमीको			७११	२३५		
	२०९ गीत कुसलसीय तेरसीयको			७१२-७१४	२३५-२३६		
	२१० गीत तेरसीयमीको			७१५-७१७	२६-२४१		
	२११ गीत कुरमादास राठोडको			७१८	२४१		
	२१२ गीत गोपासीय मडल्याको			७१९	२४१-२४२		
	२१३ गीत धरय गोल वसनसीय राठोडको			७२०	२४२		
	२१४ गीत परसा राठोडको			७२१	२४२-२४३		
	२१५ गीत धलुरा राठोडको			७२२	२४३		
	२१६ गीत करण राठोडको			७२३	२४३		
	२१७ गीत साहायसीय राठोडको			७२४	२४३-२४४		

क्रम क्र.	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	तिथिकाता	विशेष
२१८	गीत करण राठोडको			७२५	२४४		
२१९	गीत संसल राठोडको			७२६-७२६	२४४-२४६		
२२०	गीत माधोसीध राठोडको			७३०-७३१	२४६-२४७		
२२१	गीत जसोतसीधजीका उमरावाको			७३२	२४७		
२२२	गीत अमैसीधजीका			७३३	२४७-२४८		
२२३	उमरावाको			७३४	२४८		
२२४	गीत परथीराज राठोडको			७३५	२४८		
२२५	गीत ज(य)सीध राठोडको			७३६	२४९		
२२६	गीत सेवो बावेलको			७३७	२४९		
२२६	गीत घाणोराको ठाकुर पवम- सीधको			७३८	२४९-२५०		
२२७	गीत सगतसीध राठोडको			७३९	२५०		
२२८	गीत मोकम चापाजतको			७४०	२५०-२५१		
२२९	गीत अलसीध राठोडको			७४१	२५१		
२३०	गीत कसो राठोडको			७४२	२५१		
२३१	कबित् राव बीकाको			७४३	२५१-२५२		
२३२	गीत कल्याणसीधजीको			७४४-७४५	२५२-२५३		
२३३	गीत प्रथीराज राठोडको			७४६	२५३		
२३४	गीत रायसीधको			७४७	२५३		
२३५	गीत बीकानेरको मोणसीधका बेटाको						

समाङ्क	ग्रन्थनाम	वर्ती	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निष्पिक्त	विषय
२३६	गीत सोमोद याणवद वसोयो रामसौधको			७४८	२४३-२४४		
२३७	गीत रायसौध शोकानेरको			७४९	२४४		
२३८	कवित शोकानेरका राजा अनोपसौधको			७५०	२४४-२४५		
२३९	गीत शोकानेरको वदसौधको			७५१-७५४	२४५-२४६		
२४०	गीत वसोसौध शोकानेरको			७५५	२४६-२४७		
२४१	कवित राजा वदसौधको शोकानेरको			७५६	२४७		
२४२	गीत भीम राजोदको			७५७	२४७-२४८		
२४३	गीत दुदा राजोदको			७५८	२४८		
२४४	गीत लखीर पौवा			७५९	२४८-२४९		
२४५	गीत योग प्रकरो करण शोकानेरका राजाको			७६०	२४९		
२४६	गीत प्राजुको			७६१	२४९-२५०		
२४७	गीत भ्यागको			७६२	२५०		
२४८	सुप्य राम भाराको जादो चाको			७६३	२५०		
२४९	गीत जाडेजाको घीसर			७६४	२५०-२५१		
२५०	गीत होरा सगळ्याको			७६५	२५१		
२५१	गीत महेड जाडेजाको			७६६	२५१-२५२		

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पानसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२५२	गीत राव देसलको			७६७	२६२		
२५३	दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
२५४	गीत भोज कावाको			७६९	२६२-२६३		
२५५	गीत घासडी सोडा चवानको			७७०	२६३		
२५६	गीत सोडा राठोडाकी चुकको			७७१	२६३-२६४		
२५७	गीत सोडा भाटीकी चुकको			७७२-७७३	२६४		
२५८	गीत राजा मानको			७७४-७७५	२६४-२६५		
२५९	कवित्त वडो जैसीधको			७७६-७७८	२६५-२६६		
२६०	गीत वडो जैसीधको			७७९	२६६		
२६१	गीत जगतसीध श्रीमं भैरवा राजाको लहवाल			७८०	२६६		
२६२	गीत राजा रामसीधजीको			७८१	२६६-२६७		
२६३	कवित्त राजा वसनसीधको			७८२	२६७		
२६४	गीत सीहि श्रीमान राजा सवाई जैसीधको			७८३-७८८	२६७-२७०		
२६५	गीत वडा जैसीधजीको			७८९-७९०	२७०-२७१		
२६६	गीत दुमेल । मनोहर साखळो वडा जैसीधको उमरावको			७९१	२७१		
२६७	गीत तलोकसीध राजाजतको			७९२	२७१		
२६८	कवित्त कुशलसीध नाथाउत चोमा[सू]को ठाकुर			७९३-७९४	२७१-२७२		
२६९	गीत गजेंसीध नाथाजतको			७९५-७९६	२७२-२७३		

राजस्थान पुरातत्त्ववेक्षणमंडल-एतत्संश्लिष्टप्रचण्डको नाम २ परिशिष्ट ३, इ. द्रव्यद्वयोर्बोधानामप्रचण्डको]

क्रमांक	प्रचण्डनाम	कक्षा	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	निष्पत्तिकाल	विषय
२७०	गीत सोरठो उब (ग) सीध सेलाउतको			७६७	२७३		
२७१	गीत दीर्घातयसीको			७६८	२७३-२७४		
२७२	गीत बोततसीधको			७६९	२७४		
२७३	गीत सोसीध सेलाउतको			८००	२७४-२७५		
२७४	गीत कानसिध वलभरोत			८०१	२७५		
२७५	गीत देवसीध लुगारोतको			८०२	२७५-२७६		
२७६	गीत समरसीध लुगारोत			८०३	२७६		
२७७	गीत गोरजन कल्याणोत			८०४-८०५	२७६		
२७८	गीत मानसिध कल्याणोत			८०६	२७६-२७७		
२७९	गीत कमा कल्याणोतको			८०७	७७		
२८०	गीत जवद कल्याणोतको			८०८	२७७		
२८१	गीत पतसीध नामाको			८०९	२७७-२७८		
२८२	गीत जसीध नटको			८१०	२७८		
२८३	गीत दोनु जसीध नरकाका			८११	२७८		
२८४	गीत मुजानसीध जग नाथोतको			८१२	२७८-२७९		
२८५	गीत साहेबकी भावरोतको			८१३	२७९		
२८६	कवित राजसीध भावरोतको			८१४-८१५	२७९-२८०		
२८७	गीत राजसीध भावरोतको			८१६	२८०		
२८८	गीत गुजरीका पेट (बेटा) को नरायणदासजीको बोतलको			८१७	२८०-२८१		

बेटो ■ जोको गीत छ

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विवरण
२८६	कवित् जैतसिँध मानसीघउत (वाकाउत)को			८१८	२८१		*यह दोहेकी संख्या है ।
२८७	दुहो बाकाउतको			१*	२८१		
२८८	गीत सपुतको			८१६	२८१-२८२		
२८९	गीत कपुतको			८२०	२८२-२८३		
२९०	गीत वेसर मानसीघोताको			८२१	२८३		
२९१	दुहा सवाई जैसिँघजीको			१*	२८३		*यह दोहेकी संख्या है ।
२९२	गीत खगार कछावाको ।			८२२	२८३		
२९३	खगारो ताको बड़ो सारा सु						
२९४	कवित् नायाउत कछावाको			८२३	२८३-२८४		
२९५	गीत जग खोडो राजा विठल- दास गोडको			८२४-८२७	२८४-२८५		
२९६	गीत राजा अनाद (प्राना?)को			८२६	२८५-२८६		गीतसं० ६२८ नहीं है ।
२९७	कवित् राजा बीठलको			८३०-८३२	२८६		
२९८	दुगरसी बाभडीका कह्या						
२९९	गीत राजा अनरद गोडको			८३३	२८६-२८७		
३००	कवित् सायफडो			८३४-८३५	२८७		
३०१	गीत राजा नरस (ग)को			८३६-८३६	२८७-२८८		२८६
३०२	गीत जाति हसमग			८४०	२८६		
३०३	गीत अरद गोडाको			८४१	२८६		

राजस्थान पुरातत्वा येपणमिदर-हस्तलिखितप्रामुखी भाग-२, परिनिष्ठ-४ इन्द्रगुप्तोद्योतानामप्रामुखी]

[३८७]

विषय

निर्णयकाल

पत्रसंख्या

भाषा

वर्तमान

प्रमाण

३०५ गीत श्रमन गोडको

३०६ गीत सभराम गोडको

३०७ गीत राजा मनोरमासोको

३०८ गीत राजा उत्तमरामसोको

३०९ गीत वीरभद्र गोडको

३१० गीत श्रमन चोरभद्रको

३११ गीत जोरावरसोको माहा

राजादीयसोकोकर मावजीको

३१२ गीत उव(य)भाण हरभाण

गोडको

३१३ गीत समता गोडको

३१४ डुरो राता(ण)सांगा उत्तरभा

रतनको कह्यो

३१५ गीत यानसोय सांगाउतको

३१६ गीत बसन्तसोय गोडको

३१७ गीत बलाभालाको

३१८ गीत राज कीरतसोयनी

साव(डी)बा ठाकराको

३१९ गीत नापजी भालोताणाको

ठाकुरको

३२० कुटुम्बा जसोत भालाका

८४२-८६० २८६-२८९

८६१-८६४ २८६-२८८

८६५ २८८-२८९

८६७ २८९

८६८ २८९

८६९ २८९-३००

८७० ३००

८७१-८७२ ३००-३०१

८७३ ३०१

८७४ ३०२

८७५-८७६ ३०२-३०३

८७६-८७७ ३०३

८७८-८७९ ३०३-३०४

८८० ३०४

८८१ ३०४-३०५

८८२-८८३ ३०५-३०६

गीतस ८६५ मही है ।

अथह कीहेको सत्या है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३२१	दूहो माधोसीध भालाको			*१	३०६		*यह दोहेकी सख्या है।
३२२	दूहो मदनसीध भालाको			१-८६०	३०६-३०७		८६० कवित् स है।
३२३	कवित् हमतैसिध भालो			८६१	३०७		
३२४	मत्र हेमतसीध भाला उपर			८६२	३०७		
३२५	गीत जालमसीध भालाको			८६३	३०७-३०८		
३२६	दूहो पुवाराको			*१, ८६४	३०८		*१ सख्या दोहेकी है।
३२७	गीत सादुल (सर्वुल) पुवारको			८६५	३०८		
३२८	गीत रावत मयण उमटको			८६६	३०९		
३२९	गीत परसराम उमटको			८६७	३०९-३१०		कवित्सख्या के अतिरिक्त ४ दोहे और हैं।
३३०	दूहो मानधाता पुवार बीजोल्याका ठाकुरको			*१	३१०		*यह सख्या दोहे की है।
३३१	गीत नगा खासीको			८६८-८६९	३१०-३११		
३३२	गीत नारग देसतीको			९००	३११		
३३३	गीत रजपुताका गाढको			९०१-९०४	३११-३१३		
३३४	गीत अनोपसीध कछवावो			९०५	३१३		
३३५	गीत माधोसीध कछवावो			९०६	३१३-३१४		
३३६	अजबगढ भानगढका ठाकुरको			९०७	३१४		
३३७	गीत गोयददास माधायीको कछवावो			९०८	३१४		
३३८	गीत कमा माधायी कछवावो			९०९	३१४-३१५		
३३९	कवित् सवाई जैसीधको			९१०			

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्तनी	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	परिचाल	विषय
३३६	कवित सतारका राजारा			६१०-६१६	३१५-३१७		
३४०	कवित हरवसाह वरेलाका			६२०-६२१	३१७-३१८		
३४१	कवित आतमाराम कयनाय			६२२-६२३	३१८		
	सौव मोर भावरोत						
३४२	कवित तरवरसाह भाटको			६२४-६२५	३१८-३१९		
३४३	कवित परतो चकवहुवाको			६२६-६२७	३१९		
३४४	कवित कपाराको लोटको			६२८	३१९-३२०		
३४५	कवित प्रसताई देवीदासका			६२९-६३६	३२०-३२२		
	कहा						
३४६	कवित पुडलवा सिरवरका			६३७-६६६	३२२-३२६		
	कहा						
३४७	गीत प्रमरसीपनी खातोली						
	का ठाकुरको						
३४८	गीत महाराज भगतारामजी						
	को घरार । मध्यरीदास						
	भापदीको कहा						
३४९	कवित खटवरसका भाव						
	परी धूप						
३५०	गीत डोवो धलताळो सवा						
	सोको						

पत्र ३३१ से ३३४ तक
संयुक्त कवित बोहे हैं ।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कला	भाषा	पिपय	पत्राङ्का	निविधान	विनियोग
३५१	गीत सावकडो	यमभारतरत्न	हिन्दी	३३६	४-११६	२०वीं स	सूत्र
३५२	गीत जाति श्रवतालो			३३८			
३५३	गीत पदममोधिजी रहणावन को ठाकुरज्याकी ठकराण्या मुचरामे काम भायी ज्याको			३६०			
३५४	गीत देवो जामाको			३४४			
३५५	नशाणी राव साउकी			३४४			
१८४	उमेशचरित	नवपुरि	संस्कृत	इतिहास	४-११६	२०वीं स	सूत्र
१८५	गीतासार			प्रेमान	१०	"	"
१८६	मदनकेशवारी नया			कथा	३०	"	सूत्र, कोटविट
१८७	(क) वैराग्यदासक			काव्य	८-१३	१८००	"
	(न) वोवो माठमन्वरररी			गोपिप	१-३३	"	"
	(ग) गोमुल नागमलत आगात्राके मुत्त	संगमगीत	हिन्दी	काव्य	१-६	"	"
	(घ) दाहुराका चारोमहाराकी			"	१-७	"	"
	कथा (पद्यवत)			"	"	"	"
	(च) कुतुबरात			"	१६	"	सूत्र
१८८	परिचय सप्टाह			गोम	१-८०	२०वीं स.	सोदविज्ञ, सूत्र
१८९	आवागिल	संगमगीत	"	संगमगीत	६	"	सूत्र
	(क) कविकुलकृष्णभरण			संगमगीत	४२	"	"
	(न) काव्यकीमुदी			"	१-१३	"	"
	(ग) सपणरो घसानोर गीत लक्षण			"	३	"	"
१९०				संगमगीत	३	"	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकार	विशेष
१६१	(प) नागभूयल परमलोकपत्रिका	जसवन्तसिंह	हिंदी	रससत्कार	१०	२०वीं श	ग्रन्थ
१६२	यंग प्रकाश	कविजहार	,	वेदांत	१०	१६०५	
१६३	विद्ययमुजसमण्डन (तत्त्वपरि काशांत)	धर्मदास	संस्कृत	काव्य	१२	२०वीं श	
१६४	वीरलक्ष्मी	मूलमन्त्र	हिंदी	काव्य	१६		जीर्णोप, ग्रन्थ
१६५	महाकाव्यभरवत्कवच	मधवतन्त्रोक्त	संस्कृत	तन्त्र	३	,	
१६६	भरवत्कवच (अलीपयमङ्गलनामक)	वदयामलगत	"	"	३	१८६१	
१६७	सुमुल्लिखलनाम	सत्यवतीगत	"	"	१२	२०वीं श	
१६८	सगनापीलकरतोष	वदयामलगत	"	"	४	१८६०	
१६९	समुचीपटल (हनुमद्विषयक)	वदयामलगत	"	"	१०	१८६५	
२००	गणेशकवच		,	संन्यासत्र	३	१६वीं श	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र		"	तन्त्र	३	"	
२०२	ग्रामसन्तोषनीचरूप		,	सन्त्यासत्र	८	"	अतिमपत्र सप्तपत्र
२०३	वातामृजतपद्धति		"	तन्त्र	१४	,	ग्रन्थ
२०४	उद्दीप्तमन्त्र		"	पुराण	८	२०वीं श	
२०५	गणसंहितागिरिराजलण्डटीका	नाथूराम भुवराशी	हिंदी	प्रकीर्ण	३३		
२०६	इन्द्रगढ़ प्रमृष्ट राजसभामंडितसिंह रचितग्रन्थोंकी सूची आदि		,		२६		

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

प्रकाशित ग्रन्थ

१-संस्कृत ग्रन्थ

१. प्रमाणमजरी, सांकेतिकचूडामणि नवदेवाचार्य, सम्पादक—मीमानान्यायकेमरी प० पट्टाभिनाम-शास्त्री, विद्यासागर । मूल्य—६ ००
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-नवाई-जयनिह-कारित । सम्पादक—स्व० प० केदारनाथ, ज्योतिषिवित् । मूल्य—१ ७५
३. महर्षिकुलवंभवम्, स्व० प० मधुसूदन श्रीभाप्रणीत, सम्पादक—म०म० प० गिरिधर धर्मा चतुर्वेदी । मूल्य—१०.७५
४. तर्कसंग्रह, ग्रन्थभट्ट, सम्पादक—डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य—३.००
५. कारकनवधोद्योत, प० रमसनन्दी, सम्पादक—डा हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य—१ ७५
६. वृत्तिदीपिका, मोनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—प० पुष्पोत्तमधर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—२ ००
७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डा हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी । मूल्य—२ ००
८. कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह एम. ए., पी-एच. डी, डी लिट् । मूल्य—१.७५
९. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाना शाह, एम. ए., पी-एच. डी, डी लिट् । मूल्य—१ ७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्री हृष-कवि-रचित, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाना शाह, एम. ए., पी-एच. डी, डी. लिट् । मूल्य—२ ७५
११. राजदिनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक—प श्री गोपालनारायण बहुरा एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—२ २५
१२. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री । मूल्य—३ ५०
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटानाल पारीख, तथा डॉ० प्रियवाना शाह, एम. ए., पी-एच. डी, डी लिट् । मूल्य—३.७५
१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणेश-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि । सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—४ ७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—प० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—४.२५

- १६ कणकुतूहल महानवि भोलानाय विरचित सम्पादक-प० श्री गोपालनारायण बहुरा
एम ए, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर । इसी प्रकार की
घपर वृत्ति श्रावृष्णीलीलाभुत' सहित । मूल्य-१५०
- १७ ईश्वरविलास-महाकाव्य, कविवल्लनिधि श्रीवृष्ण भट्ट विरचित सम्पादक-श्री मथुरानाय
गास्त्री, साहिताचार्य, जयपुर । मूल्य-११५०
- १८ रसदायिका कवि विशाराम प्रणीत सम्पादक-प० श्री गोपालनारायण बहुरा, उप
सञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर । मूल्य-२००
- १९ पद्यमुक्तावली कविकलानिधि वृष्ण भट्ट सम्पादक-प० मथुरानाय गास्त्री
साहित्याचार्य । मूल्य-४००
- २० काव्यप्रकाशसंस्कृत नामन्तर भट्ट वृत्त सम्पादक-श्री रसिलाल छो० परील
भाग १ मूल्य-१२००
भाग २ मूल्य- ८२५
- २१ , , , ,
२२ यस्तूरनकीर्ण घनात वक्तव्य, सम्पादिता-डॉ० प्रियवाला शाह । मूल्य-४००

प्रेसो में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१ शकुनप्रदीप, नावण्य धर्मा रचित	सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी
२. त्रिपुरा भारती तघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	" " "
३ करणामृतप्रपा, ठक्कुर मोमेध्वर-विनिर्मित	" " "
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर मग्नमणिह विरचित	" " "
५ पदार्थरत्नमजूपा, प० कृष्ण मिश्र रचित	" " "
६ वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	" एम सी. मोदी
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	" " बी जी साटेनग
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	" श्री बी टी. दोशी
९ वृत्तजातिममुच्चय, कवि विरहाद् विनिर्मित	" " एन टी. वेण्कटर
१०. कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	" " "
११. स्वयम्भूच्छन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	" " "
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	" मुनि श्री जिनविजयजी
१३ कविकौस्तुभ, प० रघुनाथ विरचित	" श्री एम एन. गोरी
१४. दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	" " गङ्गाधर द्विवेदी
१५ नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुभा प्रणीत	" डॉ प्रियवाला शाह
१६ भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	" श्री गोपालनारायण बहुरा
१७ इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	" डा. दशरथ शर्मा

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८ मुहता नैणसी रो रयात, भाग २, नैणसी मुहता सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया	
१९ गोरा बादल पदार्मणी चउपई, कवि हेमन्तन विनिर्मित	सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर
२० राजस्थान में संस्कृत साहित्य की लोज	
मूल लेखक श्री आर एम भण्डारकर	अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२१ राठोडारी वशावली	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२२ सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	" " "
२३ सींग बृहत् पदावली	" विद्याभूषण स्व पुरोहित हरि- नारायणजी द्वारा संकलित
२४ राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी वगडावत और प्रतापसिंह चार्ता आदि)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमनाल मेनारिया
२५ पुरोहित वगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं	" श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रन्थोंका संगोपन और सम्पादन किया जा रहा है ।	

राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है ।

